प्रकासक

चौपासणी सिक्षा समीती हाथां संस्थापित, राजस्थांनी सोध संस्थान, चौपासणी, जोधपुर

भाग

छत्तीस-संतीस

मोल

छः रिपिया

मुद्रक

अनन्त प्रिन्टर्स, कचेड़ी मारग, जोधपुर (राज.)

हेमांणी

आंमी-सांमी

संभाल (परिसिस्ट)

सम्पादकी

आधुनिक राजस्थानी कविता रौ उठाव रिसी दयानन्द रै राजस्थान भ्रमण अर सामाजिक जागरण रै सागै हुयौ। सरूपोत रा सावचेत कविया मे ऊमरदान रौ नाम लियौ जा सकै पण सही रूप मे नवै बोध सू भारती भासावा रै विकास रै अडोअड पनपण वाळौ साहित लारला पचास बरसा मे ई पगै हुयौ

इण पचास बरसा मे भी लारला पचीस बरस राजस्थानी साहित रै सिरजण मे घणा महताऊ है, कारण कै कविता री नवी भगीमावा रै साथै साथै विसया रौ सावठौ विस्तार भी इण काळ मे पैली वार दरसीजै

केई कारणा सू दूजी भारती भासावा री तुलना मे राजस्थानी घणी लारै रैगी ही। इण विछोवै री लाव नै भरण रौ जिम्मौ जाण अणजाण मे इण वखत (लारला पच्चीस बरस) रा कविया झेलियौ आ हेमाणी रै कविया री लूंठी अर सबळी देण है आ बात सही है कै उतावळ सू कविता रै तूटतै सिरजतै आकास री बिजळिया सू ग्रै कवि नी पसीज सक्या। पण बदळतै समै मे राजस्थानी लेखै समाज अर सिरकार री उदासीनता व्हैता थका ही इण कविया आपरौ सिरजण-धरम आप आप रै वूतै मुजब निभायौ, राजस्थानी री साहित-चेतना नै चौडै लाय उण री गमियोडीसी ओळखाण समाज नै पाछी दी अर राजनीति रा लटिया पकडण री लकब उण रै हाथा मे सूंपी

आज रा करूख इण साख रौ जितौ रस नेठाव अर सावचेती सू ग्रगेजसी उतौ ई इण धरती रौ उमावौ उण रै दाणा मे दूजी प्राती भासावा सू न्यारौ मीठास देसी

इण समै री जिकी भी साख पनपी है वा किती काची नै किती पाकी है इणरौ खरौ निरणै तौ समै ई करसी, पण इणरै नुवै मोल तोल री पैल 'परम्परा' रै इण ग्रक सू करीजी है. श्री तेजसिंघ जोधै इण ग्रक नै मातभासा रै माध्यम सूं केवटण मे घणी खपत करी है राजस्थानी भासा मे आलोचना री ओप नै निखार देवण मे ओ प्रयास निरी मदद करसी, इसी उमेद है

—नारायणसिंघ भाटी
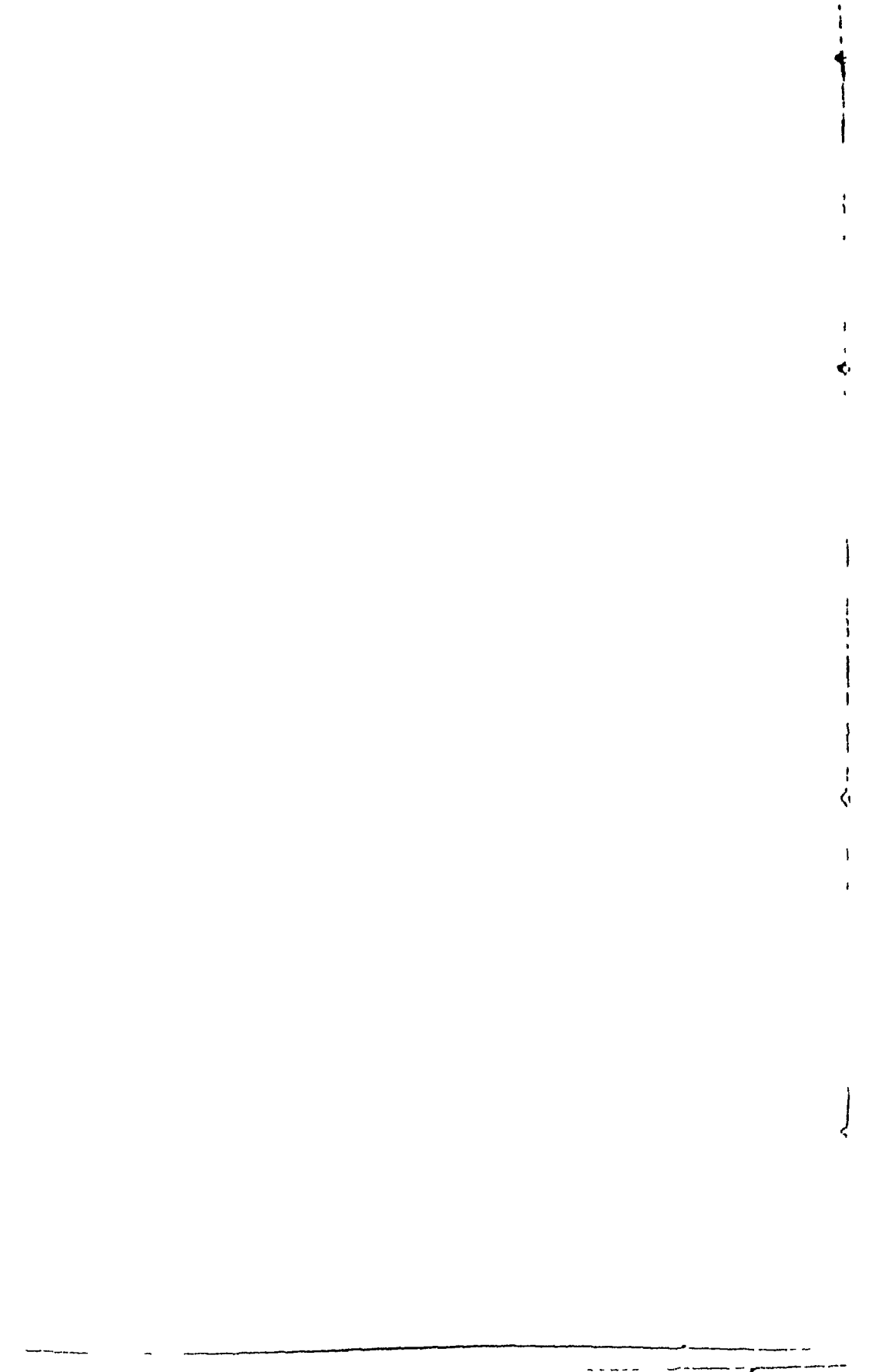
'हेमांणी' रै हवालै

लारला पचास बरसा री कविता नै 'हेमांणी' रै हवालै 'उद्बोधन' 'जस' 'उछाव' 'रगरळी' अर 'कळप' रै बधेज मे अेकठ देखणौ, अेक नुवौ तजरबौ व्हैला. व्है सकै पैली दीठ औ आपनै थोडौ चिमकावै इण सारू के कविता नै अैडा बधेजा लेवणौ-देखणौ आपारै अठै राजस्थानी मे ईं नी, दूजी भारती भासावा मे ई कम—साव नी रै बरोबर—बरत्योडौ लाधै

अमूमन कविताऊ जात्रा मे बगत-बगत माथै न्यारी-न्यारी प्रव्रतिया रा जैडा पडाव 'वादा' रै नावै थरपीजता करता रैवै, आपारी दीठ अर कविताऊ वधेजा रा आधार वै ई व्है वासू परबारै, वारै तैल जाणीजण आळी कवितावा नै दूजै किणी सैतोल जोवण रौ जोखौ आपा अक्सर नी झेला, जद के अैडौ जोखौ झेलणौ—कविता रै खुलै आस्वाद री गुंजायसा देवण रै सागै सागै, जैडौ फरक अर मेळ आपा न्यारी न्यारी प्रव्रतिया अर कविया री कवितावा मे माना, विज्यूलाइज करा—उण समचै ई दूजा भाळण रा रचना प्रमाण औसर आपानै देवै

इण अंक मे लारला पचास बरसा री कविता नै टाळ अर बधेज देवता, जठै आ बात म्हारै मना-ग्याना ग्ही, उठै अक री योजना मे कविता खड री प्रस्तुती रै रूप नै अैडौ लिवरल, लचीलौ अर अेक हद छेती माथै, ईकाई रूप इण सारू ई राखीज्यौ, के वौ कठैई 'आमी-सामी' खड री वाता-विगता अर चरचावा इत्याद नै सीधौ नी असराय देवै के वा माथै सीधै-सीधै कमेंट री गळाई सामी नी आय जावै. क्यूं के पोछडी अक रौ उदेस लारली कविता, कविया अर दौर, सगळा समचै ई दीठाव मे अेक समूदी सैयोगी सावचेती री, अर सावचेती रै सारू, कोसिस करणौ हौ—कोरौ वा माथै सम्पादक री सोध के मोल जोख देवणौ नी अपरच अक रै आगलै मैटर मे कविता खड री प्रस्तुती रै रूप री सीधी तुक देखणौ उतौ ई गलत व्हैला, जितौ के उणनै समूदी योजना मे तुक वायरी मानण री भूल के उतावळ करणौ

इतियासू विकासक्रम मे, स्याल अब जावता वौ वगत आयौ है—के जद आपा खुद री कथीज सकण आळै कविताऊ दीठाव नै दीठ मे लेवण समचै सावचेत व्हा—इण अरथ मे के व्है सका, अर इण अरथ मे ईं के व्हेणौ पडैला. आपारौ आपरौ कविताऊ दीठाव नी है, के नी रह्यौ है—आ कैवण अर मानण रौ तौ कोई कारण कोनी नी इणरौ ई के आपा उण समचै सावचेत अर जवाबदार नी रह्या, के नी हा निम्बै हां ई, अर रह्याई व्हाला. पण सवाल आज री तारिख वगत परवाण आ देखण रौ है के आपा रै सावचेत अर जवाबदार रैवण री हदां कैडी काई रह्यी, अर है, अर

अब कुणसी नुवीं गु जायस अर जरूत री भाळी आपानै पडै, मतलब के आपा हा कठै ?

म्हारी खयाल है 'दीठाव' री व्हेणी श्रेक वात है, उणरौ 'दीठ' मे व्हे सकणी दूजी

विगत मे जावा तौ ठा पडैला के नुवी कविता री आमद सू पैली—ज्यू त्यू इखरचौ विखरचौ—आपारौ व्हेणौ ई खुद अर दीठाव दोया रै समचै आपारी साव-चेती अर जवावदारी वतावण सारू घणी हौ राजस्थानी कविता रै विकास मारू आपा नै हर कैडी ई कविता अर कवी नै मरीसी अर मुगत मजूरी देवणी पड़ती आपा आ मानण नै विवस हा के राजस्थानी कविता रौ विकास इण ढाळै ई व्हैला

इण गत रै कारण चोखी-ओखी, हळकी-भारी, सगळी ई भात री कवितावा श्रेक ई पाट उतरती नी वारै मोल-जोख रौ जोखम झेलीज सकतौ, अर नी वानै प्रवति रूप नेमण री कोसिस करीज सकती चगी कविता अर कविया रै समचै दीठाव मे अवस श्रेक राय चालती-फिरती रैवती, पण वा ई घणकरीक जवानी जमा खर्च माथै ई आपारै अठै नी कोई कवी रिटायर व्हेतौ अर नी कविता आपा व्हेण ई नी देवता

इण दौर मे राजस्थानी कविता माथै जितौ कितौ सोचण-समझण अर लिखण-पढण रौ काम व्हियौ, अमूमन हिन्दी मे ई—घणकरी वार तौ हिन्दी सारू ई हिन्दी साहित जात्रा रौ नैडास—भला ई जीवारी सारू जरत रै तैत ई रह्यौ व्हैं—आपा नै लाजमी लागतौ रह्यौ अर आपा, आपा री कणा जणा छपती काव्य क्रतिया अर कवितावा माथै उणरै परिपेख सू ई वंतळ करता रह्या के आपारी वतळ उणरै परिपेख री ई हिस्सौ वणती रह्यी होळै हौळै आपा मे सू घणकरा जणा स्यात औ वैम ई मना ग्याना पाळ लियौ के आपा रौ कविताऊ इतियास ई कमोवेस उण ढाळै ई नेमीजैला, जिण ढाळै के हिन्दी री नेमीज्योडौ है, अर आपा उणनै उण ढाळै नेमण तकात लागगा

इण दौर मे भासा अर साहित रा सवाल ई गाढा श्रेकमेक रह्या अर क्यू के आपा रै अठै साहित मे हमेसा कविता री गत ई हरावळ रह्यी अर है, सो भासा रै सवाल री घणकरी वोझ ई उण माथै ई पडतौ. कविया सू साहित रै विकास सारू भात भात रा विसया अर सिल्प-सैली री कवितावा लिखण री माग ई नी करीजती, गद्य विधावा मे लिखण सारू ई कयीजती किणी खाली ठौडा री अदाज आपा करता, अर चावता के वै भरीजणी जोईजै

कुल मिला'र मोटै मौटै रूप सू श्रै ई वै गता, हालता अर हदा है, जिकी नुवी कविता री आमद सू पैली दीठाव नै फिर घिर'र वाध्या ही, अर इण दौर ताई आपा रा कवी अर कविता आरी वधोकडी मे रैवण नै विवस हा

नुवी कविता रौ जलम आई गता हालता अर हदा रै सामी ऊडी, आकरी अर अमूझ्योडी प्रतिक्रिया रूप व्हियौ नुवा कवी आपरी ऊठ मे दीठाव री पूरवली कविताऊ गत नै 'अेकठ' अर 'हाफळा' रूप लेवण नै विवस रह्या, अर आ मानण नै ई के वा रौ जलम, लारली कविता अर कविया री उपलब्धी कोनी

अैड़ौ इछीज अवस सकै, अर वा अेक सवळी गत ई व्हेती जे नुवा कविया नै दीठाव री गत इण ढाळै नी लेवणी भुगतणी पडती अर कविता रै सैज विकास री धारणा मे वै लारली कविता अर कविया रै हमगेलै चढावौ व्हे सकता

पण आ तौ इछण री बात है, महताऊ वौ है, जिकौ व्हियौ आपा नै देखणौ आ व्हैला के क्यू नुवी कविता रै सामी लारली कविता जात्रा रौ इतियास 'अेकठ' अर, 'छाती कूटं' रूप आयौ अर क्यू उणरौ 'वरतमान' उणनै छेडण री आदत सू विवस रह्यौ अर है

म्हारौ खयाल है आ गत इणी साच नै दोवडावै के हरेक साहित आप आपरै सीगै अडथडै अर विगसै. हरेक रै विगसण रौ आपरौ ढाळौ अर आपरा नेम व्है उणनै नी तौ किणी दूजै साहित री ओळ माथै नेमीज सकै अर नी उणरा खावा परायै भरोसा राळीज सकै, खुद रा जोखम खुदौखुद ई उठावणा पडै

नुवी कविता आज आपारै दीठाव रौ मानीजतौ साच है, पण काई वौ तद ताई सई अरथा मे मानीजतौ व्हे सकैला, जद ताई के पूठ मे इतियास अेकठ अर असात पडचौ व्हैला निस्चै ई नी असात, अेकठ अर अपदस्थ छूटचोडौ इतियास आपारै वरतमान नै चैन नी लेवण देवैला

इतियास अर वरतमान री आ गत आपा रै दीठाव मे मौजू है पण औई तौ वौ खतरौ है जिण नै जित्तौ झेलीजैला आपा उत्ताई आपा रौ कथीज सकण आळै कविताऊ दीठाव समचै सावचेत व्हाला उणरै नैडै पूगण सकाला दीठाव रै इण दुरभाग सू आपा कद अर कीकर बारै आवाला, आ तौ वगत ई बतावैला पण आ अवस है के इतियास सारू कोई कोसिस वरतमान री कीमत माथै नी व्हैला

औ आपा रै इतियासू विकास क्रम रौ नतीजौ ई है के पैलीवार आपा रौ वरतमान किणी अैडै द्वद मे है, अर आ द्वद री गत कोरौ आपारै कविताऊ दीठाव नै ई असर मे नी लियौ, भासा अर साहित रा सगळा सवाला अर अवखाया री 'अैप्रोच' मे ई द्वद री गत उपनाय दी जैडौ के आपा देखै हा, आपा रै अठै भासा अर साहित रा सवाल आपस मे अभेद रह्या है अर साहित मे ई कविता री गत हरावळ

काई अब आपा कविता नै आ इतर दायिता सू मुगती दिराय सका ? काई आपा भासा अर साहित री अवखाया नै थोडी छेताय र देख सका ?

पकायत, अैडा निरा सारा सवाला रै समचै सीधी की उथलौ देवण री हालत मे

आपा नी हा, पण आ अवस है के आ समचै किणी हद ताई सावचेत व्हेण री कर सका वगत करता नी करता थौडा समरथ अवस आपा नै कर दिया है, जे ओळखा. ओळखा के 'दीठाव' रौ व्हेणौ ग्रेक वात है, उणरौ 'दीठ' मे व्हे सकणौ दूजी अर लाजमी नी मानीजणौ चाईजै के खुद समचै सावचेत व्हेय र आपा 'दीठाव' समचै ई सावचेत व्हा ई.

इण ग्रक रै वावत सरू मे इरादौ आधुनिक राजस्थानी कविता रौ ग्रेक ग्रक निकाळीजणौ जोईजै, इण आवार व्हियौ इरादौ हौ के इण मे नुवी कविता रै कविया तक रा सगळा ई सातग पातरा कवी अर कवितावा आय जावै अर जैडौ कैडौ ई सभव व्हे सकै सगळै दौर, कविया अर कवितावा रै समचै वाता विगता अर चरचावा मे जाईजै पछै ग्रक रौ ग्रैडौ आधार राखणौ औपचारिक अर गोळ गोळ सो व्हेतौ लागौ लागौ के औ आधार राख्या म्हे गतगुवें सू अवखाई साप्रतण मे सफळ नी व्हाला अर नी ग्रक रौ छापणौ जस्टीफाई कर सकाला

नतीजन नुवा कविया अर वारी कवितावा नै ग्रक सू वारै राखीजणौ चाईजै—तै रह्यौ, अर वारै सैयोग री कामना दूजै स्तर माथै करीजी ग्रक मे देसी, परदेसी भासावा री कवितावा रै ग्रेक ल्हौडं सै अनवाद खड गै योजना तै रह्यी अर उणमे वारौ सैयोग लेवण रै सागै सागै 'हेमाणी' रा जिका कवी किणी कारणा सू खुद री विगता खुद लिख र देवण मे समरथ नी हा, वारा इन्टरव्यू इत्याद लेवण मे लिरीज्यौ

फेर 'हेमाणी' रा कविया नै टाळती वगत ई, मोटैरूप सू आ वात चेतै राखणी पडी के कठैई वारी तादाद इत्ती नी व्हे जावै, के केवटीजै ई नी पण वारी कोई सख्या आगूंच तै राखीजी व्है-आ कैवणौ ई गलत व्हैला कविया सू कवितावा ताई अर कवितावा सू कविया ताई आवता जावता ग्रैडौ लागौ के फिलवगत ग्रेक सरूआत आसू करीज सकै. इण दौर रा कुणसा कवी अर कवितावा सिरैनाव मानीजैला-आ हाल औरू वगत रै गरभ है, इण ग्रक रौ उदेस वानै इणरूप थरपणौ नी, आ मान र चालणौ ई है के हाल वै अर वारौ दौर काइंठा कित्तीवार अर किण किण विध उथलीजैला पुथलीजैला

इण ग्रंक रै काम मे जिका जणा नेडै सू भागीदार रह्या, वा रौ सैयोग अर साथ म्हारै सारू तजरवौ रह्यौ सो तौ रह्यौ ई, खुद वा सारू ई रह्यौ व्हैला इण ढाळै सागै सागै, योजना रै मौटै मोटै प्रारूप रौ सचेत हिस्सौ वणता अर खुद रा सुझावा सू कठै कठै उणनै सुधारण रा समचा देवता लेवता काम करचा जिकौ अनभव ग्रेक पूरी टीम नै व्है, वौ काम व्हेय र काम काई हासिल करै इण सूं कम महत नी राखै.

इण ग्रक रौ काम देखती वगत म्है म्हारी भूमिका नै इण ग्रक रै सैयोगी लिखारा रै सैयोग नै अगेजण री गत ई मुद्दै राखी है प्रारूप रा इनिसियटिव लेवण लिरावण रै अलावा लिखारा रा विचार आप आपरै खुलै चितण परियाण ई लिखावट मे आया है.

म्है सगळा सैयोगी लिखारा रौ आभारी हू कै वै इण काम मे हाथ बधायौ आपरी कलम रौ सैयोग बिना किणी दुराव दोराई दियौ

राजस्थानी सोध सस्थान रा निदेसक अर चौपासणी सिक्षा समीती रा प्रवधका रौ आभार ई पूरै मन सू दरसावू जिका म्हनै औ काम करण रौ महताऊ औसर दियौ.

—तेजसिघ जोधा.

हेमांणी

उद्बोधन

म्हे आया अकल बताबा नै

म्हे आया अकल बताबा नै, जनता रौ राज जमावा नै
राजा देख समझली सगळी, रीत-भांत रजवाड़ा री
सैंग ढोल में पोल भरी है, धूम मची है धाड़ां री
धाड़ेत्यां नै धमकावा नै

बड़ा ठिकांणा जोर जतावै, करै होड रजवाड़ां री
माडाणी महाराजा बणग्या, चाल ढाल सब भांडां री
बड़पण रौ बैम मिटावा नै

मोटा अफसर लिवी मोटरां, अधबिचला घोड़ा राखै
छोटां रै आटै रौ घाटौ, रिसवत खाय धांन चाखै
भवसागर भेद मिटावा नै

कामेती, कणवारचा, भांवी, राखै ठाठ नवावां रा
चवडै चालै, चाल मुसद्दी, पड़दै किरतव कावां रा
पड़दा नै परा हटावा नै

सूम सेठिया वण्या सयांणा, लोही चूस मजूरां रौ
अेक अेक रा कर इक्यावन, सार सूत ले सूरा रौ
वोहराजी नै भिड़कावा नै

जोसी, पंडा और पुजारी, पीर पादरी साध जती
नित-नेमां रा नखरा राखै, फूट-झूठ सूं फिरी मती
अणभणिया अकल उपावा नै

खेड़ा सैं खड़वा वाळां रा सम्पत संग मजूरां री
राज हथोड़ै दातड़ली रौ, वीती वात हजूरां री
सूतोड़ा सेर जगावा नै

मैंनत री जै बोल

आ जमीं सिरां रै मोल साथी, इण रौ भारी तोल
वंदा मैनत री जै वोल

धर-मजला परदेसी आया, किवी चाकरी चोखी
सूतोडां री गरदन काटी, सरम पगात्ये नांखी
ओ रजवाडां रौ डोळ साथी, कोरी छोरारोळ
वदा मैनत री जै वोल

पाळी अूपर अेक डोकरौ, सौ जुग पैलां मरगौ
पूत मोल मे धरती दावी, नवो रावळौ वणगौ
आ जागीरां री पोल साथी, निरभै हुय नै खोल
वदा मैनत री जै वोल

दादोसा सायवं रा चाकर, मरजी रा चपडासी
पासवान रा गाभा धोया, कटगी भवं री फासी
अै हाकम हिवड़ै सोळ साथी, सारा अनगढ टोळ
वंदा मैनत री जै वोल

सेठ गया परदेस कमावण, संग ले लोटौ डोरी
दिवी धरम नै गोडा-लकड़ी, सड़पै सपत वोरी

सेठ हुया बेडोळ साथी, पेट वण्यौ है ढोल
बंदा मैनत री जै बोल

मैनत सू थे धन निपजावौ, पण अक्कल रौ घाटौ
राजा, ठाकर सेठ सिपाई, सगळा चाटै चाटौ
जद थे उतरौ खम खोल, साथी यानै दो रगदोळ
बदा मैनत री जै वोल

राजा, ठाकर, सेठ, अैलमद, निरभै मौजां माणै
मुलक-मुलक में अेकण ढाळै, कमतरिया नै ताणै
तू मन मे मत कर मोळ साथी, सारी दुनियां गोळ
बदा मैनत री जय बोल

धू-धू कारौ मच्यौ जगत में, जू ना भाखर धूजै
मोस्यारी घर मच्यौ उछाळौ, बूढा नै कुण बूझै
औ पइडै घुळग्यौ घोळ साथी, काचो टिकै न झोळ
बदा मैनत री जै बोल

थे गिणती में घणा भायला, हाकै सू क्यू डरपौ
गिणती रा तिणखा है चुगलौ, बाढेती ले झड़पौ
थे धरौ धमक नै धोल साथी, करदो बीटा गोळ
बदा मैनत री जै बोल

लाल धजा री आंण फिरै

आ लाल धजा री आण फिरै, जद कमतरियां री दसा धिरै

बीत्या जुग मैनत करतां नै, धरती धन निपजातां नै
माखण माल मुफ़त मे जातां, छाछ मलीञ्चो खातां नै
अबै हथोड़ौ-दांतड़ली, धन धरती री धणियाप करै

डिगमिग डोल रया रजवाड़ा, बडै राज रौ ज़ोर गयौ
ठाकर फिरै ठोकरां खाता, बडो रावळौ विगड़ रयौ
जाग गया धरती रा धायल, हुळस धारिये हाथ धरै

सेठां री सैणप सड़ चाली, बात विगड़गी बोहरां री
चाल उकीली चवड़ै हुयगी, पोल खुली सा चोरां री
अणभणिया आथड़वा ढूकै, धरती धूजै सूम डरै

जूंझ रया अणगिण्या जुगां सूं, जग रा करसा और मजूर
सींच धरा रातै लोही सू, रंग दियौ धज नै भरपूर
बध काट परवस कमतरियां रै हिवड़ै मे जोस भरै

दूजा रंग विणज रा वांना, रातौ रंग मजूरां रौ
हाथ हथोड़ै-दांतड़ली में वसियौ काळ हजूरां रौ
निसक चरै हळवांणी वाळा, दुसमण हळ भय खाय मरै

हळवाळा तरवारां झेली, कळवाळा तोपां दागै
दाव भूलग्या दळ-वळ वाळा, जीव छोड नै पड़ भागै
धूड़ माजनौ धाड़वियां रौ, कमतरियां रौ काज सरै

—गणेसीलाल व्यास उस्ताद

धरती अब पसवाड़ौ फेरै

काळी पीळी आंधी आई खख चढी असमांन रे
धरती अव पसवाडौ फेरै जाग मजूर किसांन रे

कुदरत लाल गुलाल उडावै पंछी गीत सुणावै रे
मेड़ी वोलै आज मोरिया, वादळ ढोल घुरावै रे
तरवर झुक झुक मुजरौ लेवै, अनदाता भगवान रे
धरती अव पसवाडौ फेरै जाग मजूर किसांन रे

हरियल थारा खेत खड़्या है ढांढा चर चर जावै रे
इमरत भरिया सड़क मतीरा आज गादडा खावै रे
चेत वावळा चोर लुटेरा लूटै है धन-धान रे
धरती अव पसवाडौ फेरै जाग मजूर किसांन रे

मड मे वोलै आज लूकड़ा सौ सौ छैन दिखावै रे
वोड विलायां फिरै कूकती भोळा मिनख डरावै रे
धरती रै वैरयां नै स्यांणा वेगौ आज पिछांण रे
धरती अव पसवाड़ौ फेरै जाग मजूर किसांन रे

छोटौ धांन वडौ है दुसमण आज कातरौ खावै रे
टिड्डी फाकी नुव धांन नै देख देख ललचावै रे
वैरयां नै धरती मे गाडौ खाई खोद खदांन रे
धरती अव पसवाडौ फेरै जाग मजूर किसांन रे

रोज रुखाळ पूंजळी बाळद आज ठगां री आवै रे
आंधा पीसै आज जमी पर बहरा मौज उडावै रे
खोटण लै लै हाथ भायला बांध झूपडा छांन रे
धरती अब पसवाड़ौ फेरै जाग मजूर किसान रे
काळी पीळी आंधी आई खख चढी असमांन रे
धरती अब पसवाड़ौ फेरै जाग मजूर किसांन रे

—गजानन वर्मा

इंकलाब री आंधी

अंधार घोर आंधी प्रचंड
आ धुवाधोर धव धंव करती !
आवै है उर में आग लियां, गढ कोटां बंगळां नै ढहती !

बेताळ बतूळौ नाचै है, जिण रै आगै सदेस लियां
राती नै काळी पीळी आ, कुण जांणै कितरा भेख कियां
वै संख बजै सरणाटां रा, कोई गीत मरण रा गावै है
डंकै री चोट करै भींतां, बायरियौ ढोल बजावै है
विकराळ भवांनी रमै भूम, धरती सू अंबर तक चढ़ती
अंधार घोर आंधी प्रचड, आ धुवांधोर धंव धंव करती

आवै है उर में आग लिया
गढ़ कोटां बंगळां नै ढहती !

नीवा रै नीचै दबियोडी, जुग जुग री माटी दे झपटौ
ले उडी किला नैं जड़ामूळ, पसवाडौ फेर लियौ पलटौ
तिणकै ज्यू उडगी तरवारां, गोचै रौ रूप कियौ भालां
रूंखा रै पत्तां ज्यू उडगी, वैलाज बचावण री ढालां
वा पड़ी उखरड़ी में बोतल, मद पीवण रा प्याला उडग्या
मैफिल रा उडग्या ठाट-बाट, महला रा रखवाळा उडग्या
वै देख जुगां रा सिंघासण, रड़वड़ता पड़िया ठोकर में
वै देख हजारां मुकट आज, उडतोड़ा दीखै अम्बर में
वै ऊंधा लटकै अधरवम्ब, नहिं झेलै अम्बर नै धरती
अधार घोर आंधी प्रचंड, आ धुवांघोर धंव धंव करती

आवै है उर में आग लियां
गढ कोटां वगळां नै ढहती !

आंधी आ अजब अनूठी है, डूंगर उडग्या सिल उडी नहीं
सिमरथ वै ढहग्या रंग-महल, हळकी झूपड़ियां उडी नहीं
उड़ गयौ नवलखौ हार देख, मिरिणयां री माळा पडी अठै
उड गई चूडियां सोनै री, लाखां रो चुडलौ उडै कठै
उड गया रेसमी गदरा वै, राली रै रज नहीं लागी
आ फिरै कामेतरण लड़ाभूम, लखपतणी मरगी लड़थड़ती

आवै है उर मे आग लियां
गढ कोटा वगळा नै ढहती !

अंधकार मत जांरा वावळा, इकलाव री छाया है
इरा भाग वदळिया लाखां रा, केई राजा रंक वरणाया है
रे आ वा काळी रात जका, पूनम रौ चांद हंसावै है
रे आ वा वाल्ही मौत जका, मुगती रौ पथ वतावै है
रे आ वा भोळी हंसी जका, कै मरती वेळा आवै है
इरा धुंवांधार रै आंचळ में, इक जोत जगै है जगमगती
अंधार घोर आंधी प्रचंड, आं धुंवाधोर धव धंव करती

आवै है उर में आग लियां
गढ़ कोटा वंगळा नै ढहती !

चेत मांनखा

खेत खड़रा नै हळ ले हाली ,
जद करसां री टोळी ;
कितरा दिन तक सवर करैला ,
माटी हस नै वोली :

रे वदा चेत मांनखा चेत जमांनो चेतरा रौ आयौ ।

इरा माटी में सौ सौ पीढ़ी, मरगी भूखी प्यासी;
भाग भरोसै रह्यौ वावळा, प्रीत करी आकासी;
कदै तौ पड़ग्यौ काळ अभागौ, गिरागिरा काढ्यौ दोरौ,
कदै तौ ठाकर लाटौ लाट्यौ, कदै लाटग्यौ वोरौ,

कदै तौ बैरी दावौ पडग्यौ, कदै आयगी रोळी;
कितरा दिन तक सबर करैला, माटी हस नै बोली :

रे बंदा चेत मांनखा चेत
जमांनौ चेतंण रौ आयौ !

मांग्यां खेत मिळै नी करसा मोल चुकांणौ पडसी;
मोत्यां मूंगी इण धरती रौ, कौल निभांणौ पडसी;
सांमीं छाती जे कोई आयौ, जोर जताणौ पडसी;
खेत खडंतां हळ जे रोक्यौ, हाथ कटांणौ पड़सी;
लोई बिना रग नी आवै धरती पडगी धोळी;
कितरा दिन तक सबर करैला, माटी हसनै बोली :

रे बदा चेत मांनखा चेत
जमानौ चेतण रौ आयौ !

माटी थनै बोलणौ पड़सी

मून राखियां मिनख मरैला
धरती नेंम तोड़णौ पड़सी
करणौ पड़सी न्याव छेड़लौ माटी थनै बोलणौ पड़सी

कुण धरती रौ अदाता है, कुण धरती रौ धारण हार ?
कुण धरती रौ करता- धरता कुण धरती रै ऊपर भार ?
किण रै हाथा खेत-खेत मे, लीली खेती पाकै है ?
किण रै पाण देस री गाडी, अधविच आती थाकै है ?
कहणौ पड़सी खरौ न खोटौ, सांचौ भेद खोलणौ पड़सी ?
माटी थनै बोलणौ पड़सी !
मून राखिया मिनख मरैला
धरती नेम तोड़णौ पड़सी !

थू जाणै है पीढ़ी पीढी, खेत मुलक रा म्हे खड़िया
थूं जाणै है काळ वरस मे, भूख मौत सू म्हे लड़िया ।
थूं जांणै है सिंघासण मे हीरा पन्ना म्हे जड़िया
थू जाणै है कोट कागरा, मैल माळिया म्हे घड़िया ।
म्हारी खरी कमाई कितरी, लेखो थनै जोड़णौ पडसी

माटी थनै वोलणौ पड़सी !
मूंन राखिया मिनख मरैला
धरती नेम तोड़णौ पड़सी !

आ वात वडेरा कैता हा, धरती वीरा री थाती है
माटी अै करसा भूठा है, यांरी तौ काची छाती है
ठंडी माटी रा मुडदा है, दिवळै री बुझती वाती है
माटी रा म्हे रंगरेजा हां, ज्यां कारण धरती राती है
जे करसा मोल चुकाता व्है, तौ धड़ नै सीस तोलणौ पड़सी

माटी थनै वोलणौ पड़सी !
मून राखियां मिनख मरैला
धरती नेम तोडणौ पडसी !

जद मेह अंधारी राता में, तूटोडी ढांणी चंवती ही
तौ मारू रा रंगमैलां मे, दारू री मैफिल जमती ही
जद वां ऊनाळू लूआ में, करसै री काया वळती ही
तौ छैल भंवर रै चोवारै, चौपड़ री जाजम ढळती ही
इण भरी कचेड़ी देण गवाही, ऊभा घड़ी दौड़णौ पड़सी

माटी थनै वोलणौ पडसी !
मूंन राखियां मिनख मरैला
धरती नेम तोडणौ पड़सी !

उछाळौ

सज्जो अेक संघट्टण पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज वढौ
मन मे मिनखापण नैण सुरापण, खाधै खांपण मेल कढौ
तपै अम्बर भांण धरा किरसांण, पसीनै रै पाण ज पाकत खेती
पण मूंछा रै तांण किया करडांण, विना घमसांण कोई लाटले खेती !

ढाणी रै ढांणी अखंडी व्है उच्छव, गाळ कसूंवौ रे ढोल ढमक्कै
डंकै री चोट त्रंवाळ घमंक्कै, धरती रा किरसांण धमंक्कै
सज्जो अेक संघट्टण पंथ पलट्टण, राज उलट्टण आज वढ़ौ
मन में मिनखापण नैण सुरापण, खांधै खापण मेल कढौ !

जांणै केहरी गेह सूं आज कढ्यौ, जाणै मेह प्रचड तूफांन चळ्यौ
जांणै वीज पळापळ मेह चळ्यौ, जांणै तीड धरातळ घेर चळ्यौ
जाणै पछी झपट्टण बाज चळ्यौ, जाणै वीज कडक्कत गाज चळ्यौ
सज्जो अेक संघट्टण पथ पलट्टण, राज उलट्टण आज बढौ !
मन मे, मिनखापण नैण सुरापण, खाधै खापण मेल कढौ !

—रेवतदांन चारण

कुण जमीन रौ धणी

कुण जमीन रौ धणी ?

हाड मास चाम गाळ
खेत मे पसेव सींच,
लू लपट ठंड मेह
सै सवै दात भींच,
फाड चौक कर करै जोतणी र बोवणी,
वौ जमीन रौ धणी'कै औ जमीन रौ धणी ?

मद पिवै उडै मजा
करै जुलम सैंकडी,
ठग वण्या ठाकरा
हद हुई हैंकडी,
रात दिन रैत नै लूटणी'र खोसणी,
औ जमीन रौ धणी'कै वौ जमीन रौ धणी ?

हळ जुप्यौ जद विक्या
फूस पांन टापरौ,
पेट काट बीज रौ
करी जुगाड वापड़ौ,
पडी छांट कयौ हरख रामजी भली सुणी,
औ जमीन रौ धणी'कै वौ जमीन रौ धणी ?

खड़ी फसल करा कुडक
भरै ब्याज वाणियो,

वळद वेच व्याज रै
व्याज नै उघारिणयों,

राज सीर चोर कै के करै रे करसणी,
ओ जमीन रो धणी'कै वो जमीन रो धणी ?
कुण जमीन रो धणी ?

—कन्हैयालाल सेठिया

परण्या डरै मती

थू भीड़ा सू भय खाय, परण्या डरै मती
ग्रै डरियोड़ा मर जाय, साजन डरै मती
वै जगत उवारै सूरमा, ज्या लडता रा सिर जाय

ग्रै लांठा भिड वाजै घणा
ग्रै दोरा दिन व्है देस रा, जद ग्राळाणी कर जाय
थू उण गैलै मत जाय, परण्या डरै मती

वा निपट निपूती मावड़ी
जठै पूत कपूता निवडै, कोई रण छोडै घर जाय-साजन०
नर सूरा कद फिर जाय—परण्या डरै मती

वा साच सवागण सोवणी
जिण रणबका भरतार सू, सगळी साधां सर जाय-साजन०
भल नाक रैवै नर जाय—परण्या डरै मती

ग्रा धिक मिनखा देह ग्रापणी
जद मूछाळा मिग्गा वणै, कोई धूसौ सुण डर जाय-साजन०
ज्यूं पाका फळ खिर जाय—परण्या डरै मती

ग्रै धन, टावर नै कामणी
ग्रो देसडलो डूवा थका, सै जीवतड़ा मर जाय—साजन०
ग्रै देस तिर्‌या तिर जाय, परण्या डरै मती

दिया जगा दे

साथण दिया जगादे
दीवाळी सिणगार सयाणी, जुग रौ पथ उजा दे
साथण ! दिया जगा दे

औ नवजुग नितजुग सूं न्यारौ, लिछमी नै पुरसारथ प्यारौ
सुध तिरसै जीवण नै साथण ! जुग री गत समझा दे
क्रोड हाथ कारज में लागै, क्रोड मिनख री सुध-बुध जागै
सीर सम्यै हथबळ नै साथण ! कळ पर काम लगा दे
साथण ! दिया जगा दे

छिण बदळै, पळ मे बधजावै, हुनर मजूरी हेत निभावै
जुग साधौ सुळझावण साथण ! समझ-सुधा बरसा दे
साथण ! दिया जगा दे

—गणेसीलाल व्यास उस्ताद

पग मंडणां

मंडता जावै धरती माथै, पग मंडणां इतियास रा
सूरज उगतौ करै सिलामी, तारा हंसै अकास रा !

अै हिम्मत रा हाथ जका मे इकलाव री अद्भुत सगती
वटनै रहसी गिण्या दिन मे, हमैं मुलक री धन नै धरती
भूख बेकारी मिटनै रहसी, अै पग है विसवास रा
मडता जावै धरती माथै, पग मंडणां इतियास रा
सूरज उगतौ करै सिलामी, तारा हसै आकास रा !

देख मिनख री करडी मैणत, सैचन्नण सचारै है
मोत्यां जैडी निपजै खेती, माटी रूप संवारै है
बीत चुकी अंधियारी राता, आया दिन उजियास रा
मडता जावै धरती माथै, पग मडणा इतिहास रा !

वाध वणै नैरां खुद जावै नवौ धांन मुळकावैला
नवै देस रौ नवौ मानखो नवा गीतड़ा गावैला
चारूं कानी नवी चेतना, नवा कदम है स्रास रा
मंडता जावै धरती माथै, पग मंडणां इतियास रा!
सूरज उगतौ करै सिलांमी, तारा हंसै अकास रा!

—रेवतदांन चारण

जुग-समझावण

थानै वार-वार समझावूं, साजन था पर वारी जावू
कमरा वधी-बंधाई राखौ
थारै सिर सूं भार हटावूं, भुज मे दूणौ जोर वधावू
हिवडै हूंस वणाई राखौ

कळ-वळ कठण काम री वेळा, सौ दिन मिनख मजूरी मेळा
जन रै सुख सारू जग पळटण, हिळमिळ मिनख कमावै भेळा
पगत्या साथै ही चढ़ जावू मारग साथोसाथ वणावूं
जिवडै जास जमाई राखौ

जन रै जोर मिली आजादी, मन रै आडी पाळ हटादी
तन रै वळ रा पांख उघड्या पगरी वेड्या सैंग तुडादी
साथै खाच खुरी आ जावू जन नै समझूं नै समझावू
हरदम हेत हिलाई राखौ

तन री ताकत पूरी मागै, धन री धाम हजूरी मांगै
जन रै जाग्योडै जीवण सू, मरदां मुलक मजूरी मागै
पग-पग थारी साथ निभावू, कमतर जोडै खड़ी कमावूं
पथ मे जोत जगाई राखौ

सगळा खावै अेक कमावै, वौ घर कीकर ऊचौ आवै
आधै जीवण री जोडायत, सूता मुलक पताळा जावै
मुख सूं घूंघट परौ हटावू, नैणा मिनखपणौ भर लावूं
धण नै साथ सभाई राखौ

हेत चाईजै

जन-जन रै मन हेत चाईजै
जुग साधै, सकट री बेळा, सगळा सुभट सचेत चाईजै

जिण जनता मे फूट-फजीती, खुली किंवाड्यां, लोग नचीता
तक मिलता उण घर मे बडसी, लू क, सियाळया, गडक, चीता
जन-बळ भेळप बजर कटै, पर तन-बळ तेज समेत चाईजै

धरम-ढूंग रा सुल्या खळीता, जात पांत रा जग्या पलीता
जुग जीवण मे लाय लगाता, पनप रया जन लोही पीता
फूट समंद री भंवरां तिरबा, जन-मन भेळप सेत चाईजै

लिख्या लेख सू लोक मुगत है, पण जीवन जजाळ जुगत है
नवा राव नै नवा रावळा, कुण जाणै जन री हुकमत है
काम करै वारी रसना मे, करी बात रौ बैंत चाईजै

अेक चरै चौरासी पीसै, उण घर समता किण बिध दीसै
जन रा पीड़क करै खंखारा, जन रा भीडू मुड़दा घीसै
धाडवियां रै धूड माजनै न्हाखण मूठी रेत चाईजै

नेता, हाकम नै इधकारी, हळधर कळधर जनता सारी
अेकमनौ पुरसारथ कर नै, मुलक करै केसर री क्यारी
भुज मैणत रा सीरी उपजै, खरौ कमायौ खेत चाइजै

धर खैंचण दुसमण सीवाडै, दो चीता दोनू दिस दहाड़ै
अेकमनौ जाग्या जन जीवण, अेक भिड़ै इक्कीस पछाडै
बजरबळी भारत रै रथ रा, सगळा तुरग कुमेत चाईजै

जथानो, कस्मीर, बगाली, पंजाबी, उडिया, मलियाळी
करणाटक गुजरात, मराठा, केरल उतराखंड रा हाळी
वा मे भुज मैणत भेळप री, नव जीवण री नैत चाईजै

रुक मत भाई

ओ रे भाया, रुक मत भाई, झुक मत भाई

ऊजड़ खडती आंधी आई
दो झटका दे आ ढळ जासी, आ गळ जासी, रेत चढाही
रुकता पैली आप मरैली, जीव जठै तक आगै जाही

ओ रे वेली, थक मत भाई, तक मत भाई
वाट कठण, काया कंवळाई
अडव रगीळा, काळा, भूरा, पीळा जागै वाट वटाही
तू सागै आगै वध जुग रै
जीवण दे, जीवण रै ताईं

ओ रे सुगणा, छक मत भाई, तक मत भाई
नवी कठै है वरग लडाई
धर मजलां जीवण जोडै वध
दीवट लेले पथ वताही

ओ रै उरजण डर मत भाई, मर मत भाई
दिन-दिन दीसै मजल संवाई
आ थारी काया पड जासी
पिण दे जीवण चाल वटाही
नित आगै वधती जिदगानी
आ दीवट आगै ले जाही

आगै हळ भई

साथ संभळ, पुरसारथ रळ भई
आगै हळ भई, आगै हळ भई

मुलक पुतळौ, सडका नाड, भुज भेळप सूं वसै उजाड
खोद सुरंग-पूळ, सूधा कर सळ, वुलडोजर सू वाठ उथळ भई
आगै हळ भई, आगै हळ भई

जमी खोद, जड-झांड़ उखेल,कूट कांकरी, डांवर ठेल
मुड़ माटी ज्यूं बैठै मेळ, हिलमिळ हुळस पसीनौ मेळ
भमक मोगरा लाख भुजा वळ, उतरौ मिनख इतौ सौ थळ भई
आगै हळ भई, आगै हळ भई

सुथरी सडक अगाड़ी देख हलै विग्गज री रेलमपेल
दुख-दाळद नै दूर धकेल, दे आळस नै अळगो मेल
जग पुरसारथ पसवाडै भर, हथ-मैंग्गत सूं मुलक वदळ भई
आगै हळ भई आगै हळ भई

—गणेसीलाल व्यास उस्ताद

हाळी हलकारौ दे

हाळी हलकारौ दे
पून फटकारौ दे
होळै-होळै हालै म्हांरा पीपळिये रा पांन
धोरै ऊपर बाधलै थूं झूंपड़ी मचाग्ग

हाळी हलकारौ दे
पून फटकारौ दे
धोरा-धोरां वीज दे तूं बाजरौ गुंआर
डैरचा-डैरचां वीज दे थूं मौठ अर जुआर

हाळी हलकारौ दे
पून फटकारौ दे
होळै-होळै हालै म्हारा पीपळिये रा पांन
धोरै ऊपर बांधलै थू झू पडी मचाग्ग

हाळी हलकारौ दे
पून फटकारौ दे
हाथ मे गंडासी झाल खेत में पधार
अगड़ बुहार भाई बगड बुहार
कर अलसोट भाई खेत नै सुधार

हाळी हलकारौ दे
पून फटकारौ दे
होळै-होळै हालै म्हारा पीपळिये रा पांन
धोरै ऊपर वांधलै थूं झू पड़ी मचांण

हाळी हलकारौ दे
पून फटकारौ दे

—गजानन वर्मा

जागण रौ गीत

मीच आखड़िया, कर अधारौ
मत अधारौ सहौ
जागता रहौ
ताकता रहौ
सपनां रौ राजा चदरमा, इमरत पी मर जासी
सोना री जागीरां खोकर सै तारा घर जासी
छिण मे उठसी रैणादे रा काळा पडदा
चन्नाणा री किरणां सू ठगणी छीया डर जासी
नवी जोत मे राख भरोसौ
नवी काणिया कहौ
जागता रहौ
सीटी रौ सरणाटौ वाजै, मील मजूरी चालां
खेतां मे पंछीडा वोलै, हळ रा हाट सभाळा
हाट हटडिया खोला, दिन री वाळद आई
मैणत भूखी रहै न कालै, इसौ जमानौ पाळां
ऊगै है सोना रौ सूरज
मत आळस मे वहौ
जागता रहौ

—सत्यप्रकास जोसी

बटाऊ

बटाऊ, चाल्या मजला मिळसी !

मन रा लाडू खा'र कदेई
सुण्यौ न कोई धाप्यौ ?
उग्यौ हथेळी रूख कणाई
देख्यौ नही फळाप्यौ ?

सूरज वौ ही जकौ रात री
छाती फाड निकळसी !
बटाऊ, चाल्या मजला मिळसी !

गेलै रौ तौ काम अतौ ही
पग नै सीध बतावै,
वौ मजला नै घर बैठा ही
किण नै ल्या'र मिळावै,

इसी हुया तौ पग आळा रो
डाव पांगळा धरसी,
बटाऊ, चाल्यां मजला मिळसी !

तपौ तावडौ लुवा वाजौ
चावै चढौ थकेलौ
पण बगतौ जा सुण घर कूचा
धर मजला रौ हेलौ,

जद सपनै री कळी थारली
फूल साच रौ बणसी !
बटाऊ, चाल्या मजला मिळसी !

—कन्हैयालाल सेठिया

जातरा

गादोतरौ रोप दै पैलां गढ रै आगै
मेड़ी रै ताळा जड, पटका नुवी हवेली
सपना नै साथै लै, सपनौ साचौ साथी
गावां सूं नगरां सू आगै वधजा वेली

च्यारू कानी रेत-रेत है, रूंख न दीसै
मारग तौ सगळा रा सगळा लारै थमग्या
कद ऊठैला सवा लाख री सबद-पालकी
माटी रा ऊचा धोरा मे करहा गमग्या

आंधी सोधै है फाटा इतियास पुराणा
मिरग भरम मे छाव सोधता भाग रह्या है
चाट पसीनौ आपसरी मे तिरस बुझावै
दिन ऊगां अग-मारण केहर जाग रह्या है

भरम मिरगलां रौ साचौ ही सोळै आना
सोधणवाळौ पग पग रूप बदळतौ चालै
जो वहीर व्है वौ ई कोनी पूगै मजला
पूगै मजलां, वौ कोनी जो घर सू हालै

मत पाणी री आस, वाट मत जो छीया री
दिन करता ई रात अठारी रड़ियाळी है
नाचै है वेताळ वथूळौ, मीरा नाचै
पग रै खोजा अठै चालणौ ई गाळी है

डर मत थारा पग मंडण नै काळ न मेटै
पण बदळैला रूप, फिरैला पू न वुहारी
बण जावैला ताळ अड़ौग्रड दूधा भरिया
कुरजां बैठी कुरळावैली आरी-वारी

तप सूरज रै साथै, थू दूजौ सूरज है
लूवा री वाथा मे वधजा विना बुलावै
सेज बदळलै, खेजड़ली सू सेज थोर री
पाणी नै मत पूछ, गागली गीत सुणावै

देख देख इण सरणाटा मे काई दीसै
लिया हाथ मे कळस द्रोव कोई देवी है
पीळौ ओढचा, लाल घाघरौ, लाल काचळी
सुवरण वरण, चरण पचाइण-रथ सेवी है

पैली थारी जीभ काट चरणा मे धरदै
सीस चढावौ करदै, आ ई रीत सरण री
सपनौ मत दै, लोही दे दै, पीड भूल जा
पीड जलम री, पीड भोग री, पीड मरण री

—सत्यप्रकास जोसी

जाग रणबंका सिपाई

जाग रणबका सिपाई !

आपणौ संसार न्यारौ जीवतौ मरुदेस प्यारौ
रुळ रह्यौ निकमा पगा मे धूड आपा रौ जमारौ
आज राजस्थान थारौ, ग्यान नै अभिमान सारौ
सिखर सूनौ बेकठौ नै, सिर छिपावै बड बिचारौ
उण घडी मे बेर क्यूं बीरा लगाई !
जाग रणबका सिपाई !

जिण रमांयौ भील मैणौ, सूरमौ रजपूत सैणौ
आज उण आडावळा रौ हाय ! गमग्यौ सीस गैणौ
फेर थारौ नीद लेणौ, ख्यात सूं विपरीत रैणौ
क्यू गमावै सैंग पीढ्‌यां री कमाई
जाग रणबका सिपाई !

आज सादै आदमी नै और अक्कल री कमी नै
राख आडा दे दिलासा, जीमग्या जबरा जमी नै
रगड़ा री बेगमी नै, माभियां री मरदमी नै
भूल नै देखै तमासा, भूत लागौ हाकमी नै
राज री कू ची दलाला नै दिराई !
जाग रणबका सिपाई !

बाप नै बेटा छळै है, रूख काटा रा फळै है
आज दुसमण है गढी मे, घर-दिया सू घर बळै है
सूरता गम मे गळै है, पंच मारग सू टळै है
राज-मद री घट-चढी मे, पाप रा पूळा पळै है
भूलग्या सिरपच निबळा सू सगाई !
जाग रणबका सिपाई !

हेत मे हडताळ अड़गी, बेस मे सुखचाल गडगी
खू सड़ा री खायकी मे खेत-खड़ री खाल कढगी
समझणां री साख सड़गी, वीरता वेमार पडगी
लीडरां री लायकी मे, वाणियां री वास़ वड़गी
नायकां री नीत सूं हटगी भलाई
जाग रणबका सिपाई !

खाच खूटी सत सोवैं, पंथभूला तत खोवैं
साख खोटी घाल खत मे, निरवळा लोही निचोवैं
देख ! आडौ मिनख रोवैं, रगत सू धरती भिजोवैं
देस रा अवळा समा मे आज थारी वाट जोवैं
जाग वीरा जीत वुध-वळ री लडाई !
जाग रणवका सिपाई !

—गणेसीलाल व्यास उस्ताद

◇

सिरजण री वलिहार

कविया आछी करी रे कतार
थारै सिरजण री वळिहार !

खूणै वैठ रोवणौ माड्यौ
गया जमारौ हार
अपणौ रोणौ तौ सह रोवै
थू रौवै धिरकार

जुग री जुगत जोवणौ माड्यौ
जुग नाही रिझवार
वहती वेळा मे वह जावै
कुण झालै पतवार

रीझणिये री रीझ देख मत
देख जूण रौ सार
पिणिहारी ठालै घट ऊभी
थूं ऊभौ मझधार

कविया आछी करी रे कतार
थारै सिरजण री वळिहार !

—नारायण सिंघ भाटी

जस

अरज

सारद माता सीस निवाऊं, औ बर दीजै
मन री वाता सैज सुणाऊं, आखर दीजै

सबद अकथ री मूंन तुड़ावै
सबदां री स्रुतियां बण जावै
ग्यान सिंवट सबदा में आवै
वांणी ! औ किरयावर कीजै

प्राणां सूं सबदां नै सिरजूं
सबदा सूं जग-पीडा परसूं
रूप अरूप सबद सूं निरखूं
सबदां मांही आदर दीजै

सवदा सू भारी तुल जाऊं
सवदा सू मूंघौ विक जाऊं
सवदां मे जीऊं मर जाऊं
सवदा रौ आगौतर दीजै

सारद माता सीस निवाऊं, औ वर दीजै
मन री वाता सैज सुणाऊ, आखर दीजै

सूरज स्तुति

[गीत प्रहास साणौर]

नमौ आज रा जळहळता आदीत तिमहर
अगूणी काल ऊगै न ऊगै
तपावै नही हेम गिरियद आतप
प्रथी लग किरण पूगै न पूगै

सई साभ सेजा रमण रग सागर
कदै रूप धरलै धूम काया
अधर पूत ऊठै ढकै जोत आडण
भुरजाळ वाळ महराण जाया

सध्या लोक सू अेक विग्यान सूरज
नुवी आ सगत ओभडै नीवा
भळावोळ अणुरा हुवै भोम दाभै
जगत रा जीव कोई न जीवा

धरण वण तरण आप ही जद धधूकै
विधाता डुळै, खुळै ईस ताळी
धरा आख आगै भम्मकै अधारौ
नमौ आज रा नव असुमाळी

—सत्यप्रकास जोसी

◇

मरूधर महिमा

मरूधर म्हानैं पोखिया, मरूधर म्हारौ प्राण।
राखा ग्राखै जगत मे, मरूधर रौ म्हे माण ।।

म्हारै मन मे मोद ग्रत, मरूधर म्हारौ देस।
मरूधर रा म्हे लाडला, गावा गीत हमेस ।।

वै धोरा वै रूंखडा, वा सागण वणराय।
वै साथैरा साइना, कियां भुलाया जाय ।।

जावा च्यारूंकूट मे, जोवा जगत तमाम।
निसदिन मन रटतौ रहै, प्यारौ मरूधर नाम ।।

—चन्द्रसिंघ

जलमभोम

ग्रा धरती गोरा धोरां री,
ग्रा धरती मीठा मोरां री,

ईं धरती रौ रुतबौ ऊचौ,
ग्रा बात कवै कूचौ कूचौ,

ग्रा फोगां मे निपज्या हीरा,
ग्रा बाठा मे नाची मीरा,

पन्ना री जामण ग्रा सागण,
ग्रा ही प्रताप री मा भागण,

दादू रैदास कथी वांणी,
पीथल रै पाण रयौ पाणी,

जौहर री जागी ग्राग ग्रठै,
रळ मिलग्याराग विराग ग्रठै,

तलवार उगी रण खेतां मे,
इतियास मडचोड़ा रेता मे,

वौ सत रौ सीरी ग्राडावळ,
वा पत री साख भरै चवळ,

चूडावत मांगी सैनाणी,
सिर काट दे दियौ क्षत्राणी,
ई कूख जलमियौ भामासा,
राणा री पूरी मन आसा,

—कन्हैयालाल सेठिया

म्हारौ देस

सोरा कठै सपूत, दोरौ ज्यारौ देस
धोरा वाळौ, डूंगर वाळौ म्हारौ देस
ओ वीरा रौ देस
ओ कवियां रौ देस
ओ लिछमी रौ देस

वा मरदा री पाण देखजौ
धोरा धाम वसाया जे
पग उरवाणा, फाला फूटचा
रज मे प्राण मिटाया जे
सौ सौ कोसा नीर सोधता
मिनख मिरगला वण भटक्या
आंधी चाली, उठ्या वथूळा
रूंख छाहड़ी नै नटग्या
वादळा नै अणखै, चढियौ सूरज मेख
धोरा वाळौ, डूगरवाळौ म्हारौ देस

मिली वांझडी सूखी धरती
खोदी, जोती, बोई वै
आगळियां मे आंटण पडग्या
आस न छोडी तौ ई वै
आखी ऊमर लोई सींच्यौ
पाक निपज्यौ आधौ रे

ऊडी ऊंडी माटी खोदी
ठाडौ पाणी लाधौरे
भूखौ तिरसौ सैण, सेवट जीत्यौ क्लेस
धोरा वाळौ, डूंगर वाळौ म्हारौ देस

हरा नींमडा नै बावळिया
रखवाळा है सैणात रा
काचर बोर मतीरा गाजर
मीठा फळ है मैणात रा
सगळा मिळनै खेत खड्यौ रे
सगळा पांणी पायौ हौ
सगळा मिळनै धन निपजायौ
सगळा मिळनै खायौ हौ
सगळा मांणस अेक, सरीखौ सबरौ भेस
धोरा वाळौ, डूगर वाळौ म्हारौ देस

पण कोई री नीत बदळगी
साथै लस्कर ऊभौ हौ
राज करण नै मिनखां माथै
नवौ मांनखौ ऊगौ हौ
अेक आदमी राज दबायौ
अेक लियौ धन हाथां में
बाकी सगळा टुग टुग जोई
चतर चोर री घाता नै
सही पेट पर लात, खिचाया कवळा केस
धोरा वाळौ, डूगरवाळौ म्हारौ देस

समौ फेरियौ है पसवाड़ौ
राजावा री पांत गई
ठाकर री ठकराई ऊठी
सिरदारां री खांप गई
पूतां रै पग आई धरती
अब धन बटणौ बाकी है

जग जुगा तक कियौ वडेरा
उण री आ परसादी है
टावरियां मत सोवौ, जागै थारौ देस
धोरा वाळौ, डूगरवाळौ म्हारौ देस

औ वीरा रौ देस
औ कविया रौ देस
औ लिछमी रौ देस
सोरा कठै सपूत, दोरौ ज्यांरौ देस
धोरा वाळौ, डूगर वाळौ म्हारौ देस

—सत्यप्रकास जोसी

पातल अर पीथल

अरे घास री रोटी ही जद वन विलावडौ ले भाग्यौ।
नांन्हो सौ अमरयौ चीख पड्यौ राणा रौ सोयौ दुख जाग्यौ॥

हूं लड्यौ घणौ हूं सह्यौ घणौ
मेवाडी मान बचावण नै,
हू पाछ नही राखी रण मे
वेर्‍या रौ खून वहावण मे,
जद याद करूं हळदीघाटी नैणां में रगत उतर आवै।
सुख दुख रौ साथी चेतकडौ सूती सी हूक जगा जावै॥

पण आज विलखतौ देखू हूं
जद राजकवर नै रोटी नै,
तौ क्षात्र-धरम नै भूलू हू
भूलूं हिंदवाणी चोटी नै,
मैं'ला मे छप्पन भोग जका मनवार विना करता कोनी।
सोनै री थाळ्या नीलम रै बाजोट विना धरता कोनी॥

अै हाय जका करता पगल्या
फूला री कंवळी सेजा पर,

वै आज रूळै भूखा तिरसा
हिंदवाणै सूरज रा टाबर,
आ सोच हुई दो टूक तडक रांणा री भीम बजर छाती।
आंख्या मे आसू भर बोल्या हू लिखस्यू अकबर नै पाती।।
पण लिखू कियां जद देखू हू आडावळ ऊचौ हियौ लियां।
चितौड खड्यौ है मगरां मे विकराळ भूत सी लिया छिया।।

हू झुकू किया ? है आण म्हनै
कुळ रा केसरिया बाना री,
हू बुझू किया ? हू सेस लपट
आजादी रै परवाना री,
पण फेर अमर री सुण बुसक्या राणा रौ हिवडो भर आयौ।
हू मानू हू मलेच्छ थनै समराट सनेसौ कैवायौ।।
राणा रौ कागद बाच हुयौ अकबर रौ सपनो हौ साचौ।
पण नैण करया विसवास नही जद बाच वांच नै फिर बांच्यौ।।

कै आज हिमाळौ पिघल बह्यौ
कै आज हुयौ सूरज सीतळ,
कै आज सैस रौ सिर डोल्यौ
आ सोच हुयौ समराट विकळ,
बस दूत इसारौ पा भाज्या पीथल नै तुरत बुलावण नै।
किरणा रौ पीथल आ पूग्यौ औ साचौ भरम मिटावण नै।।

वी वीर बाकुरै पीथल नै
रजपूती गौरव भारी हौ,
वौ क्षात्र धरम रौ नेमी हौ
राणा रौ प्रेम पुजारी हौ,
बैरचां रै मन रौ काटौ हौ वीकांणौ पूत करारौ हौ।
राठौड रणा में रातौ हौ बस सागी तेज दुधारौ हौ।।

आ बात पातस्या जाणै हौ
घावां पर लूण लगावण नै,
पीथल नै तुरत बुलायौ हौ
रांणा री हार बचावण नै,
म्हे बांध लियौ है पीथल सुण पिंजरै मे जंगळी सेर पकड़।
औ देख हाथ रौ कागद है थू देखां फिरसी कियां अकड़।।

मर डूब चळू भर पाणी में
बस झूठा गाल बजावै हौ,
पण टूट गयौ वी राणा रौ
थूं भाट वण्यौ विड़दावै हौ,

मैं आज पातस्या धरती रौ मेवाड़ी पाग पगां मे है।
अब बता म्हनै किण रजवट रै रजपूती खून रगा मे है?

जद पीथल कागद ले देखी
राणा री सागी सैनाणी,
नीचै स्यूं धरती खसक गई
आख्या में आयौ भर पाणी,

पण फेर कही तत्काळ सभळ आ बात सफाई झूठी है।
राणा री पाग सदा ऊंची राणा री आण अटूटी है।।

ल्यौ हुकम हुवै तौ लिख पूछूं
राणा नै कागद रै खातर,
लै पूछ भलांई पीथल थूं
आ बात सही बोल्यौ अकबर,

म्हे आज सुणी है नाहरियौ
स्याळा रै सागै सोवैलौ,
म्हे आज सुणी है सूरजड़ौ
बादळ री ओटा खोवैलौ,

म्हे आज सुणी है चातगड़ौ
धरती रौ पाणी पीवैलौ,
म्हे आज सुणी है हाथीडौ
कूकर री जूणा जीवैलौ,

म्हे आज सुणी है थका खसम
अब राड हुवैली रजपूती,
म्हे आज सुणी है म्याना मे
तरवार रवैली अब सूती,

तौ म्हारौ हिवडौ कांपै है मूछ्या री मोड मरोड़ गई,
पीथल नै राणा लिख भेजौ आ बात कठै तक गिणा सही?

पीथल रा आखर पढता ही
राणा री आख्यां लाल हुई,

धिक्कार म्हनै हू कायर हू
नाहर री अेक दकाल हुई,

हूं भूख मरूं, हू प्यास मरूं
मेवाड धरा आजाद रवै,
हू घोर डाबडा मे भटकूं
पण मन में मा री याद रवै,

हू रजपूतण रौ जायौ हू रजपूती करज चुकावू ला।
औ सीस पड़ै पण पाछ नही दिल्ली रौ मान झुकावू ला॥

पीथल रै खिमता बादळ रौ
जो रोकै सूर उगाळी नै,
सिघा री हाथळ सह लेवै
वा कूख मिली कद स्याळी नै?

धरती रौ पाणी पिवै इसी
चातग री चूंच बणी कोनी,
कूकर री जूंणा जिवै इसी
हाथी री बात सुणी कोनी,

आं हाथा मे तरवार थकां
कुण रांड कवै है रजपूती?
म्याना रै बदळै बेरचा री
छात्या मे रैवैली सूती,

मेवाड धधकतौ अगारौ आख्यां में चमचम चमकै'लौ।
कड़खै री उठती तानां पर पग पग पर खाडौ खड़कैलौ॥

राखौ थे मूंछ्या अेठौड़ी
लोही री नदी बहा दूंला,
हू तुरक कहूंला अकबर नै
उजड्यौ मेवाड़ वसा दूंला,

जद राणा रौ सदेस गयौ पीथल री छाती दूणी ही।
हिंदवांणौ सूरज चमकै हौ, अकबर री दुनिया सूनी ही॥

—कन्हैयालाल सेठिया

◇

दुर्गादास

धीरज न इत्तौ धारै हियौ
कै आसरा थारौ जस दरसाऊं प्रवध मांही,
वंधियौ न किणी वधेज मन-पत
सौ वधै किम अमीणा छंद मांही ?

दोयण कुण थारा दुर्गदास ?
दोयण मा-भोम रा तूझ दोयण
न हिंदुआ हेत हय पाडिया,
न मुगल वाढवा बाढाळी झाली,
करम-खेतरा माझी आसोत—
थारी कीरत माणसा पंथ हाली ।।

काळी घणघोर घटा ऊमटी—
अचाणी तेग-वेग सूं विपदची
धमकिया धू प्राची
औरंग चौरग घटा ओसरी,
अटा चढ देखियौ नर नारिया
काळी छवकाळी कांठळ विस चूंवणी
काकड़ क्रमी ।
मा भू भरिया दृग
हिये कंपकंपी
रूं-रू विस छांवळ हहरियौ
अरडायौ आडावळौ
लूणी सिथळ गात थई
कुरळाया कायर मोर
सरणाटौ चहु ओर छायो ।
जदै वण आधी उचटियौ मरू-भोमरा,
आसरे सांस अेक भेळ कीन्हौ
पीन्हौ विस जेण कोड घणौ
मां भोम रै उर इमरत दीन्हौ ।।
तिण दिन सूं दुर्ग वण दुर्गदास
अड़ियौ आडावळै आटीलौ,
चढ्यौ न जेण रंग औरग रग—
रंग है वा तुरंगा जेण थू चढ्यौ ।

पतै रो चेटक जग चावौ
थें किता चेटक छिटकाया
केरण पतौ ?
न जाणू रूप-रंग ज्यांरौ
त्यारी खुरताळन धम-धमी
अंथ साभळूं ।
बखत रा बखतरा चीरणी
अस-हीस आभङै करण-पटां
सोही संगीत साचौ देस प्रेम चौ
जुगा नगारां बाजणौ ।।

× × ×

भोगिया छप्पन भोग
बिखै रा थें
छप्पन भाखरां
खाई खमखारिया भुज तोलणां
रीस पीणां ।
न पूरौ पय पीधौ
मेघ बदळै रा वाद बावळा
थे पाई घड-फुलवाडी
सैल धारां ।।

अस रा असवार ऊजळा
रह्यौ ऊजळै वागां
ऊजळी खागां
ऊजळै मनां
राखियौ खत ऊजळौ
पण असल रंगरेज आसरा
थें रंगियौ कसूंबल धरा-पोमचौ
बिनां कर रांगियां ।।

× × ×

थे काढिया अवखा ऊनाळा-
उकळतै धोरां,
वळवळतै भाखरा,

कळवळतै नीरा,
प्रचंड लूआ अग प्रखाळीजियौ।
उकळियौ रगत रंग राचणौ
हीयौ न अकळियौ
अग प्यास रा पंथ वांधणा
वाधिया जेथ वधिया
सर आसरा ॥

सरणाती सियाळू राता
सिहरतै रूंखा
हाली हमीरहठ डकरेल डाफरा,
धारा चौ नीर धूजतौ पोढियौ.
पड़तै पाळै केहरी खोह सूता,
करणौत हिये-खोह प्रण जागै,
चचळा पांखरां नीर चुवै ॥

केई—
रस-भीजी
सुहांणी
सुरग रैणा
आई छाई गई रसा।
पवनियौ प्रीतम सदेस लियां,
नाजुकडी नीद रौ पांण गह्या,
वरसा डूंगरा वना भटकियौ,
थू न भेटीजियौ।
विहाणौ विहाणौ काग उडाया सही कामणी
पण भुज फडकणा
तूझ हियौ न फडकियौ ॥

× × ×

प्रण पाळ थूं ऊंचौ प्रिथीपाळ सूं
थारौ अस ऊंचौ असमांन सूं
थूं और असवारा नित ऊंचौ,

पण सही जाणजे
आसरा इळा में
थासू ही थारौ जस ऊंचौ ।।

—नारायणसिंघ भाटी

बापू

आभै मे उडता खग थमग्या
गेलै मे बैता पग थमग्या
हाकौ सौ फूट्यौ धरती पर
वै कुण गमग्या, वै कुण गमग्या ?

औ मिनख मरचौ कै मरचौ पाखी ?
सै साथै नाड कियां नाखी ?
वा सिर कूटै है हिदुआणी
वा भुर भुर रोवै तुरकाणी
इसड़ौ कुण सजन सनेही हौ
सगळा रा हिवड़ा डगमगग्या ?
वै कुण गमग्या, वै कुण गमग्या ?

मिनखा रौ रुळग्यौ मिनख पणौ
देवा री मिटगी संकळाई,
बापूजी सुरग सिधार गया
होणी रै आड़ी के आई ?

जीवूंला सौ'र पचीस बरस
विसवास दिरा'र किया थमग्या ?
गिगनार पड़ैलौ अब नीचै
सतवादी वचना सूं डिगग्या,
वै कुण गमग्या वै कुण गमग्या ?

बापू सा मिनखा देही मे
धरती पर मिनख नही आया,

आगै री पीढ्यां पूछैली—
के इस्या नखतरी जग जाया ?

ई एक जोत रै पळकै सू
इतियास सदा नै जगमगग्या,
ईं एक मौत रै मोकै पर
सगळा रा आंसू रळमिळग्या,
वैं कुण गमग्या, वै कुण गमग्या ?

—कन्हैयालाल सेठिया

पीथल

जूंझ्या केइक जूंझार
कीरत रा कमठाण मे।
झाली थें रिझवार
सरसत री कल्यांण रा ।।

कलम तेग कर अेक
वाणी वार ज साधिया।
वचन करम री रेख
कायम की कल्यांण रा ।।

जस इण जग रौ जीत
परलोका पद पावियौ।
नीर कमळ री रीत
राखी थे कल्यांण रा ।।

वाही थे रस-बेल
फळ मुगती रा फूलिया।
करम धरम री केळ
करग्यौ थूं कल्याण रा ।।

—नारायणसिंघ भाटी
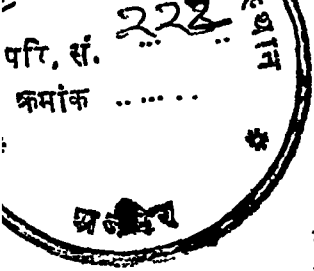
सैंतानसी रा सोरठा

रूडौ राजस्थान, हिवड़ौ हिन्दुस्तान रौ
जिण जायौ सैंतान, वीर मुलक आजाद रौ

पाट भगत पतवान, रजपूती जुगजुग रही
जनता तणौ जवान परथम भिड़ सैंतानसी

जुग-जुग रा सिरदार, सिरपाया जुग धरम रा
जनता रौ जूंझार, सिर सूरौ सैंतानसी

चरण चढाई भोम, रजपूता इण मुलक रैं
हेमाळै सिर हीम, साख भरी सैंतानसी

जुग-जुग सूं सिरदार धरती पत व्हे जूंझिया
जन सेवक जूंझार, अमर हुवौ सैंतानसी

मोटौ भारत देस, क्रोड चवाळी मिनख रौ
भारत भरवौ भेस, सिरनायक सैंतानसी

—गणेसीलाल व्यास उस्ताद

कवी कीट्स रैं प्रति

हे ! परदेसण बाड़ी रा सुघड पावण
रस रूप रंग रा रीझणहार
सत रा तंत परखणिया
थनैं असत छळग्यौ,
कुण—मौत ?
नही,
वा तौ सरब जुगा रौ अमर सत है।
थनैं छळियौ रे कोयल—कठिया
उर-गीतां रा गुमेजी गावणहार
खूंखार खलक री अगजी आंधियां।
सत रैं ऊमरा रूप दरसण रा
वीज चौभणिया सारद सुत

थारी घरण हेताळू रूप-रास नैं अगेजियां
छेवट थू रूपाळी मौत रै पसवाडै पौढियौ।
जीसू हे ! रूप सरूपा रा अमर भमर
थारै थडै हथाई भेळा हौय
नित रूपाळा फूलडा—
रूप-रहस री वात करै ।।

विरह

अरे प्रखर प्रीत रा भूलरणा !
था भूलिया
जोवन-मद ऊभळै
अभाव री असली पीड़ परखरण रा
छिरण अरणमरणा
उर-पलडां ऊतरै ।

रे ! थासौ वोभाळ न हरगिर आवखौ
थासो खारौ न वासग जैर ।
पल पल कलप कल्पना रौ
दीरघ सास उसासां
आकळ पिराण अभासै ।

रे ! हेत-रतन परखरिणया—
हेमहेडाऊ ,
आज तौ
थारी वाळद रा रुरण भुरण रव
रग रग रळतळै ।।

—नारायरणसिंघ भाटी

प्रीत अर गीत

प्रीत पागळी जात, लागै परण हालै नही
गीत प्रीत री वात, कहदै जारण अजारण नै

प्रीत पीड रौ मूळ, हिवड़ौ सीचै आमुआ
गीत प्रीत रौ सूळ, सीचै पण सोचै नही

प्रीत परायौ साथ, देखै तौ तन दाभळै
गीत गळगळी रात, रग रग माही संचरै

प्रीत पराई आस, पाळै पोसै आप नै
गीत प्रीत री सास, सरसावै अणगिण हिया

प्रीत सपन मे जाग, नींदा री आंख्या मिचै
गीत रमै उर फाग, घूमर घालै भाव सूं

प्रीत पळोथण पांण, ऊमर बेलै सास नै
गीत आपणी जाण, सेकै पण बाळै नही

प्रीत पराया जाण, गुदळावै आसू नयण
गीत दरद नै छाण, पावै ऊमर पाळ नै

प्रीत पळकती जोत, मन भायां री ओळखै
गीत प्रीत री मौत, अमर करै अमि कठ सू

—कल्याणसिंघ राजावत

गीतां रौ जस

थाळी तौ बाजी ऊचै डागळै
रैणादै जायौ सोनल भाण रे
कोई मा टसकै ऊंडी ओवरी

आखै कंडूवै हरख बंधावणा
कुण तौ गावै मावड़ री पीड़ रे
सिरजण रै सुखरा कुण दै गीतड़ा

अजमौ रधावै रतन रसोवड़ै
पौळां रै वांधै वांदरवाळ रे
सासूजी सात्या देवै वारणै

हाचळ तौ खोलै नणदां लाडली
जेठाणी देवै पाटौ ढाळ रे
पडदा वधावै गवरू सायवा

जोसीजी ग्रांचै टेवौ टीपणौ
ग्राई वेमाता मांडण लेख रे
मीठा गीतेरण काढै घूंघटा

मावड रै नैणा कविता जीवती
जायोड़ा जुग पुरसा रै जोग रे
कुण तौ लिख सी जलमा रा गीतडा

वागां तौ ग्राई भोळी वायली
मिळवा नै छानै मन रै मीत रे
गीतां विन किया जोवै वाटड़ी

वायेलौ घोळी मीठी प्रीतड़ी
सांसा मे भेळी मन री गंध रे
वावा मे भूली जाणै वेलड़ी

सुख तौ जणावै कुणसै ग्राखरा
कोई जे लिखिया हूता गीत रे
मन री वाता नै गाय सुणावती

ग्रळगी तौ चिणगी रात्यू मेड़ियां
मन मांही मीत मिलण री हूस रे
कोई मानेतण करिया रूसणा

चालौ नै छुडावौ ग्रणवोलणा
कोई मनावौ चतर सुजाण रे
गीता विन कोनी मुळकै कामणी

गोरी सिणगारै गीत सहेलिया
मैदी रचावै मीठा गीत रे
गीतां विन कोनी मडै माडणा

गीतां विन किया परणै धीवडी
गावै वनडा वनडी रा कोड रे
पीठी चढावै कोई गीतडा

तौरण तौ आयौ राइवर सावळौ
वनडी चुप चिडकोल्या रै ढूल रे
कामरण घौळै तौ घौळै गीतडा

पैलै ई फेरे थमगी लाडली
कुण समझै पिंडता रा सिलोक रे
चवरी रा बाचा सांचा गीतडा

माठी कोयलडी चाली सासरै
आसू रौ गीतां साथै मेळ रे
कर दै बिदाई गीला गीतड़ा

फूला री सेजा सिंवटी घूघटै
सकाळू डरती नुवै सुहाग रे
बनडा सू सैंधी हौवै बीनणी

धीरज बधावौ बाई सासरै
कोई तौ गावौ अमर सुहाग रे
गीता बधावौ वारी प्रीतडी

[अेक लाबी कविता रौ अंस]

—सत्यप्रकास जोसी

जुगवांणी

आ जन कवि री जुगवांणी, आ कदे न चुप रह जांणी
कोई लाख जतन कर हारै, आ समझै साच सुणाणी

कोई मार कूट धमकाई, धन-कुरव-धाम ललचाई
सै जुग रा जुल्मी खपग्या, इण करी नहीं सुणवाई
आखडिया सौ आथड़िया, इण माथै धूस जमांणी

जद जन रै पग बेडी ही, जनता गाडर जैड़ी ही
राजा रौ जोर जमांवण, अगरेज फौज नैड़ी ही
जद कठै दवी जरबां सूं, अब किणरै हाथ दवाणी

जद गौरी हकुमत अडती, सडका पर गोळयां झड़ती
जेळा मे चौखट चढिया, मौरां री खाल उधडती
पण "जै स्वराज" घुर्राता, नरसिंघ जुत्योड़ा घांणी

आ चोट लग्या चमकै है, निरणा पेटा दमकै है
फाटा गाभा नै रण रा, झडा गिणती धमकै है
इण रा धण-टावर जांणै, विपदा माथै मुसकाणी

आ भूला समझालेला, अूजड खडता पालैला
पूठै, इण घडी अगाड़ी, हाली, हालै, हालैला
जुग-जुग इण री भावी है, सिलगाणी फेर वणाणी

गायक त्रिक दिन मिट जासी, पण अैडा गीत वणासी
जन-जन रै कठां रमसी, पीढी दर पीढी गासी
आ काया तौ कवि री है, पण जनता री जुगवांणी

—गणेसीलाल व्यास उस्ताद

उछाव

पांवणौ बसंत

गीता रै गाव आया, रितुराज पांवणां
फूल कळी बाट रह्या, सौरभ रा लावणा

बधै वेलड्या बांदरवाळ
पगल्या माडै लाल गुलाल
नाचै मोरचा घूमर घाल
पात पात धुन वांधै ताल

भंवरां सुगरण मनावियां, कर कर उडावणा
फूल कळी बाट रह्या, सौरभ रा लांवणां

हरख मांनखौ करै किलोळ
कोड घणौ हिव उठै हिलोळ

रूप थाळ मे पचरंग घोळ
प्रीत मांडणा मांडै पोळ
सुरसत सुर सुळाभाया, सासा रै वाजणा

—कल्याणसिंघ राजावत

बसंत

मदछकियौ मन मोवणी
कांमण धरणी कंथ
सौरम-सर संपड़ीज नैं
आयौ भलां वसंत

रंग विरगै फूलडां
धरा सजाई सेज
जोवन रै सिणगार में
मुळकै हेत गुमेज।

कूंपळ-अधरां मुळकती
नैण-कंवळ भर लाज
धण धरती ऊभी हुई
रस रतनाकर पाज।

अलक-भंवर अंवर उडै
मिमजर मांग भरीज
कन्दोरी कळिया तणौ
रह्यौ कड़ियां रळकीज।

फूल-वसन त्रण-डोर सूं
वंधिया उतग उरोज
काम-केळ मिन्दर जिसा
धर किम धरै धिरोज।

रग चपै रौ मोठडौ
वंधियौ घण बेलाह

बूंटा कुरिया वौहगुणा
रग बहते रेळाह।

पांगरिया तरवर हसै
सरवर हिये हुळास
वळ खाती बेलां मुगध
नाखै प्रेम निसास।

पवन पलटै पानडा
रस रंग रै हाथाह
बांचै नवै पुराण में
नवजीवण वाताह।

पछी उडिया पुळकता
पवन पाख मिळ अेक
ऊजडियै ससार नै
फेरू बसतौ देख।

कोयल-कंठां गीत गा
धरणी कोड करत
बाग वनां अर बाडियां
डेरा किया वसंत।

सांवणी तीज

आई सांवणियां री तीज !

हसै है धरती रौ सोहाग
ओढिया रग विरंगी छीट
नवेली वाजरियां नै छेड
लुकै है टाळ पवनियौ मीट

छोटा मोटा आज धरा रा हंसै अलेखां वीज
आई सावणियां री तीज !

दौडती नदियां समदर जाय
आभौ धरती नै झुक आय
फूल री पांखडियां राख्या
भोळा भंवरा नै भरमाय।

आज मिळण री वाट मोकळा मिळग्यां मोद भरीज
आई सावणिया री तीज !

हिंडौळै हीडै जोवन आज
पळकै चूंदडिया रा तार
लुळकती डाळा मे गम जाय
झणकती पायल री झणकार।

लाड कोड में हियौ अचपळौ आज गयौ है धीज
आई सावणिया री तीज।

वौ सागेई सूरज आज
सागै घर धरती परवार
सागै जीवण रा पळ आज
सागै सुख दुख रौ ससार

जगत जीवणौ जोड मोड़ आ मिनखां री तजवीज
आई सांवणियां री तीज !

—नारायणसिंघ भाटी

बिरखा : अेक मन-गत

लौ आया दळ रा दळ वादळ !

दिन ऊगा सूं आई जाई
राड घूमती सी पुरवाई
परदेसा मे पीव, नैण मे
तौ ई रात घालियौ काजळ

लौ आया दळ रा दळ वादळ !

सांनी करी बुलाया ओलै
रंसियां नै झालां रै झोलै
रंगमैल मे अब तौ गैला
छैल हसैला खळखळ खळखळ !
लौ आया दळ रा दळ बादळ !

धरती सौरम री ललचाई
पान सुपारी बाटण आई
अै छाटा री रिमझिम लारै
सिहरा रै गळ लागी बीजळ
लौ आया दळ रा दळ बादळ !

—सत्यप्रकास जोसी

बिरखा-बींनणी

लूम-झूम मदमाती, मन बिलमाती, सौ बळ खाती,
गीत प्रीत रा गाती, हसती आवै विरखा बीनणी।

चौमासै में चवरी चढनै, सांवण पूगी सासरै
भरै भादवै ढळी जवानी, आधी रैगी आसरै
मन रौ भेद लुकाती, नैणां आसूडा ढळकाती
रिमझिम आवै बिरखा बींनणी।

ठुमक-ठुमक पग धरती, नखरौ करती
हिवड़ौ हरती, वीद पगलिया भरती
छम-छम आवै विरखा वींनणी।

तोतर बरणी चूंदड़ी नै काजळिया री कोर
प्रेम डोर मे बधती आवै रूपाळी गिणगोर
झूठी प्रीत जताती, झीणैं घूंघट में सरमाती
ठगती आवै विरखा वीनणी।

घिर-घिर घूमर रमती, रुकती थमती
बीज चमकती, झव झव पळका करती
भवती आवै विरखा वीनणी।

आ परदेसण पांवणीजी, पुळ देखै नी वेळा
आलीजा रै आगणै मे करै मना रा मेळा
झिरमिर गीत सुणातीभोळै मनड़ै नै भरमाती
छळती आवै विरखा बीनणी ।

लूम-झूम मदमाती, मन विलमाती
सौ वळ खाती, गीत प्रीत रा गाती
हसती आवै विरखा वीनणी ।।

—रेवतदांन चारण

सिझ्या बहू

गौरै दिन रै लारै सिझ्या वहू सावळी आई ।
माथै बांध्यौ चाद वोरलौ
पग पाजेवा तारा ,
सुपनां वाजूवन्द जडाऊ
सोवै कामणगारा ,
सागै पेई भर नीदडली नैण मोवणी ल्याई ।
गौरे दिन रै लारै सिझ्या वहू सावळी आई ।।
वादळिया दो च्यार कुंआरा
देवरिया मटवोला ,
भौजाई कोयल री जाई
करै कितोळा रौळा ,
पकड़ कानडा पून दकाल्या स्याणी नणदल वाई ।
गौरे दिन रै लारै सिझ्या वहू सावळी आई ।।
दिन दिवळै री लौ मे धण स्यूं
मिळियौ लाजा मरतौ ,
पड्या रात रै खोजा नै औ
काजळ कैवै डरतौ
घाल मिलण सैनाण करै जग धू धी दीठ सवाई ।
गौरे दिन रै लारै सिझ्या वहू सांवळी आई ।।

—कन्हैयालाल सेठिया

सोवन थाल

पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पाख-पखेरू पीपळ डाळ
छोटी द्योराणी पीसण बैठी
बाजर-मौठ चिणा री दाळ
बडी जिठांणी जाचौ गीगलौ
बाजण लाग्यौ सोवन थाळ
नणद सुरगी सात्या देवै
घर घर बाधै बांनरवाळ
पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पांख-पखेरू पीपळ डाळ

दिन चढ आयौ गोवै ऊभ्यौ
गाया रौ म्हारौ कान्ह-गुवाळ
आटौ-टूटौ हाथ गेडियौ
सिर पर बाध्या लाल रूमाल
काधै लटकै लाल लोटड़ी
संकड़ी है माटी री नाळ
घर री धिरांणी गाय उछेरै
मघरी-मघरी चालै चाल
पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पाख-पंखेरू पीपळ डाळ

छींकी देय'र हाकण लाग्यौ
गायां नै गुवाळचौ रै लाल
फळसै बा'रै टाबर खेलै
खेत बणावै बाधै पाळ
गोबर चुगै सहेल्या रळमिळ
थाप थेपड़ी करै कमाल
मरद लुगाई यू वतळावै
आयौ समौ भाजग्यौ काळ
पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पाख-पंखेरू पीपळ डाळ

आंगरा मे दो चुगै चिडकल्यां
बिखरेडी चाकी री दाळ
छोटी नगद भूगरौ काढ़ै
लुळ-लुळ साफ करै है ठाण
दादी ताश्री चरखौ कातै
बैठी है वै पीढौ ढाळ
राख राखड़ी घोळ संवारै
चतर चरखलै री वै माळ
पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पाख-पंखेरू पीपळ डाळ

हाळी हळ रा हाट संवारै
गावै है तेजै री ढाळ
मिनख मजूरी करण लागग्या
लेकर कसियां और कुदाळ
डूंचै बैठ्या भोळा भाई
करै खेत री नित रखवाळ
मैणत रा त्यूंहार मनावै
नाचै गावै दे दे ताळ
पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पांख-पखेरू पीपळ डाळ

छोटी द्योराणी पीसण बैठी
बाजर-मौठ चिणा री दाळ
बडी जिठाणी जायौ गीगलौ
बाजण लाग्यौ सोवन थाळ
नणद सुरंगी सात्या देवै
घर-घर बांधै बानरवाळ
पौ फाटी जद बोलण लाग्या
पांख-पंखेरू पीपळ डाळ

—गजानन वर्मा

◇

घूमर

सहेल्यां घूमर रमवा जाय ।

घूमर घालै जद गौरड़ियां
समदर झोला खाय
चकरी चढती धरणी दीसै
पवन पथ पलटाय ।

सहेल्यां घूमर रमवा जाय ।

डीगा डूंगर डिगमिग डोलै
सूरज निम निम आय
रूख रमण नै पडै ताखडा
नदियां बळ खा जाय ।

सहेल्या घूमर रमवा जाय ।

चोटी जांणै वासंग छिड़ियौ
लहरियौ लहराय
वाजूबंद मे बधियौ जोबन
लूंबा लग झुर आय ।

सहेल्यां घूमर रमवा जाय ।

रग कसूबल चुवै हथाळी
लागै पोयण पाव
चपे केरी डाळ विलूबै
कदळी बन रै माय ।

सहेल्यां घूमर रमवा जाय ।

कुण जाणै कद कंथ-मोरियौ
वाड़ी घर ले जाय
इण बावल रै आगणियै में
दो दिन तौ लहराय ।

सहेल्यां घूमर रमवा जाय ।

—नारायणसिंघ भाटी

सीख सिखाऊं

सुण म्हारी कंवरी काची कूंपळ
सीख सिखाऊ भोळी थूं
काकड आय विराजै वनडौ
मन री गाठा खोली थूं
तोरण आय'र राइबर जोवै
लुक ज्याई चिडकोली थूं

सुण म्हारी कवरी काची कूंपळ
सीख सिखाऊ भोळी थूं
गठजोड़ै री गांठ घुळै ज्यूं
घुळ ज्याई हथ-मौळी थूं
हथळेवै रै पीळै हाथा
वर रौ हियौ टंटोळी थूं

सुण म्हारी कंवरी काची कूपळ
सीख सिखाऊ भोळी थूं
कोल-वचन कर फेरा लेई
कुटम-चोपड़ै रोळी थूं
सासरियै नै सदा सराही
नणदां सू हस वोली थूं

सुण म्हारी कंवरी काची कूंपळ
सीख सिखाऊं भोळी थूं
न्याव-ताकडी कांण न राखी
वात खरी सुण तोली थूं
नैणा लाज लकोई अे रजवण
घूंघट मे मत घोळी थूं

सुण म्हारी कंवरी काची कूंपळ
सीख सिखाऊं भोळी थूं

—गजानन वर्मा

सीख

ग्राई सासरा री पाळ
भीणौ घूंघटौ निकाळ
उडता पल्ला नै सभाळ

जूंण मरण, सुख दुख रौ ग्रेकल ग्रासरौ
लाज रौ लगार ग्रायौ सासरौ

सरवर बोलै सूवटा ज्यूं बागा बोलै मोर
मीठी वोली बोलणी, थू सीखीजै गिणगोर

थानै खिलखिल फूल हसायौ
थानै हिरणी पाठ पढायौ
पग रा घूघरा सिखायौ बाई धीमै धीमै चाल
ग्राई सासरा री पाळ

वाबल निरखै ग्रागणौ, कोई बीरौ जोवै बाडी
मावड निरखै सूनी व्हेती, सखिया री फुलवाड़ी

थांनै सासूजी बुलावै
थानै देवर लेवण ग्रावै
थां बिन सूनी रातां सेजा, सूनौ जग जंजाळ
ग्राई सासरा री पाळ

दिन भर करजै चाकरी नै ग्राप नवाजै सीस
दूधा न्हाजै पूता फळजै, नित लीजै ग्रासीस

थानै देराणी चिड़ासी
थानै जेठांणी लड़ासी
थारी नणदां करसी मसखरी नै सुसरौ देसी गाळ
ग्राई सासरा री पाळ

ग्राई सासरा री पाळ
भीणौ घूंघटौ निकाळ
उडता पल्ला नै संभाळ

जूंण मरण सुख-दुख रौ ग्रेकल ग्रासरौ
लाज रौ लंगार ग्रायौ सासरौ

मोरिया रौ गरबौ

ऊंचा डूंगर काळी वादळी
छतरी चादलिया री तारा
नाचै मोरिया

ऊची काठळ ऊडी वीजळी
अै नीचै हरियल खेत
लचकै मोरिया

वरसै झिरमिर मेहुलौ
आ चालै परवा पून
मुळकै मोरिया

सिखरा वैठा सौवन मोरिया
थूं म्हारै वागां रौ राव
टुहकै मोरिया

मोत्या वाळौ दीसै आवतौ
उड आजै म्हारै चौक
सोवन मोरिया

सिखरा वैठा लीला मौरिया
थूं म्हारै पिणघट रौ सैण
वोलै मौरिया

दीसै जे पिचरग पागडी
उड आजै चानरण चौक
लीला मोरिया

पग मे घड़ास्यूं पैजणी
सोनै मंडास्यूं चाच
वाका मोरिया

चांदा जडाऊं मूंघै मोतियां
हाथा चुगाऊं लाल
व्हाला मोरिया

—सत्यप्रकास जोसी

◇

झींणौ झींणौ रै झींणौ

झीणौ झींणौ रै झीणौ
म्हारै कोयां रौ काजळ
गुडलौ रै बादळ
हद झीणौ

झीणौ झीणौ रै झीणौ
म्हारौ लै' रातौ आचळ
मनड़ै रौ माछळ
हद झीणौ

झीणौ झीणौ रै झीणौ
भोळी वाई रौ वीरौ
नथडी रौ हीरौ
हद झीणौ

—गजानन वर्मा

फूल सूं बातां करणी है

जलम रौ जोवण है त्यौहार
प्रीत रौ गीता सूं बौपार
तार मे सौरम रौ संगीत
मीत सूं वातां करणी है
फूल सूं बातां करणी है।

आगण आंगण खणकै कागण, झाझण री झणकार रे
कामण कामण, मरवण भामण, गजबण हद सिणगार रे

गुमानण घूंघट री दरकार
छोड़तां हुवै घणा रिझवार
हार मत रमलै रागा रीझ

रीत री राता रगणी है
फूल सू वाता करणी है।

होळै होळै इमरत घोळै, ढोळै रस री धार रे
भोळै भोळै भाव भकोळै, रोळै रग गुलाल रे

मुळकतां ही मानां मनवार
नैण में नसौ चढै सौ वार
द्वार पर ऊभा करा उडीक
ठीक रंग मागा भरणी है
फूल सू वाता करणी है।

सरवर सरवर, गागर गागर हंस वतळावण पाळ रे
तरवर तरवर, तन मन तरभर, मन भर हीडै डाळ रे

सांस मे चंदण री मैं' कार
दिखावौ चादै रै उणिहार
राज रौ लस्कर थमग्यौ तीर
नीर नद हाथां तरणी है
फूल सूं वातां करणी है।

सांवण सांवण, लगै सुहावण, भांवण कांमणगार रे
फागण फागण, सखी सुहागण, आंवण जांवण द्वार रे

नीद न आवै सारी रात
पूछलै काजळ सूं परभात
गात रौ गुधळै नितरै रूप
धूप तौ साखा भरणी है
फूल सूं वाता करणी है।

गोरी गोरी नाच नचोरी, वागां री कचनार ये
जोडी जोड़ी नेह निमोड़ी, मौसम री मनवार ये

आवैला भेर नही मधुमास
रचालै रळ रस भीणौरास
सांस रौ सागौ है दिन च्यार
वार नही लाजा मरणी है
फूल सूं वातां करणी है।

आव रे

निजरां करै जुहार·······आव रे !
अधरा पर मनवार·······आव रे !

प्रीत देस रा पावणा
मिठ बोलणा, मन भावणा !

देख ! उमरडी घूमर घालै
करै उतावळ कावळ चालै
नीद लजावै, संग ना आवै
जागण रै मिस ओळू गावै
वाधै वानरवाळ·······आव रे !
खड़ी सजाया थाल·······आव रे !

प्रीत पंथ रा पांवणा
हंस बोलणा, मन भांवणा !

रुत लागै रै नवीं नवैली
पवन अचपळी वणै सहेली
फूला-फूलां मे मद ढुलियौ
अंग-अग मे हिंगळू घुळियो
नाचै मन दे ताल·······आव रे !
गावै रूप धमाल······· आव रे !

प्रीत पौळ रा पांवणा
रग रोळणा, मन भावणा !

बतळावै तौ नासां फंड़कैं
सबद सुणै तौ हिवड़ौ धड़कै
चाद उगै आथै मुसकातां
सरगम सुधबुध बिसरै गाता
मुसकल घणी रुखाळ·····आव रे !
टूटै सरवर पाळ·······आव रे !

प्रीत पाळ रा पांवणा
मद मोळणा, मनभांवणा !

चांद नै कुण कैयौ हौ रे

चांद नै कुण कैयौ हौ रे सुणज्या म्हारी वातड़ी
तारा री जाजम पर वैठै झांकै सारी रातड़ी

कुण सपना मे तार वजावै
कुण मीठा सा गीत सुणावै
कुण मनड़ै री उळझी वातां
नीदां मे काना कह जावै

रूप नै कुण कैयौ हौ रे तुल हिवड़ै री ताकडी
प्रीत रै पलड़ा मे झूलै हळकौ वण ज्यु पातडी

दूर गिगन सू गातौ आवै
मन रौ भेद वतातौ आवै
काठ चीरणौ मद रौ लोभी
क्यू कळिया रै सग वंध जावै

भंवर नै कुण कैयौ हौ रे देज्या थारी पाखडी
फूला री सेजा पर वौ तौ सोग्यौ मीच आखडी

नैण नाडिया मानसरोवर
आसू मोती मोल वरोवर
पुरव जलम रौ नेह खजानौ
आतौ म्हारै कांम अगोतर

हस नै कुण कैयौ हौ रे कह दे थारी जातड़ी
नैणा रा मोतीडा लेग्यौ करग्यौ म्हासू घातड़ी

क्यूं सरवर नै दरपण मांन्यौ
क्यू अंवर नै करपण मांन्यौ
पंख भीजग्या उड्यौ न जावै
क्यूं पछी नै अरपण मांन्यौ

पाख नै कुण कैयौ हौ रे जा दिवळै रै सांकड़ी
तनड़ै री हौळी कर दीनी पाछै रहगी राखड़ी

—कल्याणसिंघ राजावत

◇

रंगरली

बादली

जीवण नै सह तरसिया
बंजड़ झखड वाढ
बरसै, भोळी बादळी
आयौ आज आसाढ

आठूं पौर उडीकता
बीतै दिन ज्यूं मास
दरसण दे अब वादळी
मत मुरधर नै तास

आस लगाया मुरधरा
देख रही दिन रात

भागी आ थू, बादळी
आयी रुत बरसात

कोरा कोरा धोरिया
डूगा डूगा डैर
आव रमां अे वादळी
ले-ले मुरधर ल्हैर

छिनेक सूरज निखरियौ
विखरी वादळिया
चिळकरण मुंह अब लागियौ
धरा किरण मिळियां

छिन मे तावड तड़तड़ै
छिन मे ठडी छाह
वादळिया भागी फिरै
घात पवन गळबाह

रंग विरंगी वादळी
कर कर मन मे चाव
सूरज रै मन भांवतौ
चटपट करै वणाव

पहरै वदळै वादळी
वदळ पहर वदळाय
सूरज साज नै सखी
आसी कुणसौ दाय

सूरज साजन आवसी
वैठी पेत्री खोल
वदळ वदळ धण बादळचां
पहरै वेस अमोल

चरचर करती चिड़कल्या
करै रेत असनांन
तवू सौ अब तांणियौ
बादळियां असमांन

दूर खितिज पर बादळ्यां
च्यारूं दिस मे गाज
जांणै कम्मर बाधली
आभै बरसण आज

आभ अमूभी बादळी
धरा अमूभी नार
धरा अमूझ्या धोरिया
परदेसां भरतार

गाव गांव में बादळी
सुणा सनेसौ गाज
इदर बूठण आवियौ
तूठण मुरधर आज

उठती दीसी बादळी
मअू रह्या जे आज
घर कानी जी चालियौ
सुण सुण मधरी गाज

जोड़ कांगसी जोर सूं
कु डाळा करिया
बाळक मागै बादळी
भर दे तालरियां

मीठा बोलै मोरिया
डू गा टोकां गाज
पळ पळ साजन संभरै
इसड़ी वेळा आज

आज कळायण अूमटी
छोडै खूब हळूस
सौ सौ कोसां वरससी
करसी काळ विधू स

ज्यूं ज्यूं मधरौ गाजियौ
मनड़ौ हुयौ अधीर
वीजळ पळकौ मारतां
चाली हिवड़ै चीर

गाज न समझूं बादळी
मतना पळकां मार
बूंदा लिख दे वाच लूं
साजन रा समचार

ग्रूंचा डाळा माडिया
हीडा तकड़ी डोर
हीडै ऊभी तीजण्या
करकर पूरौ जोर

तकडै हीडा तीजण्यां
जावै लाग ग्रकास
बादळियां सामी मिळै
भरकर हियै हुळास

पडड़ पडड़ बूंदा पड़ै
गड़ड़ गडड़ घरण गाज
कड़ड़ कड़ड़ वीजळ करै
घडड घडड़ धर ग्राज

परनाळां पाणी पडै
नाळा चळवळिया
पोखर ग्रास पुरांवरण
खाळा खळखळिया

टप टप चूवै ग्रासरा
टप टप विरही नैरण
झप झप पळका वीजरा
झप झप हिवड़ौ सैरण

छातां पर पाणी पड्यौ
परनाळा न समाय
वळ खाता बाळा बगै
खाळा जोडां मांय

[बादळी काव्य सूं]

—चन्द्रसिंघ

सांझ

पंखिया परदेसी अजकाय,
आगमै असमानी असमान।
उडै कोइ आथूंणी गुलाल,
आई साझ धरा मिजमान।

हसै किण बनडी तणौ सुहाग?
बादळी झीणी घूंघट ओट।
बीखरै डावर नैणा लाज,
चमक्कै चोखी कोरां गोट।

लहरै रैण रंगाणा केस,
जिण में लुकी रूप री राग।
काजळिया कंवळा तणौ पराग,
बनी रै थिर जोबन रौ थाग।

चळापळ ओगनियां री कोर,
भोपणा किण भूलां रौ भार?
बिहारै गळै अडोळी नार,
सोधवा इण धरती वौ हार।

आवै कूं कूं पगल्या मेल,
अठै तौ कांटां रौ ससार।
सभै ना थां सूं हळकौ चीर,
जिकण में रिमझोळा रौ भार।

लुकाती दिवळौ अंवर ओट,
निरखवा आई औ ससार।
धड़कती छाती धीमी चाल,
मुळकता नैणां सुरमौ सार।

थूं आई थेट धरा आगूंच,
पळकती राखड़ियां भर थाळ।
रात री अे नैनकड़ी वैन,
उडै है कूं कूं थाळ संभाळ।

वतावण आंचळ रंग मजीठ,
वंधाणौ छेहड़ै काळौ रंग।

खुलै कुण जाणै किण पुळ गांठ ?
हुवै सह धरती रंग विरंग ।

सिधायौ सूरज धरती छोड,
देग्यौ सैलांणी में सांझ ।
करै आथूंण घणी अंवेर,
लुकावै पीळा टुकियां मांझ ।

अचपळौ दिनडौ होसी रात,
चानणौ होसी घोर अंधार ।
कोडं री इण मिटवा री वेळ,
साझ रै दिवळै व्हेगी झाळ ।

मिलण नै आया दिन सूं रात,
पिघळता ढळिया सांम्ही ढाळ ।
रह्यौ न दिन दिन, रात न रात,
बिचाळै सांझ बणी ज़जाळ ।

मिळावै थूं व्हाला दिन रैण,
हुळसता हिवड़ां नेह हिंडाय ।
भला कद होसी कह परभात ?
कळपती चकवी रै चित मांय ।

अलेखा आख्यां री हर जोत,
कियै थे धू धू आंख उजास ।
अरे थू वण लिछमी री सैण,
विसर मत मिनखपणै रौ वास ।

भली थूं सांझ सुखां री देण,
दाझतै दिनडै री ठाडौळ ।
नीद री नणदल, सपना सेज,
परणती सरग परी री खौळ ।

हुवौ थिर समदर आभौ जाण,
कसां मे घुळै कसूबल रंग ।
निचोयौ साझ-नार जिमि चीर,
दई कै देवत-नैण सुरंग ।

चिळकै सौनै रा चीलरिया,
बधगी वा रूपाळी पाळ।
कूंपळी किण रौ ढुळियौ आज ?
गुदळती घण असमांनी ढाळ।

ऊपणी आडै छाज कठैक ?
उरसा सुगन-चिडी री पांख।
गेरूआ तीरा पांण पयांण,
हसला पौढाणां नस नाख।

कांपती किरणा बाह पसार,
डूबती जांणै समदर जाय।
अरे कुण पकड़ै पुणचौ आज ?
कोचरी बोली यूं कुरळाय।

चूमै गैण कसूबल आख,
पौढती धरणी तणौ लिलाड़।
खाखळ मे चूंधीज्या झाखै,
भोळा पंछी परबत झाड़।

जगाणौ उरसां सेज मयक,
समंदर हिवड़ै लहरा हार।
अरक री आख झपै आथूंण,
ऊतरै बादळियां सिणगार।

डीगोडा डूंगर धोरां मांझ,
बरसतौ भीणोड़ौ बिसरांम।
जिकण में भीजै वा इकलाण,
बिराजी सांयत बण जजमांन।

नगारा संख आरती धूप,
धुए नै झांपै है झणकार।
टुळकिया अेवड़ धोरै ओट,
सुणीजै किलकारी उण पार।

सोयगा मारग आंख्यां मीच,
झाड़का लूंबै भीणौ वाव।
सांझ रौ रोही में रणवास,
खेजड़ा ऊभा दे दे घाव।

वलूखडी रीझी विरलै रूप,
वेहोनी ऊभी करै वणाव,
धरा चो हरियौ मखमल ढाळ,
धोरिया प्रगटै इमि अपणाव।

सुणीजै स्यारा री सरणाट,
झाड़का तीतर तीखा वोल।
वोकारै वसतोड़ी सून्याड,
आपणौ आपौ राखै तोल।

घणी चिडकल्यां री चैंचाट,
रूंख री डाळां रौ संसार।
करै खुल मन री वातां दोय,
मनीजै सुख दुख री मनवार।

मिळै माळां मे चाचां खोल,
पखेरू विचिया इदकै मोद।
मिलण रौ कितरौ मोटौ चाव,
हजारा हिवड़ां रौ परमोद।

झवरां झुटपुटिये री वेल,
खुलै वा अधारै री आख।
वेल पड लचकाणी लख जाय,
लजाळू सिरकै पल्लौ नाख।

दीना कद कंवळ हिये कपाट,
गुलावी महलां भवरा राख।
साझ री पायल री झणकार,
डूवगी मद मे काळी पांख।

वेल रै खोळै में धर सीस,
कंवळा फूल रह्या ऊंगीज।
पांन री लीली सेजा हीड,
विलमता रहग्या यूं विलमीज।

[साझ काव्य सूं]

पासांण सुंदरी

थूं कुण ऊभी—
हे सयाणी सूरत
पासाण मूरत
नग्न देह
भग्न गेह
अतीत री कळा-द्रष्टि तळैं ।
जोवै केई जुग सू —
भाव भगिमा भरिया—
थारा अग अग—
झळती जोडी रा—
प्राण पीया री बाट,
हे प्रीत पगी
परणेतण पूतळी ।
केई नैण—
निरख निरख
निकळ्या होसी
थारै गेह बार ।
पण हू बतळाऊं
अबोली बोल,
कुण थनै—
मिळण बचन दे बचन हरियौ ?
जिण रौ अेक पग ऊभी—
अेक टक थूं पथ निहारै,
हे ओळूं उळझी संकोचण सुंदरी ।
म्हे तौ गीत सुण्यौ
काव्य पढ्यौ—
अर आंख देख्यौ
केइक झुरती विरहणिया रा
बैरी विरह ताप—
लाखीणा तन खील किया ।
पण थूं तौ
जुग बीत्या ही जोवन मदमाती
अर अजे लग गमकै

थारै अग अग री—
मिजाज भरी   मगेजण मरोड मे ।
हे ! उफणतै जोवनरी
पासाण गोरड़ी ।
इण ऊचै पयोधरा
ऊडी धीरज धरण कळा
किण सूं सीखी ?
हे ! कळा जाई
कामणी ।
थळ जाई—
विरह-तप झुळसी—
सकळ गज गमण गोरियां रा—
तरळ नैण मोती
किण किरतार कारीगर रै
प्रिया रूप
साधना सांचै आय सागळिया,
जिण खातीलै
अमर खात कर
थनै सिरजी सवारी—
उरज पीण,
कटी खीण, वसन हीण, वचन वध
अचंचळ   सुन्दरी ।
विरह–समद तळ वळती
चिर प्रीत–अगन री—
अखड जोत
काळ हथेळी विच—
था आगळ अस्ट पौर जगै ।
तिण सू पडियै काजळ रा कूपळ
किण चतर नार चोरिया—
हे ! सयन हीण
पथ लीण   पासाण सु दरी ।।

—नारायणसिंघ भाटी

गीतां रा गवाळ

गीता रा गवाळ !
प्रीत री बाळद बिलमीजै
सुर राभै
छद उडीकै
कळपै अलगोजा री तान
रागा रुळै रू'ख री ओट
हरफ रा केरडिया थाक्या
कर कर अडर किलोळ
तिरसा भाव बळद रा होठ

आव रे आव
सरवर री डाडी आय वताय
तिरस नै रस री धार दिखाय
आवै क्यू नी रे
गीतां रा गवाळ

आयौ तौ हुवैला

आई तौ हुवैली हिचकी
दीख्यौ तौ हुवैलौ सपनौ
हिवडा रै अेडै-छेडै
आयौ तौ हुवैलौ अे
कोई न कोई !

हीडां पर झोला खातां
बादळिया नै वतळातां
गुडियां रौ व्याव रचातां
पिणघट पायल छणकाता
ढुळकी तौ हुवैली गागर
मुळकी तौ हुवैली साथण
सरवर रै अीरा-तीरां
झाक्यौ तौ हुवैलौ अे
कोई न कोई !

तारा सू छाई राता
भवरा री भोळी बातां
कळिया सू नेह दिखाता
कोयल रै बागां गातां
गाई तौ हुवैली रागा
नाची तौ हुवैली धरती
आसा रै आकासां मे
छायौ तौ हुवैलौ अे
कोई न कोई !

सांवरण री झड़िया मांही
फूला री लड़िया माही
गीता री घडियां माही
ओळू री कडिया माही
गीली तौ हुवैली पलका
भीज्यौ तौ हुवैलौ काजळ
सूनी सी लाबी रातां
भायौ तौ हुवैलौ ओ
कोई न कोई !

चादै सू चमक चुराता
सोनै में भरम कराता
हिंगळू री हसी उडातां
कू कूं अधरा इतराता
राची तौ हुवैली मैंदी
ओपी तौ हुवैली टीक्यां
दरपण अलकां सुळझातां
उळझ्यौ तौ हुवैलौ ओ
कोई न कोई !

साथणियां बीच लजाता
जोबन रौ भार समातां
चूनड मे चांद जड़ाता
मेडी रौ काग उडातां
अटकी तौ हुवैली निजरां
भटकी तौ हुवैली डगरां
निजरा री डोरी डोरी
भाग्यौ तौ हुवैलौ ओ
कोई न कोई !

सुख रा सपना

नीद मे सुख रा सपना रे, थमज्या दोय घड़ी
अजै तौ तारा जागै रे, अजै तौ रात पड़ी

चूनडलो दीजै गोटाळी, चढै जद चवरी जोबन रास
सुहागरण सौडस रै सिरणगार, मती ना चोरै मुधरौ हास
घणी तौ करणी है मनवार, गुलाबी मिनख जमारै हेत
हाल तौ हरिया रैवरण दे, प्रीत री सरसू रा श्रै खेत

सास नै सरगम साजरण दे, गावरण दे गीत लडी
अजै तौ तारा जागै रे, अजै तौ रात पडी

प्रीत री तोड मती तू पाळ, नैरण रौ समदर ढुळ जासी
तार नै उळझायौ मत राख, घणौरी गाठा घुळ जासी
बेलडी होळै होळै सींच, प्रीत रा पछी उड जासी
कू पळौ सावळ सावत राख, काळौ काजळ खिंड जासी

चाद नै चमक चढावरण दे, चादरणी चौंक खड़ी
अजै तौ तारा जागै रे, अजै तौ रात पडी

अधूरी आखडल्यां री वात, गीत री ओळी वाकी है
सावरणी झूला रै सिरणगार, नचारणी टोळी वाकी है
फागरणी फूला री मनवार, रंगारणी चोळी वाकी है
हीगळू रा हाथा सू हेत, चढारणी रोळी वाकी है

उमरडी काजळ पाडै है, थमज्या नीर झडी
अजै तौ तारा जागै रे, अजै तौ रात पडी

गाड्यां निकळी चीला रैग्या

अळगै देसा रू ंख ओझळ्या, नैरण पथडा गीला रैग्या
उमर री गांठडल्या लादया, गाड्या निकळी चीला रैग्या

फळसै फळसै वज्या नगारा, आगरण आगरण पायल बाजी
नैरणा नैरणां काजळ सारचौ, हाथ हथेली मैं'दी राची
कठ कठ मे गीत सुहाया, जद वनड़ी चवरी में आई
दिवळौ दिवळौ जोत उजाळी, साथरण मुळकी प्रीत बधाई

रूप मैं'ल री नीव निकरमी, गोख गरकता टीला रैग्या
उमर री गाठड़ल्या लादया, गाड्यां निकळी चीला रैग्या

फूल फूल पर भवरा आवै, डाळी डाळी आवै पछी
लैर लैर पर जोबण थिरकै, प्रीत वटाऊ क्यू कर थमसी
गीता पाछै आसू ढळकै, सहनाई सग चिता वळै रे
रूप छावळी दरपण दरसै, मुरथळ तिरसा मिरग छळै रे
कुण सिकलीगर चकर घुमावै, धार टूटगी खीला रैग्या
उमर री गाठडल्या लादचा, गाड्या निकळी चीला रैग्या

धरा गूदडी गिगन भू पडी, चाद सूरज रा दीप उजाळ्या
वायरिया री लाबी चादर, ओढ पौढिया लाल दुलारा
सपना रै मिस बाग लगाया, मुळकी कळिया कू पळ सारी
फूल फूलिया फळडा फाटचा, सौरम ढुळगी क्यारी क्यारी
कुण चिरणगारी आग लगाई, सासां बळगी खीरा रैग्या
उमर री गाठडल्या लादचा, गाड्या निकळी चीला रैग्या

ईंट ईंट सू अंबर नाप्यौ, वायरियै खुलग्या चौवारा
नीव अटारी न्यारा न्यारा, आछौ भेद करचौ चंजारा
तार तार सूं ताणौ ताणचौ, आता चिपगी गिणती तारा
थान बणाया डील उघाडे, वेजा होगी रे बेजारा
हाथ कमाई हाथ न आई, धाडौ पडग्यौ ढीला रैग्या
उमर री गाठडल्या लादचा, गाड्या निकळी चीला रैग्या

—कल्याणसिंघ राजावत

सोवन माछली

साभ्र तौ पडी नै बड्ग्यौ नीर में रे वैरी
आ थारी मछवा वांण कुबाण
छोळां सूं टाळै गिण गिण माछळी

क्यूं थूं हिवोळै ऊडा समद नै रे मछवा
क्यूं थूं पसारै भीणा जाळ
खारा समदां री खारी माछळी

पाछौ तौ वावड थारी झूंपडी रे मछवा
थारी थाळी मे चानरा चौक
तड़फा तोडै रे सोवन माछळी

सात्यूं समदा नै राखै नैरा मांयनै रे मछवा
होठा विच साचा मोती सात
मीठा पांरी री सोवन माछळी

कैवै तौ चीरू कंवळौ काळजौ रे मछवा
माथै भुरकाऊं तीखौ लूरा
काटा विना री सोवन माछळी

तेल मे तळूं रे थारै राम रसोड़ै मछवा
नीचै सिळगाऊ मधरी ग्राच
छिरा छिरा सीझै रे सोवन माछळी

धोया धोया थाळां पुरसू ग्राधी रै ग्रमला मछवा
ग्रलघ झिरोखै जोऊ वाट
ग्रग तौ मरोडै सोवन माछळी

मूडौ ग्रेठरा ढळती रा काई ग्रावै रे पछवा
पैला ई क्यू नी लेवै चाख
जतना सूं राखी सोवन माछळी

कैवै तौ वेचां सोवन माछळी रे मछवा
वेचनै चिरावा ऊंचा मैल
छोडा समदां मे पाछी माछळी

जुद्ध

मन रा मीत कान्हा रे—
घर घर सू भागी ग्राई गोपिया,
जमना रै कांठै रमल्यां रास,
नटवर नागर,
ग्रेकर वजादै थारी वासरी।

मन रा मीत कान्हा रे—
पिचरग घाघरिया घेर घुमेर,

ओढण तारांळी बोरंग चूनडी ।
बायां मे बाजूबंद री लूम,
पगल्या मे बांध्या बिछिया बाजणा
आभा मे पूनम केरौ चांद,
आकळ उडीकै थारी गोपियां ।

मन रा मीत कांन्हा रे—
मिमजरियां भरदै वांरी माग,
हाथा रचादै मैंदी राचणी,
सुळभादै उळभया कंवळा केस,
फूला सजादै बेणी नागणी,
अंतस मे भरदै गैरौ हेत,
नैणा मे भरदै सुरतां सावळी ।

मन रा मीत कांन्हा रे—
गोयर सू काळी धेण उछेर,
गोहै उडीकै साथी ग्वाळिया ।
मटकी भर मांखण लीजै चोर,
मावड नै देस्यां मीठा ओळमा ।
पिणघट पर गागर दीजै फोड,
रस में भीजैला कोई गोरडी,
लुक जास्यां कंवळा केरी आड,
थारै मनांवण करस्या रूसणा ।
आवैली सावणियै री तीज,
झूला घलादयां बेगौ आवजै ।

मन रा मीत कांन्हा रे—
नुवी सुणी रे म्हैं आ बात,
फौजां तौ चाली थारी जुद्ध में,
कुरू रै खेत घुरै त्रवाळ,
संख सुणीजै सेना सज्जणा ।
अंवर मे उडती दीसै खेह,
वाहण तौ चाल्या थारा पूंन सा ।
हस्ती घुड़लां री चतरंग चाक,
धजा फरूकै थारै सेन री ।

बीजळ सी खागां केरी धार,
बाका धनखा रा तीखा तीरडा।
मैगल ज्यू भूमै रे जूभार,
धरती धूजै रे अंबर लडथडै।

मन रा मीत कांन्हा रे—
कुण थारा दोयण कुण रे सैण,
राता लोयण क्यूं बांकी भू हडी।
धारण क्यू करिया रे कड़ियाळ,
छोड्या पीतावर क्यूं रे सोहणा,
सीस बचावण क्यूं सिरत्राण,
मोड क्यू उतारचा मोर पाख रा!
मुरली रै बदळै कर कोदड,
चिरमी री माळा ग्रागी क्यू धरी!

मन रा मीत कांन्हा रे—
जग मे जे मडग्यौ घमसाण, तौ
भाई पर भाई करसी वार,
आपस मे लडसी, मरसी मानखौ।
चुडला फोडैला काळा ओढ,
अमर सुहागण थारी गोपिया।

कामणिया विकसी बीच बजार,
कुण तौ उघडी बैना नै ढाकसी।
पिरथी पुरखा सू होसी हीण,
टाबर कहासी बिना बाप रा।
कुण करसी धीवडिया रौ व्याव,
कुण तौ कडू वौ वारौ पाळसी।
अणगिण मावडिवा देसी हाय,
मुडजा, फौजा नै पाछी मोड़लै।

मन रा मीत कान्हा रे—
जग मे जे मडग्यौ घमसाण, तौ
कुण तौ बणासी सतखड मैल,
कुण तौ चिणासी मैडी माळिया!

कुण तौ उगेरै मीठा गीत,
कुण तौ बाचैला पोथी पानड़ा !
कुण करसी गोखड़ियां मे जोत,
कुण तौ माडैला आगण माडणा !
कुण तौ मनावै बार तिवांर,
कुण तौ तुळछां गवरा नै पूजसी !
अणपूज्या सात्यूं सिझ्या देव,
कुण तौ करसी रे मिंदर आरती !
मिटता जीवण री थनै आण,
मुडजा, फौजा नै पाछी मोडलै ।

मन रा मीत कान्हा रे—
जग मे जे मडग्यौ घमसांण, तौ
कोयल कुरळासी बागा माय,
नाचंता थमसी बन में मोरिया ।
चीलां मंडरासी हरियै खेत,
गीधण भवैला सगळै देस पर ।
डाकणियां रमसी रात्यू रास,
चौसठ जोगणिया खप्पर पूरसी ।
धरती माता रौ लागै स्राप,
मुड़जा, फौजा नै पाछी मोडलै ।

मन रा मीत कांन्हा रे—
जग मे जे मंडग्यौ घमसाण, तौ
भातौ ले भंवसी रे भतवार,
हाळी जद लडवा जासी खेत मे ।
हळ री हळवांणी वणसी सैल,
खुरपी सूरा री जडिया वाढसी ।
मुडदा री लोथा रौ निनाण,
लोई री पांणत व्हेसी रेत मे ।
कामेतण देसी थनै गाळ,
मुड़जा, फौजां नै पाछी मोडलै ।

मन रा मीत कांन्हा रे—
जग मे जे मंडग्यौ घमसांण, तौ

जमना में लोई रैंसी नीर,
माटी रैं जासी लाखा वोटिया।
वस्ती मे घावा रिसता सूर,
लूला लगडा वरण थनैं भांडसी।
अणघड रैंजासी सगळी भोम,
ऊजड़ विरंगी होसी कोटड़ियां।
क्यूं मेटैं रखवाळा रौ नांव,
मुड़जा, फौजा नैं पाछी मोड़लैं।

मन रा मीत कांन्हा रे—
आजा रे दूधा धोल्या हाथ,
मुड़जा, फौजां नैं पाछी मोड़लैं।
गोरस माखण सूं रंगल्यां होठ,
मुड़जा, फौजा नैं पाछी मोड़लैं।
आजा गोरी नैं भरलैं बाथ,
मुडजा, फौजां नैं पाछी मोडलै।
आजा रे पिणघट करल्या वात,
मुडजा, फौजा नैं पाछी मोडलैं।
आजा रे ओज्यूं रमल्या रास,
मुडजा, फौजा नैं पाछी मोड़लैं।

—सत्यप्रकास जोसी

कठपुतल्यां

कठपुतळचा ही बैठी देखै
कठपुतळचा रौ खेल।

गुमर भूल्यौ मिनख आप नैं
कद कठपुतळी मानै ?
कठपुतळचा ही करण आप नै
कठपुतळी कर जाणै ?

आपै स्यूं अणजांण डफोळा
मिल्यौ अेक सौ मेळ ।

कठपुतळ्या नै हसती रोती
देख मांनखौ स्यावै,
पण भोळा अै कठपुतळ्या तौ
थारी कूंट कढावै,
जीवतडा रै सागै मुरदा
जबर करै असकेल ।

परदै लारै बैठ हलावै
ज्यूं ज्यूं डोर खिलारौ,
'खेलै खेल पूतळी समझै
औ सौ करतब म्हारौ'

पण दोन्यूं ही आंधा कोनी
देखै घली नकेल ।
कठपुतळ्यां ही बैठी देखै
कठपुतळ्यां रौ खेल ।

पींजरौ

चिड़कल्यां कठै'क उड उड जास्यौ ?

धरती ऊपर गगण मंड्योड़ौ
बद पीजरौ ढब रौ,
बिना बारणै थांनै बाड़ी
वौ कारीगर जबरौ,

पांखां मरसी लाज, भुंआळी
खा खा फिरती आस्यौ
चिड़कल्यां कठै'क उडउड जास्यौ ?

इण इचरज स्यूं भरयै पीजरै
मांय पीजरा केई
था रै जी रौ बणी पीजरौ
थारै निज री देही,

औ तौ गोरखवधौ ई स्यू
पार मुसकल्या पास्यौ,
चिड़कल्या कठै'क उड उड जास्यौ ?

इस्यै पीजरै रौ कारीगर
दया धरम सै छोड्या
जीव, पंखेरू मौत मिनकड़ी
दोन्यू सागै रोड्या,

भख भक्षक नै करचा ग्रेकठा
माड्यौ ग्रजब तमासौ ।
चिड़कल्या कठै'क उड उड जास्यौ ?

—कन्हैयालाल सेठिया

च्यार गीत

मिळिया तौ करौ रे लोभीडां
ग्रपणै ग्राप सूं ।

प्यारी रै मन पीव मिलण री
मावड पूत सपूत सूं ।
ग्यांनी रै मन गुरू मिलण री
पिंडत मित प्रवीण सूं ।

विणज करणिये नै नहिं वेळा
जर ग्राछटतै सूप सू ।
करम खेत रा खांतीला री
राह मिळै ना रूप सू ।

भरियौ पाव ग्राध नै निरखै
पूण पुरीजै ग्राप सूं ।
मद री माखी मद मे डूबी
पार पड़ी न पांख सूं ।

मिळिया तौ करौ रे लोभीड़ा
अपणै आप सू ।

मिनख मिनख री मजबूरी रौ
गाहक बरण गरवीजै ।
मजबूरी मोटी मानेतरण
ओढ़ै नितरा पीळा
करमी धरमी पिंडत जोधा
खपग्या के खातीला ।
पगड़ी साटै पीळौ आवै
जद मानेतरण धीजै
साटै सारू हाटा जावै
पाणी पुरसां छीजै ।
मिनख मिनख री मजबूरी रौ
गाहक बरण गरबीजै ।

बिना जुगत जाजम नहिं जमणी
इसौ जगत रौ धारौ
अटकळ बिन आटौ नहिं आवै
कर कर मैंनत हारौ ।
बिन जुगती के खप खप मरग्या
धाप धान नहिं खायौ ।
घर सायर मिनखा रै घाटौ
सासै राज जमायौ ।
जुग रै मठ री जुगत पुजारण
नखरा जो नर झेलै ।
सगळै ही थोका समरथ व्है
निरभै पासा खेलै ।

आखर री औकात किती सी
रस रसणा री धारां
विन बीध्यौ मोती किम सोहै
सरसत हंदै हारां ।

सर सारा भाथोड भरीज्या
कोइक पारथ साधै
दस मुख सूटी इमरत कूंपौ
कोइ राम नैं लाधैं।
जीवरा सधियां आखर साधैं
अरथ न आय उधारा।
जूंझारां री जान गया विन
सजै न सीस उतारा ।।

—नारायणसिंघ भाटी

आ कैंड़ी आजादी

लोग कवै सूरज ऊगौ, परण कठै गयौ परकास
हाथ हाथ नैं खावरण दोडै, किरण री राखां आस
मुलक री आ कैंडी आजादी
पूत-पितर मे मच्यौ छिनाळौ, चारूं दिस वरवादी

मिनख परणै रौ राम निसरग्यौ, अेक पुजीजै भेस
दळ स्वारथ सूं जन रा नेता, कियौ पांगळौ देस
सिपाई हाथा धूड उडादी
कितरा तौ टुकड़ां पर विकग्या, बाकी गांठ गमादी

हिलमिल कांम करण री बेळा, वंटवारै री राड़
मन मैला भायेला पाड़ै, जन रै धन पर धाड
वण्यौ है सारौ मुलक विवादी
देस-भगत स्वारथ मे छळग्या, ईस्वर हुयगी गादी

मोटा मगर कुटम नै खावै, निवळा भुगतै डंड
वापू रौ उपदेस बिसर नै, सन्त हुवा सौ खड
सयाणा सेठ वण्या सतवादी
खादी त्याग गरीबी वणगी, जन-जुग री सहजादी

नीचै जनता रगत बिलोवै, खावै करवौ राव
ऊपरला मांखरण खा जावै, जन री गरदन दाव
मुलक री माडै नीत डिगादी
बिचलौ वरग गधेडो दोडै, लियां दोस री लादी

जन-सेवक झगडा सूं थाका, सत रौ घटग्यौ भाव
खादी धार लबाड़ी जीत्या, जन हुकमत रौ दाव
सैंत मे सिर दीनां उन्मादी
जन जोवरण मे फूट बधी है, माथै चढ्या सवादी

तिकडम री तिर जाय सिलावा, भलै लोक पर भीड़
फूट-फिकर सूं थक्या गजा रै, कीडा धरै धमीड
समझ री सारी सांन सडादी
इलम हुनर री आढत लाटै मरजीदांन मयादी

मूढ मिनख पिंडतां नै हाकै, कळवन्तां नै भाड
कळा-खेत मे निसक चरै है, रुखवाळा रा साड
कठै जद कूक करै फरियादी
जन रौ जीवरण खडचौ कठघरै, न्याव करै अपराधी

मुलक री आ कैडी आजादी
पूत-पितर मे मच्यौ छिनाळौ, चारूं दिस बरबादी

भूल करो जननायक भारी

भूल करी जननायक भारी, चरै गधेड़ा केसर क्यारी
सुरण समधरण निरभै समवादी, कांग्रेस है जाट सभा री

गीध कागला रा भरमाया, नवा नाथ नै खोदा लाया
हळ खड़ता करसा रै माथै, अेक जात करली असवारी

अब चौधरिया हाट सजाई, करी किरोड़ां री भरपाई
गीध कागला पडै अेठ में, लूटै धन इज्जत जनता री

अैलकार आठांनी खावै, जेळ पड़ै कै रिजक गमावै
अै करदै दो क्रोड कांकरी, वरणै मिनिस्टर चोरचजारी

सिरनांवौ गाधी-नहरू रौ कागद आयौ जातभरू रौ
नगरां नै जंगळ कर देसा, चर-चर वळण मिटाग्रौ सारी

क्यूं लड-भिड़ आजादी लाया, क्यू म्हारा खोळा वदळाया
पोठा करै घड़ूकै खोदा, अैठ अरोगौ सारा वारी

सव जाता नै अेक वणावौ, अेक जात री रीत हटावौ
जो जनता सू टळ नै हालै, उण री आग वुभण दौ सारी

राज बदलग्यौ म्हांनै कांई

इण दिस सुख री पडी न भाई, राज वदळग्यौ, म्हानै काई

नेता कैवै राज आपणौ अगरेजा सूं लैर छूटगी
साधक घोकै निमौ नारायण, दुख दाळद री नाड टूटगी
बाण्यां रै पौवारा पड़गी, पौरायत री आख फूटगी
गोवरिया भांवी रै घर सू, भरया पेट री याद रूठगी
साधक जीमै दूध-मळाई, गोवर कूकै म्हानै काई

भण्या-गुण्या भगता मे मिळग्या, वडौ हुकम खादी मे वडग्यौ
नेता री निवळाई लारै मुजराखोर मुसायव पडग्यौ
देसभगत चीराय आगळी, वण जू भार सिरा पर चढग्यौ
हळ-धण खडतौ आडौ वेली, बोभौ भेल जमी मे गड़ग्यौ
नवा साव नै खीर निवाई, वढियौ भीकै म्हांनै काई

गाधीजी री फौज विखरगी, तेरा तीन हुया भायेला
चन्दा-चोर चढ्या सिर ऊपर, फन्दाखोर हुया सव भेळा
धन्धाखोर धाडवी वणग्या, सूदखोर नित करै भमेला
रणबका नर कियौ किनारौ, आगीवाण हुया मदगैला
नेताजी रै मोटर आई, नूरचौ वांगै म्हानै काई

जनसेवक मूरतिया वणग्या, निवड्या ना'र जीव रा काचा
खेत गमाय किया हाथा सूं, सिटपिटियां रा सपना साचा
गैणै पडी कमाऊ दुनियां, कलम सेठ रा खाय तमाचा
वावूजी दो दिन सूं निरणा, सूखौ पेट वैठग्या वाचा
कुवर सेठ रा खाय मळाई, मुन्नौ रौवै म्हानै काई

दस पीढी री खरी कमाई, कागरेस वाण्या रै विकगी
धन-लालच सू जन-नेता री, मझ खेता में गोडी टिकगी
नगद नफै री भरम भाड़ मे कमतरिया री काया सिकगी
पिण्डतजी पोथी नै पटकै, बेमाता खत खोटा लिखगी
आडम्वर नै भेट सवाई, जनता जोवै म्हानै काई

कूड कपट करण-करण मे रमग्या, भली चाल भाडा मे मिळगी
कमतरिया री कठण कमाई, वाण्यां री डाढा मे झिळगी
रुळता फिरै समझण सांवत, अणबूझा नै गादी मिळगी
धन वाळा री धीग धाक सू, बळवाळां री जीभ निकळगी
सेठा रै घर नगद कमाई लोक उडीकै म्हानै काई

अहिंसा बोल

बिकै क्यूं मिनखपणौ बेमोल, अहिसा वोल अहिंसा वोल
पातळौ पडग्यौ सत रौ वोल, अहिंसा बोल अहिंसा वोल

परदेसा पिण्डत रौ पडचै पंचसील परवाणौ
पण घर मे मामूली हुयग्यौ गोळ्या जीव गमाणौ
मिनख रौ कारतूस भर तोल, अहिंसा बोल अहिसा वोल

क्यूं निकमा माईत आज रा, छोरा नै धमकावै
दो पीढी औ पाठ पढायौ, अव क्यू खोट वतावै
मचाई अव क्यूं छोरारौळ, अहिसा वोल, अहिंसा वोल

भणता नै वापू छेड़्या, सड़कां रौ सख वजायौ
बयाळीस मे तोड़-फोड रौ, नेताजी जुग लायौ
जुगा रा वधण नाख्या खोल, अहिंसा वोल, अहिंसा वोल

नवै खून सू वासण लागी, वापूजी री खादी
दस पीढी रा वळिदाना री, सगळी सुगन्ध गमादी
उतरग्यौ जन-सेवा रौ झोळ, अहिंसा वोल, अहिसा वोल

ले वापू रौ नांव चलावै, गुरगा चोरवजारी
धवळ भेख रै धोखै पडगी, डूवी जनता सारी
मुलक रौ सुधरै किण विध डोळ, अहिंसा वोल, अहिंसा वोल

अब गादयां पर घर रा वेली, जुलम करै करवा दौ
आ जूठण अंगरेज उगळग्या, अब यांनै चरवा दौ
चलण दौ लोकराज मे पोल, अहिंसा बोल, अहिंसा बोल

करसां नैं भरमाय, वळद ले गुरगा चढग्या गादी
औं वळदा रौ दोस नही, माडाणी छाप लगादी
जमादौ धाड़विया रै धौल, अहिसा बोल, अहिंसा बोल

उस्तादां री आंण

उडती वाता आपरी, सुणली चौदा मास
अवै उखड़गी भायलां न्याव मिलण री आस
न्याव मिलण री आस नेह सूं रती न वाकी
भीड-पीड़ री भेळप बिटळ्यै मत सूं थाकी
उस्तादा री आण क्रिपा कोथळियै राखौ
वंद करौ परचार करौ तौ साची भाखौ

आजादी रौ आयग्यौ, अणचीत्यौ वरदान
सांकळ कटता मोद मे, जनता चूकी ध्यान
जनता चूकी ध्यांन, गधेड़ा धांन खायग्या
जन समझ्यौ भगवांन, हाथ में कांन आयग्या
उस्तादा री आण, पेट पर पडी दुलत्ती
गादी मिलतां गुण इमांन री कटगी पत्ती

पण फौलादी धान है जनकवि हदां प्राण
जोर पडै ज्यूं पग जमै संघरसां री वाण
सघरसां री वाण खुसामद करी न पाई
अव आखरी मजल करूं क्यूं मूंड पराई
उस्तादा री आंण गया ठाकर नै राजा
अत्र जासी ठगराज सुणीजै कवि नै वाजा

तरै तरै री वानगी तरै तरै री आंट
सौळै घोड़ा जोतिया आठ दिसा में वांट
आठ दिसा मे वाट चलावै चाबक सौळै
चढ्या मसखरा हाक करै हौळै भई हौळै

उस्तादा री आंण निकांमा तुरग हकाळै
आठ दिसा मे खेच्यौ रथ तिलभर कद चालै

सता रा सळ नीसरया बापू करग्या काम
हुकमत हिलता हुय गयौ हक सू हेत हराम
हक सूं हेत हराम निकांमा नांव कमावै
ज्या कांधा पग मेल चढ्या वै धक्का खावै
उस्तादा री आण दगै रा दाम पटै है
बापूजी सूं लोक तणौ बिसवास हटै है

बापूजी थे मर गया धिन धिन थारा भाग
दो दिन औरू जीवता डाकण जाती लाग
डाकण जाती लाग त्याग री स्यान बिगडती
हुकमत हदौ दाग लाग सताई सिड़ती
उस्तादां री आंण आज सौ जन ऊपर हौ
दो दिन बेगा गया इणी सू आज अमर हौ

चरखौ चढग्यौ मौरचै जीभ लगायौ जोर
हाका सूं ही जीतग्या कागा रणथभौर
कागा रणथंभौर जम्योडी गाड़ी मिलगी
रूसी जरमन रगत दियौ जिण सूं धड़ हिलगी
उस्तादा री आण अबै तकली टर्रावै
सड़चै सूत नै तलवारा सूं तेज बतावै

खाता खातां खोपरा पाडा गया अघाय
लीलौ चारौ, रोवता, टसका करता खाय
टसका करता खाय, मिनख तरसै टुकडा नै
रूळयै राज मे रो न सकै निबळा दुखड़ा नै
उस्तादां री आंण अबै धरती धूजैला
लोक जागतां ठगठाकर रा पग सूजैला

इटक आढत राजरी बाजै संघ मजूर
फूट फैल रा फाटका करता खाय खिजूर
करता खाय खिजूर उतरिया ठांव ठीकरा
सभा मच रा सूर सेठ रा करम डीकरा
उस्तादां री आंण भेदिया भांड राज रा
बाण्यां सूं मिल जाय कांकरा करै काजरा

—गणेसीलाल व्यास उस्ताद

आंभी - सांभी

नारायणसिंघ जी सूं बात-विगत

• तेजसिंघ जोधा

छारला केई दिना सू बरोबर इण कोसिस में हौ कै नारायणसिंघजी वगत अर मूड दोनू सागै दे सकै तौ बात की वणै, इण अक रै वर्षं लाग्या पछै बीया तौ सोघ सस्थान इकातरै-पातरै आवणौ-जावणौ, ऊठणौ-बैठणौ, हसणौ-बोलणौ की अठी-उठी रा कामा समेत लाग्योडौ ई रियौ अर रैवै, पण वौ दिन अर टेम सातू वारा रै विच्चै छिपला खावणा कोनी छोडै, जिणरौ अेकांत म्हे राजस्थानी कविता रै पाणी सारू वरत सका

आज उटकाई मोकौ पीवणौ हौ. दोफारा सोध सस्थान रै आफिस मे बैठा अठी-उठी री बाता करता म्हनै औ लखायौ कै जाणै म्हे अेकई ठौड भिल्या जावा हा, अर अब वगत रौ फायदौ उठा लेवणौ चाईजै.

"तौ आज आप, आपरी वार विगता ई दिरावौ"

"हा विगता ई देवा, ईया लारौ थोड़ौ छोड हौ !"—वारी निजरा मे अेक परोट्यौडी मुळक ही, अर मुळकमे जठै मोकै रै अणन्यूंत आवण री हळकी इचरज हौ, उठै मायली त्यारी रा समचार भी

म्हे आफिस सू ऊठ'र सैर आय लिया, वातां नै कपडा री 'क्रीज' सू अळगी करण सारू.

जाळोरी गेट सुभदा प्रैस प्रैस रौ अेक कमरौ कमरै अर कुरसी सू रल्लै-तल्लै व्हेण रै बिच्चै, की सळ काढ्ढ बाता चाय सू बीडी सिगरेट अर पान रै निजापै ताई, आप आप रै पाळै चढता म्हे

"नारायणसिंघ सा, इण सू पैली कै आपां वात कठै सू भी सरू करां, औ खुलासै कर दू कै म्हारी मकसद काई है ?....आजादी रै अेड़लै छेडलै वगत मे राजस्थानी री चालती आई कविता नै जका झटका लाग्या अर जकी कवितावा उथलवडै मे सरु व्ही ज्यांनै म्हे हाफळां' रौ नांव दियौ, अर जकी कै कमोवेसी म्हा नुवोड़ा रै आंवण सू पैली पग रोप्या ही, वारी

सीवा समझ मे आवण रै पछै भी मायली खसाखम रौ अेक पगस जिकौ कै आप कविया अर आपरा जोडीदारा सू जुडचोडौ है, तद लग अधूरी रैय जावै, जद लग कै आप लोग मून नी खोलौ. इणमे कोई सक कोनी कै बदळाव रै समचै आ कवितावा रौ मोल सदा ई रैसी, अर साहित्य मे तै ठौड भी पण इण बदळाव अर आ कवितावा नै मिळजुळ'र समझण री कोसिस जरूरी है काल नै व्है सकै कै आप लोगा री याददास्त इत्ती भरोसैवद नी रैवै, अर नी म्हारी रुची म्हारौ मतलब है करसण वगतोवगत ई अवेरचोडौ चोखौ"

'ठीक है, बोलौ काई अवेरणौ चावौ ?"

"फूस पानडै ताईं सै की, वौ भी तौ दाव ढाढा रै काम आवैलौ."

"साची है !"

"आप ईया करवावौ कै उत्तै सै फैमेली बैक ग्राउण्ड सू लगाय'र जित्तो कै आपरौ अवचेतण वणावण मे मददगार रियौ व्है, आज ताईं री सगळी जात्रा, वा जठै जठै, जीया-जीया, लिखणै सू लाग राखै बयान कर दिरावौ, विच्चै म्हारा सवाल आपरी मदद करैला"

नारायणसिंघजी सिगरेट सार'र आख्या मीची अर पळका री कोरां पर आगळी, अगूठौ मेल'र डूबता थका कैवण लागा—"जठै ताईं फैमेली बैक ग्राउण्ड रौ सवाल है, घर मे कोई कविता लिखण री सातरी परम्परा रैयी व्है, अैडी बात तौ ही कोनी. फादर कणा कणा दोहा सोरठा वणा भी लेवता अर बानै परम्परागत कविया री कवितावा भी खूब सागी याद ही, पण इणनै आप आमतौर सू आ ई मान सकौ कै अेक सहज रुची ही, जैडी कै कोई भी चोखै भलै सस्कार सम्पन घर री व्है वडा फादर री परसनल्टी रौ म्हारै माथै खासौ असर रियौ फादर तौ सर्विस मे हा. लारै घर रा करता-धरता वडा फादर ई हा. कोट-कचेड्या रा काम, नेम-टेम सू बध्योडी दिन चरया आया-गया रौ आव-आदर, लिहाज, काण-कायदा, कुरब, रुतबौ, कुल मिला'र आ समझौ आप, कै घर रौ वातावरण वा सगळी औसत मरजादा सू जुड्योडौ हौ, जिकी कै उण वगत किणी भी ठीकोठीक हालत रै राजपूत परिवार री व्हे सकती.

म्हारै विकास रै बाबत म्हैं आ निसकै कैय सकू कै घरवाळा रौ सैयोग ई रियौ क्यूंकै वै कदेई दिक्कत नी वणिया. म्हारौ लिखणौ-पढणौ वा नै सुहावतौ रियौ, अणखायौ नी घरवाळा रै सैयोग रौ ई तौ नतीजौ हौ कै म्है एम.ए एल एल बी ताईं लगोलग पढ सक्यौ.

....पाछौ बावड'र देखू, याद आवै, घरा पडी कितावा मे अेक किताव ही 'सुभासित संग्रह.' उणमे हिन्दी अर राजस्थांनी री सवळी सोरी कवितावा ही, सुहाई, सातरी लागी, म्है काईंठा उणनै कित्ती वार पढगौ. कविता सू परिचै रौ म्हारै खयाल मे याद राखण जोग औ पैलौ मौकौ हौ. आगै चाल'र पढण नै चौपासणी इसकूल मे भरती हुयौ. 'कौर्स' में जकी कवितावा ही, वै खुद पढता, अर जद मास्टर लोग पढावता अर खोल खोल'र समझावता,

उण वगत इत्तौ सतोस देवती कै वा सारू पूरमपूरा सवद भी म्हारै खनै कोनी टेक इट इन सैंस ऑफ चाइल्डस ग्रेनरजी फूड....वा दिना म्हारै हिन्दी रा ग्रेक माड़साव हा, नन्दलालजी, जका ग्रवार दोयेक वरसा पैली नागोर मे इसपेक्टर ग्राफ स्कूलस हा, ग्रवै सायत रिटायर व्हेगा व्हैला. कविता पढण-पढावण री वारी सातरी पौंच ही. खुद भी वै कविता लिख्या करता, उण वगत रै हिसाव सू खासा ठीक लिख लेवता हा प्रसाद वगैरा छायावादी कविया री टावराजोगी कविनावा तद कौर्स मे ग्रावण लागगी ही. नन्दलालजी प्रसाद रा जोरदार प्रससक हा ग्रैडो रस लेय लेय'र पढावता कै मत पूछावौ नवी- दसवीमे ई म्है पैलीवार कविता लिखणरी कोसिस करणी सरू करी ही"

"हिन्दी मे कै राजस्थानी में ?"

"हिन्दी मे, ग्राप जाणौ कै म्हारी पढाई रौ जरियौ तौ हिन्दी ई हौ, जकौ ग्राज ताई है खैर दसवी रै पछै सैर मे ग्राया, मतलव कालेज मे भरती व्हिया"

"कुणसौ सन् रियौ व्हैला ?"

"उगणीस सौ ग्रडताळीस ग्रापरौ तौ जलम ई कोनी व्हियौ हौ म्हनै याद है ग्रापरा नानोसा छतरसिंघ सा ज्या दिना राजमाता साव रा कामदार हा, ग्रर सैर मे पैलेस सूं मिल्योडै नौरै मे ई रैया करता. म्हे लोग, दो तीन पढण वाळा भी ग्रेक साल उठै नौरै मे ई रैया हौस्टल वगैरा जद ढगसर सरू कोनी विया हा ग्रापरौ जलम व्हेणौ हौ म्हारी याद-दाम्त मे है ग्रापरा नानीसा सोच फिकर करता रैवता डाक्टर नै वुलावणौ है. ग्रौ करणौ है वौ करणौ है वाई री तवियत ठीक, कोनी वगैरा ग्रर ग्राज देखौ कैडौ संजोग है कै ग्राप ई म्हारौ इन्टरव्यू लेवण नै वैठा हौ"

'हा सजोग ई तौ है"--म्है वात री डोर पाछी वाधी—"ग्राप जद कालेज मे ग्राया, वै दिन राजनीत री निजर सू खासा उथल-पुथल रा हा. ग्राजादी ग्रायगी ही, रजवाडा टूटगा हा, ग्राप काई मैसूस करता रया, ग्राजादी रौ ग्रावणौ ग्रापनै किया काई लाग्यौ ?"

"जठै ताई चौपासणी मे हा, हालत ग्रा रयी कै दूजी जाणकारिया, सूचनावा ग्रर ग्रादोलणा वगैरा सू विया ई 'कौरनर' व्हियोडा हा. जद सैर मे ग्राया, तद ताई तौ सै की तै व्हैईगौ हौ. रियासता मे पौपूलर गवरमेट तौ खूव पैली ई वण चुकी ही. जोधपुर विया भी ग्रादोलण वगैरा री नजर सू कोई खास मझ री जगा कोनी ही यू देखावौ कै ग्राजादी रौ ग्रावणौ नी भूडौ ई लागै हौ, नी घणौ उछाछळा करै जैडौ ई वदळाव जकौ ग्रावै हौ, वौ पैली सू तै सौ निजर ग्रावै हौ, ईया कै जाणै जकौ की व्हे रियौ हौ, व्हिया जावै हौ, म्हैं जाणू हू, ग्रर उणनै जाणू , इण ई ग्ररथ मे 'नौरमल' हू कोई ग्रणू ती हळचळ म्हारै माय इण वदळाव रै समचै ग्राई व्है, ग्रैडौ नी हौ पछै हैसियत रै हिसाव सू छुटभाया मे हा, सौ ग्राजादी ग्रावण सू ग्रापारौ कोई राज जाई परौ कै जागीरी खुस जावैला, ग्रैडौ खतरौ भी ग्रापानै कदेई नी लखायौ"

"राजस्थानी मे ग्राप कद सू लिखणौ सरू कियौ ?"

"कालेज में भरती व्हेण रै सागै ई अेक बडी दुनिया में आया. नवै ढगरी कवितावां, पढण लिखण री ज्यादा सुविधावा, नवा नवा लोगा सू परिचै इत्याद व्हेणौ, मिलणौ सरू व्हियौ लिखणौ म्हैं फस्ट ईयर मे ई सरू कर दियौ हौ हिन्दी मे तौ पैली भी लिखतौ ई हौ, साथै साथै राजस्थानी मे भी लिखणौ सरू कियौ"

"आपरै साथै उण बगत लिखण पढण वाला दूसरा लोग कुणसा हा ?"

"लिखण पढण वाला लोग तौ खैर असवाडै पसवाड़ै हा ई, पण म्हारै सू वारी परिचै थर्ड ईयर मे व्हियौ समझावौ. अै ई रेवतदान, सत्यप्रकास, विजयदान इत्याद पढाई मे अै म्हारै सू अेकाध क्लास आगै ई हा, साथै आ में सू कोई सौ ई नी हौ सत्यप्रकास वा दिना हिन्दी मे लिख्या करतौ म्हारौ खयाल है राजस्थानी में तौ वौ बम्बोई गया पछै ई लिखणौ सरू कियौ व्हैला राजस्थानी मे वा दिना जका लोग चावा हा, वा मे रेवत खासौ जांणीजतौ नाव हौ उस्ताद सू वा दिना म्हारौ सम्पर्क इत्तौ नी हौ गणपतचन्द्रजी भडारी भी कवितावा लिख्या करता हा, खासतौर सू हास्यव्यग री अर कमोवेसी कवी रै रूप मे जाणीजै भी हा. कुल मिला'र अेक वातावरण हौ सा. पण आप देखावौ आगै लारै कवितावा रै मु डागै आवण री जरियौ मच ई हौ राजस्थानी सारू सगळा रै मन मे लाग रैवती. म्है भी 'वाई द वे' मच माथै इक्की दुक्की वार कवितावा वोली करी, पण मच म्हारी कविता री जगा नी वण सकी अर इण सू ई आप समझ सकौ कै सभाविक रूप सू आ दूसरा टीमवाळा लोगा अर म्हारै बिच्चै अेक फरक भी हौ, अेक किसम रौ म्हारौ रिजरवेसन, सभावरौ, काव्य सभाव री, जकौ म्है हमेस अनुभवतौ रयौ अर उण मे अै साझौ करण मे समरथ व्हे सकता, अैडौ म्हनै कणा भी नी लखायौ"

"वा दिना दूजी भासावा रै जिण साहित्य रै आप सम्परक मे आया अर जकौ आपनै अपील करतौ रियौ वौ कुणकुणसी भासावा रौ साहित्य हौ अर किण किसम रौ हौ ?"

"रौमैटिक कविता म्हनै अपील करती रयी. हिन्दी मे पत, प्रसाद, निराला, महादेवी अग्रेजी मे सैले, कीट्स, वायरन वगैरा. अर बगाली मे रवीन्द्रनाथ टैगोर री कवितावा वा दिना म्हैं कालेज लाइब्रेरी मे, जठै ताईं लाइब्रेरी वद नी व्हे जावती, लगोलग वैठौ रिया करतौ आ समझण री कोसिस करतौ कै रौमैटिक कविता मे वा काईं खास बात है जिकी उणरै एक्सप्रेसन नै पावरफुल वणावै रौमैटिक कवितारी मनोभूमी, सिल्प, मानवीकरण, विसेसण विपर्य इत्याद अलकार, नु वौ छद विधान, इमजेज मे कवीदीठ रौ पसराव, म्हनै उतेजणा देवतौ, अर कविता नै लेय'र म्हैं खुद नै ज्यादा पुख्ता अर सस्कारित व्हेतौ अनुभवतौ हिन्दी कविया में खासकर प्रसाद री कामायनी अर बगाली मे टैगोर रौ फ्रौवर्स म्हनै प्रभावित करतौ रयौ एम ए मे म्हनै लगातार दो साल कालेज री मैगजीन एडिट करण रौ मोकौ मिळयौ, क्यूंकै सरूपोत रा दिन हा, म्हारौ आतम विसवास वध्यौ"

"आपरौ पैलौ राजस्थांनी काव्य कुणसौ है ?"

"लिखण रै लिहाज सू 'ओळू.' म्हैं सन् ४६-५० में इणनै लिखी ही. पण पोथी रै

लिहाज सू 'सांझ' पैली छपी वीया 'ओळू' रा की छद अर 'जीवण धन' मे सकलित 'विधवा' इत्याद कविता उण वगत कालेज मैगजीन मे छप्या हा `'साझ' पैली तौ 'प्रं रणा' मे धारा-वाहिक छपी अर सन ५४ मे किताब रै रूप मे आई."

"इण धारावाहिक छपी जिणमे, अर पोथी रै रूप में आई उणमे, की फरक है काई ?"

"घणौ तौ नी, पण है. क्यूकं 'मेघदूत' रौ अनवाद इण विच्चाळै म्है कर लियौ हौ जिण सू 'वाकुवलरी' थोडी 'एनरिच' व्हेगी ही, अर इणरौ फायदौ 'साझ' नै किताब बणावण मे पूरौ पूरौ लिरीजियौ"

"मेघदूत रै अनवाद री प्रेरणा आपनै कठै सू मिळी ?"

"प्रेरणा सू कौमल अर विजयदान, भाया (देवनारायण) रै सैयोग सूं 'प्रेरणा' नाव रौ अेक मासिक छापौ सरू कियौ म्हा लोगा रौ वा दिना आपस मे सातरौ ऊठावैठौ हौ. अै लोग कैयौ कै राजस्थानी मे कोई सातरै सै काव्य रौ अनवाद करीजै तौ वढिया रैवै, नारायणजी थे कर सकौ वाताचीता मे ई तै व्हियौ कै 'मेघदूत' कलेवर में भी छोटौ है. अर है भी आपरै जैडी अेकई चीज, उणरौ 'ट्रासलेसन' करीजणौ चाईजै सस्कृत म्हनै आवती तौ ही कोनी. टीकावा वगैरा रै जरियै सू मगजपच्ची सरू करी. की छद वणाया, जका आ लोगा नै पसद आया अर उण पछै ग्राड हौटल मे अेक कमरौ लिरीजियौ अर म्है मेघदूत' रै 'ट्रासलेसन' माथै लागगौ रोज साम रा कौमल, विजयदान अर दूजा मित्र लोग आवता अर म्हैं दिन भर मे अनवाद करयोडा छद सुणावतौ. वा माथै वातचीत व्हेती पछै सगळा लिछमी (लक्ष्मीमल सिंघवी) खनै जावता, उण मे सम्कृत समझण री सातरी खिमता ही, राजस्थानी तौ खैर जाणतौ ई हौ उणरै समझ वैठ्या पछै अनवाद करयोडा छद निरदोम गिणीजता

मेघदूत रौ अनवाद म्हनै खूब 'पे' करयौ. इण मायनै मे कै सबद सगती वधी, भासा माथै अधिकार वध्यौ अर इण मिस अनवाद सूं मिळतै खाली टेम मे अेकाग्र व्है डिंगल साहित्य नै पढ सक्यौ"

'आप आपरै विकास मे साथी सगळचा रो भूमिका कितीक काई मानौ ?"

"कितीक काई ? वातावरण री भूमिका तौ मिनख रै विकास मे लूठी हाथ राखै ई है राझौ उण ठौड पडै जद कै म्हारा सगळचा जका कै म्हारै चौगिडदै वातावरण रौ अेक हिस्सौ मात्र है, म्हनै सिरजण रौ दावौ करण लाग जावै अर जे वै अैडा दावा माथै उतर आवै तौ कठै न कठै खुदरी भूमिका अर महत नै घटावै ई है, वधावै नी साथिया री भूमिका म्हारै सारू पाजेटिव अर नैगेटिव दोनू भांत री रयी है आप इण चरचा नै रैवण ई दिरावौ, हाल हळकी-वाता नै तवज्जौ देवण री आदन नी पडी, पछै क्यू कादै मे कळीजू."

"परम्परा अर रौमेटिक सैली मे आपनै कुणसौ सीधौ जुड़ाव निजर आवतौ ग्यौ ? दूजा सवदां मे वा कुणसी 'अर्ज' ही जकी आपरी 'पौइटिक परसनल्टी' नै 'चार्ज' करती रयी ?"

'परम्परा अर 'रौमेटिक एटीट्यूट' रै विच्चै जकौ जुडाव म्हैं अनुभवती रयौ
वौ कठै न कठै अवचेतण में हौ, साफ अर साप्रत नी मन मे कठेई आ ही कै राजस्
कलचर मे जका उदात्त तत्व रिया है, वानै नु वै रोमैंटिक ढाळै मे प्रजेंट करू, समै
वै भी अैडा तत्व, जका सेवट आपरी पौंच सू 'औन दी हौल' भारत री 'कल
'कन्ट्रीब्यूट' करै अैडा तत्वा रौ उथलौ वरतमान रै परिपेख में जरूरी व्है, क्यू
किणी भी देस री लूंठाई में वकत राखै आ तत्वा री जकौ 'चार्म' अर 'अैट्रेक्सन' है
म्हनै परम्परा सू जोड्यौ पुराणै साहित्य सू म्हैं आज भी उत्तौई राजी-व्हू जित्तौ
रै साहित्य सूं"

लागतौ रियौ कै स्वारथ रै घाल्यौ आदमी कित्तौ ओछौ व्हे जावै हजारा वर
लगोलग कोसिसा सू पुरखा जका मोल-मान थरप्या, वानै छोटा मोटा वहावा में नस्ट
तेवड लै घणौ की अैडौ भी व्है, जिणनै सहेजण री जरूत व्है. नफै नुकसाण, जात-न
वणणै-मिटणै अर जीता-हारा सू भरचोडै मिनखा रै इतियास में जकी मिनखाऊ उपल
है वा में म्हारी रुभाण रियौ अर इण निमत पूठ मे सदा राजस्थान री कलचरल
बोलती रयी

परम्परा सू म्हारौ जुडाव किण हद ताई हौ अर उणसू म्हैं न्यारौ कित्तौ व्हे
इणनै देखण नै आप 'दुरगादास' नै ई लिरावौ आप लारली, परम्परागत कविता सू इ
साफ फरक पावौला. रचणा में घटणावा रौ सरीर कठेई माथौ उठावतौ नी मिळैला.
गरम व्हेतौ व्हेतौ अेक हद रै पछै जीया भाप में वदळजावै, उणीभात तीन सौ साल पैली
घटणावा कठेई 'वौयल' व्हे रयी है, अर म्हैं वारी 'वखत रा वखतरा चीरणी, खुरत
धमधमी अेथ साभळू' वस इम्प्रैसन ई इम्प्रैंसन लखावा नै 'सेप' देवौ अर साफ निसर
कविता में आ नैचर काम करती रयी. परम्परागत कवी जीया 'दुरगादास' रौ कवी अ
कविता मे नी लाधैला कविता में वरणन नी, इलस्ट्रेसन मिलैला".

"आप ठीक फरमावौ, रौमेंटिक कविता री आ ई तारीफ रयी है, वा विग्यान-
रै समचै चालती आई कविता नै तोड कवी री रचणा-दुनिया नै विगसाव दियौ कवि
अेक नुवी 'अैयेटिक्स' 'इन्वाल्व' हुई नायक रै रूप मे 'दुरगादास' नै टाळणौ भी
निजर रौ परियाण है. 'दुरगादास' कुण से सन् में छपी व्हैला ?"

"सन् ५५ मे. 'साझ' अर 'मेघदूत' रौ अनवाद तौ म्हैं एम. ए करी जद ताई
छपायगा हा"

"अर परम वीर अर जीवण धन ?"

"परमवीर तौ देखावौ, चीन री लडाई कद हुई ही, सन् ६२ मे, तौ सन् ६३ मे
ही. अर जीवण धन सन् ६५ मे."

"नारायणसिंघ सा 'परमवीर' इत्तौ सतोस नी दियौ, खास कर'र 'दुरगादास' रै
देख्या, पढ्या सू"

"हा, घटणा अर रचणा रौ इमीडेट व्हेणौ इणरौ कारण व्हैला घटणा तौ खैर इमीडेट ई व्है, आ कैवू तौ ज्यादा ठीक रैवैला कै उण माथै रचणा तुरत फुरत मे लिखी-जण सू थोडी हळकी पडगी व्हैला."

"कविता रै छूट आप गद्य मे की नी लिख्यौ, औ क्यू ? जद कै दूजी भासावा री 'रौमेटिक अेज' रा कवियां नै देखा तो देखण मे आवै कै वै गद्य मे भी लिखता रिया अर लिख्यौ भी खूब भरवा अर जानदार. पछै आप रै साथै वै कुणसा कारण रिया, की बता सकौ आप ?"

"अेक तौ छापा री कमी ही दूजौ जिण भात रै सोधरै काम मे म्है उळझगौ, उण रै बिच्चै इत्ती फुरसत नी मिळी कै इण तरफ सोच सकतौ"

"नारायणसिंघ सा, म्हारौ खयाल है, अै दोनू कारण अधूरा है, काई औ ज्यादा सई अर सीधौ नी है कै अैडी 'अर्ज' ई आप मे नी रयी अर नी जरुत ई लखाई"

"हा, व्हे सकै औ ज्यादा सई व्है"

"राजस्थानी मे साथ रा दूजा कविया मे आपनै कुण पाण अर पोत आळा दीसता रिया ?"

"खासकर उस्ताद. उस्ताद भी आपरै मिजाज री मरदानगी अर सीधी अर खरी कैवण आळै मस्तमौला फक्कड सभाव रै कारण, भासा भलाई उस्ताद री पाधरी व्हौ, आब्जरवेसन कीन अर सार्प हौ. उस्ताद रौ दमदार लागणौ कोरौ उणरी कविता रै कारण ई नी, (जे कविता री निजर सू ई म्हैं उणनै देखतौ तौ सायत् इत्तौ पसद नी कर पातौ) अेक पूरै मिनख रै रूप मे है".

दरअसल कविता अेक ऊडी कळा है कविता नै चार्ज करणौ अवखौ काम है, हरेक रै बस रौ काम नी. कवी मे गरभवान सवदा री पकड चाईजै. अेक अेक इमेज नै पकावणी पडै पैली अगरेज जीया जिण मुरगै नै 'फ्राई' करणौं व्हेतौ उणनै काईंठा कित्ता मुरगा खवाय खवाय'र ताजौ करता, वीया ई काईंठा कित्ता अनभव, कित्तां लखाण खाया सवदा रै मारफत अेक इमेज वणै. पछै, आगै इण ई ढाळै आप पूरी कविता री वणणौ समझ'र देखावौ तौ सरी"

"राजस्थानी रै नुंवै लेखण रै वावत आप काई सोचौ ?"

"ज्यादा पढण देखण रौ काम ई नी पडियौ, सौ काई कैय सकू इत्तौ जरूर जाणू कै लेखण भलाई नुंवौ वोदौ कैडौ ई क्यू नी व्हौ, वौ ई टिकै, जिणरै खनै भामा सस्कार व्है. नी तौ नागी काई धोवै अर काई निचोवै सैर वाळा नै राजस्थानी वोलता देग्वा हा कै नी, वस औ अैडौ ई ढग ढाळौ व्हेय'र रैय जावै."

"नारायणसिंघ सा, राजस्थानी रा आवण आळा दिनां रै वावत आप काई सोचौ ? काई लागै कै वात पगा आय जावैली ?"

'भासा समाज री जरुत व्है, जद वा जरुत दूजी भासा पूरी करण लाग जावै तौ पैंली वाळी भासा अवस ठडी पड जावै पण लाग तौ लगोतार औ ई र्यौ है कै जे पनरा-वीस साल खाधा भळै सैंठा राख्या तौ वात नै पगा आवणौ ई पडही इण खातर म्हनै नुंवी पीढी माथै भरोसौ भी है, अर उणरी खिमता मे विसवास भी."

वाता ई वाता मे दिन आथण नै आयगौ हौ कमरै मे अधेरौ वडण लागौ अर म्हे आखरी वार अेक दूजै नै गाढी निजरा सू टटोळण री कोसिस करी, की ईंया कै जाणै वाता मे की वकाया तौ नीं रैयगौ है. लाग्यौ, वाता मे की रैयौ कै नी रैयौ, कमरै मे जरूर रैयगा हा, अर व्है हा म्हारै वैंठण रा अैनाण टेवल रै नीचै 'पासिग सो' सिगरेट अर देसाई वीडी रा टोटा, पैकट अर छिपतू अर टेवल रै माथै भरचोडी अैस्ट्रे, खाली कप प्लेट इत्याद.

जोसी जी सूं खुलो वातचीत

• नन्द भारद्वाज

म्हीणाँ भर ववई रैवण रै दौरान राजस्थानी कवी सत्यप्रकास जोसी सूं राजस्थानी भासा, साहित्य, सस्कृति अर समकालीनता रै वावत न्यारी-न्यारी वैठका मे वातचीत व्हेतौ रयी—कदेई घरै, कदेई 'हरावळ' रै आफिस मे, कदेई समदर काठै तौ कदेई चालती लोकल-ट्रेन मे सफर करता. वातचीत रौ खास मुद्दौ कविता ई रैवती अर अेडली-छेडली वाता री सरूआत अर समाप्ती भी सेवट कविता-चरचा रै ओळचू-दोळचू घूमती रया करती

ववई गी 'फास्ट-लाइफ' रौ असर वारी वातचीत अर चाल ढाल री चटकी मे साफ लखावै दोनू कनपट्या अव तकरीवन धौळी पड चुकी है पण छ फुट डीगै डील मे हाल भी मोट्यार सी फुरती अर रवानगी है ववई रै गरम जलवायु रै वावजूद रग गोरौ-चिट्ट, अमूमन धौली कमीज, टाई, काळी पैंट अर तस्मैदार वूट वा रै पैरवास रा स्थाई अग है वोलचाल मे भासा रै व्यवहार रौ नजरियौ तकरीवन तै सुदा है आगलौ आदमी जिण जुवान मे वोलतौ व्है विण नै वी री ई जुवान मे पडूत्तर. कालेज रा करमचारिया अर वठै रा ई जाण-पिछाण रा लोगा रै विच्चै फर्राट ववइया हिन्दी रौ व्यवहार, तौ आपरा प्राध्यापक-वधुवा रै साथै अमूमन अगरेजी अदाज. पण घर मे अर राजस्थानी रै जाणकार साथै ज्यादातर थेट राजस्थानी लजै मे ई वातचीत किया करै. म्हनै वा रै साथै वातचीत करता हरमेस अेक खुलोपण मैसूस व्हेतौ, क्यू कै भासा नै लेयर वै कोई अणूतौ मोह कोनी

राखै विचारा सू भी पूरी तरिया खुल्ला अर वेलाग.

ववई मे रैवता म्हनै महीणौ पूरै व्है रयौ हौ अर दो दिन वाद पाछौ जोधपुर रवाना व्हेणौ हौ, इण विच्चै म्हैं चावै हौ कै रवाना व्हेण सू पैली जोसीजी सू राजस्थानी कविता रै वावत अेकर औरू सिलसिलैवार वातचीत करू. म्है आ वात वानै कैयी अर वा दूजै दिन दोफारा री टेम मुकर कर दियौ

यूसूफ विल्डिग रै चौथै माळै 'हरावळ' री आफिस. दिन रा ढाई वज चुक्या है— राजस्थान मे तौ अै ठड रा दिन है, पण ववई मे हाल भी खासा गरमी रैवै माथै पर पखौ चाल रयौ है. जोसीजी म्हारै सामी वैठा आपरौ की जरूरी काम निवेड रया है. म्है गुमसुम सौ बैठौ वा री तेजी सू चालती कलम कानी देख रयौ हौ अर साथै ई वा सू पूछ्या जावण आळा की खास-खास सवाला माथै विचार कर रयौ हौ हालाकि आ सवाला रौ जकौ पड़ूत्तर वै देवैला विण सू भी म्हैं खासा की वाकिफ हू क्यू कै लारली वैठका मे घणखराक सवाला वावत वा सू वहस व्हेती रयी है. अेक कोरै कागद माथै म्है सात सवाल लिख राख्या है जिका नै लेयर वा सू की सिलसिलैवार सवाल-जवाव करणा है. सवाल इत्ता ई व्हैला या आ सगळा सवाला माथै न्यारी-न्यारी चरचा व्हेणी ई चाइजै आ कोई जरूरी कोनी ही सवाल और भी पूछ सकू अर व्है सके कै आ मे सू अेक-दो नै उथळावण री जरूरत ई नी; बिच्चै ई कठै पड़ूत्तर मिळ जावै. जोसी जी री कलम हाल भी रफतार सू चाल रयी ही— विच्चै सायत् वै अेकर बोल्या भी हा—'वस अवार, औ हाथ मायलौ काम निवेड लेवू ।' म्है खाली नाड हिला दीवी ही

दसेक मिनट वाद जोसी जी कलम ठाभ लीवी अर आपरा कागद सांवट'र मेज री दराज मे मेल दिया. अेक खटकै रै साथै दराज वद वै कुरसी पाछी सरकाय'र अेकर ऊभा व्हिया अर स्सारै ई पडी मटकी मे सू अेक गिलास भर'र पाणी पियौ अर रुमाल सू मूडौ पूछता थका पाछा कुरसी माथै आ जम्या.

"काई म्हैं आपरा सगळा सवाला नै अेक निजर देख सकू ?"—वा म्हारै सामी पड्यै पानै कानी देख'र पूछ्यौ

म्हैं पानौ वा रै हाथ मे पकडा दियौ. तीन-अेक मिनट ताई सवाल पढता रया अर म्हैं वा रै चैरै सामी देखतौ रयौ. फेर वा पानौ पाछौ म्हारै आगै मेल दियौ.

म्हारौ पैलौ सवाल, जकौ कै अव म्हनै उथळावण री जरूरत कोनी ही क्यू कै वा पढ ई लियौ हौ—

"आप कविता कद सू अर क्यू लिखणी सरू करी ? वौ वगत री आखती-पाखती री वातावरण काई हौ—काई आप उण वातावरण नै आपरी कलम रौ विमय वणायौ ?"

"सायत् वौ सन् १६४३ रौ वरस हौ, म्हैं जोधपुर मे आठवी मे पढतौ हौ 'सैकिण्ड-वर्ड-वार' री खवरा अर घटणावा में खासा रुचि ही म्हारी. हिटलर री फौजा अव कठेई-

कठेई फेट खावरण लागी ही रूस महाजुद्ध मे सामिल व्है चुक्यौ हौ—घर मे पिताजी रूस रा हामी हा अर वारी वातचीत रै कारण म्हारौ भी रूस री तरफ रुझाण की ज्यादा ही. लड़ाई जोरां माथै चाल रयी ही रूस री फौजां री दिलेरी रौ चारूमेर हाकौ-सौ फूट रयौ हौ, म्हैं वडौ खुस हौ अर वा ई दिना म्हैं पैली दफै अेक कविता लिखी—'जय होगी उनकी ही रण मे... ....'

'हिन्दी मे ?"—म्हैं विचाळै ई पूछ लियौ

"हा, हिन्दी मे ई—क्यू कै पढाई भी हिन्दी मे ई करायी जावती ही दूजौ अगरेजी रौ जोर हौ—राजस्थानी घर-बार अर साथी-सगळघा रै विच्चै री भासा ही. खैर, तौ वा म्हारी पैली कविता ही जी पर जोधपुर सरकार पैलौ पुरस्कार दियौ म्हारी कवितावा पढण अर लिखण री रुचि वधी. घर मे राजस्थानी री 'ट्रेडीसनल' कवितावा नै भी सुणण-समझण रौ चाव रयौ अरसै ताई कवितावा पढण-सुणण अर लिखण रौ सिलसिलौ चलतौ रयौ सरू-सरू मे लोकगीत अर भजन सुणण रौ भी वेजां चाव हौ अर वा नै सुणता सुणतां ई राजस्थानी मे लिखण रौ सावकौ पड्यौ वा ई दिना जोधपुर मे गणपत चद्र जी भडारी खूब चावा व्है रया हा—गरदभ राज महान, दिवाळी अर रक्तदीप वैरी चावी कवितावा ही. अेक मजेदार कवी आनद मगळ हा. वा री अेक कविता 'गदेडी वोली यू खर सैं' वा दिना पब्लिक मे खासौ नाव कमा रयी ही—म्हनै वडौ अजीव लगतौ कै साळी औ भी कोई कवितावा है ? उण दिना म्हारै हाथा अेक अजीव पकड आई, विरोध करण री. अेस्टाविलसमेट रै खिलाफ लिखणौ, इण कारण ताजमहल, राजमहल, मदिर, वैस्या, अनाथ री समाधी इत्याद कवितावा लिखीजी, हिन्दी मे जकी खासा चावी हुयी—खास कर ताजमहल"

"चावी व्हेण रौ जरियौ ?"—म्हैं पूछ्यौ

"मच."—वा छोटौ सौ पडूत्तर दियौ.

"काई आप मच नै सही जरियौ मानो ? राजस्थानी कविता रै साथै मंच रौ जुडाव क्यू व्हियौ अर औ कठै ताई सही हौ ?"

"वा दिना छपाई रा साधन वौत कमती हा, अर फेर राजस्थानी कवितावा रौ छपण छपावण रौ सिलसिलौ तौ साव ई पोचौ. इण वास्तै कविता मच रै हिसाव सू ई लिखी जावती ही. म्हारी कोसीस आ रैवती कै स्रोतावा री रुची रौ खयाल राखता थकां भी म्हारी असली अर सही वात सातरै तरीकै सू कैय सकू.

असल मे मच माथै वोलणौ या कविता पढणौ भी अेक कळा है अर इण कळा रौ पैलौ माहिर आदमी मानू म्हैं मेघराज मुकुल नै वा री 'सैनाणी' रौ हाकौ म्हैं केई जिग्या सुण चूक्यौ हौ. वा दिना म्हैं जसवन्त कालेज मे पढतौ हौ मुकुल जी रौ जोधपुर आवणौ व्हियौ गणपतचद्र भडारी रै अठै अेक कवि-गोस्ठी राखीजी, और लोगा रै साथै म्हैं भी पूगग्यौ. मुकुल जी आपरी कवितावा सुणायी—आजादी रा गीत, वा जोसीली सबदावळी अर सातरौ गळौ—खूब जम्या मुकुल जी. जद वै खासा की सुणा चूक्या तद वा औरा सं

भी की सुणावण री कैयौ. पण मुकुल री कवितावा सुणण रै वाद कोई री भी आपरी कविता सुणावण री हिम्मत कोनी पडी. मेवट भडारी जी अर सगळा म्हनै कविता सुणावण रौ कैयौ सकतै-सी म्है 'ताजमहल' कविता सुणावणी सरू करी—हरेक कडी माथै स्रोतावा री भरपूर दाद अर ताळचा खूब जमी और सुणावण री माग हुयी, टाळौ करणौ चायौ पण लोगां लारौ-ई पकड लियौ अर वी दिन पैलै ई घूमरै लोगा मुकुल रै बरौवर ला खडौ कियौ जा-पछै जित्ता अर जठै भी कवी-सम्मेलण व्हेता वठै सू बुलावौ आवतौ. कवि सम्मेलण ज्यादातर हिन्दी रा ई व्हेता हा

आ ई दिना मच माथै रेवतदान चारण रौ पधारणौ व्हियौ खूब खड-खडी खा-खायर कविता बोलतौ, लोगा नै खूब पसद आयौ सरू-सरू मे मुकुल अर रेवतदान री राजस्थानी कवितावा सुण-सुण'र म्हारौ भी राजस्थानी मे कविता लिखण रौ रुझाण वध्यौ मच माथै और भी केई नूवा लोग पनप्या—राजस्थानी खूब चावी हुयी लोगा आपरी भा री कवितावा रा सकलण भी प्रकासित किया अर वा रौ वानै भरपूर फायदौ मिल्यौ आ तकरीवन सन् १९५५-५६ री वात है—म्हारी पैली पोथी प्रकासित हुयी—'सहस्रधारा जिणमे हिन्दी अर राजस्थानी दोनू भासावा री कवितावा है. इण रै वाद भी सन् १९६० ताई जित्ती कवितावा लिखी, वा रै लिखण मे कठै न कठै मच रौ खयाल लगूलग बण्यौ रयौ "

"आप राजस्थानी कविता रै विकास-क्रम मे मच नै काई-कित्तौ-क माण देवौ ?" औ म्हारौ तीजौ सवाल हौ जकौ इण प्रसग सू सीधौ मेळ खावै हौ

आधै-क मिनट ताई मून रैवण रै वाद जोसीजी वोलणौ सरू कियौ—"कविता खाली सुणण या सुणावण री ई चीज कोनी, वा पाठक मागै, सही पाठक वौ जकौ खाली मन-विलमावण या क्रीडा-भाव सू नी, किणी सुथरी समझ रै पाण कविता पढणी-समझणी चावै, वी रै सही अरथ—कथणी रै मकसद (इण्टैसन) ताई पूगण री कोसीस करै फेरू उथळावूं कै मच अेक कळा है—लूठी गळैवाजी री कळा, जकौ भी कवी आपरी कविता नै सातरै अर सुरीलै ढग सू गायर पेस कर सकै, स्रोतावा नै रीझाय सकै, वौ ई मच रौ मास्टर गिणीजै. आ मंच रै वावत अेक आम धारणा वणती जाय रयी है पण राजस्थानी कविता रै हक मे—जठै ताई म्हारौ खयाल है, सरू-सरू मे मच अेक लूठी जरूरत अर कवी री वात नै लोगा ताई पुगावण रै जरियै रै रूप मे जुडचौ अर सरूआत मे राजस्थानी रा कविया भी मच रै रुतवै अर स्रोतावा री रुची रौ पूरौ माण राख्यौ. लोगा में राजस्थानी कविता रै वावत रुची जाग्रत व्ही, कविता दरवारी ठरकौ छोड'र जनता रै विच्चै आई—मेघराज मुकुल, रेवतदान चारण, गजानन वरमा, कल्याणसिंघ राजावत, रघुराजसिंघ हाडा, बुद्धि प्रकास पारीख, विमलेस इत्याद् केई लोगा मच रै कविया रै रूप मे आपरी नाव कमायौ. आजादी रै आखती-पाखती रा की वरसा सू लेयर सन १९६० ताई तौ राजस्थानी कविता री मच रै साथै ठीक ठाक मेळ अर निभाव चालतौ रयौ, पण आगला की वरसा मे मच माथै जका लोग पनप्या वा मंच नै कमाई रौ जरियौ वणा लियौ अर लोकगीता री नकल

धुना माथै हळकै किसम रा गीत लिख्या जावण लाग्या, अठै सू राजस्थानी कविता अर मच री कविता रै विच्चै फाटौ पडग्यौ राजस्थानी कविता रै विकास-क्रम में मच री भूमिका सन ६० ताई ई मानी जाणी चाईजै"

"इण विकास-क्रम में आप कुण-कुण-सा कविया रौ नाव गिणाय मकौ ?"

"जनकवी गणेसीलाल व्यास 'उस्ताद', रेवतदान चारण, कन्हैयालाल मेठिया चन्द्रसिंघ, नारायणसिंघ भाटी अर गिरधारीसिंघ पडिहार, आ लोगा करता-नी-करता भी आपरी की न्यारी-निरवाळी 'इमेज' वणायी, आपरै आखती-पाखती रै जीवण अर वी री अवखाया नै कवितावा रौ विसय वणायौ—क्यू कै जठै ताई कवी आपरै आजू-वाजू अर जुग सू कटर चालै वौत थोडै अरसै मे ई खतम व्हे जावै अेक वात और कै 'आजू-वाजू' अर 'जुग री अवखाया' आ दोना रौ प्रयोग म्है अठै थोडै वडै अरथ मे मान र चालू, क्यू कै विया तौ आम आदमी री रोजीना री जरूरता रौ पूरौ नी व्हेणौ भी अेक मोटी अवखाई है अर आजू-वाजू रै जीवण मे भी अलेखू अणूताया भरी पडी है—कोई कवी या लेखक खाली आ ई अवखाया सू ता-ऊमर जूझतौ रैवै तौ भी कोई वे-वाजव वात कोनी, पण म्हैं इण हद सू आगै वव'र उण आदमी री वात कर रयौ हू जकौ दुनियां रै हरेक खूणै मे वस्योडौ है, जुग री अवखाई वा है जकी इण आम आदमी रै वख सू वारै है, जकै पर इण री जोर कोनी चालै अर जकै मे वी नै वेकसूर पीसीज जावण री लगूलग खतरौ वण्यौ रैवै. अैडी ई अवखाया मे सू अेक मोटी अवखाई है—जुद्ध वौ जुद्ध जिण मे अेक घडी मे सईकडू-हजारू नी लाखूं मिनख अेकै-साथै हार-मोर व्हे जावै—अणुवम रै अेक ई धमाकै रै साथै पूरौ मुलक उजड जावै. आप मान र चालौ कै हिन्दुस्तान अर पाकिस्तान रै विच्चै तौ कोई जुद्ध आज ताई व्हियौ ई कोनी—अै तौ छोटी-छोटी काकड री लडाया ही, जकां में दस-वीस दिन वदूका, मसीनगना या हवाई जहाजा रा करतव दीख्या, की मरघा-की घायल व्हिया अर सेवट राजीनामा कर-करायर मामला उतर-पातर किया जद ताई दुनिया रा सगळा मुलक जुद्ध रा खतरनाक हथियारा री होड नै खतम नी करैला दुनिया रै कोई भी खूणै मे रैवणियै आदमी री अवखाया रौ अत नी व्हैला म्हारी जुद्ध-विरोधी कवितावा रै मूळ मे भी म्हैं आ ई वात हरमेस मैसूस करतौ रयौ हू."

"पण आप उण जुद्ध या लडाई रै वावत काई कैवोला जकी किणी मुलक या आदमी नै आपरी इज्जत-आवरू वचावण खातर करणी जरूरी व्हे जावै, जिण सू टाळौ करण रौ कोई मारग नी रैवै."—म्हैं अेक सका वा रै सामी राखी.

"आप म्हारी वात नै औरू अेक पावडौ आगै वध र समझौ—म्हैं जुद्ध रौ जडामूळ सू विरोध करू—किण नै, क्यू अर किण मजवूरी रै पाण जुद्ध मे उळझणौ पडै अै सवाल वौत वाद मे ऊठै म्हैं उण तागत नै सगळा मू पैली वरजू जकी आपरै मन मे जुद्ध री भावना लावै—जुद्ध री सरूआत करै सवाल है जुद्ध री नौवत क्यू आवै, क्यू वणै वै हालात कै जका दोना पखा नै मरवनास रै ठायै माथै पुगा देवै. खाम्या दोनू पखा मे वरावर व्हिया करै पण

अेक पख जद जूझळ खायर अणूताया माथै ऊतर जावै तद दोना मे तणाव वधै अर औ ई तणाव अेक हद पार करता ई जुद्ध मे तवदील व्हे जावै दोनू पखा रै आम-आदमी रौ इण सगळै सिलसिलै सू कोई सीधौ सरोकार कोनी, औ खाली की कुवदी नेतावा अर मुलक रा धणी-धोरिया री अणूताया रौ फळ व्हिया करै पण इण रौ नतीजौ सेवट जनता नै ई भुगतणौ पडै

दुनिया रा कित्ता ई लिखारा अर साहित्यकार 'अैंटी वार थीसिस' नै लेय र ता-ऊमर लिखता रया है अर जनता वा री भावनावा रौ आदर भी कियौ पण अवखाई हाल भी वठै री वठै है अर कैवौ वी सू भी दो पावडा आगै वधगी है"

"राधा रै वाद 'अैंटी-वार-थीसिस' नै लेय र आप औरू भी की लिखता रया व्हौला—खास कर कविता रै छेत्र मे ?"

"हा, अेक सकलण वणै जित्ती कवितावा अर की विदेसी कवितावा रा अनवाद करतौ रयौ हू जे मित्रा म्हारै साथै दगौ नी करयौ व्हेतौ तौ आज ताई कवितावा रौ औ सकलण पाठका रै हाथा मे पूगग्यौ व्हेतौ हालाकि 'लम्कर ना थमै' नाव रौ औ सकलण पूरौ छप चूक्यौ है, खाली भूमिका लिखणी वाकी रयी है पण अव वौ सकलण उण रूप मे वारै आवणौ मुसकल है खैर औ अेक इतर मामलौ है अर म्है नी चावू कै अठै वीरी कोई लावी चरचा की जावै."

म्है इणी वावत की औरू पूछणौ चावै हौ, पण जोसीजी री मरजी नी व्हेण रै कारण इण मामलै नै अठै ई खतम करणौ पड्यौ चरचा रौ रुख मोडण खातर म्है आग-लौ सवाल कियौ—"आप आज री नूवी कवितावा नै भी देखता रया व्हौला— खास तौर सू राजस्थानी री. काई वारौ सुर आपनै सतोख देवै ? काई आप मानौ कै आज कविता आप रै सही धरातळ माथै पूग चूकी है अर वठै सू सही जात्रा री सरूआत की जा सकै ?"

"अभूमन अठीनली कवितावा म्है पढतौ-समझतौ रयौ हू साथै ई उण धरातळ रै वावत भी कै जिण नै आज रो कविता आपरौ आधार मान'र चालै जठै ताई दुनिया री और भासावा री नूंवी कविता रौ सवाल है—खास तौर सू अग्रेजी, फ्रैंच, रसियन, हिन्दी इत्याद, वै सही जात्रा री सरूआत ई नी, इण जात्रा मे खासा आगै वध चूकी है राजस्थानी कविता नै आ भासावा रै मुकावलै हाल खासा जात्रा तै करणी है इण मे कोई दो राय कोनी कै आज राजस्थानी कविता आप रै सही धरातळ माथै पूग चूकी है, पण हाल आ अेक वौत वडी खामी रौ सिकार वण रयी है—अर वा खामी है हिन्दी कविता री नकल, कथण रौ ढाळौ अर कविता रौ 'स्ट्रैक्चर' वदळ देवण सू कविता नूवी कोनी वण सकै—इण वदळाव री मायली जरूरत नै आपरै अनभव रै पाण समझ'र ई कोई कवी सही कविता रो सिरजण कर सकै— चालतै वगत री हळकी नारैवाजी मे कवितावा रा विनय खोजणा विरथा है—अलेखू राजस्थानी कवितावा माथै इण चलू नारैवाजी री अणूती दाव माफ लखावै जिकी कवितावा इण नारैवाजी सू निरवाळी रैयर आपरै आप्तती-पाखती री अणू-

ताया गी सातरौ व्योरौ पेस करै वै कवितावा म्हनै पूरौ सतोख देवै पण अैडी कवितावा अमूमन वौत कमती देखणी मे आयी है."

"अमूमन राजस्थानी या हिन्दी ई नी दुनिया री घणखरीक भासावा री आज री कविता नै लोग 'नूवी कविता' कैवै इण नाव नै आप कठै ताई सही अर सारथक मानौ—राजस्थानी री कविता इण अरथ मे कठै ताई नूवी है ?"

"नूवी कविता कोई ठावौ नामकरण नी है—आज री कविता रै बावत अेक काम-चलाऊ सकेत है—क्यू कै आज री कविता हाल 'प्रोसैस' मे है, वी री सगळी खासियता री हदा हाल तै कोनी व्ही उण रौ लेखौ-जोखौ भी हाल वी री सीवा अर खासियता री परिभासावा ताई कोनी पूग्यौ—उण अरथ मे कै जिया लारली कविता जात्रा अर वी री खासियता री सीवा तै व्हेगी है अर अव वी कथ्य अर कथण रै ढाळै में कोई गुंजाइस लारै कोनी रयी—ज्यू अग्रेजी मे क्लासिसिज्म, निओ-क्लासिज्म, रोमेण्टिसिज्म या हिन्दी मे स्वच्छन्दतावाद, छायावाद, प्रगतिवाद इत्याद नावा सू जुडयोडी कवितावा रौ ढाळौ आज रै जुग री अवखाया नै सही सुर दे पावण मे कारगर कोनी रयौ. आज री कविता झीणै सवदा अर छदा रै दद-फद सू घणी आगै निकळ चूकी है—आज सुर, सवद अर जीवण रै विच्चै आतरौ कोनी रयौ चालतै वगत मे आदमी री अवखाया अर वी री दुखदाई हालत रौ खुल्लौ व्यौरौ आज री कविता या लेखण री सही अर सारथक विसय कैयौ जा सकै एडवर्ड मारकस आज रै लेखण अर ग्यान-विग्यान रै मूळ मे 'नूवी विचार धारा माथै सब सू ज्यादा जोर दियौ, वा तमाम पुराणी व्यवस्था नै आज रै जुग-सदर्भ मे खोटी सावित करी अर 'न्यू वे ऑफ लाइफ' रै वावत अेक सही अर सुथरौ रुझाण पैदा करयौ— नूवी कविता या नूवै लेखण माथै भी इण विचार धारा रौ खामा गैरौ असर पडयौ.

राजस्थानी नूवी कविता मे हाल वा नूंवी विचारधारा मायली जरूरत रै पाण कोनी उभर पायी, इण रौ अेक कारण सायत् औ है कै घणखराक नूंवा कवी हिन्दी सू राजस्थानी री तरफ आ रया है, जद कै जरूरत राजस्थानी जीवण अर लोक-मानस सू भासारी तरफ आवण री है. राजस्थानी कविया रौ नयापणौ अगत कोनी, ओढयोडौ लागै राजस्थानी कविता आज छद रै वधणा सू आगै नीसरगी पण औ छद-भग भी हाल किणी मायली ठावी जरूरत रै पाण कोनी आयौ—घणखराक कवी खाली देखा-देखी रै सिलसिलै मे ई भरम रया है छद तूटण री भी आपरी अेक न्यारी निरवाळी 'फिलॉसफी' है अर कविता छद सू खुली व्हेण रै वावजूद भी विण मे अेक 'इनर डिसिप्लिन' रौ पूरौ खयाल राखणौ पडै, हालाकि इण वावत कोई अलग सू ध्यान राखण री जरूरत कोनी व्हिया करै आज कवी नै कोई सवद रौ प्रयौग करण सूं पैली वी री असली खिमता रै वावत पूरी तरिया सावचेत रैवणौ जरूरी व्हिया करै— अेक अणु में जित्ती सगती या खिमता व्हिया करै, वित्ती ई सगत्ती अेक सवद मे मानी जावै तौ कोई वेजा वात कोनी राजस्थानी मे सगळा सू मोटी खामी आ ई अखरै कै कवी सवद अर वी रै प्रयोग रै वावत वौत कम ध्यान राखै राजस्थानी जीवण अर लोक-मानस मे सवदा रौ अथाग भडार है, पण नूंवी विचार

धारा अर चेतणा रै मुजब सबदा नै नुवा अर सही सस्कार देवण री जरूरत है अर इण वास्तै जरूरी है कै 'सबद' माथै पूरौ विचार कियौ जावै

लारला दो तीन बरसां मे जिका युवा-कवी सामी आया है वा री कवितावा नै पढता देखता राजस्थानी रै ऊजळै भविस्य रै बाबत की उम्मीद करी जा सकै दूजी सतोख री बात आ है कै राजस्थानी मे अब की ढग री आलोचणा री भी सरूवात व्है रयी है क्यू कै नूवी कविता खाली सुणण या रस (आणद) लेवण री चीज कोनी वा वैचारिक जिम्मेदारी सू भी जुडयोडी है इण वास्तै चरचा-परिचरचा या विवाद पैदा व्हेणा सुभाविक है"

जोसीजी आपरी बात पूरी करणै रै साथै ई कळाई माथै बध्योडी घड़ी नै देख'र बोल्या—"लै भाई नदा, सवा छ तौ बजगी है, म्हारै खयाल सू अब चालणौ ठीक रैवैला।"

म्है कलम ठाभ लीवी— सरसरी तौर सू अेकर बातचीत रा नोट्स देख्या अर फेर सावटतौ थकौ कुरसी लारै सिरकायर ऊभौ व्हेग्यौ जोसी भी आपरौ सामान सभाळर 'ब्रीफ-केस' मे मेल रया हा. पाच मिनट बाद म्हे दोनू युसुफ बिल्डिग सू बारै आ चूक्या हा अर पग चरचगेट खानी तेजी सू बध रया हा.

◇

रेवतदांन जी सूं हताई

• सोहनदांन चारण

यूं तौ म्हे आडै दिन ई गाव आवतौ-जावतौ रंवू पण लारला केई दिना सू किणी खास मकसद सू गाव जावण री मती कर रयौ हू. हर छुट्टी नै कोई न कोई धादौ आ पडै-जकौ उठै जावण री जोग ई नी सजै सेवट आ दिढ धारली कै हमकै अदीतवार नै हर हालत मे गाव जावूला इज 'हर बिन गावतरी नी व्है' इण कैवत रै मुजब म्हे ई घणी हर करली तौ जावण रा ई सौ रस्ता खुलग्या मे री बाट जोवै ज्यूं सूरजवार री बाट जोवू. बगत तौ बटाऊ कैईजै. अदीत आयौ, सूरजवार रा साकळै-साकळै सपैलडी साढी सात बजिया री बस मे बैठनै मथाणियै नव बजी रै लगैटगै पूगौ बस रै टेसण अमर-चौक मे पूछताछ करी कै रेवतदांन जी अठै इज है कै जोधपुर, फलोदी कै ओसियां गयोड़ा है. पूछिया ठा लागी कै अठै ई है, जद मन मे धीजौ हुयौ कै आंवणौ अकारथ तौ नी जावैला. फटकरनी रा वा रै आफिस सामी बहीर व्हेग्यौ

वा रै कमरै री मूंगेडौ ऊगू रा दिस मे है, इरा सारू सवार री वेळा घरणी वार (सियाळै रै सिवाय) आडौ उडाळियोडौ इज राखै. पैली तौ आगै सू आडौ दियोडौ देख नै म्हनै मन मे वैम व्हियौ परा थेट गया सावळ जाच व्ही पूरौ-पूरौ नैचौ तौ जरां व्हियौ जद वा नै खुद ढोलियै माथै वैठा दीठा अभिवादन करनै सामी पडियै मूज रै माचै माथै म्हैं ई वैठग्यौ जीवरां हाथ सामी पागती इज अेक वैच पडीही, जिरा माथै दो च्यार जिरा दूजा ई वैठा हा.

रेवतदानजी चाररा दीखरा-पाखरा मे ठीक-ठाक मोटी-मोटी आखिया, तीखौ नाक, धुगधुगौ सरीर, सवा पाचेक फुट रै नैड़ा डीगा. डील माथै खासी भन्नी मजाडी रू वाळी-अवस्था परवारा माथै मे ई खासा वाळ धौळा व्हेगा है, व्हेय रया है इरा वगत वै पैली आयोडा दो-च्यार जिरा सू गाव री समस्यावां अर साख रै विगाड-सुधार रै वावत वाता कर रिया है.

म्हैं मन मे विचारियौ कै आपा नै ई आपाराौ काम कररगौ है इरा सारू जेज कररगी चोखी नी जद म्हनै औ लखायौ कै जिकी वाता-विगता चाल रयी है वै कोई घरगं महत्व री नी है अर आपारा राम यू इज वैठा सुराता रिया तौ व्हा व्हे जावैला. या लोगा री अै छोटी-मोटी वाता तौ दस दिन ई पूरी नी व्हैला इरा सारू म्हैं तौ म्हारै भप करती रा कैयौ इज कै म्हनै आपरी कविता रै वावत केईका सवाल पूछरगा है, इरा वास्तै घडी-दो घडी वीजी सैग वाता वद कर दिरावौ. कविता नै लेयनै वाता व्हैला, सवाल-जवाव व्हैला—आ वात सुरा नै आखता पडता थका पाडला आदमी ई कैवरा लागा कै म्हे ई था दोना री वाता सुरगाला जकौ या दूजी वाता नै थोडी ताळ सारू मार फिटी करौ

वात काई वदळी, वातावरगा मे इज वदळाव आयग्यौ सगळा री दीठ म्हारै धकी व्हेगी सखा व्हेय र सैग ई सुरगरा लागा जठै राजनीत रै रौळा-टटा री चरचा चालती ही उठै इज कविता री कवळी केळ कूपळीजरा लागी.

धरचिपता ई म्हैं तौ वा रै सामी औ इज सवाल धरियौ कै आपरी कविता री सरुवात कीकर व्ही ? अह-अंह—खैगारौ करता वै वोलिया कै वाळपरा मे म्हे केई जिरा नै आपारां अठै माताजी रै मड मे भगती भाव भरिया अर व्याळू-विळिया पछै वूढा-वडेरा री हथाया मे वीरा-रस रा जोसीला छद पढता सुरगतौ तौ म्हारै ई वाळ-हिरदै मे भाव उमडता अर कविता कररा रौ चाव जागतौ वा दिना म्हारै हिरदै ई हूस व्हेती कै म्हैं ई कविता करू अर इरगी जोसीलै ढग सू पढू सपैलडै दूजै किरगी विसय री तौ जारगकारी ही कोनी, अर घरगकरा छद देवी री सिद्धाई रै वावत इज सुरगतौ, इरा सारू सरू सरू मे म्हे ई दो-च्यार डिंगळ गीत भगवती स्री कररगी जी रा दियोडा परचा रै वावत लिखिया.

इतरै में पाखती वैठौ वा रै मूंडै लागोडौ वागवान वोलियौ कै म्हैं तौ आज तक आपरी कोई अैडी कविता नी सुरगी जिरा मे भगती भाव व्है आपरै अर भगती रै काई लेरगौ-देरगौ इरा वात माथै म्हनै हसौ आयग्यौ. म्है हसतौ-हंसतौ इज पूछियौ—आपरी कविता मे नूवौ मोड कद आयौ अर उरगरै मूळ मे काई-काई काररा है ? रेवतदान जी

पडूत्तर दीनौ—गाव मे फगत अेक छोटी इसकूल अर गुरासा री पोसाळ इज ही, इण सारू घर्क पढण रै विचार सू सैर (जोधपुर नै आगती-पागती रै इलाकै मे सैर नाव सू इज वोलै) गयौ रैंवास चारण वोर्डिग हाउस मे राखियौ उठै केईका काव्य-प्रेमी चारण छात्रा सू मिळण रौ सजोग सजियौ. वा दिना इण सस्था री 'चारण' नावै अेक पत्रिका निकळती ही. कवितावा छपावण री साधन मिळियौ अर इण रै मारफत 'ऊगतौ कवी रेवंत मथाणिया' रै रूप मे लोगा मे चावौ हुयौ पण हाल ताईं म्हारी कवितावा किणी वाद-विसेस सू जुडी नी ही या दिना म्हैं ज्ञात मे फैलियोडी कुरीतिया, अर अववित्स्वासा रै बारै मे इज लिखिया करतौ ज्ञात मे जमानै दीठ फेर लावण अर विकास सारू करतव ई करतौ अर साथै री साथै उणरै उथान वासतै भणिया-पढिया मोटियारा नै जोस दिराय-दिरायर कविता रै जरियै उद्बोधित करतौ

इण विचाळै इज म्हनै बोलणौ पडियौ. म्है कैयौ कै 'चेत मानखा' री कवितावा लिखण सारू आपरौ कवी कीकर जागियौ ? इण बात माथै वै ऊडी निसास न्हाखता बोलिया—अरे भई, काई बताऊ, कविता रै छेत्र में इतरै लावै वंदळाव रा सैकडू कारण है मोटै रूप मे अै कवितावा कालेज मे पग पडण रै पछै रौ पुन परताप कैइज सकै. कालेज मे गया नै थोडा'क दिन व्हिया व्हैला कै म्हारी मिंतर-मडळी खासी वधगी. राय मिळिया रे राय मिळिया, कै व्हेता जैडाई आय मिळिया—कैवत पूरी ढूकी म्है सगळा ई अैडा-अैडा भायला भेळा भिळिया कै पूछौ ई मत. उण वगत (सामतसाही) रै समाज री अव्यवस्था देख'र सैगा रौ काळजौ कळझळतौ सैग समाज मे भात-भात रा वदळाव लावण सारू कमर कसिया वैठा लखावता या मिंतरा मे कोमल, विज्जी, सतप्रकास अर गजानन्द इत्याद रा नाव लिया जा सकै इणी विचाळै रूस री क्राति नै लेयनै लिखियोडी खासी पोथिया पढण रौ जोग जुडियौ वै पोथिया ई 'चेत मानखा' री कवितावा लिखण मे प्रेरक रयी है.

अै बाता सुणता-सुणता म्हनै लखायौ कै अठै अेक नामी सवाल करियौ जा सकै, अर म्है झटकै'क पूछियौ परौ—पण आपरी घणकरी कवितावा करसा रै बावत इज क्यू ? अर काई करसौ आपरै मन मुजब कर देखायौ ? या सवालां रौ वै इण भात पडूत्तर दीनौ कै सुणिया पछै म्हनै अैडौ लखायौ कै सायत रेवतदान जी या सवालां सारू पैला सू ई त्यार व्हियोडा हा अर म्हारै पूछण री इज बाट जोवता हा. आधी'क घडी ताईं वै या रै बावत बोलता इज गया वा रै विचारा रौ सार की इण भात परगट करियौ जा सकै

जमीदार रै घरै जायौ-जलमियौ ठकराई रै ठाट-बाट मे पळयौ. वाणिया-बवार रै साचेलै रूप नै खरी मीट सू पिछाणियौ, क्यू कै म्हारै गाव मे वाणिया वसती ई खासी भली है या सगळी वाता रै साथै वारूई मास भूख सू बायेडा- करतै, करजै सू कजिया करतै, ऊनाळै रै तपतै तावडियै-तडफडतै, सीयाळै-सीजतै अर चौमासै-भीजतै, अस्टपौर कादौ कचोवतै करसै नै ई परतख दीठौ करडा लाटा लाटता ठाकरा, अणूता व्याज उगावता वोरा अर या दोना रै पोचा परतापा सूं कळपता करसा नै दीठा तौ म्हारौ कवी जागियौ इण

रै सिवाय कुदरत री करडाण आगै निवळा करसा नैं
छाती झेलणिया या करसा नैं जद भूंडै डाळै पण
काळजै करोत वैंगी लगान, वीघोडी, हासल अर डौडै-दू
व्हेयोडी देखियी जणै म्हारी कवि सायत नी राख सकिय
सू करसै नै चेतायौ. उणनैं जभेड-जभेड नैं कूंभकरणी
हरेक वार उणरी पडूतर व्हैतौ—दूजै नै क्यू साव ई
मौळा है, पुन पतळा है. उणरै इण उथळै सू म्हनैं अणू
पार पड़तौ नी दीखतौ. उण नैं जलम भोम री सौगन दि
कणौ ई उणरै सामी रगीला अर सुरगा सपना रा चित्राम
जीवण अर समाज सू जूंझतै करसै नैं केई भात सूं सम
करिया तौ पार पडै, वौ आपैनैं पिछाण सकै अर माटी
रगरेज कैईजण रै पाण अर धरती री धणी वाजण रै त
उणरी इज धरतरी मायड रा कळझळ करती अर धूम
या, सौचियौ सायत इण सूं की फरक पड सकै तौ.
ठाकुरसाही सू, करडी वीघोडी लेवण वाळी नीघोडी
व्याज मे काळी धार डुवोवणियं वौरे सू भच देती रा
कठै ई माटी खनैं मू धुरकारावाडियौ अर कठै ई हरियल
नैं पछै सोजी वधाई कै अै सैंग हरिया-हरिया परताप
भखारिया अर ठाकरा रा भवारा भरीजिया करै. अर थू
थारै तौ घाटै रा ठाट रैवै. वन धणिया रौ अर गवाळि
माथै पूर-म-पूर ढूकै यूं करिया ई जद म्हनैं की फरक
वित री वात करूं तौ सायत की व्हे सकै आ विचार
खता वताय नै उण नैं खमखरी खाय नैं वदळौ लेवण स
खेती करण रै कारण घर री लिछमियां रै रूप नै मगर
वताय-वतायर करसै नैं चेतौ करायौ कै थूं कितरौ तौ त
ई करसै री भूंपडी री माडी हालत अर रगमैला रा ठा
नैं उणरै काळजै डाम लगावण री काम ई करियौ, पण

पण सै ई वेकार, क्यू कै जिणरै हिरदै जुगा
हिरदै अेकदम वीर भाव कीकर संचरै इणरै सिवाय
विचारौ ठाडी माटी री जीव ठैरियौ वौ कोई रघड तौ

तौ म्हनैं पूछणौ इज पडियौ कै अै सब वातां तौ ठीक है, पण करमौ आपरैं मन-मुजब कित-रौक हालियौ ? जद रेवतदान जी बोलिया कै उण जमानैं मे तौ म्हनैं करसै सामी सूं निरासा इज मिळी ऊण खानी सूं काठी पाखी पीयोडी इज निजर आई, पण आज इतरा बरसा (दस-पनरै बरसा) पछै री हालत देखता म्हनैं लखावै कै करसै री जैंडी स्थिति म्हे चावतां ही वैंडी स्थिति आज हुई है आज करसै रौ वौ रूप सामी आयौ है जकौ म्हैं पनरै वरस पैला चावतौ हौ आज घणकरा करसा आपरैं खेता रा खुदोखुद धणी है. वा रौ करसण आपैं-तापैं है आपरी साख रौ वौपार ई खुद इज करै है. या वाता नैं देखर सोचूं कै कवि तौ भविस बांणी करणियौ व्है. म्हे भविस-बाणी कीनी ही जकी खासी भली तौ साची उतरगी अर की साची उतरती जावैं है

करसै री वात करता-करता म्हनैं अेक दूजी वात भळै याद आई कै रेवतदान जी री करमण सबंधी कवितावा दो तरैं री है अेक भात री वै कवितावा जिणमे करसै री दीण-हीण अवस्था अर उणरौ गयौ-गुजरियौ जीवण वरणित है अर दूजी वै कवितावा ज्यामे करसणी-सबदां (खेती मे काम आवणियां औजार अर करसण रा न्यारा-न्यारा काम) रौ विसेस रूप सू प्रयोग व्हियौ है या दोनूं भात री कवितावा री चरचा चलावतौ म्हैं वानैं कारण पूछियौ जद वैं बोलिया—करसै नैं लेयनै म्हे दो भात री कवितावा कीनी अेक वरग मे म्हारी वैं कवितावा आवै जिणमे करसै री मौळी हालत अर सामत-साही री लूट-खसोट प्रवृत्ति अर सिरकारू-नीती रौ चित्रण है. चेत-मानखा, माटी रौ हेलौ, सात जुगा रौ लेखौ, माटी थनैं बोलणौ पडसी, उछाळौ, वीघौडी इत्याद कवितावा इणी वरग मे गिणीजै. पण हळोतियौ, पाणत, निंदाण जैंडी कवितावा मे खेती रा न्यारा-न्यारा कामा रौ अर कर सण करण मे काम आवण वाळी भात-भात री वस्तुवा रौ वरणन कियौ है

म्हैं म्हारी कवितावा मे राजस्थानी करसै री पूरी जिन्दगाणी रौ पूरौ अर स स्ट चित्र उतारणौ चावतौ खाली उणरैं दुख-दाळद री वात इज उणरी राम-कथा नैं नी सवेट सकै इणरैं साथै उणरैं करसावणी जीवण रै क्रिया-कळापा, उणरैं साज सैंमान, उणरैं विभै अर धन वित्त री वात चलावणी ई म्हनैं वाजव लखाई. अैडी कवितावा सिरजण रौ अेक औई उदेस रैयौ है कै राजस्थानी भासा रा करसणी सबद कठै ई मिटनैं नी पर क्यूं कै दिनो दिन नुवा-नुंवा वैग्यानिक उपकरण काम मे आवण लागा है, वेरै सू पाणी फैंकण वाळी मोटर आगैं सूंडियै री वात कुण करै ? टैक्टरा नैं छोड' र हाळीवीज नैं कुण निरभागी नारकिया सिणगारण लागैं ? फुलफौर दौडण वाळी लोडा नैं बळद-गाडी कै छकडा कीकर पूग सकै ? इणरैं अलावा इण वरग री कवितावा मे जी-तोड मेहनत करणियै करस रा दरसण ई किया जा सकै.

करसै नैं लेयनै खासी-भली वातचीत व्हेयगी, आ विचारनैं म्हे सवाल पलटियौ—परम्परित सामाजिक व्यवस्था रौ विरोध करणियै कवी परम्परित सैली क्यूं अपणाई ? सवाल सुणता ई वै थोडा सचेत व्हेता लखाया अर अठी नैं म्हारै मन मे अैंडी वात आई कै कठे ई इण सवाल सू वा रै समाजवादी व्यक्तित्व नैं तौ ठेस नीं पूगी परी पलेक पछै वैं

बोलता निगै आया—आ बात म्हैं खुद स्वीकार करू कै म्हैं समाज री केई की परम्परावा (अठै म्हारो मुतलब रूढिया सू है) तोडण री पुरजोर कोसीस करी पण इण बात सू ई म्हैं नटू कोनी कै म्हारी कविता पुराणी सैली मू वधियोडी कोयनी म्हैं नुंवा विसय लीना—किसाना अर मजदूरा रै जीवण सू सवधित. तरजा लोक-गीता री चुणी तौ ई उकमावण अर प्रेरित करण री तरीकौ वौ इज जकौ प्राचीण डिंगळ कवी रौ तरीकौ गिणीजै. फरक इतरौ कीनी कै वौ कवी छत्री-भाव नै वौकारण री चेप्टा करी अर म्है करसै अर मजदूर नै समाज मे वदळाव लावण सारू मरण-मारण नै त्यार करण री चेस्टा करी. म्हैं करसै नै माटी रौ रगरेज मानियौ अर उणरौ चित्राम उतारती वगत म्हनै जुद्ध मे जूझतौ, वीर-हाक करतौ अर रण-चण्डी रा खप्पर भरतौ कोई जोध-जवान इज देठाळौ दिया करतौ अर म्हारी लेखणी रै जरियै करसै रा अै सवद कविता रै रूप में परगट व्हेयग्या कै करडाण रै पाण हूमैं कोई खेती नी लाट सकैला, क्यू कै म्हे इण री द्रिढ निस्चै कर लीनी है—

सज्जौ अेक सघट्टण, पथ पलट्टण, राज उलट्टण आज वढौ।
मन मे मिनखापण नैण सूरापण, खांधै खांपण मेल कढौ

+ + +

पण मूछा रै तांण किया करडांण, विना घमसाण कोई लाट लै खेती।''

घणौ काई कंवू म्हनै तौ इण वगत करसै अर मजूर रा सगळा औजार जुद्ध मे चमकणिया-दमकणिया सस्तर निगै आवना. चूंकि सगळा चित्रामा री पृस्ठभूमि मे जुद्धा रा वरणन इज प्रमुख रिया है इण सारू नुवै विसय वास्तै ई पुराणी सैली अपणावणी पडी. बात नुंवी पण विरदावण फटकारण अर माजनौ पाडण रौ वौ ई पुराणी ढग रियौ जकौ डिंगळ-कवी रौ हौ.

इण विचाळै म्हे वा नै पूछियौ कै कठै ई इण सैली रै कारण (जोमीलै ढग सू पढण रै कारण) इज तौ आपनै मच कवी रै रूप में इतरी ख्यात नी मिळी है ? इणरौ उथळौ वै अैडौ दीनौ कै म्हैं तौ काई आखती-पाखती वैठा सगळा ई हसण ढूकग्या. वै कंयौ कै अरथाऊ बात आयगी जणौ वताय दू—केई वार म्हैं कवी-सम्मेलणा मे देखियौ कै केई का कवी जोर-जोर सू कविता पढ लै अर इण भात पढिया पछै फोरी मू फोरी कविता नै ई वीर रस री कविता कै दै. मच माथै वैठा वा रै जैडा केई अवूझ कवी अर सुणणिया ताळिया पीटनै कवीजो री वात मे हौकारौ भर लै पण म्हारै मन मे आई कै कोरौ-मोरौ जोर सू हाको करण सू तौ कोई कविता वीर-रस री कविता वाजै कोयनी उण रै सारू तौ विसेस तरै री चाल, तुक अर लय चाहीजै. घणी पूछौ तौ 'उछाळौ' नावै कविता री सरजणा इण भात रा कविया नै वीर-रस री कविता री मिसाल देवण सारू इज करी. वाकी रियौ म्हारी ख्यात रौ सवाल, वौ तौ जनता री पसदगी नापसदगी माथै निरभर करै इण वात रौ म्हनै काई ठा कै म्हारी कवितावा जनता ज्यादा पसद क्यू करै ? इण वावत म्हैं तौ इनरौ इज कैय सकू कै जनता आपरी चीज नै पसद नी करैला तौ कांई दूजी चीज (जकी उणरी नी है, उणसू सबधित नी है) नै पसद करैला.

लगतै हाथई म्हे पूछ लीनौ कै जद आप कविता मे पुराणी डिंगळ सैली रौ निभाव कर लीनौ तौ पछै इण रौ काई कारण कै कवी-जीवण री सरूआत सू लेयर आज तक कविता मे करसै री ठौड प्रमुख रूप सू तौ नही पण खाली छत्री, रजपूत इत्याद सबदा री प्रयोग तक करण मे आपनै काई अबखाई लखाई. इण वात माथै पैला तौ वै जोर सू हसिया अर हसता-हसता इज बोलिया कै भई ! हमकै थू ज़बरौ सवाल पूछियौ म्हैं केई बळा इण सवाल नै कवी-सम्मेलणा मे हापै ई उठावू अर हापै इण रौ पडूत्तर दू इणरै जवाब मे म्हनै खाली अेक औ दूहौ इज बोलणौ पडै—

"कुण बिरदावै कुण मरै, दोनू ई पूत कपूत।
म्हा जिसड़ा (तौ) चारण रिया, (अर) थां जिसडा रजपूत ।।"

आ सुणिया पछै म्हनै तौ काई कमरै मे अठी-उठी बैठा सगळा जिणा नै कांन झालणौ अर मन माडै ई मुळकणौ पडियौ अबै जावतौ म्है वा री सैली सू सबधित आखरी सवाल पूछियौ कै पुराणी सैली रा किण-किण कविया सू आपनै प्रेरणा मिळी ? इण रै जबाब मे वै बतायौ कै यू तौ सगळौ डिंगळ काव्य वा रै सारू प्रेरक रियौ है अर दूजी खानी लोक-धुना ई खासी प्रेरणा दी है पण विसेस रूप सू वा नै ईसरदास रचित हाला-झाला री कुण्डळिया अर सूरजमल जी मीसण रै वस-भास्कर सू घणी प्रेरणा मिळी.

करसै अर मजूर सबधी कवितावा नै छोड'र हमैं म्है वा री बीजी कवितावा सामी वा रौ ध्यांन दिरावतौ पूछियौ कै सुतरता मिळिया पछै रै समाज मे आपनै भळै कठै बद-ळाव री स्थिति निजर आई ? वारौ जबाब इण भात हौ— जागीरी गई अर जागीदार रौ आकस समाज सू ऊठियौ, पण तौ ई म्हनै अेडौ लखायौ कै ठाकरसा रै की फरक नी पडियौ, क्यू कै वां रै खनै हाल लाठी पू जी है भखारिया धान सू भरी पडी, पछै वै काण रौ सोच करै वै तौ हाल यू ई दारूडा पीवै अर मारूडा गवाडै वा री गवाडी तौ अजै ई केई अमली कोडा बैठा पळै. इण सारू मुफत मे वेगार ई निकळ जावै, क्यू कै जिणरी खावै बाजरी उणरी साजै हाजरी. इणरै सिवाय की आ ई वात ही कै गाव चौथाळै रा केई बूडा-ठाडा, भंगी-भांबी ई लू ण-हरांमी बाजता सरमावै, इण खातर आख री लाज रै कारण ठाकरसा रा तौ कोम-काज निकळ जावै. ठाकरसा रै तौ ताजिंदगी मौज विणी पण मुसकल है तौ मौलिया कंवरा-भंवरां नै. पण जठा तक कवरा रौ सवाल है. वा रा दिनडा ई सोरा दोरा निकळै वां रै खासी ओपत तौ हवेलिया, कोट अर घूडियोडा ढूढां रै विकण सू व्हेय जासी अर की रकम घर रै गैंणौ-गाठै रै कारण हाथ लाग जासी. इतरै सू वा री जिंदगी री गुजर व्हेय जासी, पण बातडी भवरा ताई आवता-आवता काठी थाकसी या भवरा मे भूडी बीतसी, क्यू कै बाळपणै अै भंवर ठकराई री जैडी जमियोडी जाजम देखी ही, ऊडी वातडी या रै मोटियारपणै निजर नी आवैला या मे अेडी कुजरबी बीतैला कै पछै पूछौ ई मत. या सू हाथा तौ काम व्हैला नी अर दूजा विन रोकडिया हाजरी वजावैला नी. जवानी मे तौ अैडै-ऊडै नै ई आदर मिळै पण या री कुरब कायदौ की नी रैला जद या

भवर नै घणा भटका आवैला समाज मे आवण वाळै इण वदळाव री अदाज लगायनै म्हैं अेक कविता लिखी—

> "भवर नै नित आवै भटका, भवर नै नित आवै भटका ।
> कठै वै जाजम रा ढळणा, कठै वै दारू रा गटका ।
> भवर नै नित आवै भटका, भवर नै नित आवै भटका ।"

रेवतदान जी भवर री वात करता हा जित्तै मे म्हनै वा री वै कवितावा ध्यान मे आई जिण में छैल भवर अर उणारी भवराई रौ वरणन प्रमुख रूप सू व्हियौ है याद आता ई म्हैं तौ पूछियौ इज— करसा री विपदा मू दुखी कवी रगीला सपना ई देखिया अर सिणगार वरणन ई करियौ. इणरौ कारण काई है ? इणरै जवाब मे वै वतायौ कै जिण वातावरण मे पळियौ उण सू अछूतौ कीकर रैय सकू म्हारौ भाईपौ-कडूवौ ग्वासौ लाठौ, अर म्है गाव मे भणियौ-पढियौ अर राजनीती मे भाग लेवणियौ किणी न किणी भाई रै उठै मईनै-पनरै दिना में जमाई कै गिनायत आया रैवै, जमाई रा लाड-कोड व्है, गोठ-गूगरी व्है वती इज रैवै. महफिल जमै, दारूडा उडै ढोलगिया गावै वारै मईना में अेक दो व्या.व-वधावणौ रौ ई जोग सज जावै, सपैलडौ नैतौ म्हनै इज आवै. म्हारै लिखियोडा प्रेम-सवधी गीता माथै इण वातावण रौ अणूतौ प्रभाव है लोक-गीता री मीठी मनभावणी धुना, वी मे वरणित सिणगार अर रूप रै भाव सू प्रेरित व्हेयनै म्हैं ई चानणी रात, आलीजौ भवर अर वायरियौ जैडी रचणावा कीनी अठै तक कै 'विरखा-वीनणी' गीत मे ई आभिजात री वीनणी रौ रूप इज साकार व्हेयनै सामी आयौ

सेवट जावता म्है पूछियौ कै म्हारौ आपसू अेक आखरी सवाल औ है कै आप राजस्थानी भासा रै वास्तै काई-काई करियौ ? जद वै थोडी सी रीस करता वोलिया कै म्है अर म्हारी टीम राजस्थानी सारू काई करियौ, औ ई थानै वतावणौ पडैला ? तद म्है हसतै थकै कैयौ कै म्हे अर म्हारी टीम ई इण छेत्र मे कीं करणनै आगै आया हा, इण सारू म्हैं आपनै औ सवाल पूछियौ इण सवाल रै जरियै म्हैं जाणणी चावू कै उण जमानै मे इण भासा री काई स्थिति ही ? आ वात सुण नै वै ई मुळकता थका वोलिया—म्हैं जद राजस्थानी सामी निजर करी ही, जद लोग डिंगळ नै इज राजस्थानी रौ नाव दे राखियौ हौ. आधुनिक पद्य कै गद्य राजस्थानी मे नी रै वरावर हौ नारायणसिंघ जी भाटी वा दिना हिन्दी में कविता करिया करता मथाणियै मे वा सू मिळणौ व्हियौ अर वा सू आग्रह कीनौ कै हमैं वै राजस्थानी मे लिखै वै राजी व्हेयगा सतप्रकास अर गजानन नै ई राजस्थानी में लिखण सारू त्यार कर लीनां राजस्थानी में गद्य-विद्या री कमी देखनै म्हारी टीम अेलान करियौ कै राजस्थांनी गद्य लिखणियै नै इनाम दियौ जावैला, अर यू करता-करता हिन्दी मे कहाणी-उपन्यास लिखण वाळै विज्जी देथा नै राजस्थानी में लिया, अर जठा तक म्हनै याद है कै पैलौ इनाम (७५ रु. कै ५० रु. रौ) विज्जी नै इज मिळियौ इण भांत राजस्थानी में काम करणिया री टीम ववती इजगी.

◇

चन्द्रसिंघ जी रै साथै फिरतां-घिरतां

• नन्द भारद्वाज

जैपुर री अेक साफ-सळी वस्ती बनीपार्क अर बनीपार्क रै मीरा मारग माथै बण्योडौ कवी चन्द्रसिंघ जी रौ रैवास-मुकाम—उैर री नगर परिसद रौ दियोडौ नाव डी-६ प्लाटरै चारूमेर छाती-सूणी भीता बणायोडी है अर उतरादी कूट मे खुलता दो वडा फाटक है जका रै सामी महाराणी कन्या हाई इसकूल री दो मजली इमारत खडी है. जद म्हैं चन्द्रसिंघ जी रै मुकाम री वारली फाटक माथै पूग्यौ—म्हारी कळाई-घडी मे पूणी पाच बज चूकी ही. ज्यू ई म्हैं फाटक खोल र बाखळ मे दाखल हुयौ, चन्द्रसिंघ जी हाथ मे डडौ लिया कठै ई वारै जावण री त्यारी मे सामी आवता दीख्या. वा धौळी धोती अर वद गळै री कोट पैं'र राख्यौ हौ उघाडै माथै रा वाळ तकरीवन धौळा पड चूक्या है पण चाल मे वा ई मरदानी चटकी—डील भी पूरी तरै भरवौ अर तुलवौ तौर आख्या अर उणियारै माथै रजपूती मिजाज री झळक साफ देखी जा सकै.

म्हैं वा सू खासा लबै अरसै बाद मिळ रयौ हौ—साल भर पैली किरण नाहटा रै साथै ई चन्द्रसिंघ जी सू वा री कविता अर वातावरण बाबत की बात-विगत रौ मौकौ मिळचौ हौ, पण तद केई मुद्दा अर सवाल अछूता अर अणपूछ्या रैयग्या हा जका रै बारै में कवी रा विचार जाण लेवणा अेक अरसै सू लूठी जरूरत मैंसूस व्हे रयी ही. म्हैं की तै नी कर पा रयौ हौ कै बातचीत सारू वानै अबार ई रोक्या जावै या आगलै दिन माथै कोई टेम मुकर कर लियौ जावै—आ सोच ई रयौ हौ कै इत्तै मे वै म्हारै खनै पूगग्या.

वा सू निजर मिळता ई म्हैं आंख्या में मुळक अर होठा मे 'नमस्कार' समेत दोन हाथ सुभाविक तरीकै सू जोड लिया. वै नमस्कार रौ पड़ूत्तर देवता थका अेक सोघती निजर सू म्हारै उणियारै सामी देखण लाग्या. म्हैं ओळख नै पाछी ठिकाणै लावण खातर म्हारौ नांव-ठाव-ठिकाणौ अर जैंपुर आवण रौ मकसद अेक-साथै ई वा रै सामी राख दिया

वै मुळकता सा बोल्या,—"हा हां, आप तौ लारलै साल अेकर अठै आया भी हा. सायत् रैंवता भी अठै ई हा—आकासवाणी मे ई की काम-वधौ करता हा. अेक भायौ और भी तौ हौ थारै साथै ? सायत् कोई राजस्थानी 'टॉपिक' माथै ई 'रिसर्च' करै हौ—काई नांव हौ ?"......

"किरण नाहटा !"

"हा हां, वै ई खैर, आवौ जणा, बात-चीत तौ घूमतां-घामतां भी करी जा सकै. दो-अेक जरूरी कांम भी अटक्योड़ा है, वा नै भी चालतां निपटा लेवाला, क्यू आपनै कोई असुविधा तौ नी व्हैला नी ?"

"नी सा, असुविधा क्यां री व्है."—म्हैं छोटो-सो पडूत्तर देतां थकां साइकल पाछी घुमा लीवी. चन्द्रसिंघ जी फाटक खोलर बारै निसरया. म्हैं भी लारै-लारै बारै आयग्यौ मीरा मारग माथै कलक्ट्रेट खानी वधता खामी दूर ताई म्हे दोनूं आपसरी आगली-लारली निजू वातां करता चालता रया पारवती भवन खनलै मोड माथै डावी तरफ मुडता म्है बातचीत रौ रुख बदळता पूछ्यौ—"और आजकालै काई लिखणौ पढणौ चाल रयौ है ? राजस्थानी री सस्थावा, सगम, अकादमिया रै कारनामा खानी भी कदेई ध्यान दिया करौ हो या आ मूं छेडौ ई कर मेल्यौ है ?"

"लिखणौ-पढणौ विया तौ खैर चालतौ ई रैवै पण अब वा रैली आळी वात कोनी अर नी आ भी कै चालतै वगत री माग रै मुजब कोई रचणा या काव्य-कृति दे मकू . लारलै कियोडै काम नै ढगमर परोट सकू, इत्ती ई जी मे है अर आ म्हारै वास्तै कोई अवखाई कोनी. अठीनली सस्थावा अर सगम-अकादमिया री साहित्येतर अखाडैबाजी रै कारण राजस्थानी रै सिरजण नै खासा अणूंता वचका लाग्या है लिखारा मे राजस्थानी भासा रै बाबत मिसनरी-भावना भी खासी मोळी पडचोडी लागै. अठीनली पत्र-पत्रिकावा अर पोथ्या मे जकी राजस्थानी कवितावा अर लेखण-सामग्री देखण-पढण नै मिळै वै भी पूरौ सतोख नीं देवै नुंवी कवितावा नै केई दफै कोसीस कर'र समभणी चायी पण वात वणी कोनी. क्यूं कै आ कवितावा नै पढता रस कोनी आवै अर इण रौ कारण सायत औ ई है कै आज री कविता जरूरत सूं ज्यादा बुद्धि परधान व्हेगी है जद कै म्है कविता नै हिरदै सू उपज्योडा भावां री गैरी अर सारथक अभिव्यक्ति मानूं राजस्थानी ई काई आज री हिन्दी कविता पर भी इणी बौद्धिकता रौ पूरौ असर अर रग देख्यौ जा सकै आ वात म्हैं लाबै अरसै सू मैसूस करतौ रयौ हू हिन्दी कविता रा सगळा बदळाव म्हारै देखता-देखता आया अर निसरग्या—कोई बदळाव रौ लांबौ, गैरौ अर टिकाऊ असर वगत या लोगा माथै रयौ व्है—अैडी बात की कमती ई निगै आवै."

म्हैं वा री कथणी अर समभ सीव रौ खयाल राखतां थकां अेक सका सामी राखी—"जठै तांई हिरदै पख रौ सवाल है, हिन्दी मे 'कामायनी' जैडी काव्य-कृति रै बारै में आप काई सोचौ ? काई वा भी आपनै पूरौ सतोख कोनी देवै !"

"कामायनी रा की सरूपोत रा सरग छोड देवा तौ आगै उण मे भी उणी बुद्धि तत्व री प्रधानता साफ देखी जा सकै. दूजी सबसू मोटी वात आ है कै खडी बोली (हिन्दी) गद्य री भासा तौ बण सकै पण कविता री भासा रै रूप मे खडी बोली नै अगीकारणी म्हनै कदेई कोनी रुची, क्यू कै हिन्दी कदेई कोई री मातभासा कोनी रयी जद कै कविता सिरफ मातभासा मे ई व्है सकै म्हैं खुद हिन्दी अर अगरेजी जाणतां थका भी कविता हरमेस राजस्थानी में ई लिखी, हिन्दी मे भी लिखण री कोसीस करी पण मन कोनी मान्यौ, अेकर सन १९४४ मे जद म्है सान्ति निकेतन गयौ हौ तौ उठै हजारी प्रसाद जी द्विवेदी सूं म्हारी मुलाकात हुयी. 'बादळी' वा दिनां ताई खासा चावी व्हे चूकी ही. जद म्हैं 'बादळी' रा

की छद पढ'र सुणाया तौ वा नै खूब पसद आया अर वा म्हनै अेक ई राय दीवी कै कविता म्हनै म्हारी मातभासा मे ई करणी चाईजै"

"आप लिखणौ कद सू सरू कियौ, उण बगत आपरै आखती-पाखती रौ वातावरण काई हौ अर इण वातावरण मे आपरै साथी-सगळचा री काई भूमिका रयी ?"—म्हैं अेक सिलसिलैवार व्यौरौ लेवण खातर सीधौ सवाल वा रै सम्मी राख्यौ

चन्द्रसिंघजी की पावडा चुपचाप की चेतै करता सा चालता रया म्हे दोनू सडक रै डावै वाजू चाल रया हा अर सारै सू बसा, मोटरा, इसकूटर, साइकला अर पैदल लोग आपरी रफतार सू गुजर रया हा वा अेक-अेक आखर जोडता सावचेती भरयै लैजै मे बोलणौ सरू कियौ—

"वौ सायत् सन् १९३२-३३ रौ बरस रयौ व्हैला जद म्है मौलिक सिरजण खानी रूझाण कियौ हौ. विया राजस्थानी री ट्रेडीसनल कविता नै म्हैं सरू सू ई चाव सू पढतौ रयौ अर वा म्हनै रूचती भी ही म्हैं वा दिना बीकानेर रै नोवल इसकूल मे पढाई करै हौ. पौलिटिकल साइन्स अर इसकूल-पौलिटिक्स मे म्हारी खासा रूची ही बीकानेर मे उण वगत महाराजा गगासिंघजी रौ राज हौ अर वां रौ पब्लिक मे भरपूर माण अर रुतबौ हौ. अग्रेजी हकूमत रै अधीन रैवता थका भी वै पक्का रास्ट्रीय विचारा रा आदमी हा पण उण बगत री रास्ट्रीय काग्रेस अर उण रा आन्दोलणा मे वा रौ कतेई विस्वास कोनी हौ

इसकूल रौ अैक न्यारौ होस्टल हौ, जिण मे २०-२५ वडा ठिकाणैदार रईसा रा छोरा रैवता हा अर वा रौ इसकूल मे खासा दवदवौ हौ कारण कै इसकूल मे आयी साल अेक 'सैकेट्री' रौ चुणाव व्हिया करतौ अर इण चुणाव नै हरमेस अै रईस छोरा जीत जावता 'सैकेट्री' रौ रूतबौ इण वास्तै ज्यादा हौ कै इसकूल मे जद-कद भी वाइसराय रौ पधारणौ व्हेतौ वा री अगवाई करण रौ हकदार वौ ई व्हिया करतौ. जद कै इसकूल मे म्हे वारला लडका गिणती मे सौ सू भी ऊपर हा म्हारै मगज मे पैली दफै आ रईसा री खिलाफत रौ खयाल उपज्यौ उण बरस म्हैं चुणाव मे खडौ व्हियौ अर वारला लडका नै म्हैं अेकठ करचा. चुणाव रौ तरीकौ वदळवायौ पैंली हाथ खडा करवायर चुणाव करायौ जावतौ म्हैं इण रौ विरौध कियौ अर 'बैलेट-पेपर' रौ रिवाज सरू करवायौ सात दिन ताई जोरदार परचार रै बाद जद चुणाव व्हियौ तौ म्हारी भारी बहुमत सू जीत हुयी

........हिन्दुस्थान गुलाम हौ इण वात रौ भी इत्तौ गैरौ लखाव नी पड्यौ जित्तौ वा बीस लडका रौ म्हा सौ लडकां माथै अणूतौ दवदवौ वणाया राखणौ म्हनै ज्यादा अखरचौ अर म्हैं इण वात रौ जम'र विरोध कियौ. विरोध कामयाव रयौ सन् ३२ मे म्हैं बीकानेर मे पैली स्टूडेण्ट यूनियन कायम करी, जकी आगलै आन्दोलणा मे खासा कारगर सावित हुयी.

........देखौ म्हैं थानै म्हारै उण वगत रै सुभाव री की काम री वाता वतावू—वा दिना इसकूल मे अेकर हिन्दुस्थान रा मानेता विद्वान अर ओहदैदार सर गंगानाथ झा रौ पधारणौ व्हियौ इसकूल मे वा दिनां अेक उडिया करमचारी काम करतौ हौ. झा साव कोई

छोटी-सी गल्ती रै कारण उण रै साथै कीं वैंडौ व्यौहार कियौ आदमी रौ इण भांत आंख्यां देखता अपमान म्है सहन कोनी कर सक्यौ अर उणी वगत वा रै सामी उण वात माथै अडग्यौ सेवट झा साव नै आपरी गल्ती मजूरणी पड़ी

"......अेकर अंग्रेजी रा मानिता विद्वान ब्राउन अनूप संस्कृत लाईब्रेरी पधारया वां रै साथै पुलिस रा आई जी साव हा म्है भी वा रै साथै लाइब्रेरी गयौ कोई वात माथै आई जी. साव राजस्थानी भासा बावत कीं हळका सवद इस्तेमाल किया म्है फौरन वा रै सामी अडग्यौ अर वा नै जरकौ देय'र वकारया कै आज ताई कोई राजस्थानी री दो-चार पोथी पढी भी है ? की ओर भी जाणकार लोग साथै हा, आई. जी. साव नै पाछौ बोल कोनी उकल्यौ अर वगलां झाकण लाग्या. सेवट वा नै आपरा कैयोडा सवद पाछा लेवणा पड्या.

"आपरा साथी-सगळया अर आप रै निरमाण मे वा री भूमिका ?"—
म्है सवाल नै पाछौ उथळायौ

"म्हारा वा दिना रा साथी-संगळचां मे सूरजकरण जी पारीक, मुरलीधर जी व्यास, विद्याधरजी, रामसिंघजी अर नरोत्तमदास जी स्वामी परमुख हा. स्वामी जी विया तौ म्हारा गुरूजी हा पण लिखण-पढण रै मामलै मे साथी समान ई हा. रावत सारस्वत सन् ४१-४२ में म्हारै सम्परक मे आया, तद म्हैं डूंगर कॉलेज मे पढतौ हौ हा, अेक और म्हारा लूठा साथी हा—हरीसिंघजी चौधरी. हालाकि राजनीतिक विचारां सू तौ वै म्हारै सू मेळ कोनी खावता, पण दूजा सगळा मामलां मे वै म्हारा पक्का हिमायती हा.

"......म्हारै निरमाण मे तौ साथी-सगळचां री भूमिका काई रयी व्हैली पण केई दफै वा री प्रेरणावां सूं की रचणावां भी जरूर लिखी हू. सन् ३५ मे मुरलीधर जी अेकर नागरी भडार में अमीर खुसरौ री की मुकरिया रा राजस्थानी उथळा वणाय'र लाया हा, पण म्हनै वै जच्या कोनी. दूजै ई दिन सू म्हैं वा मुकरियां रै आधार माथै राजस्थानी मुक-रिया त्यार करण लाग्यौ तौ चार-पांच दिन में तकरीबन १३० नैडी वणा लीवी नागरी भडार में सगळा लोगां री मौजूदगी में जद म्हैं वै मुकरिया सुणाई तौ सगळा नै खूब पसन्द आयी. नरोत्तमदास जी स्वामी उणी दिन म्हारै खनै सूं लेयर वा नै सपादित करी अर कुल ६० मुकरिया छापण खातर छाटी, जकी वाद में 'कैमुकरणी' पोथी रै रूप मे छप र वारै आयी."

वातचीत करता-करता म्हे पोलौ विक्ट्री टाकीज नै डावौ छोडता अेम आई रोड खानी वध्या, पण अेम. आई रोड ताई पूग्या कोनी. चन्द्रसिंघ जी विच्चै ई सडक सू जीवणी तरफ वण्योडी अेक वडी-सारी खेती-वाडी रै औजार अर मोटर-पार्टस् री दुकान में दाखिल व्हिया दुकानदार सायत वा री कोई पुराणौ मित्र रयोडौ लागै हौ—वा सू दो-अेक मिनट वात करण रै वाद वै दुकान मांय वण्योडै चेम्बर मे वडग्या, जिण में वैंतरी कुरस्या अर सोफौ लाग्योडौ हौ. छोटी-सी मेज माथै दैनिक अखवार पड्या हा. चन्द्रसिंघ जी सोफै माथै बैठता ई आगली वात सरू कर दी—

"कॉलेज रा वां ई दिना में म्हारौ की सातरा अखबार पढरण रौ रुझाण वध्यौ—म्हैं 'लीडर' 'क्रॉनिकल', 'मॉडर्न रिव्यू' इत्याद अखबार रैगूलर पढणा सरू किया—अै अखबार म्है म्हारै घरै ई मगवाया करतौ. आ ई दिना अग्रेजी कविता अर 'लिटरेचर' नै पढण री भी रुची जागी. उण बगत ताई चावा व्हियोडा केई कविया री कवितावा पढी अर खूब पसन्द आयी"

"अग्रेजी में खास कर कुण-कुण सा कविया री कवितावा आप पढी अर कुण सौ कवी आपनै ज्यादा अपील कियौ ?"

"बर्न्स, कीट्स, वर्डस् वर्थ, सैले, टैनीसन इत्याद री खूब सारी कवितावा पढी विया कीट्स् अर वर्डसवर्थ म्हनै ज्यादा अपील किया"

'हिन्दी रा आधुनिक कविया मे ?"

"सुमित्रानन्दन पन्त री कवितावा म्हनै ज्यादा ओपती अर सुहावरणी लागती—खास कर प्रकृति सबधी गुंजन, वीणा, पल्लव इत्याद मे छप्योडी कवितावा म्हनै खूब पसन्द आयी पण बाद में पन्त जी प्रगतिवाद, प्रयोगवाद जैडा काव्य-आन्दोलणा रा सिकार व्हेग्या."

"राजस्थानी रा आप सू पैली रा कविया मे ?"

"बांकीदास री कविता अपील करती, पण वीर-काव्य रै दमखम माथै अब वित्तौ भरोसौ कोनी रयौ."

"अर आपरै बगत रा नुंवा कविया मे ?"

"म्हारै बगत रा नी, म्हारै सू बाद रा कैवौ—क्यू कै म्हारौ सं जोर लेखण-काल सन् ३२ सू १६४३-४४ ताई रौ रयौ है अर इण काल में अेक भी अैडौ लिखारौ कोनी हौ जकौ कवी रै रूप मे आपरी कोई ढग री इमेज बणा सक्यौ व्है. हा म्हारै बाद रा कविया मे नारायण सिंघ भाटी अेक दमदार कवी रै रूप में म्हनै हरमेस पसन्द आयौ सत्य प्रकास जोसी आप री सातरी भासा रै कारण म्हनै अपील करतौ अर आज भी करै जनकवी गणेसीलाल व्यास 'उस्ताद' कुल मिला र आदमी जीवट अर पाण आळौ हौ जद कै कविता वा रै वास्तै आपरी विचारधारा नै लोगा ताई पुगावण रौ जरियौ ही कविता रौ इण रूप मे इस्तेमाल म्हनै की कमती रुचै."

"अर आज री नुवी कविता रै बावत आप काई सोचौ-विचारौ ?"—म्है इण सवाल क्रम रौ आखरी सवाल पूछ्यौ.

इत्तै मे बारै सू दो प्याला मे चाय आयगी ही चाय रौ पैलौ गुटकौ लेयर हसता सा वै बोल्या—"अजी, साची बात तौ आ है कै म्है अबार री कविता नै कदेई गभीरता अर गैराई सू समझण री कोसीस करी ई कोनी, इण वास्तै काई कैय सकू."

अर म्हे चाय रै आखरी गुटकै ताई हसता-मुळकता रया

चाय रौ खाली कप मेज माथै मेल र म्हैं आगलै सवाल खानी वध्यो—"आपरी मौलिक रचणावा 'वादळी', 'लू', 'डाफर' इत्याद मे प्रकृति रै बावत रुझांण री जकौ वदळाव

सामी आयौ उण री पूठ मे आप कुण-सा कारण ज्यादा सही अर असरदार मांनौ ? अर फेर आभी कै इण वदळाव रै वावजूद आपरै कथण रै ढाळै मे लारली कविता रै उणी ट्रैडीसनल मिजाज रौ पूरौ असर भी मुखर रयौ है, इण वावत आप काई सोचौ ?"

अेक मिनट ताई मून रैवण रै वाद लारली वाता नै चेतै करता थका वै फेर हौळै-हौळै वोलणा सरू व्हिया—"जद म्हैं वौत छोटौ हौ अर म्हारै गाव बिरखाळी मे रया करतौ. म्हारै वास्तै गाव रौ वातावरण अर कुदरती फूठरापौ वौत वडै आकरसण री चीजा ही—न्यारी-न्यारी रितुवा मे प्रकृति रा वदळता रूप·······

·······जद पढण खातर वीकानेर आयौ तौ गाव रै उण कुदरती फूठरापै वावत अेक गैरौ लगाव अर रूझाण माय-ई-माय हरमेस वण्यौ रैवतौ इण मनगत मे रैवता थका जद 'ट्रैडीसनल' वीर-काव्य सू सावकौ पड्यौ तौ राजपूती रुतवै अर काण-कायदै रै कारण वा कविता अपरोखी तौ कोनी लागी पण उण मे पूरौ रस कोनी आयौ, क्यूं कै उण कविता मे हिरदै नै गैराई तांई छूवण री खिमता कोनी लखाई, जिया कै अेक उरदू शायर कैयौ है नी—

इश्क को दिल में जगह दे अकबर
इल्म से शायरी नहीं होती,

अर हा, अेक और घटणा देखौ म्हनै ठीक टेम माथै चेतै आयगी है—म्हारै ख्याल सू वौ सन् १९२७ रौ साल हौ, तद म्हारी ऊमर १५ साल री ही अेक इसकाउट रै रूप में म्हनै ववोई जावण रौ मौकौ मिळ्यौ पाच-छ' दिना ताई उठै कैम्प लाग्योडौ ग्यौ म्हैं हरमेस दिन-ऊगताई वरली रै समदर-काठै आय र कोई चट्टाण माथै वैठ जावतौ अर लगूलग देख्या करतौ किनारै खानी दौडी आवती लैरा—पछाड खायर पलटौ, सामी आख्या आगै पसरयोड़ौ अणथाग समदर म्हनै वैठा-वैठा दोफारा री १२ वज जावती—लगूलग छ छ: घंटा ताई वैठौ रैवणौ—पाणी अर लैरा रौ पळ-पळ में वदळतौ नुंवौ रूप—काई-ठा कुण सी चीज ही इण दीठाव में जकी म्हनै खींच्या, जी लगाया अर छ छ घंटा लग उळझाया राखती ही.

आज भी समदर, आभौ अर रेगिस्तान रा धोरा म्हारै वास्तै नूवादा नी व्हेता सातर भी आख्या नै आकरसण री चीजा लागै, समदर री गैराई, आभै रौ पसराव अर धोरा-धरती री उदारता रौ असर म्हारै पर उण वगत ई नी आज भी आपौ-आप री पूरी ताव समेत वरकरार है''

"अर कथण रै ढाळै में 'ट्रैडीसनल' मिजाज रै असर रौ कारण ?"—म्हैं सवाल रै दूजै भाग नै पाछौ उथळायौ

"म्हारी कविता माथै ट्रैडीसनल मिजाज रौ असर सायत इण कारण सू रयौ है कै उण कविता नै म्है लावै अरसै ताई चाव सू पढतौ रयौ हू फेर जद कॉलेज मे पढतौ हौ तौ नरोत्तमदास जी स्वामी रै सपरक मे आयौ—वा म्हारी रुची रौ ख्याल राखता म्हनै डिंगळ रा दूहा रौ संपादण काम सूप्यौ इण काम रै दौरान म्हनै राजस्थानी री ट्रैडीस-

नल कविता नै और गैराई सूं समझण परखण री मौको मिळ्यौ. दूहौ छंद म्हनै सगळा सू ज़्यादा पसन्द आयौ अर क्यू कै औ सगळा सू छोटै माप रौ छद है, हालाकि हिन्दी में इण सू भी छोटौ छद है—बरवै पण राजस्थानी मे इण छद रौ प्रयोग नी रै बरावर व्हियौ है म्है बरवौ छद अपणावण री कोसीस भी करी, 'बादळी' रा सरूपोत रा की छंद म्हैं बरवै मे ई लिख्या हा सभाव रयौ है कै खुद री बात नै कम सू कम सवदा मे लोगा ताई पूगावण मे कांमयाब व्हे सकूं कविता ई काई आप म्हारी गद्य रचणावा मे भी आ ई वात पावौला.

"जिया आप बतायौ कै सरूपोत मे आपरौ रुझाण ट्रैडीसनल कविता री तरफ ज्यादा रयौ है, दूजी बात आ भी कै अनीताई रै खिलाफ आवाज उठावणौ आपरै सुभाव री मोटी खूबी रयी है जद कै कविता रै रूप मे बादळी, लू, डाफर इत्याद रितु प्रसगा नै आप आपरी लेखणी रा विसय बणाया हौ इण बात मे भी कोई दो राय कोनी कै 'बादळी' रै रूप मे आप लारली कविता री जमी तोडी अर राजस्थानी कविता नै नूंवौ मोड दियौ पण इण दोवडी मानसिक हालत री काई वजै रयी व्हैली—इण बाबत आप काई सोचौ-विचारौ ?"

वै कौ ताळ मीट नीची मेज रै अेक पागै पर टिकाया सोचता रया फेर म्हारै सामी जोवता थका कैवण लाग्या—विया तौ खैर ट्रैडीसनल कविता खानी रुझाण अर प्रकृति रै बाबत म्हारै निजू लगाव री बात म्हैं कैय चूक्यौ हू हा, इण रा और कारणा री तरफ खयाल करू तौ पैली वात तौ आ कै कविता अर जीवण दोना मे ई म्हैं हरमेस अेकलपै री मनगत सू जुड्योडौ रयौ—म्हारै कवर सा रै म्हैं अेक ई बेटौ व्हियौ. घणी सारी जमीन-जायदाद व्हेता-थका भी म्हारी उण मे कोई खास रुची कोनी ही. कवरसा भी खुल्लै अर आजाद मिजाज रा आदमी हा, वा म्हारी कोई इछा या इरादै रौ कदेई विरोध कोनी कर्‌यौ, जद बीकानेर पढण आयौ तौ गाव सू रोजीना रौ सपरक टूटग्यौ, की म्है भी सरू सू ई 'इनडिपेन्डेन्ट' रैवण रौ आदी रयौ हू पढाई मे हुसियार व्हेण रै कारण वजीफौ मिळ्या करतौ. पांन-बीडी रौ भी कोई अणू तौ खरचौ कोनी हौ इण कारण अेकलपै री मनगत औरू ऊडी अर पक्की व्हेती रयी राजपूत व्हेण रै कारण ट्रैडीसनल वीर-काव्य नै पढण-सुणण रौ चाव तौ रयौ पण उण रै दमखम माथै भरोसौ कदेई कोनी आयौ, हालाकि की वीर रस रा दूहा अर की छुटपुट रचणावा म्हारी पैलडी पोथी 'बाळसाद' मे आपनै मिळ जावैला, पण औ म्हारौ मूळ सुर नी बण सक्यौ

........इण अेकलपै री मनगत रौ औ नतीजौ व्हियौ कै म्है रितु काव्या री तरफ पसवाडौ फेर्‌यौ अर म्है चारूं रितुवा—बिरखा उन्हाळौ, सियाळौ अर बसत बाबत रचणावा त्यार करी. राजस्थान मे हरेक दूजै-बीजै साल काळ पडतौ रैवै जिणमे लोगा अर किसाना री खस्ता हालत रौ अदाज हरेक पढयै-लिख्यै राजस्थानी नै सालतौ रैवै, वौ पूरै मन सू चावै कै लोगा नै इण अबखाई सू मुगती मिळै—'बादळी', 'लू' इत्याद मे आपनै इण मनगत रौ सही परियाण मिळ सकै. अेकलपै री मनगत रौ अेक और परियाण आपनै म्हारी अेक हिन्दी कविता 'मुझे अकेला ही लडने दो !' मे भी मिळ सकै हिन्दी मे आं दिना बच्चन जी

रौ रोवणौ-विलखणौ जारी हौ, म्हनै वां रै निरासा रै सुर सू हरमेस चिड रयौ अर तद म्हैं अेक कविता लिखी ही—'मेरा तो दम सा घुटता है'. फेर इणी सिलसिलै मे 'भभक उठेंगे ये अगारे' रौ मूळ सुर लिया अेक 'अगारे' पोथी छपावण री इरादौ कियौ पण जुगत बैठी कोनी—कीं वात भी ढंगसर कोनी जमी"

"वादळी' आप बीकानेर मे लिखी या गाव मे बैठर ?"

"सरूआत तौ बीकानेर में ई करी ही, पण वां ई दिनां अेक'र हॉकी खेलता हाथ रै फैक्चर व्हेग्यौ तद म्हनै कीं दिन वास्तै गाव जावणौ पड्यौ हाथ ठीक व्हेण रै बाद म्हैं उठै रैयर 'वादळी' पूरी करी. इण दरम्यान मे वादळ अर विरखा रै बाबत लोगां रै चाव अर उडीक नै ओंर नैडै सू समझण री कोसीस करी अर फेर विरखा व्हेण रै बाद धरती अर लोगा रै उणियारां माथै आयोडै असर नै भी देख्यौ-समझ्यौ."

विच्चै-सी वां वात नै नुंवौ मोड देवता कैयौ—"पण अेक वात म्हैं ओरू सही कैवू कै 'वादळी करता म्हैं 'लू' नै कविता रै रूप मे ज्यादा सफळ अर दमदार रचणा मानू "

"आपरी सोचणी वाजव है"—म्हैं हामळ भरता कैयौ—"पण 'वादळी' रौ ज्यादा महत्त्व अर माण इण कारण सू है कै इण रचणा रै पाण पैली वार आप लारली कविता री जमीन नै 'चैलैंज' करी अर राजस्थानी कविता जात्रा नै नुंवौ मोड अर मिजाज देवण मे 'वादळी' री भूमिका लू' करता ज्यादा सारथक अर दमदार सावित व्ही."

"हुम् ! आपरौ कैवणौ ज्यादा सही है"—वा हामळ भरी.

"विया 'वादळी' रौ वा ई दिना मे हिन्दी अर राजस्थानी मे काई 'रियेक्सन' रयौ ?"

"पैली 'रियेक्सन' तौ औ कै 'वादळी' रै पैलै सस्करण री सगळी प्रतिया हाथू-हाथ खपगी अर तुरत ई दूजौ सस्करण त्यार करणौ पड्यौ. अर विया आज दिन ताई पाच सस्करण निकळ चुक्या है. दूजौ रियेक्सन' औ कै हिन्दी छेत्र मे इण रचणा नै लोगा खूब पसद करी अर सगळा नामी-गिरामी लोगा रा विचार म्हारै खनै पूग्या, जका सायत आप भीं छप्योडा पढ लिया व्हौला इण रै अलावा जद म्है सन ४४ मे सान्ति निकेतन गयौ तौ उठै नन्दलाल वोस, क्षिति वावू, हजारी प्रसाद जी इत्याद साहित्यकारा रौ सातरौ 'रैसपोस' मिळ्यौ अर आ सगळा लोगा रौ साथ, सैंयोग अर नैडापै रौ मौकौ मिळ्यौ, केई लिखारा पन्त जी री 'वादळ' कविता सू 'वादळी' नै ज्यादा बढिया अर लूठी रचणा वतायी राजस्थानी में तौ खैर आडैकट ई इण नै भरपूर माण मिळ्यौ अेक घटणा भी म्हनै चेतै है—सन ४२-४३ मे पुस्कर तीरथ माथै अेक बौत वडौ सम्मेलण व्हियौ, जिणमे तकरीवन तीस हजार लोग भेळा व्हिया हा इण सम्मेलण में राजस्थानी रा मानेता विद्वान अर कवी उदयराज जी ऊजळ रौ भासण हौ, वां भासण रै दौरान 'वादळी' री खूब तारीफ करी, जद कै इण सू पैली जोधपुर मे म्हारी वा सू छोटी सी मुलाकात व्ही उदयराज जी अेक कवी रै रूप में तौ म्हनै घणा कोनं जम्या पण वा आपरी आखी ऊमर राजस्थानी भासा री पूरी ईमानदारी सू सेवा करी—इण वात में कोई दो राय कोनी"

"राजस्थानी कविता रै चावी व्हेरण रा जरिया मे मंच री भूमिका नै आप कठै ताई मंजूर करौ ?"

"असल मे मच नै म्हैं हरमेस अेक हळकौ जरियौ मानतौ रयौ हूं. अमूमन मच माथै कवी लोग स्रोतावा री रुची रै मुजब हळकी-फुळकी रचणावां सुणायर वाहवाही अर ताळचा लूटरण री चेस्टा किया करै चोखी कविता क्यू कै सुथरी-समझ अर धीजं री माग करै जद कै स्रोतावा मे आ दोनू गुणां रौ व्हेणौ खासा अबखौ काम है. नतीजौ औ व्है कै उठै चौखी कविता रौ 'रैंस्पोन्स' माडौ रैवै जद कै हळकी अर चरपरी कवितावां जम जावै. मच रै बजाय म्है गोस्टी नै चोखी कविता रै चावी व्हेरण रौ सही जरियौ मानू गोस्ठी मे सही समझ-बूझ आळा लोग बैठा व्हेरण सू कोई री हळकी कविता सुणावण री हीयाणी भी कोनी पडै आजकलै तौ प्रकासरण रौ सिलसिलौ भी की ढगसर सरू व्हे चुक्यौ है इण वास्तै मच आळा री वजार आपू-आप ई मन्दौ पडग्यौ है"

आखरी वाक्य बोलणै ताई चन्द्रसिंघ जी आपरौ डडौ संभाळ लियौ हौ अर सोफै नीचै पडी जूत्या भी पाछी पगां मे पैर लीवी ही म्हैं वा रै ऊठरण रै इरादै नै समझता थका घडी सामी देख र बोल्यौ—

"खासा टाइम ले लियौ आज आपरौ, पूणी आठ वज रयी है. आप नै सायत अेकाध कांम भी निवेडणा हा ?"

"निवेडता रैवां जी कांम-धाम तौ ! थां जिसा स्रोता कुण सा रोजीनां मिळै ?"—वै उठता थका बोल्या—"देखी-क किस्सी सातरी सत्सग हुयी है !"—अर वै डडौ हलावता भुळकता-सा चैम्बर सू बारै निसर गया. म्है भी खुद रा पोथी-पानडा सांवट'र बारै आयग्यौ.

बारै चन्द्रसिंघ जी दुकानदार जी री दुकानदारी रै सवाल-जवाबा मे उळझ रया हा. म्हैं भी खुद नै थोडौ आराम देवण वास्तै उण हसी-मसखरी री खुल्ली खाळ मे दिमाग नै खुल्लौ छोड दियौ

◇

राजावत री आप-लिखी

• कल्याणसिंघ राजावत

जितरा गाव म्हारै जिलै नागौर मे है, म्हनै सै सूं चोखौ अर प्रीत भरयौ गाव चितावौ लागै—म्हारौ गाव चितावौ. जूनी मारवाड रियासत री अगूणी सींव अर नौ कूटी मरुधरा री अेक कूट है म्हारौ गाव पण अठै पढण रौ ढग-ढच नी व्हे सक्यौ. उठै थाणौ अर सायर थाणौ जरूर हौ, है, पण कक्कै बारखडी री सरूआत ई म्हनै जोधपुर री जवर जूनियर मिलट्री इसकूल सू करणी पडी. पछै वेगौ ई उठै सू छोड छाड'र मौलासर आय लियौ मिडिल मौलासर सू, मैट्रिक कुचामण सू अर इन्टर डीडवाणै सू. कुचामण सू कविता

री चाव चढचौ, जिण रै पछै इसकूल, कालेज री प्रेसीडैन्टी करी अर जको भटकाव डीडवाणै सू चाल्यौ वौ आज ताई वीया ई चालै है

जैपर रै महाराजा कालेज सू वी.ए तो करी पण जोर घणौ पडचौ, क्यूकै अठै क्लास सू वेसी ध्यान सम्मेलणा खानी व्हैगो हो. इसटेसण रोड रै होस्टल नै छोड'र झोटवाडै रै श्री भवानी निकेतन मे आयौ. अर अठै सू आगै १९६२ सू १९७२ ताई री अेक दसक ठैराव रो दसक है गुरूजी री वधी वधाई लीका माथै कवी री उछळ-कूद नी व्हे सकी अर सांच तो आ है कै अठै कविता रै सिंवाळ सा आयगा हा, अव एम वी एड. हू.

भायप री भेळप सगती रौ सरूप अर ओळखाण है. गाव वास सू अळगी उण री पूछ है, मानता है. जीया गगजी ठाकरा रो काई कैवणौ रामराजी है, ठाट-वाट है खखारै सागै वीसू लठ ऊठै, वानै 'तू' कैवणियौ कुण ? ठाकरी ठसको है दादोसा रो औ मिज.ज म्हनै याद है

आजादी पछै राजस्थान मे कास्तगारी कानूना सू केई वखेडा व्हिया. कवरमा (पिताजी) भवरसिंघ जी कोई १५ वरसा सू जमीनी मुकदमा लडता रिया अर अेक तहसीली नेता रै रूप में चावा व्हिया. पण म्हारै अतस माथै इणरो असर पडचौ तो औ कै म्हनै अेकलौ रैवण मे सुख सो लागण लाग्यौ. पालणै सू आगणै अर आगणै सू कवू कोल्डी मे आतां जाता केई हुक्का री गुडगुडाटा सुणी चिलम रै धुंवा सू नासा फडकी अर स्याफी भेवण री आगळचा गांव गुवाड मे कद डडिया खेलण आई, धमाल गाता कठा सू कद गीता री गुणगुणाट व्हेण लागी औ वतावणौ दोरो कोनी तो इत्तो सोरो ई किया व्हे सकै ?

अेक वार वाई जी महाराज (फूली वाई) गाव पधारचा सत सगत हुई. म्है दो तीन दिन वां रै सागै ई रियौ. वै सीख करी तो म्हैं अळगै ताई पूगावण नै गयो. पाछौ फिरता ई आसुआ री धारा छूटी, धोरा माथै अणमणौ सो वैठ्यौ रियौ. अेक सवाल ऊठ्यौ—'गुरू समझ न पाया, कैसी है राम की माया' अर ईया ई भगती री लैर मे सैंकडी भजन वणा नाख्या. हाल ताई गांव री भजन मडळचा वां नै गावै अेक आतमतोस इण सू मिळचौ.

प्रीत कद उपजी ? क्यू उपजी ? इण रो जवाव तो कोनी दे सकू पण डील री वणगट रै सागै सागै ई लुकी छिपी ताकझाक सुरू व्हे जावै मौलासर मे अेक रामलीला देखण गियौ अर रासलीला सीख आयौ प्रेम री पाती, इसारा अर सदेसडां री नी टूटण आळी अेक सांखळ सी वणगी. सुगण मनातो, सरोदो लेतो कै आज उण सू वात करण रो मौको मिलै सपनै मे सुगन ई सुगन, सुगन्ध ई सुगन्ध. औ वावळापणौ नी व्हे सकै, आ तो ऊची समझदारी है. वीया हर वावळौ आपनै ज्यादा समझदार ई समझ्या करै औ हिवडै रो दरवार, निजरा रो चौपार मौलासर छूटता ई छूटगो पण उण प्रीत री पाती उण अदीठ उणियारै नै आज ताई लिख रियौ हूं. अणभोगी वांछा प्रीत रा गीत वणगी. सिणगार रा प्रतीक वणगी. अव म्हैं भजणां री ठौड प्रीत रा गीत गावण लागगो, अजै गाया जावू हू प्रीत म्हारै कवी रो जीव वणगी.

म्हैं प्रीत रै कितरा पळोथरा लगाया पण फलकौ नी बेल सक्यौ. म्है प्रीत रा कितरा बीज चोव्या पण फाल कुणसै ई बूटै नी आयौ. म्है प्रीत- रा कितरा गीत उगेरया पण कोई सुर रै सामेळै नी आयौ. इण कवारी प्रीत री जेवडी रौ बळया पछै ई वळ कोनी नीसरयौ सवदा रै सासरै प्रीत आज ताईं जावै है अर आपरै भावा रै भोपाळ नै रिझावै है, खिलावै है, भरमावै है प्रीत री पातळ कद ताईं पुरसी रैवैली–आ म्हारौ कवी नी बखाण सकै अर नी म्हैं ई क्यू कैय सकू म्हे दोन्यू अेकमेक हा आज प्रीत आखरा मे उळझगी आखर अचपळा घणा पण अचपळाटौ तौ पाडौसी तक नै चोखौ लागै–औ साच है. बाण छोडया नी छूटै—जोर काईं ?

उणियारै री आखडती ओळ गीता सागै कद आपरी पिछाण करा जावै कद मनडै री बात कैय जावै अर खुद सिरजक ई नी जाण सकै जे वौ आ जाणतौ व्है तौ आपरी इतरी बडी कमजोरी दरसा नी सकै जे दरसा देवै तौ वा कविता नी व्हे सकै कविता तौ जीयोडी जिंदगानी है जकी अणजाण मे बखाणी जावै.

जागणौ अबखौ लागै मन अर तन नै अवखाई सी व्है पण मन री मरजी चालै कोनी यादा री पासवान नै गोखडै ऊभी देखता ई नींद बाईसा नैणा री पौळ कोनी पधारै. पसवाडा फेरतै डील नै विछात माथै सळ पटकतौ छोड'र मन रौ पछी अळगी अळगी, ऊची ऊची उडाण माथै उड जाय अणदेखी, अणसैंधी सूरता सू सगपण करतौ फिरै अर औ ई अणछेडी, अणभोगी वाछावा म्हारै हिवडै रै अेडै छेड़ै जका राग गाय जावै वा नै भूलणौ म्हारै बूतै री बात कोनी इण मे दो साच नी कै आदमी रौ बूतौ आपरौ अेक ई व्है. स्यात निंदाळू आख्या सू कवी री बानगी निरख्या करै स्यात उणीदी राता मे ई कवी नै रोसणी मिळै. स्यात पसवाड़ा रै पलटाव सू कवितावा मे रस आया करै.

डागळै सू निजरा रौ पसराव पण सारली बोरडी, खेजड़ी अर खाखलै रौ ढेर टिपै नी. खितिज रै पारू पार की आपरी चीज लुकायोडी लागै सोधता सोधता ई पाछी नी मिळै वा रतन है कै सोनौ, कै काईं ठा काईं चीज ? पण है अणमोली, अणतोली. इण दरसाव मे डूगर, भाखर सी मोटी पडछाया कोनी आवै पण अेक छोटी सी मूरत आय'र थम जावै. स्यात आई है वा घणमोली चीज जकी नै म्हैं सोधू....हा आ प्रीत ई व्हे सकै. दूसरी वसत री इतरी बिसात कोनी, इतरौ बूतौ कोनी

म्हारौ कवी कदेई वणावट अर ढोग मे कोनी उळझ्यौ. वौ चायै पैरावै रौ व्हौ, चायै कैवण रौ, वतळावण रौ. अेक सादबूदै तरीकै सू ई आपरी ठौड वणाई. 'रस भीणी ओळया ई काव्य है'—आ ई समझ सामी राखी. गुट, रौळा, टोळा री गैळ मे, पारटी अर वादा रै रैळ मे नी भरमीज्यौ सुभाव रै हस्तै ई आपनै राख्यौ केई लोग आज रै जमानै मुजब इण तरीकै नै गळत समझै, पण आ समझ भी तौ गळत व्हे सकै ?

मच अेक परपंच बणगौ. वै कवी जका आपरी कविता मंच सू पढै, गावै अर अेक बडी जमात नै आपरी वणा लेवै, मच रा कवी है. आंरै सिवाय वै कवी जका कागजी

मंच पर ही है—जका कविता तौ लिख दी, आखर रा भाखर तौ खडा कर नांख्या पण भाखर चढ बोलण रौ पगा मे सत कोनी बपरायौ

आ किती हीण वात है कै अेक आदमी आपरी लिखी कविता पढ'र सुणाई नी सकै. भैंस काळी व्है, पण काळी छागी सू विदकै, विपरै स्यात आपरी धौळप दरसावण री तरकीब अजमावै. अर ईया ई अेक स्वयसिद्ध वाळमीक्या री जमात खडी हुई जकी कागज पर ई मोटा आखर विखेरया—मच रा कवी गळैवाज है, मसखरा है, सुर सू रिझावणिया है, लोक गीता री धुना पर दिसावरा मे राजस्थानी काव्य रौ रूप विगाडणिया है आ वात साची है ही क आदमी दूजे री तारीफ सू रीसा वळै

राजस्थानी काव्य मच रौ इतियास आजादी री लडाई सू चाल्योडौ है राजपुतानै री अणभणी जनता नै आजादी री वात वतावण नै खुद री भासा अर विसेस ढग सू कैवणी जरूरी ही जयनारायण व्यास, माणकलाल वरमा, गणेसीलाल उस्ताद, हीरालाल सास्त्री जैडा नेता मचा माथै गाव-गुवाड मे गाया. नाच्चा, चग री चिमटी अर ढोल रा ढमक्का सू राजपुतानै नै चेतायौ अंग्रेजी राज नै भगायौ

आ री लकब माथै मच रौ बूतौ समझता थका आजादी रै पछै राज नै, सुराज नै जमावण खातर ई मच टेक्नीक आजमाई गई जिकी घणी कामयाव रयो विकास गीत अर प्रजातन्त्र रौ अरथ समझावणिया मच, सता विकेन्द्रीकरण रौ दिवळौ राजस्थान मे ई जळायौ, आ वात तौ सगळी दुनियां मे उजागर है.

प्रयोजन धरमी मच आपरी मजल पाई पण इण रै सागै ई अेक खुद रौ प्रयोजन मच पर पगफेरौ करचौ मुकुळ आपरी सैनाणी इतै ऊंचै सुर मे गाई कै सेक्रिट्रियेट री कुरसी मिळगी. वस अेक जवानी नै अफसरी निगळगी राजस्थानी भासा रै हित में अणचिरया ई वडौ काम व्हेगौ.

हिंदी कवी सम्मेलणा रा अगुआ कविया री जमात सागै गजानन वरमा अर सत्यप्रकास जोसी आया अर नेपाली अर नीरज री जीपा ई सारै देस मे गीता री घमरोळ करी. क्यू इलाका विसेस में रेंवतजी री इन्कलावी आधी चाली पण आध्या लावणिया झौंपडी नै वड री साखा छोड'र सूरज तारा री, दिवळा-वाती री राजनीति मे उळझगा अर आधी निकळगी

१९६० पछै राजस्थांनी कवी सम्मेलणां रौ नीजू मच वण्यौ. जयपुर आकासवांणी अेक-दोय आखै देस रै राजस्थानी कवियां रा सम्मेलण करचा, ज्यासू अेक टीम उजागर व्ही अर लारला नावा रै सागै रसवन्त, हाडा, राजावत, गीतकार रै रूप मे अर विमलेस, पारीक आद हसोड कविया रै रूप में मच पर थरपीज्या. आ टीम देस रै च्यारूंकूटा राजस्थानी भासा नै वोलती करी.

सेखावाटी रा कुछ लोग जका मूळ रूप सू कथा वाचक हा राजस्थांनी कविता रै सागै लगाव देख'र दिसावरां मे आपरै जजमाना नै कविता सुणावण लाग्या अर अै ई कविता

नै सस्ती वणा दी. पण अै कवी रै रूप मे सिरै कोनी गिणीज्या अै सार्वजनिक नी व्हेय'र 'कुटुम्बी' ई रिया

सन् १९६२ अर '६५ री लडाई मे मच पर जोस रा काव्य पाठ घणा चाल्या. देस भक्ती री लैर सी आई पण १९७१ री लडाई मे इण रौ रूप रिगल ठिसकोळी ताई आयगौ व्यग रै नाव अलड-बलड, अट-सट बिना सीग पूछ री बाता रै सागै ई अेक भाडगिरी पुखता व्हेण लागी गीत री गमक मे गम्योडा कनरसिया श्रोता कविता री वाहवाही सू निकळ'र ठहाका, हाकां मे भरमीजगा. १९७२ रै मच माथै चुटकला री चटणी सूं कविता री स्वाद बणावणिया धोबी रै कुत्तै ज्यू व्हेगा है वै हिन्दी कविता बोलै पण राजस्थानी रा कवी बाजै. मच नै बजारू बणावण मे आरी तुरत बुद्धि धार पर है, पण पाणी बिना रेत सूखती सी लागै

मच भासा नै जणै जणै लग पूगतौ करण री सै सू बेसी अर कारगर साधन है. मच रै सागै ई भासा री मानता री आवाज ऊठी है इण साच नै मच सूं अळगा रैवणियां नी मानै तौ औ वारौ निसरडापणौ है धीठ रै पूठ, पग नीं व्है, मूडौ ई विया करै

जद ताई मच माथै व्यग अर मसखरा कवियां री घणी रौळी नी वध्यौ हौ, तद ताई वौ सरसती मा री तसवीर सूं सजायौ जावतौ, धूप, अगरबत्ती खेई जावती. कवी लोग 'वाणी पुत्र' कैवीजता मैंकता गळहार अर बिरदावली सुण'र कवी नै अपणै आप मे अेक खुसी व्हेती \ जनता भी कवी नै विसेस मिनख समझती ही. पण जद सू कवी सम्मेलण मनोरजन मेळौ बणगा, आरी सगळी लागलपेट बीत्योडी बाता व्हेगी. कवी सीधौ मच माथै आय'र गाडी रौ टेम पैली पूछैला अर जवान चढचोडी कवितावा सुणा'र लिफाफौ लेय'र परौ जासी. सम्मेलण आज अेक वौपार है आप आप रा घडा वण्योडा है सौ धडल्लै सूं मार्केट माफिक माल त्यार करता थका बेच रिया है, बिक रिया है 'वौ मरग्यो रे' कहता ई जनता हस पडै तौ कवी नै तौ लाख लाध जाय. इण मे कवी रौ काई दोस ?

तौ ईया अै धाडेती कवी धडा वणा वणा'र मच माथै धाडा पटकै आ मे सू केई लोग तौ दलाली भी करै अर सम्मेलणा रा ठेका भी लेवै आ अेक मच री राजनीति है जकी पनप रयी है अर इण रौ उपसहार रामभरोसै ई है

म्हैं म्हारै कम बोलणियै सभाव रै कारण अर अेकलौ रैवण री आदत मुजब कविता नै मचू बणावण री कोसिस नी करी जिकी कवितावां अर गीत सम्मेलणा मे जम्या, वारै वास्तै कोई खास मिजाज कोनी बणायौ अर जका पत्रिकावा, कितावा मे छप्या-कोई तपस्या रा फळ नी हा. रचणा जकी घूमतां घामता मूडै चढी, क्यू पुखता व्ही अर जठै म्हे साहितकार रै गुमेज मे लिखी, वै क्यूं खुदाखुद ई पोची रैयगी

"आयौ तौ हुवैला', 'मालण', 'सलाम" अर 'रामराज है कठै', पैली म्हनै याद व्ही

अर पछै कागजा में लिखी साइकिल पर मन री मौजां घूमता, 'हिचकी' आयगी अर होस्टल रै हुडदग में सलाम व्हेता रिया अेक जगा बैठ'र लिखणौ अवखौ लागै अर पडचा पड्या कम लिख्यौ जाय, बस ईया ई घणकरी कविता आधी पडधी बणबणा'र रैयगी अर फाटचा फूटचा पानडां में अठै उठै समपूरण व्हेण री उडीक मे ऊकडू व्है मेली है आजकालै तौ टावरा री कुचमाद अर रौळा मे भावुक व्हेण रा खणा री कमी लखावै भीड़ रै सामी कविता पावसै कोनी. गीता रा गवाळ किसड़ै घोरै चढ ढेरै ? थे आ ई कह्ल्यौ कै अैडी बाखडी हालत तौ चोखी कोनी ... नी व्हेली सा.

अकल रा अचपळा, वाना मे वडेरा वडवोला, मुघ सुंवार गत गुंवार म्हैं नैं म्हैं ऽऽऽऽ वणा'र दरसावणिया, आखर सू अगतेडा अर 'भावा सू वाथेडा करणिया छदा नैं रगदोळणिया आपनैं नुंवां कवी कैवै गत गुवे री वात भलाई मत व्हौ पण नुंवौ कैवावण रौ उमाव, उछाव, गुमेज री भात वणा ई न्हाखै इण भात री पात मे नाव लिखावण नैं जाणै अणजाणै म्हैं भी म्हारी कलम चलाई. छोटी अर वडी घणीसारी कवितावा कर न्हाखी कैवण री मपाट तरीकौ, ओळचा छोटी मोटी कर'र लिखण रौ नुंवौ ढग, कोई घणी 'खीच' कोनी राखै—की अैडौ लखावै. पण वात रौ साच अर साच री पकड इण मे ज्यादा है वणावट अर झूठा गहडम्वर सू अळगौ व्हेय'र ई कोई विचार करधौ जा मकै कोई साच कैयौ जा मकै 'ओ नवी बीनणी', 'औ कुण', 'मैंदी अर मसाण', म्हारी अैडी ई कवितावा है. अैडी रचणावां सू म्हनै छपास सुख मिळ्यौ. वछेरी किलोळ अर अछेडी गीता री धुन मगळा नैं ई चोखी नौ लागै ई. अैडी ई है आ नुवी कविता-वोछरडी कविता.

म्हैं मच माथै पैली आयौ अर कविता पछै करण लाग्यौ अेक पैरोडी कमलनयन धोखै सू कुचामण हाईइसकूल रै चूतरै सू बुलवादी अर उण री ताळचा अर वाह वाह म्हनै म्हारै 'म्हैं' सू पिछाण करा दी. उण दिन (१९५६) सूं आज (१९७३) ताई माइक री आख सू आखौ देस देख लियौ म्हारै गीता रै पख लाग्या अर म्हनै वियौ मंच सू लगाव. म्हे दोनू ई निभ ग्या हां, चाल ढाल मे तौ कोई फरक मैंसूस करण जोग कोनी पण आज-काल केई लोगडा कैवै है कै म्हारी पेट दून वणण लागगौ है क्यू आल्यां गुलावी रैवण लागी है. कविता रौ सगपण डील डौल सू करणिया कुचरणीगारा नी तौ काई है ? बूढा माजी गागरत नी करै तौ वारा दिन किया कटै, रोटी किया पचै, पटै? डेणा रौ थूक बिलोवणौ गुजरी गाथा नैं वीती वाता रै मिस चीकणै लूण्यै री लू दी वणा'र काढणौ चावै. बोखली वोली ओखळी रौ स्वाद जाणै, अर जाणै सो वखाणै—वैर जावण दौ.

म्हनैं मंच सू लगाव जरूर है पण म्हैं मच रौ कोनी वण सक्यौ गीता नैं विना 'एटमोसफियर' वणाया अर भूमिका वाध्या सीधै सपाट तरीकै सू 'अटेनसन' व्हेय'र सुणा दिया अव गीत जाणै अर सुणणिया जाणै देखण मे आई कै अै गीत दूसरा तीसरा दौर मे ई सुणाया जा सक्या रैजगारी छटचा पछै काम रा लोग वचै

राजस्थानी भासा मे लिखण री अेक अन्दरूणी सुख है. गू गै रै गुड ज्यू वखाण्यौ नीं

जा सकै. पैलीपोत हिन्दी मे कविता करी अर दो च्यार जगा बोली, पण जद सू राजस्थानी री 'भू पडी' कविता मे पढी तौ अेकाअेक ईया लाग्यौ कै म्हैं कोई नुंवौ काम कर रियौ हू. म्हारै राजस्थानी कवी री मंच माथै माग बधतीगी अर म्है इण नै ई गौरव री बात मानी कै मातभासा री रुतबौ ई म्हारौ रुतबौ है.

राजस्थानी भासा नै लारै राखण मे सैं सू वेसी वै लोग है जका खुद नै 'सर्वोतमुखी' प्रतिभा रा धणी मानै. वानै इण बात रौ घमड है कै वै हिन्दी मे भी लिखै है पण मीठै जैर री असर हौळै हौळै व्है आ बात याद राखणजोग है आज हिन्दी जबान सौत सी अगू णै राजस्थान सूं आती आती जैपर री गळ्या मे चटका मटका घूमण लागी है. अकास-वाणी हिन्दी मे जगावै अर हिन्दी मे ई लोरी गावै इण नै आज ताई आपा खतरौ कोनी मान्यौ. आछा आछा सम्मेलणा मे राजस्थानी भासा रा मांनीता लोग आ ई कैवै कै म्हानै हिन्दी सू विरोध कोनी तौ आ समझणो चाईजै कै वा नै राजस्थानी सू कोई जीवण मरण री हेत कोनी. वै तौ कोरा 'पब्लिसिटी' रा भूखा है आपनै जनता रै दुखदग्द रा सिरी बणावण जोगा कोनी. 'ना' रौ मतलब 'ना' ई व्है, अर 'हा' रो 'हा' ई. औ फरक जाणण नै घणौ आगौ जावण री जरुत कोनी. म्है म्हारै 'म्हैं' नै राजस्थानी रौ बणायौ, इण मे ई म्हनै सुख अर गुमेज है.

◇

सौ बेटां रौ बाप : जनकवी उस्ताद

• सत्येन जोसी

उस्ताद रै सौ बेटा. सौ माय सू निन्नाणू दूजा अर अेक म्है भी सौ माय सूं कौ सोरा, बाकी सगळा दोरा दोरौ तौ खैर आज कुण कोनी, पण उस्ताद नै लेय'र जीव री दोराई अेक बीजी बात है. उस्ताद सू म्हारै कोई लोई रौ रिम्तौ कोनी. म्हारै भासा रा बाळगोटिया अर म्हारै नानाणै री गळी रा वासी उस्ताद रौ घर म्हारै घर सू घणौ अळगौ कोनी सौ बेटा माय सू घणकरा औ घर भी नी ओळखै, जकौ पीपळिया महादेवजी रै लारै फोफळिया री गळी मे है. वै जाणता उस्ताद नै कै वांरै सरकारी क्वाटर २० ई गाधी नगर नै, जकौ जैपर मे है साच पूछौ तौ उस्ताद रै सौ बेटा जैपर मे ई जळमिया अर जैपर मे ई गमिया.

तद म्हैं दसवी पास कर इसकूल मे मास्टर व्हेगौ हौ—उण वगत म्हारी अेक वेली जुगल किसोर बौडी जैपर मे हौ उणरा बाबूजी उठै डाक महकमै मे इन्सपेक्टर हा दोस्त

री सला सूं म्हैं मास्टरी छोड जैंपर चल्यौ गयौ डाकियौ मुकर करणौ बौडै रै बाबूजी रै हाथ री बात ही, सौ जैंपर मे डाकियौ मुकर व्हेगौ उण वगत मास्टर नै ५० पण डाकियै नै ७५ रिपिया मिळता हा

दूजै दिन उस्ताद सू मिळण री मंसा सू सैक्रिटियेट पूगौ. देखता ई लाड-कोड सूं सू बोल्या—

"सत्तू ! थू कद आयौ ?"

"कालै "

"अर आज मिळण नै आयौ है ? ठैरियौ कठै ?"

"बौडै रै अठै "

भंवारा सिकोड'र बोल्या—"बौडै रै अठै ठैरण री थारी हिम्मत किया पडी ? सीधी तरा सू अबार रा अबार बिस्तर, कपडा ले आवौ अर थारी मा खनै पूग जावौ,"

म्हैं काई कैवतौ ! चुपचाप घाटकी हिलाय हुकम मानण री मत्तौ दरसायौ अर वीर व्हेगौ. सिझ्या पैली उस्ताद रै अखाडै मे पूगग्यौ हा, उस्ताद रौ क्वाटर उस्ताद रौ अखाडौ ई बाजतौ. इण अखाडै मे कोई पैलवानी कोनी करणी पडती. पैलवानी छोड काम भी करणौ व्हेतौ तौ औ ई कै वेळा सर सिरावण-ब्याळू कर लेवणौ उस्ताद रै अखाडै रौ औ बरताव सिरफ म्हारै सागै ई नी, जो कोई भी मिनख उठै आवतौ उणरै सागै औ ई सलूक व्हेतौ उण घर में बडिया पछै उण घर रै टाबरा वाळा सारा हकूक अर सहूलियता मिळणी लाजमी ही.

उस्ताद री तनखा लारला आठ दस महीना सू बद ही, पण घर खरच मे कठेई कोई कसर नी ही लालकोठी माथै पजाबी काका री दुकान सू खावण पीवण रौ सगळौ समान उधार आवतौ उस्ताद रै खुद रै परवार मे बारी जोडायत रगूबा, दिलू, विजू अर पिन्नी, कुल मिळा'र पाच मैम्बर हा, पण अेक टक खावण वाळा री गिणती कदेई सात आठ सू कम नी व्हेती रगू बा सिरफ घर रौ खरच ई नी चलावता, सगळा रै गाभा अर हाथ खरच रौ भी बदोबस्त पूरौ राखता. उण घर मे आयोडौ कोई मिनख रोटी खाया विना पाछौ नी जा सकतौ अैडा लोगा रै वास्तै उठै जगा नी ही, जका खावण रै मामलै मे लाज सरम राखता, कै आनाकानी करता

तनखा आठ दस महिना सू भेळी ई आवती, पण तनखा आया पछै भी उस्ताद तौ दो दिन ई अमीर रैवता वानै जेब मे पडियौ नोट काटतौ वानै आ उतावळ रैवती कै कद जेब रा पइसा खरज व्है अर बाद जेब हळकी व्है. म्हनै भी केई बार कैवता—"छोरा जिण दिन सुण लीन्हौ कै थू बैंक बैलेंस बणा रह्यौ है, उण दिन सूट कर देवू ला "

रामबाग रै अेक छेडै अेक चौरायौ है. जठै सू अेक मारग तौ सागानेरी गेट सू सागानेर जावै अर अेक मोती डूगरी सू सैक्रिटियेट खानी इण चौरायै रै नुक्कड माथै अेक प्याऊ उस्ताद कदेई अठै पाणी नी पीयौ, पण अठै पाणी पावण आळी अेक डोकरो

रै छोरै री भणाई सारू हर महिनै दस-पनरा रिपिया जरूर याद राख'र दे देवता केई वार जेब मे अेक पइसौ ई नी व्हेतौ सैर सूं गाधी नगर पैंदल ई आवणौ पडतौ. म्हारी जेब मे कदेई सीक पईसा व्हेता अर म्हैं कैवतौ कै बस मे चाला परा, तौ तुरत कैवता—"बूढा व्हेग्या हौ काई ? पैंदल नी चाल सकौ ?" पण कदेई खुद री सरदा ना व्हेती कै भाग री बेळा व्हे जावती, तौ खुद चला र पूछ लेवता—"बस मे चाला जितरा पइसा है कै नी जेब में ?" उस्ताद ज्यादातर तौ खुल्ला पइसा पाछा लेवता ई नी, अेक दो जणा री बेसी टिकट खुद रै पइसा सू ले लेवता. हौळी, दिवाळी बस ड्राइवर अर कण्डैक्टर नै पाच पाच रिपिया देवणा नी भूलता रिपिया, दो रिपिया री तौ कोई लेखौ ई नी हौ रिक्सौ तै करता रिपियै मे अर देवता दो रिपिया म्हैं केई बार कैवतौ—"आप पईसा घणा दे दिया" तौ कैवता—"बेटा ? आपा आरै रिक्सै मे बैठ'र आवां औ ई घणौ दोरौ लागै, पण आरी कीमत इण सूं बौत ज्यादा है."

अेक बार जोधपुर री अेक घाची आपरी भैंसिया लेय'र जैपर आयौ. उस्ताद नैं मिळियौ क्वाटर ले आया बौ भैंसिया वौ बेची सौ बेची ई ऊपर सू हजार बारा सौ रिपिया अेक आसामी सू उधार कर लिया वौ आसामी गाधी नगर री फेरी देवणी सरू करी. उस्ताद केई वार समझा बुझा पाछौ भेज देवता. खुद खनै सूं दस-वीस रिपिया देय'र उणनै राज़ी कर देवता. अेक दिन आसामी आपै वारै आयगौ, उस्ताद खुद चुकावण रौ वचन दे उणनै अेक तारिख दे दी वा तारीख आवण सू पैलां ई घाची तौ उठै सू ठेका देयगौ रिपिया उस्ताद आठ दस महिना मे चुकाया वा घणा नाराज व्हेता, पण उस्ताद रौ सभाव ई अैडौ हौ, उण सभाव रै आगै किणी री बस नी चालतौ. अैडा मांमला मे उस्ताद केई वार ठोकर खावता पण सभाव नी छोडता. वा सू किणी री तकलीफ वरदास्त नी व्हेती. जका लोगा नै उस्ताद तरै-तरै सू मदद की, वै उस्ताद नै काटण मे भी की कसर नी राखी. वा भी परपूठ की कैय देवता पण सामै मू डै तौ किणी नै कोई चीज या पइसै टकै रौ ना नी दे सकता, उस्ताद रै अखाडै रा केई उमूल हा अर औई ठाळौ हौ उठै जात धरम इत्याद रौ. कोई भेदभाव नी हौ सगळा अेक सरीखा, सगळा बरोबर. दिलू, विज् सू पैली म्हारी, दिवाकर री अर बीजा री जरूरता पूरी व्हेती.

उस्ताद रै तीन बिसन हा भाग, अमल अर जरदा-वीडी भाग वै दिन मे अेक वार दोफारा तीन-चार रै बीच मे पीवता अर अमल दो या तीन बार. केई बार अमल खतम व्हे जावतौ तौ रात रा नौ दस बजिया कैवता—"छोरा ! सैर जावण री मरदा है कै नी ?" म्हैं समझ जावतौ कै अमल लावणौ है भाग वै हाथैई घोटता कै पछै उण खनै सूं ई घुटावता जकौ खुद पीवतौ म्हानै रोज कैवता—"छोरा था अै बिसन सीख लिया तौ फोड्या ला !"

वारै नाराज व्हेण रौ तरीकौ भी न्यारौ ई हौ जद वै किणी सूं नाराज व्हेता तौ उण सू बोलता नी, हूंठा हूंठा फिरता. आगलौ आदमी अमूझ जावतौ अर सेवट आपरी गलती मान लेवतौ. इतै मोटै क्वाटर में वा, दिलू, विझू, पिन्नी, सदासिव काकोसा,

दयालजी, काकीजी इत्याद केई जणां फेरू भी हा, पण उस्ताद रै विनां घर सूनौ लखावतौ. दफतर सू आवता ई वै पैली भाग पीवता, जंगळ सूं निमट'र आवता अर पछै जम'र बैठता अर बैस सरू व्हे जावती. बैस मे कदेई सै क वा बीच मे कोई टूग छेड देवता, तौ वै अेकदम उछळ पडता. पछै तौ कुण कैवै कै ब्याव भू डौ? खूब गरमागरमी व्हेतो अर आखर उस्ताद गुस्सौ खाय सगळा नै कमरै सूं काढ कीवाड वीड लेवता थोडी ताळ घर मे सून्याड़ वापर जावती. अर घण्टे आधै घण्टै सू पाछौ राजीपौ अर घर खिलखिलावण लाग जावतौ ऊडी रीस वारै जीव मे कदेई नी रयी

सिञ्झ्या रा सात आठ वजिया ई वै सोय जावता. पण १०-११ वजिया रै करीव पाछा जागता नींद मे भी वै इतरा 'कान्सस' रैवता कै थोड़ो सो ई खुडको व्हेता जाग जावता जाग्या पछै पाछा कद सोवैला, इणरी खवर किणी नै नी लागती क्यू कै रात रा, आधी रात रा, झाझरकै म्हैं जद कद ई जागतौ वानै पढता कै लिखता ई देखतौ.

उस्ताद मे दो गुण विसेस हा. वै फक्कड हा अर अक्खड वांरी मसूर ही. पण वारी अक्खड निवळा सारू नी ही. निवळा नै वै सदा माफ करता सवळां सू भिडता, वारौ कैवणौ हौ—"आदमी चलाय'र कोई कसूर नी करै, सगळा आपरे सुख सारू धावै." आदमी सू नफरत करणी वारै सभाव मे ई नी ही वारै फक्कडपणै अर अक्खडपणै रा धणाई वाकिया है.

वा दिना 'वघाऊडौ' (उस्ताद रौ लिखियोडौ ऑपेरा) री रिहर्सल चालती ही उस्ताद केई निरतकारा नै आपरा गीत सुणाया अर निरत रा रूप वताया जका वै खेलणी चावंता, पण वारै मन मे कोई जचियौ ई नी सेवट भगवानदास जी वरमां सू मुलाकात हुई अर वै पैली निजर मे ई उस्ताद नै जचगा. पछै काई हौ ! रिहर्सल सरू व्हेगी पण समस्या छोरा-छोरिया री टीम जुटावण री ही. वरमा जी रै अेक लडकौ अर दो लडकिया नाचण जोग ही, पण 'ववाऊडौ' मे तौ इत्ता साक नरतका सू काम नीं चाल सकतौ उण वगत वरमां जी री हालत भी खस्ता ई ही. पण उस्ताद तगाई भुगत'र भी वानै पगा माथै ऊभा राखिया अर 'वघाऊडौ' रा पांच निरत त्यार किया. लडका मे म्हारै अलावा म्हारा तीन वेली जुगल वौडौ, वनराम पुरौइत अर गोपाळ जी व्यास त्यार व्हेगा. दो लडकिया, वगाली वैना पूरवी अर लीला मिश्रा ही अर अेक मलका भट्टाचार वरमा जी अर वांरी मोटयार वेटी सकुन्तला मूखिया रै रूप में हा अर ग्रुप मे म्हे सगळा लारला.

विकास आयुक्त अेक दिन उस्ताद नै बुलाय'र डवलपमेट कान्फ्रेंस सारू प्रोग्राम देवण री तजवीज धरी. उस्ताद वारी तजवीज मानली अर आठ सौ रिपिया अैडवान्स लेय'र माधा सू ज्यादा वरमा जी नै दे दिया—लडकिया रै पढाई रै हरजानै रै रूप मे वांरी ट्यूसन फीस भरण नै डवलपमैन्ट कमिस्नर साव अेक दिन वोल्या—"उस्ताद इणमे की बांता विकास री भेळौ, मसलन सैनीटेसन इत्याद रै वारै मे" उस्ताद अेकदम विखरग्या—'आप काई रिपिया देय'र खरीद लिया हौ? रसोवड़ै मे म्हैं तारत नी वणा सकूं. सभाळौ

थारा रिपिया, प्रोग्राम कोई वीजै नै सू पी ?" अर उस्ताद खुद खनै सू रिपिया पाछा देय'र प्रोग्राम रौ पापौ काटियौ उण प्रोग्राम री रिहर्सल सारू अेक जीप भी म्हा लोगा नै लावण लेजावण सारू आवती, उणरै खरचै १२००-१३०० रिपियाऽ हेगा जका उस्ताद री तनखा सू केई महिना पछै ताई कटता रिया.

उस्ताद रै मिजाज नै प्रगटावण आळा केई वाकिया है, जकां मे सू वौ म्हनै इण वगत वेतरतीव याद आय रया है. उस्ताद री मार्क्सवाद मे पूरी अर पक्की आस्था ही आजादी आया सूं राज री बदळाव व्हियौ. उण वगत जोधपुर रियासत मे लोक-नायक व्यासजी री लीडरी मे मिनिस्ट्री बणी उस्ताद नै मिनिस्ट्री मे आवण रौ न्यूतौ मिळियौ, पण वै कबूल नी करचौ. इण पर वानै जन-सम्पर्क मैकमै रा मुखिया बणावणरी पेसकस करीजी, पण उस्ताद नै आ भी मजूर नी व्ही, डिप्टी रौ ओदौ माडाणी दे दियौ. उस्ताद ओ ओदौ कबूल करती वगत दो सरता धरी, पैली-म्हारी कविता माथै की रोक नी व्हैला. दूजी म्हैं सिद्धान्त रूप मे मार्क्सवादी हू, इण माथै भी कोई पावन्दी नी रैवैला

अै दोनू सरता व्यासजी मानली अै सरता उस्ताद क्यू राखी अर व्यासजी क्यू मानली ? ओ अेक सवाल ऊठ सकै, पण राजस्थान रै निरमाण सू लेय'र उस्ताद रै वाकी रै जीवण री कवितावा अर वारी जिंदगानी इण रौ जबाव व्हे सकै.

कैवण नै तौ वै गजेटेड अफसर हा, पण वारै जुम्मै राजरौ काम छोड बैठण सारू कुरसी भी राखियोडी नी ही तनखा तौ साल दो साल सूं साथै ई आवती. जीवता थका छोड, आज तक फिक्सेसन नी व्हिया. कवितावा ई वास्तव में वारै कळेस रौ कारण ही अेक वार जैपर मे अेक कवी सम्मेलण हौ. कवी सम्मेलण मे उण वगत रा नवा चुणियोडा मुख्य मत्री सुखाडियाजी, मत्री अमृतलाल जी यादव, मथुरादास जी माथुर इत्याद केई मोटी हस्तिया विराजमान ही उस्ताद नीचै दियोडी कविता पढी—

> रात छुरी बापू रै मागी, तड़कै नगर जिमायौ भात ।
> मिनख जूण रा गीद कागला, नाचे जद तक भरी परात ।।

आ कविता सुण यादवजी रीसा वळग्या बोल्या—"उस्ताद आ नी चलैला"

उस्ताद पूछियौ—"काई नी चलैला लाला, नौकरी कै कविता ? नौकरी लेवणी थारै हाथै है, सौ अस्तीफौ तौ म्हे हर टेम जेब मे ई राखिया करू अर कविता तौ चलैला. आ खोसणी थारै हाथै कोनी. कविता चलै कै नी, आ जाणणी है तौ परसूं रेडियौ माथै सुणलीजै."

तीसरै दिन रेडियौ माथै कवी सम्मेलण हौ यादवजी भी मौजूद. उस्ताद कविता सुणाई—

> "आ जनकवी री जुगवांणी, आ कदे न चुप रह जाणी."

जीया उस्ताद रै सौ वेटा हा, उस्ताद कैया करता कै म्हारै सौ वेटियां भी व्हेणी

चाईजै. लडकियां सारू उस्ताद रै मन में दया भी ही, अर सनमांन भी. सौ बेटियां तौ नी पण अेक बेटी उस्ताद नै अैड़ी मिळी कै उण लारै म्हनै जैपर तौ काईं निरत अर गीत भी छोडणा पड्या, उस्ताद रै काळजै री अेक टुकडौ म्हैं भी हौ, पण उण बेटी रै खातर म्हनै निजरां सूं अळगौ कर दियौ. म्हनै आगौ करता थकां जकी तकलीफ वानै व्ही, उणनै म्हैं ई समझ सकूं कै वै ई जाणता म्हनै तौ अेक दिन बुलाय सिरफ इत्तौ ई कैयौ— "छोरा थनै अेक सजा देवणी है, थनै निरत छोडणी पड़सी. म्हारी गलती री सजा थनै भुगतणी है अर म्हैं जाणू कै थू इण सारू नटैलौ नी." म्हैं हक्कौ-वक्कौ व्हैगौ. काई उथलौ देवतौ जैपर छोड भीनमाळ जावणौ पडियौ, डाकियै री नौकरी छोडणी पडी.

दो च्यार महिना पछै जोधपुर मे संगीत नाटक अकाडमी रौ उद्घाटण उच्छव हौ. सुखाडियाजी खासतौर सू उस्ताद नै भौळावण दी कै वानै आपरा दो अेक गीत इण मोकै पेस करणा है. उस्ताद आपरी बेटी नै सागै लेय'र जोधपुर आया. जोधपुर रा सगळा चोखा गावणिया नै भेळा कर अेक अेक रै सागै उण लडकी नै गवाई. पण किणी रौ सुर मेळ नी खावै, तौ किणी रौ फिलमी मिजाज गीत रौ मठ मार दै. म्हारौ बेली जुगल औ सागै तमासौ देखतौ रह्यौ. उद्घाटण रै तीन दिन पैला उणरौ कागद मिळयौ. जिणमे वौ खास भौळावण दी कै म्हारै नी आया सू उस्ताद रा गीत विगड जावैला. गायक तौ घणा ई सातरा सू सातरा है, पण उस्ताद रै सतोस रै माफक अेक ई नी जमै. म्हैं डरतौ-डरतौ जोधपुर आयौ, पण म्हारी हिम्मत नी व्ही कै म्हैं वारै सामी जाय सकू. सेवट हिम्मत वधाय वौडौ म्हनै नैनीजी रै मिन्दर मे लेयगौ, जठै उस्ताद रिहर्सल में काया व्हियोडा, जाया देवता हा अचाणचक म्हनै देखता ई साजबाज बद करा, ऊभा व्है, वारै निसरग्या म्है डरतौ-डरतौ वारै लारै व्हियौ. खासी ताळ चालता रह्या, सेवट पाछौ मुड जोयौ तौ म्हैं धाटकी लटकायोडौ वांरै लारै निजर आयौ म्हैं मन मे घणौ ई पछतायौ कै म्हैं आनै दुख देवण सारू क्यू आयौ ? पण अबै काईं व्है ? सेवट वै रुकया, निजर चढा'र पूछयौ—

"कद आयौ ?"

"आज ई."

"थनै आ कुण कैई कै म्हैं जोधपुर आयौ हूं ?"

"वौडै रौ कागद मिळियौ"—आ कैयर म्हैं वानै सारी वात सांची साची वखाण दी. बोल्या—'गाणा जम नी रया है, पण थनै म्हैं नी गवावूंला, खैर चालौ देखौ रिहर्सल."

म्हे पाछा मुड, रिहर्सल री जगा आ बैठ्या. साज छिडिया. उस्ताद आपरी लाडली वेटी नै गावण री हुकम दियौ. वा अेक लैण गावै अर चुप. फेरू गावै तौ वेसुरी फेरू गावै तौ रोवै.

उस्ताद घणी डाट डपट वताई, पण फिजूल वात जमी नी. सेवट वै तग आय'र म्हारै सांमी देख्यौ—"अबै पधारग्या हौ, तौ गावौ, म्हारौ मू डौ काईं देखौ !"

आंघै घटै रिहर्सल चली अर उस्ताद गीतां रै रस मे डूबग्या. वांरौ सैंग गुस्सौ ठडौ

पडग्यौ. रिहर्सल खतम व्हेता ई म्हनै होटल मे ले जाय'र दूध जळेबी खवाई अर बोल्या—
"म्है नी चावतौ कै थू आवै पण म्है म्हारी सगळी कोसिसा करली छोरी दूजा रै सागै ठीक ढग सू गावै ई नी खैर आ आखरी वार है छोरी री मजबूरी भी म्है समझू अर थारी ईमानदारी भी. पण काई करू दोनू म्हारै काळजै रा टुकडा हौ. कमजौर वा है, इण वास्तै उणरै सुख दुख रौ ज्यादा फिकर है. उण सू बोल चाल बद नी करणी है. उण सू हस'र बोलैला तौ घणौ आछौ गावैली."

उस्ताद, उस्ताद ई हा वीया 'उस्ताद' नी तौ वागै तखल्लुस हौ, अर नी पुजायोडौ अहम औ अेक खिताब हौ जकौ जेळ री काळ कोटडी मे बकरा ज्यू ठूसियोडा बेलिया नै मुगत करावण रौ उपाव लडावण री अेवज मे सरगवासी देवनारायण जी 'भाया' वानै दियौ. इण पछै व्यासजी टाळ सैग वा नै 'उस्ताद' नाव सू ई वतळावता अर ओळखता इण खिताब रौ निभाव उस्ताद जलम भर कियौ

उस्ताद रौ जीवण सघरसा री लाबी कहाणी है जोधपुर, उदैपुर अर सिरोही राज री सीवा माथै पौरायत री नौकरी, ठिकाणा री कामदारी गैरजात मे ब्याव, पूना मे रेसकोर्स रा राइडर ब्वाय. वाम्बे क्रानीकल बबोई मे ए. जी हार्नमिन रै सागै अगरेजी अखबारं सम्पादण, इण रै वद व्हिया पछै आगरा, पूना, ब्यावर, अजमेर इत्याद जगावा पर न्यारा न्यारा इखबारा रौ काम अजमेर में चन्दरसेखर आजाद रै साथै की गतिविधिया मे हिस्सौ बबोई रै अेक कम्यून मे साल भर ताई नम्बूदरीपाद रै साथै काम इत्याद अर जे कोई बखाणै तौ आरी लाबी लावी विगता. बबोई मू सूरगवासी जयनारायण जी व्यास वा नै ब्यावर लाया अर उस्ताद 'तरुण राजस्थान इखबार रौ काम वा रै साथै सभाळियौ. व्यासजी रौ परभाव उस्ताद पर खूब हौ जकौ ताजिन्दगी रियौ व्यासजी भी उस्ताद नै मानता. उस्ताद वा रै साथै ई लोकपरिषद रै तैत चालण वाळा आदोलणा मे सामल व्हेता पण खरी कैवण सू उस्ताद, व्यासजी मुंडागै भी नी चूकिया आजादी रै पछै जद अेक वार व्यासजी नै वै 'हेत पचीसी' कविता सुणाई तौ उण कविता रै व्यग अर ओळमे री तीख अर अपणास सू व्यासजी रै आख्या मे भी आसू आयगा.

अगरेजी, हिन्दी राजस्थानी, उरदू आ च्यारू भासावा रौ उस्ताद रै सातरौ ग्यान हौ. औरू दो तीन वाकिया याद आवै, लिख दू.

उस्ताद दुनियां रै साहित्य, भूगोल, राजनीत, कानून, अर इतिहास सू लेय'र साइन्स अर प्रकृति समधी ताजै सू ताजौ साहित्य पढता वा खनै कोई डिग्री नी ही, पण आर ए.एस. सू आई.ए.एस. अर एम ए सू पी एच डी करणिया तकात ब्यौरा, विगता जाणण समझण नै आवता अगरेजी रौ वारौ ग्यान गजब हौ अगरेजी री 'टाइम' मैगजीन रा जैपर मे वा दिना गिणिया चुणिया पाच सात गिरायक हा, जका मे सू अेक उस्ताद भी हा अेक बार राजस्थान विस्वविद्यालै रा उपकुलपती डाक्टर चटर्जी अेक सवद मे अळूझग्या दूजा गिरायका नै टटोळिया पछै जद वै ऊना बुक अेजेन्सी रै मारफत उस्ताद खनै आया तौ

उस्ताद उण सवद रौ अरथ ई नी उण सवद रै जलम री सगळी गाथा तक वानै वताय दी. इणी तरिया ग्रेकवार उस्ताद ग्रापरौ ग्रस्तीफौ रिसीकुमार मिसरा (उण वगत नवयुग रा सम्पादक) नै सुणायौ मिसराजी सुण'र पूछियौ—'उस्ताद ग्रौ ड्राफ्ट किण खनै मू लिखायौ ?' उस्ताद वडक'र जवाव दियौ–'उस्ताद खुद लिखणी जाणै, वीजा खनै सू लिखावै तौ उस्ताद काय रौ ?' ग्रगरेजी वावत ग्रेकवार वारी भिडत उण वगत रा मिनिस्टर यादव जी सू भी व्हेगी. उस्ताद रै लिखियोडौ ग्रेक नोट मत्री जी खनै पूगौ वा रै ग्रगरेजी पल्लै नी पडी. वै जगा जगा काटा माड गुस्सै मे वडकिया कै ग्रौ ड्राफ्ट किण ग्रणभणियै ग्रफसर रौ है ? उस्ताद रै काना वात पूगता ई वै भतूळियै जीया लपकिया ग्रर मत्री जी रै चैम्वर मे पूग'र कैवण लागा—"लाला ! भगी या चमार होवण री वजै सू ग्रफसरी नी मिळी है ग्रगरेजी जाणू कै नी, ग्रा थारै धरम वाप नै पूछलै उण वगत व्यासजी मुख्यमत्री हा ग्रर ग्रापरी खास ग्रगरेजी री चिट्ठिया उस्ताद नै दिखाया विना दिल्ली नी भेजता

उस्ताद राजस्थानी रै ग्रलावा हिन्दी, ग्रगरेजी ग्रर उरदू मे भी लिखता रिया पण हाल तौ वां री राजस्थानी कवितावा भी मुसकिल सू सामी ग्राई है.... ....की तै नी कर पा रह्यौ हू कै ग्रैडी वगत ग्रर ग्रैडी हालता मे म्हैं काई लिखू, किया लिखू, कित्तौ लिखू ? कैयौ नी म्हैं, उस्ताद, उस्ताद ई हा ग्रर उस्ताद रै हा सौ वेटा. सौ मे सू निन्नाणू वीजा, ग्रेक म्हैं भी.

अमर बोल उस्ताद रा

• **विजयदांन देथा**

माना—के दूजौ कोई भाटौ सगमरमर री होड नी करै. पण सगमरमर तौ ताजमैल टाळ दूजी ठौड घणौ ई लागौ ग्रर ताजमैल मे जडिया उपरात सगमरमर रौ मान हजार गुणा वधग्यौ, ग्रा री ग्रा रंगत उस्ताद री कविता में जडियै सवदा री उस्ताद सवदा रौ ताजमैल वणायौ

वौ जीवतै थका कविता री कडी कडी मे ग्रापरा प्राण होम्या ग्रर ग्रमर लोक सिधाय ग्राज वौ कविता रै ग्राखर-ग्राखर में जीवै. ग्राख, कान, रगत, मास ग्रर सास री गळाई कविता उणरी काया रौ ई ग्रेक ग्रस. वौ कविता कीवी कोनी. जीवी मिणियारै री हाट ज्यू कविता सजाई कोनी, ग्रतस मे रमाई

समझ-समझाय उस्ताद ग्रजाण में ई ग्रौ चेतौ कर लियौ के ग्राखी ऊमर उणनै सत्ता, पाखड, कुरीत, ग्रन्याव, मोठ-मरजाद, धरम-करम, छळछद ग्रर झूठ सू लडणौ है ग्रर लडण

सारू ई कविता नै वौ आपरौ हथियार ठायौ नींद मे सूता ई वौ इण दुधारी तरवार री मूठ कदै ई खोळी नी करी

आजादी सू पैंली री विगत सन् ३६-३७ री बात. रजवाडी राज राजावा नै गोरा रौ पत्रारौ ठाकर-ठेटरा री मनमानी दारू-मारू रा नौपत-नगारा. गाव गाव, ढाणी-ढाणी बाजतौ धूसौ चारू कूट खम्मा-घणी, खम्मा घणी री घोख अघपतिया रै जस विडद री होड अदाता, अदाता गरीब परवर गरीब निवाज ... तद....तद उण राठोडी धमचक रै विचाळै उस्ताद अेक नवौ ई तेजौ उगेरियौ

बराबरी रौ आज जमानौ, कुण छोटौ नै कुण मोटौ
दो हाथा री खाय मजूरी, बैनिकमां सू नित मोटौ

ओळू री कावड घूमै ई घूमै सोजती गेट री प्रोळ अेक स्याणौ सीधौ-साधौ मिनख उण प्रोळ रै विचाळै अेकलौ ऊभौ सूरज री गळाई अेकलौ गोरौ निछोर उगियारै आव पळकै कडवटीला केस धवळा दात. धवळौ अतस धवळौ कुडतौ. पूठै फाटोडौ, जाणै बादळी रै घोळा चूका सू सूरज रौ उजास झाकै इकलगी धोती. कठै ई कठै ई पिस्योडी नी किणी री बाट नी किणी री उडीक. आघी कद किणरी बाट जोवै. किणनै उडीकै तीखी गळ मे मतै ई गावण लागौ '

रणबका रांडा चित लागा, गुरगा राज जमायौ रे

ओळू दोळू मतै ई मानखौ भेळौ होवण ढूकौ उण देव पुरख री वांणी सुणण सारू. दस बीस. पचास. पळकती बीजळिया रै समचै बोल बरसता हा .

औ रजवाड़ा रौ डोळ, साथी कोरी छोरारोळ
बंदा मैनत री जै बोल

• • •

घू घू कारौ मच्यौ जगत मे जूंना भाखर धूजै
मोव्यारी घर मच्यौ उछाळौ, बूढां नै कुण बूझै
औ परिंडै घुळग्यौ घोळ, साथी काचौ टिकै न झोळ
बंदा मैनत री जै बोल

अै खंडा किण रा ? आ सपत किण री ? कुण हराम री अरोगै कुण खरी कमाई खावै ? उस्ताद आ सवाला रै पडूतर मे सुभट मंत्र सुणायौ

खैड़ा सै खडग्रा वाळा रा, सपत संग मजूरां री
राज हथोड़ै दांतड़ली रौ, बीती बात हजूरां री
सूतोड़ा सेर जगावा नै
म्हे आया अकल बतावा नै

काना इमरत बरसतौ हौ सुणण वाळां माथै जाणै कामण इज व्हैगौ वौ कामणगारौ

गावतौ गावतौ ई आगै वधियौ—भई धीमा मुधरा हालौ, पण आगै आगै हाल्लौ. मिनखा रौ बतूळियौ उणरै लारै टुरग्यौ दिन रौ वधाण. झाखरौ उजास रात पडचा सोवण री वेळा. उस्ताद आपरै किरण प्रमाण हाथा रा लटका करतौ सूतोडा नै जगावतौ हौ—माथिया जागण रौ दिन आयौ

अैडौ लखायौ जाणै आखी कुदरत ई उण कामणगारा रै हलाया हालै. उणरी सानी रै समचै ई सूरज ऊगै, आथमै बायरौ वाजै. वीजळिया गाजै. ऊजड खडती आंधी आवै. उणरी मना परवाण ई वादळा वूठै. हरियाळी फूटै अर वौ थामै तौ सै कुछ थम जावै हवा उजास, चादणी अर विरखा अैडौ ई लागतौ उणरौ डोळ ! उणरी कामण !

लारै हालणिया पग तर-तर वधता ई गिया अर उण कामणगारा रै लारै मिनखा रौ वौ वतूळियौ जाळोरी गेट, खाडै फिळै, सराफा वाजार, आडै वाजार सू त्रिपोळिये होय पाछौ सोजती गेट पूगौ. अजब परकमा ही. नवी-नवी बाता रौ ग्यान. निपट मुंदयोड़ी आख्या नवौ चानणौ

जाग्योड़ौ जनवळ याडेला, अबै आकासा तीणौ
जुग पसवाड़ौ लीन्हौ रे भाई, जुग पसवाड़ौ लीन्हौ

ठौड-ठौड टेलीफून खडखडीजिया. सुळियोडै राज खळवळी माची. वरघराती जीप पाखती आय ढवी. सात-आठेक पुलिस रा सिपाई उतरिया. उस्ताद नै ढवण रौ कह्यौ. पण आधी किणी रै पाल्या ढवी व्है तौ ढवै ! ऊगता सूरज री रातोड किणी रै रोक्या रुकी व्है तौ रुकै ! वीजळिया री कडकती गाज चालू ही—

आज सिरा रा मोल पटै छै, सूतां सावत साख घटै छै
आ काया तौ जद-कद जासी, पण ओसर फेर न आणौ है

• • •

सखरी काया भरी जवानी, रण रौ वेळा फेर न आणी
रण खेत रह्या सिर ऊंचौ, डर भाग्यां जनम गमांणौ है

उस्ताद नै गिरफ्दार कर, जीप मे वैठाण सिपाई कुण जाणै कठी ढळग्या ? मिनखा री मेळौ विखरग्यौ कामणगारौ अदीठ व्हैगौ सूरज आथमिया तौ अधारौ व्है इज

वा दिना रा चित्राम काळजै कुरियोडा म्है अबूझ टावर जाणै नीद मे सूतौ कोई सपनौ जोवू, औ काई व्हियौ ? क्यू व्हियौ ? अैडा देव पुरुस नै राज क्यू अपडै ? अै तौ जणा-जणा रै मन मे वस्योडा वारौ औ आसण कुण छुडा सकै भला.

आख्या अदीठ व्हिया, उस्ताद हिवडै में परगट व्हैगौ चार-पांच दिन आडा न्हाक नाव घर बूझतौ उस्ताद रै ठायै पूगौ पूछ्या पतौ पडयौ के वौ घरै ई है खुदी-खुद बारणै आय माय बुलायौ कदास अरस-परस भगवान सू मिळयां ई म्हनै इत्तौ हरख नी व्हैतौ.

मगसी तैमल पळेटियोडी. फाटोडी गर्जी उस्ताद वेटी कैय वतळायौ आवण रौ

म्यानौ वूभियौ अतस री सै बात दरसाय मन रौ बोझ मिटायौ. उस्ताद मुळकनै पूछ्य
तौ थू ई उण दिन फेरी मे भेळौ हौ.

म्हैं गरव गुमान सू हामळ भरी उत्ती ताळ मे ई बाप-बेटा रौ अतूट नातौ जु
उस्ताद रौ सुभाव ई अैडौ हौ

ज्यू ज्यू उस्ताद री सगत रौ सोभाग सजतौ गियौ त्यू त्यूं आ बात पुख्ता व्है
के उणरौ अंतस हाल टावर री गळाई भोळौ अर पवीत. उण री काया कदै ई बात
री मौत रौ मसाण नी बणी बाकी सगळा मिनख तौ आपरी देही मे केई मसाण ढ
रवडै. बाळपणै री अबोट पवितरता रौ मसाण, निडरता रौ मसाण, मरचोडा सा
मसाण, मरबोडी आतमा रौ मसाण ! मसाण ई मसाण ! पण उस्ताद दूजा मिनखा
गळाई आपरी काया नै किणी भात रौ मसाण नी बणायौ. साचाणी, अैडी ई ही उ
पवीत काया

जाणै आखी उमर जू भण सारू ई उस्ताद अवतरियौ.

आ जन कवि री जुगवाणी, आ कदै न चुप रह जाणी
कोई लाख जतन कर हारै, आ समचै साच सुणाणी

• • •

आ काया तौ कवि री है, पण जनता री जुगवांणी

मजूर करसा रौ आगीवाण बण सामती राज सू जू झियौ. भूंडै ढाळै आफ
छिण-पल री बिसाई नी खाई उणरी कविता रा सूत्र अैडा तीखा अर मरमी के
कार्ल मार्क्स कवि रौ रूप धार पाछौ जलमियौ

मजूरी करै उणी रौ माल, जमीं उणरी जिणरी खड़वाळ
या बाता रौ कमतरियां नै भान कराणौ पड़सी
मिनख सूं आसंग उतरौ कांम, जरूरत मुजब मिळै आराम
इण री खातर कमतरिया रौ, राज जमांणौ पड़सी

जाणै 'दास केपिटल' उस्ताद री कडिया मे अमोलक नगीना रै उनमान जड
मजूर करसा रौ अैडौ हिमायती कवि नी तौ आज पैली हिन्दुस्थान में जळमियौ अर नीं
ही कोई जलमै. उणरी कविता रै सबदां मे अणु री सगती आथडै बौ सबदा नै नवा
अर नवा प्राण दिया

विपत पड्या टाळौ दे जासी, जद जबरौ वचै न भीणौ, धुडगी धन री धीगाई,
माजनौ धावडियां रौ, भूमडळ रा वखिया फाटै, जद कद आभौ रे पावसै, सारी ओव विग
भेळप रा मोटा भाग, पाणी ढळै जठी नै ढाळ, अगन परख री उदबुद बाता, आ रेत हुई
माती, पूत-पितर मे मच्चौ छिनाळौ, जुग-मारग री चौपड माथै, घन-धोकळ कतरै नै
मुलक मुलक मिनखा सू मातौ, तिकडम रा ताणा तूटैला, दिन लाग्या फळ सखरा पाकै

सवदा री ठौड जाणै नगीना जड्या, झुपाया दीवा री वार्ता जगमगै ज्यू उस्ताद री आकडिया पोयोडा सवद सैचन्नण करै दीवा रौ धरम अंधारौ मेटणौ—चायै मिंदर रौ व्है चायै भाखसी रौ, चायै हवेली रौ चायै छान रौ. किणी ठौड रौ कठै ई क्यू नी व्हौ, दीवौ तौ फगत अधारौ मेटै. इणी भात उस्ताद री कविता अेक दीवट रै उनमान ही आजादी सूं रैली गुलामी रौ अधारौ मिटावण सारू अखड झुपियौ. मिनखा नै राजा अर गोरा सू रीठ वजावण सारू ललकारिया. भात भात सू उकसाया रोस दिरायौ जोस वधायौ ठाकरा नै भाडचा, माजनौ गम्यौ. राजावा नै धिरकार धूळ भेळा करचा करसां रौ धू सौ वजायौ मजूरा नै विडदाया गरीव-गुरवा नै गाया घडी-घडी मैंनत करण वाळा रौ जस करचौ. ठाला नै रूई री गळाई पीज्या उस्ताद निरभागी मजूर करसां रौ खरौ चारण हौ.

जूझता-जूझता सेवट गोरा रौ राज वदळियौ ठाकर गिया राज गिया. करसौ धरती रौ धणी वण्यौ तौ ई सावळ वात नी वणी धनवतिया री धीगाई रै तर-तर वती पाण लागी. नवी पाखा ऊगी. आजादी रौ रूळियौ जवर माचियौ उस्ताद री कविता रौ दीवट भळै नूवै अधारा सू जूझण लागौ. दीवा रौ काम ई वळणौ. अधारौ मिटावणौ

इण घर पड़ी न सुख री झांईं, राज वदळग्यौ म्हानै काईं ?
सादै मिनखां करी कमाई, धवली टोपी धूड उडाई
अगरेजा रौ राज गियौ, पिण सून-सेठिया हाट जमाई
• • •

लोग कैवै सूरज ऊग्यौ, पिण कठै गियौ परकास
हाथ हाथ नै खावण दौडै, किणरी राखा आस

पैला तौ वौ हाकल करी—जुगरा जूझारा दौडौ दौडौ सेवट जणा जणा रै जुंझ्या आजादी आई पण आजादी आता ई उस्ताद री चचळ आख्या फेर नवौ ई चांनणौ व्हियौ उणरी आख्या तौ अधारा रै अगै ई हेवा नी ही. देस रै जूझारा सारू वौ पिछतावौ करण लागौ—सेत मे सिर दीना उन्मादी अेक आख मे पिछतावौ, दूजी आख मे आस. नित नवी आस ! नवी उमग ! नवौ घमसाण !

सघरसा री बाण, गिया ठाकर नै राजा
अव जासी ठगराज, सुणीजै कवि नै वाजा
• • •

अरट खड्या बै तिरसां मरग्या, निकमा इमरत पीवै क्यूं

नित नवा सवाल ! नूवै सवाला रा नवा ई जवाव ! नवा ई पडूत्तर ! नवी सकावा !

गुलामी सू छूटी मुलक री जवानी, नवी पाळ चढता किसी ढाळ ढळगी ? उस्ताद री आख्या आसा रौ सूरज कदै ई मगसौ नी पड्यौ. उणनै अंधारा री परळी माठ सदावत पर-जळतौ सूरज निगै आवतौ.

पण साथी उगूण रत्योड़ी
आस तळै मत, कनै सवार

उस्ताद रा जूझारू अतस नै कदै ई अेक छिण सारू मायत नी मिळी वौ मारग, डाडी अर सडक माथै ई नी चालतौ कमरा रै माय ई जागती वेळा चारू मेर चकारा देवतौ. अठी-उठी भरणाटै घूमतौ बाता करतौ जावतौ अर बेजा रै ताणौ नाळ ज्यू फिरतौ जित्ती वार ई उस्ताद री आ बेचैनी देखतौ, उती वार ई म्हनै पीजरै रोडयोडा नाहर री याद आवती. परम्परा, कुरीत, रूढिया री बधोखडी मे उस्ताद रौ नाहर-जीव कीकर ढोळै वैठतौ. चारू मेर तर तर वधतै छळछद, झूठ-कपट, मिलावट, ठग-विद्या, लोभ-लालच, मद-मोह रै रुळियार रासै वौ केहरी कीकर धीरज धरतौ !

उस्ताद रै आखरा री लाय मे नी धरम बच्यौ, नी ईस्वर, नी राजा, नी नेता, नी पिडत, नी कळावत, नी कवि अर नी बुझागड उण धू-धू सिळगती लाय मे जबरौ वच्चौ नी झीणौ

ईस्वर, राजा, देस, विणज—सै ठग-बिदया है ठाला री

अथक मैनत नै परसेवा री खरी अर साची कूत-परख करणियौ अैडौ कवि अबै जलमता जेज लागैला. थुडतै हाथा अर चालतै चरणा नै बिडदावणियौ वौ फगत अेकलौ ई कवि हौ. उस्ताद री कविता रौ परस पाय मजूर-करसा रै परसेवा रा रेला अमोलक मोती बणग्या

भायला हाथ खड़ै ज्यू हाल
अकल, मन, कमतर तणा कमाल

उस्ताद री दीठ मे दैनगी री कूत ही मैनत. फगत मैनत. बाकी सै छळछद. थुडता मिनख सू रूपाळी छिब उस्ताद नै दूजी ठौड कठै ई निगै नी आई नी कुदरत मे अर नी प्रीत मे. नी जोबन मे नी सिणगार मे. नी कामणिया मे अर नी चादणी मे

जमीं खोद, जड-झाड़ उखेल, कूट कांकरी, डांबर ठेल
मुड़ माटी ज्यू बैठै मेळ, हिळमिळ हुळस पसीनौ मेळ
भमक मोगरा, लाख भुजा बळ, उतरौ मिनख, इत्तौ सौ थळ भई
आगै हळ भई, आगै हळ भई

दुख्यारी, गरीब अर पीडित जनता रौ वौ इकडकी भूपत हौ. जनवल मे उणरौ अखूट अतूट विस्वास

अड़बा री भोळप नै क्रोड़ा री लालच, हजारां री हाट जमावै
अड़बा री अक्कल, लाखां नै उपजै तौ सारां नै पथ बतावै

राजा अर धनवतिया रौ वौ नवौ अवतारी परसराम वानै निरवस निछत्र करण सारू तडफा तोडतौ. कविता री वाढाळी सू फुणा तणा झटका माथै झटका कर वानै छू नण मे की पाछ राखी नी. फगत उस्ताद री कलम रौ परचौ देख्या ई आ वात सावळ

हीये ढूकै के कवि री कलम अणुवम सू इदक करामाती

लुगाया री आजादी रौ अँडौ सबळ अडिग हिमायती सूरज हथाळी मे लेय हेरणा ई नी लाधै उस्ताद री कविता मे अवतरियोडी लुगाई माथै भला कुण सूरवीर आकस राख सकै समाज री आगळिया वतायोड़ा कळक तौ उस्ताद री निजर मे सूरज सू सवाया प्रखर. निरमळ. निकळक. सेडाऊ दूध मे की कालस व्है तौ लुगाई री देह मे की काळस व्है.

उस्तादां री आंण, चाख नै करै सगाई

• • •

उस्तादां री आण, सेक्स तौ आप धरम है

• • •

उस्तादां री आण, कार जोबन भागै है
धर आता गिट जाय, जवांनी भख मागै है

• • •

उस्तादा री आंण, काळ री चाल प्रबळ है
बेल बधण री भूख, कूख री डाण अटळ है

पण वूढा-वडेरा जूना पथी छोरिया री औ गसकौ अर औ तनकौ देख भला क्यू अबोला रैवै. वारी जीभ रै सौ सौ पाखा लागै अर रै ऊची आगळिया करनै कूकै—गजब ! गजब ! छोकरिया उघाडै मूडै ! उघाडै माथै ! दो दो चोटिया ! साईकिला चढै ! उडण गाडी उडै ! नाचै ! कूदै ! चाकरी करै ! मोरचै लडै ! आ तौ हवा डज परवारगी ! नदिया रौ पाणी ई सडग्यौ ! वेरै-वावडिया भाग पडगी. जमानौ ई विटळग्यौ तोवा ! तोवा ! तद उस्ताद वानै आडै हाथा लिया.

काका ! कूक्यां कांण नहीं है
बीती उणमे प्रांण नहीं है

• • •

अगन परख री उदबुद वाता
जुग रुळग्या, सुणतां समझातां
सेस जुगा, सतवंती सीता
डूब गई मरजाद निभातां
अणूबळ मुगत समै री सगत्यां
अब इतरी अणजांण नहीं है

• • •

समदर तोलै, झाल् कनातै
वा अक्कल जासी अणखातै
अणु जुग री कमतरणी मरवण

चांद उडै के चरखा कातै
बीजळियां नै वाध राखलै
वैं नंधणा वै ठाण नहीं है

• • •

टेम मिळै पूरख सूं रमलै
निरख परख नै करै सगाई

• • •

कुंत्यां जणसी, करण कंवारी

• • •

मरवण फलसी बेल बधातां

उस्ताद री कडिया तौ आपै ई मूंडै बोलै. आखर आखर काळिदर री मिण सरीसौ उजास देखण सारू आख्या मे वैंडी ई दीठ चाहीजै. वौ खुद जबर टणकेल हौ, इण खातर उणरी कविता ई जबर टणकेल ही उस्ताद रा बेली कदैई इण बात री सुभट कूंतौ नी कर सक्या के उस्ताद री काया मे बस्यौ मिनख ऊंचौ हौ के उणरा अतस मे घुळियोडी कविता ऊंची देस-काळ धरम-करम, जात-पात, छूआ-छूत सू वौ कित्तौ अळगौ अर अवोट हौ—औ मरम जाणण रौ सोभाग उणरा हर साथी नै खुलीखाळा मिळियौ, राजस्थानी रै दूजा कविया री न्यारी-न्यारी कूंत करा तौ वारी मोळी-मीठी की मौल व्है सकै. पण उस्ताद रै जोडै करचा तौ वै साव ई माडा लखावै. भला झब झब खिवता तारा री सूरज परजळिया काई परकास ? कैडौ उजास ? आख्या फाड-फाड जोया ई वै निगै कद आवै ? राजस्थानीमे आधुनिक कवि तौ फगत अेक ई व्हियौ अर वौ सगळा रौ उस्ताद—गणेसीलाल व्यास ! बाकी तौ सै पटवा. सजावाटी हाट सजाया हुडदग मचावै. पेट पाळै गुजारौ चलावै. कविता वारौ रुजगार कारीगरी सू आटी-डोरा गूथै मिणिया पोवै तुररा किलगी ठावै फूठरा-फूठरा. ओपता. पळकता. पटवा ई कारीगर तौ वै ई कारीगर. दोनू ई थाप-उथाप कारीगर कारीगर सै अेक. पण कविया री तौ खाप ई न्यारी उस्ताद कवि हौ. कोई पटवौ के कारीगर नी.

क्वी वौपारी नीं

• जनकवी उस्ताद

क्वी वौपारी नी उणरौ कांम लिखणौ है अर वौ भी चांणचुकां ई, क्यू के कविता मतेई व्हिया करै, जाण'र नी करीजै जिकी जाण'र करीजै वा कविता नी गाथा है वा चारणां रौ काम है. इणरी नकल घणा लोगा करी पण जकी कविता वणी वा वीर गाथा

के अवतार सती गाथा नी, भाट गाथा ई रयी—उण नैं आपारा मानेता चारणा सू भी मान नी मिल पायौ आ भाट गाथावा रा रचारा बिडद भाट के जाचक ई कंईज्या म्हारी अेकूअेक कृति चाणचुका अर अेक ई आसण माथैं वण्योडी है अर वणी जीया री जीया—विना सफाई-छपाई आपरैं सामी है.

हा तौ म्हैं ऊपर कंयौ के कवी वौपारी नी, पौथी छपाणौ उणरौ काम नी अर नी उण मे छापण-छपावण री लालसा, लाग अर खिमता व्है, कम सू कम इण कवी मे तौ कोनी ओई कारण है तकरीवन ४० वरसा ताईं लिखण रैं पछै भी म्हारी कोई पूरमपूरी किताव अजैं नी छपी पण इण वार अंडौ लागै के जका साथी वरोवर आनैं सुण सुण'र 'वाह वाह' करता रिया है अर जकां मे सम्पादण प्रकासण री खिमता अर कावलियत है वारौ फर्ज चेतगौ है. जठै ताईं राजस्थानी साहित रौ सवाल है नृत्य-गीत साहित नैं छोड'र वा सगळा कागदा रैं ढिगलैं माथैं साथी विजयदान कबजौ कर लियौ है अर अव उणरी पोथी के पोथ्या थोडा ई दिना मे आप पढोला.

हिन्दी री जिकी कवितावा इण पोथी मे है, अेक नैं छोड'र राजस्थान वणियां पछै लिख्योडी है वीया की गीत आजादी री लडाई रैं वगत रा भी है. आ रैं प्रकासण रौ भार म्हारौ होनहार विद्यार्थी चिरजीव भानुभारती आपरैं खाधैं लियौ है. आ पोथी साचमाच मे उणरी लाग अर मेंणत रौ फळ है म्हारी उरदू री नजमां अर की इण्या-गिण्या 'शेर' भी इण मोट्यार ई हाथा लिया है

आदरजोग गुरू कमलाकर जी इण पोथी री भूमिका रौ वधेज करियौ है, औ आं कवितावा रौ धिनभाग है, इण सूरज री ओट मे औ अधभणियौ कवी आपेई दीपीजगौ—औ साच है.

गाधी नगर, जैंपुर
तारिख १ जनवरी, १९६५

[हिन्दी कवितावां री
अणछपी पोथी 'आग' सू]

गदर रै पछै.......

• नारायणसिंघ भाटी

सन् १८५७ रै गदर सू राजस्थान री राजनीतिक अर सामाजिक हालता मे ग्रेक बदळाव ग्रायौ जिणरौ सीधौ ग्रसर राजस्थानी कविता माथै पड़ चौ सन १८५७ री लडाई मे राजावा री फौजा ग्रगरेजा रौ साथ दियौ इणरौ सबसू वडौ कारण, मराठा रै ग्रातंक सू ग्राती ग्रायौडा राजा लोग ग्रगरेजा रै साथै सुलह कर चुक्या हा, ग्रर वानै कोलनामै मुजब ग्रंगरेजा रौ साथ देवणौ हौ पण इतरौ व्हेता थका भी मायलै मन सू राजा लोग ग्रगरेजा रै वधतै परताप सू राजी नी हा, ग्रर वारी मायली मसा हमेसा ग्रगरेजा रा पग उथलावण री रयी. इतियास रा जाणकार लोग जाणै है के उण वखत मे कोटै रा रावराजा ग्रगरेजा नै खुलै मन सू सहायता नी दी. खातीला जूझार डूगजी जवारजी जैंडा केई वीरा नै बचावण री कोसिस लगोलग करीजती रयी जैपुर रा म्हाराजा सवाई रामसिंघ रा मरजीदान विसाऊ ठाकर स्याम सिंघ परतख ग्रगरेजा सू लूठी मुठभेड ली ग्रर ग्रगरेजा रै खिलाफ चाळौ चेतायौ. इणमे केई ग्रगरेज ग्रफसर समै माथै रजवाडा री फौजी मदद नी पूगण सू मारिया गया.

इण लूठी घटणा रौ ग्रसर कविया माथै पडियौ ग्रर करीब करीव जितरा नामजद लोग इण लडाई मे सूरता वताई के काम ग्राया, उणारी तारीफ मे पुराणी परम्परा नै पोखण वाळी केई कवितावां राजस्थान रै सगळा भागा मे वणी. ग्रर झगडौ सान्त होया पछै ग्रगरेजा री जाजम पूरीतरै विछी कम्पनी खनै सू राज ब्रिटिस सरकार ग्रापरै हाथ मे ले लियौ ग्रर राजकाज री सारी व्यवस्था माकूल होवण लागी पूरै देस मे व्यवस्था होता घणौ वखत नी लाग्यौ. ग्रंगरेजा ग्रगरेजी री पढाई नै ग्रागै लावणी सरू करी ग्रर ग्रापरी सस्कृति रा चित्राम ग्रठै रै मानस माथै ढाळणा सरू किया इणरौ मोटौ नतीजौ ग्रौ व्हियौ के ग्रठा री परम्परागत पढाई री तरफ सू लोगा रौ ध्यांन हटियौ ग्रर सतिया ग्रर वीरा नै वखाणण री समै वानै जावतौ दीखियौ.

कानूनी ततर मे सगळा लोग ग्राप ग्रापरै मतै चालण लागा राजा ग्रर प्रजा मे ग्रळगाव ग्रायौ. जागीरदार ग्रर करसा ग्राप ग्रापरी ठौडां झाली, वाणिया ग्रर विरामण

पडियौ विरगज अर सूतौ धरम कररग लागा. पूरौ समाज आप आपरी सीवां वरगाया दिन काढरग नैं ही जीवरग रौ धेय मान बैठौ. खासतौर सू कविता कररग वाळी जातिया चाररग, भाट, मोतसर वगैरा आपरी परम्परा सू कटरग लागा. सिक्षा री कमी, अग्यान रौ वरदान वरग नै पूरै राजस्थान माथै छाय चुकी ही अैड़ी वखत मे समाज मे उदात तत्वा री आव कळा मे निखार लाय सकती, अैडी सभावना कम व्हेगी

इरग वातावररग रै काररग कविता जीवरग री साधाररग व्यवारिक घटरगावा माथै उतर आई. कविता अबै भी सिरजीजती सुरगाइजती, परग उरगरौ सरूप सौकिया व्हेय नै रैयगौ अै कवितावा के तौ राजिया, चकरिया रै नीति रा दूहा री वरगावट री होड करती के काळ-दुकाळ री काण करावती के घरेलू कळै रा लता लेवती, के समाज रा छटेल लोगा माथै व्यग रा छाटा न्हाखती. कवी रौ सभाव आखर कविता किया विना नी रैवै. केई चाररग कवी कचेडया मे आपरी गवाही तक पद्य में देवरग सारू आखता पडता इरग तरै रौ ढचरौ केई दिन चालतौ रयौ परग जद रिसी दयानन्द राजस्थान री रियासता नैं जगावरग रौ वीडौ उठायौ तौ समाज मे समाज सुधार री हळवी सी लै'र जरूर आई जिरगरै फळसरूप ऊमरदान जैडा केई कवी अंधविसवास अर पाखड रा पग उचकावरग सारू कविता रौ सारौ लियौ. जे दयानन्द की दिना राजस्थान रै भाग रा भळै जीवता रैवता तौ आ लैर जरूर जोर पकडती क्यूके समाज रा सगळा वरगा नै उरगांरा विचार प्रभावित करिया हा, परग दयानन्द जी रौ वेगौ ई सरगवास व्हेगौ अर आ लैर अेक लैर वरग नै ई रैयगी

अठी नै अगरेजी री पढाई जोर पकडती ही. पढिया भरिगया लोग नौकरी नै मोटी खुदा मांनता हा अर मोटी नौकरी पावरग वाळौ मोटौ मिनख. हिन्दी भरगरिगयौ भी विदवान बाजरग लागौ

इरग घालमेल मे राजस्थानी भासा रै महत री तरफ सू लोगा रौ ध्यान हटरग लागौ परग ज्यूही गाधीजी रौ प्रभाव राजस्थान मे आयौ अर आजादी रौ आदोलरग नये सिरै सू चेतियौ अगरेज विरोधी जनचेतरगा री अवाज फेरू राजस्थानी मे मुखर हुई. सैंकडां गीत, दोहा अर छद इरग भाव रा वरिगया ज्या मे आजादी री तिरस आपरी तीख-जोख साथै प्रगटी आ बात फेर भी बाकी रैय जावै के इतरौ होता थका भी १८५७ सू लगाय १९४७ ताई राजस्थानी मे जुग-मूरत जारगीजतौ कोई मोटौ कवी नी व्हियौ इरगरौ काररग प्राचीन परम्परा सू लगाव राख अर समै नै पीय नै पीड़ दरसावरग री खिमता किरगी सू हासल नी हुई. समाज रौ बिखराव अर सिक्षा री कमी अै बाता तौ ही ई अफसरी ठरकौ, सादी, सिकार अर तीज तिंवार री रीझ ताईं समाज री कार आय'र ऊभी रैयगी समाज री सस्कृति री लाज लोकगीता रै भरोसै छोडीजगी. गीतेररिगया रा गीता रात कढायदी परग परभात नैं परखरिगयै नै वारगी नी मिळी, सो नी मिळी.

◇

राजस्थांनी कविता अर मंच

• गरणपतचन्द भंडारी

राजस्थान री सूतोडी जनता में सामाजिक, राजनैतिक अर भासाई चेतना जगावरण रै म रौ घरणकरौ जस राजस्थानी कविता रै मच नै जावै, इरण मे दो राय नी व्हे सकै.

राजस्थान मे साहितिक मच रौ उदै अर उरण री बढोतरी किरण तरै सू हुई, इरण रौ लेखौ-जोखौ करणौ सोरौ कांम कोनी, क्यू के आजादी रै पैला राजस्थान केई रजवाडा में ट्योडौ हौ अर या रजवाडा रै साहितकारा मे आपसी सम्पर्क अर मेळजोळ रौ कोई बन नी हौ. सगळा आप आप रै रजवाडा री सीव मे बधिजियोडा आप सू बरण पडती हित-साधना करता हा. इरण वास्तै म्हैं जदै मंच रै इतियास माथै निजर न्हाखू तौ घरण- ो वात तद तक तौ जोधपुर रै वावत ई कर सकू, जद तक के न्यारा न्यारा रजवाडा रा हितकार अेकठ व्हेय'र अेक दूजै रा जाणीता नी व्हेगा.

जद म्है म्हारी निजर नै इतियास मे दबियोडै जुग री हलचल स्मृति मे लावरण सारू रै कानी फेरू तौ म्हनै सारा सू पैली जोधपुर मे मच रा दरसरण सन् १९३१ मे हुवै जद ाथजी मोदी अर सरगवासी बिजैमलजी कुम्भट महावीर जयती रौ उच्छब मनावरण सारू वाळा री न्यात रै नोरै मे खासी बडी मीटिंग करता अर उरणमे समस्यावा देवता, जिका पूरती करणिया कविया नै इनाम भी मिळतौ. म्हनै अर म्हारा साईना केई दूजा कविया ारा पैली कविता सुरणावरण रौ औ इज मच मिळियौ म्हारै रैकर्ड सू मालुम के मोदी जी सारा पैली राजस्थानी मे अेक समस्या 'आवसी' सन् ३५ मे दी, जिरण री ी मे म्हैं जिका सोरठा लिखिया वै म्हारै कनै आज भी मौजूद है. परण इरण रौ औ लब भी नी है के इरणरै पैला राजस्थानी री कवितावा जनता तक पूगारण रौ कोई साधन हौ साधन तौ हौ, परण साहितिक मच नी हौ वौ साधन हौ समाज सुधार री सभावा मच, जठै लोग मारवाडी मे ई गीत सुरणाता हा इरणमे हौळी रै मेळै रौ मच परमुख हौ पू गळपाडा मे अेक कानी तौ आतू जी री मारवाड़ी मे परम्परागत सैली मे लिखियोड़ी ळ्या रा घोटा घूमता हा अर दूजै कानी जादातर बामरणा री सुधार मण्डळिया सुधार रा छोरा री टोलिया त्यार कर'र वा रै मिश्री घोळिया गळा सू इमरत वरसावती ही. ुधार गीत हिन्दी रा भी व्हेता अर राजस्थानी रा भी खुद श्रीनाथजी मोदी अर वांरा ी सादडी निवासी घीरजमल जी वच्छावत अैडा सुधार गीता री केई पोथियां छापी अर वीर जयती रै मच माथै भी वै अै गीत सुरणावता, जिका लोगा नै घरणा दाय आवता. ं मे दोय तीन गीत तौ घरणा लोकप्रिय हुआ, ज्यू के—(१) **साठ बरस रा बूढा मूंडी सूझी रे, वनड़ा मूंडै बोल. (२) म्हैं वण्यौ मोडियौ हरकौ, (३) डूली वाई अे ! थनै र रमाऊ सोरी सोरी अे !** इरणमे पैलौ गीत व्रिध-विवाह रै खिलाफ है, दूजौ मोडां रै, अर

तीजौ गीत बाळ सुभाव रौ घणौ सुभाविक वरणन है। अै सगळा गीत लोकगीता री तरजा माथै व्हेता या नवी थियेट्रिकल टच्यूना माथै. म्हारा भी दो अेक सुधार गीत अर अेक मारवाड रौ गीत घणौ लोकप्रिय हुयौ.

धार्मिक छेत्र मे जैनाचार्य चौथमलजी रै सुधार गीता री भी धूम ही, जिका हिन्दी में भी व्हेता अर मारवाडी मे भी.

इणी दिना में अेक मच राजनीती रौ भी हौ क्यू के सन् ३० ताई गाधी जी रै आदोलण री हवा रजवाडा मे भी पूग चुकी ही अर अठै भी मारवाड़ हितकारिणी सभा अर बाद मे लोक परिसद कायम व्हे चुकी ही. सरगवासी गणेसीलाल व्यास 'उस्ताद' इण मच सू आगै आया परभात फेरिया अर सभावा मे छोरा नै टोळ'र गवावता—

'थे मारवाड़ रा मोटघारां जागीरा री जड़ काटौ।
जूआं रै जाळा सूं मरदां खेत छोड मत न्हाटौ॥

पण साहितिक गीत लिख'र भी उस्ताद नै साहितिक मच रौ लाभ लेवता म्है बौत कम देखिया या दिना ब्यावर रा हरिभाई किंकर भी सुधारात्मक गीता सू प्रचार रौ काम करता हा

इण सू आ वात साफ हुवै के राजस्थानी री नवी कविता आपरा उदैकाळ मे लोकगीता सू प्रेरित सुधार गीता रौ अर जन-जागरण रै रास्ट्रीय गीता रौ बानौ पैर'र मंच माथै उतरी. इण रै साथै सन् ३५-३६ सूं छुट-पुट कवी सम्मेलण भी होवण लागा, केई साहितिक संस्थावा भी बणी ज्या मे हिन्दी रै बीच में कदेई कदेई राजस्थानी रा सुर भी सुणीज जावता हा, जो घणकरा मनोरजण करण वाळा सामाजिक व्यग व्हेता

सन् ३८-३९ रै आखती-पाखती सुमनेसजी जोसी लाडणू मे मनाईजतै, स्वास्थ्य सप्ताह रै कार्यक्रमा मे अेक कवि सम्मेलण भी करायौ. जिणमें पैलीवार जोधपुर रा म्हा दो च्यार कवियां नै जोधपुर रै बारै जाय'र कविता पाठ करण रौ मौकौ मिळियौ इण कवी सम्मेलण मे बीकानेर सू पडित विद्याधर जी आपरा दो चेला नै भी लेय'र पधारया हा अर वै हा भरत जी व्यास अर मुकुलजी. पण इण सम्मेलण में या दोनू ई हिन्दी री कवितावा इज घणी सुणाई, भरत जी अेकाधौ गीत राजस्थानी रौ भी सुणायौ अर दो अेक रचणावा म्हैं राजस्थानी री सुणाई उण वगत मच री कित्ती जरुत ही, इणरौ पतौ इण बात सू चालै के गाडी चूक जावण री वजै सू विद्याधरजी या दोनू कविया नै लेय'र सुजाणगढ सू लाडणू ताई पाळा आया. इण कवी सम्मेलण सू म्हैं औ मैंसूस करियौ के मुकुल आपरै सुरीलै कठ री वजै सू भरत काव्य रा रास्ट्रीय अर सामाजिक विसया माथै वीर अर हास्य रस री कवितावा अर कलपनावा नै प्रवाहपूरण भासा में कथण री वजै सू श्रोतावा रै मन माथै छा जावै, सो आपा नै भी रचणावा मे अै गुण लावण री कोसीस करणी चाईजै. म्हनै वै दोनू कवी जोधपुर रा कवियां सू आगै वधियोड़ा लागा

सन् १६४१ सूं राजस्थानी काव्य मच रै विकास या बढोतरी रौ काळ मानियौ जा सकै. सन् १६४० में उदैपुर में जनारदनजी नागर राजस्थान साहित सम्मेलण रौ पैलौ अधिवेसन कियौ, जिण री अध्यक्षता मुनि जिनविजय जी कीवी. यू तौ इण सम्मेलण रौ राजस्थानी सू की सीधौ सबध नी हौ पण उदैपुर, जोधपुर, नाथद्वारा, काकरोली, अजमेर. आबू, अलवर, कोटा इत्यादि जगावा रा साहितकार पैली वार अेक जगा भेळा हुया. आ अपणै आप में अेक महता री बात ही, क्यू के अेक दूजै सू सैधा हुया अर विचारा रौ लेण-देण हुयौ. इण सम्मेलण में जोधपुर सूं गयोडा साहित मडळ रा प्रतिनिधि सारा सू बत्ता हा, जिण सू वारै नेता माथै सम्मेलण रौ आगलौ अधिवेसन जोधपुर में करण रौ बोझ आयौ, पण नामवरी अर सत्ता रा भूखा दो च्यार जणा अैडा अडगा लगावता रह्या के इण सम्मेलण रौ दूजौ अधिवेसन इज नी व्हे सकियौ अर सम्मेलण काची मौत मरग्यौ. वैधानिक कठनाई रौ हल खोजण सारू सन् ४१-४२ में अजमेर में अेकवार फेर सगळा प्रतिनिधिया नै भेळा किया गया अर विधान में जरूरी फेर बदळ कियौ पण मरियोडा कदेई पाछा जीविया है? कैवण रौ मतलब औ कै सन् '४० रै बाद में राजस्थान भर में साहितिक चेतणा री अेक लैर सी आई अर हिन्दी रै साथै साथै राजस्थानी नै भी आळस मोड'र ऊभौ होवण रौ मौकौ मिळियौ साहितिक मंच रौ ठोस रूप सामी आयौ सन् ४१ रै ओळै-दोळै दिनाजपुर में अेक राजस्थानी भासा अर साहित सबधी सम्मेलण हुयौ जिण रा आगीवाण जयनारायण व्यास, सुमनेसजी जोसी, नरोत्तम स्वामी अर रामसिंघजी इत्याद जाणिया-मानिया विद्वान हा. इण सम्मेलण में पैलापैल मुकुलजी आपरी 'सैनाणी' कविता सुणाई अर राजस्थानी रा उथान रै इतियास मे आ कविता अेक अमर घटणा व्हेगी. इण कविता मे अेक कानी त्याग बलिदान अर धरम (कर्तव्य) पालण रौ जबरदस्त सदेसौ हौ पण इण सूं भी ऊपर उणमें सबद, अरथ अर लय रौ अैडौ मनभावन मेळ हौ के मुकुलजी री मीठी पण ओजस्वी वांणी सूं जद वा कविता गाईजती तौ श्रोतावा रा काळजा उछळण लाग जावता। इण कविता री अैड़ी धूम मची के मुकुल जी नै जगा जगा सू नू ता मिलण लागा अर राजस्थानी अेकई झपाटै में अखिल भारती मच माथै आय ऊभी हुई. गैर राजस्थानी भी राजस्थांनी भासा री ताकत नै मानण लागा अर प्रवासी राजस्थानिया में आपरी भासा अर संस्क्रति रौ गैरौ प्रेम जागियौ इण सू अेक तौ जगै जगै कवी सम्मेलण हुवण लागा अर दूजौ केई कविया नै राजस्थानी में करण री प्रेरणा मिळी. अजमेर वाळा सम्मेलण में भी मुकुल जी आया हा अर वी में सत्यदेव विद्यालकार भी मौजूद हा. वा जद राजस्थानी रै कवियां री कवितावा सुणी तौ इत्ता प्रभावित हुया के व्यासजी रै साथै मिळ'र वै सन् ४४ में राजस्थानी रा कवियां रौ अेक वडौ सम्मेलण दिल्ली में बुलायौ, जिकौ राजस्थान रा कवियां रौ पैलौ प्रतिनिधि सम्मेलण मांनीज सकै उणमें हिन्दी रै अलावा राजस्थानी में कविता सुणावण आळा मे मुकुलजी, चन्द्रसिंघजी, नाथूदानजी महियारिया हा अर अेक आध कविता म्हैं भी सुणाई.

इण माफक १९४७ सू आजादी मिळण री वेळा तांई राजस्थानी री मच देस भर में चावी तौ व्हेगी पण मुकुल जी जैडा अेक दो भी समरथ कवी उण वगत री म्हारी पीढी नी दे सकी. वै अेकलाई मच रा राजा हा, क्यूके भरत फिलमी लैण पकड चुकया हा

राजस्थानी काव्य-मच रै विकास रौ दूजौ चरण आजादी रै वाद सू सुरू व्है, जिणमे तरै-तरै री काव्य धारावा मे रचना करणिया कवी उभर'र सामी आया मुकुल जी रै प्रभाव सूं न्यारा रैय'र कविता करणिया कविया री आगली पीढी मे रेवतदान जी 'कल्पित रौ नाव विसेस रूप सू लेवण जोगौ है, जिका राजस्थानी काव्य मे मार्क्सवादी विचारधारा लेय'र मच माथै आया. वा दिना नुवी पीढी रा साहित प्रेमिया जोधपुर मे 'साहित सदन' नाव री सस्था कायम कर राखी ही, जिणमे रेवतदांन, विजयदान देथा, सत्यप्रकास जोसी, पन्नालाल व्यास, दौलत जीवन, मरुधर अर मोहन सिंघ भडारी इत्याद सदस्य हा. इण रै साथै छात्रा री प्रतिभा नै मच अर प्रेस देवण रौ कांम नेमीचन्द जी 'भावुक' री वणायोड़ी सस्था कुमार साहित परिसद् करण लागी. इण रा पैला अध्यक्ष लक्ष्मीमल जी सिंघवी हा अर राजस्थानी रा कविया मे लक्ष्मण सिंघ रसवत अर कल्याण सिंघ राजावत नै आगै लावण मे इण सस्था रौ घणौ हाथ रह्यौ. जोधपुर रा राजस्थांनी कविया मे घणकरा प्रगतिवादी धारा लेय'र चालिया पण रेवतदान जी री गहराई अर गभीरता ताईं कोई नी पूगौ.

इणी पीढी रा दूजा कवी सत्यप्रकास जी जोसी हिन्दी कवितावा सू मच माथै आया, पण साथिया री प्रेरणा सू राजस्थानी मे भी लिखण लागा. वा घरेलू अर सामाजिक जीवण रा मनमोवणा चितराम अकित किया अर साथै ई प्रेम रा गीत भी गाया वै लोक कथावा नै भी आपरी कविता रौ वानौ पैरायौ अर तरै-तरै रा नुवा प्रयोग किया अर आजू भी करै है. आपरी धारा रा राजस्थानी मंच रा वै अेकला कवी है अर आज रा मच नै फळतौ-फूलतौ राखणवाळा मे जोसी रौ नाव सिरै है

मुकुल जी रै वाद सारा सू ज्यादा लोकप्रिय व्हिया गजानन वरमा, जिका राजस्थांनी मंच नै लोक गीत री सैली रा नुवी चेतणा रा गीत दिया, जिणा मे की तौ ध्वनी गीत है, जिका गजानन जी री ई मच नै देन है, अर की गीता में कमकरा रै जीवण रौ चितरण है 'वारहमासा' मे प्रेम रा गीत है अर 'झासी री राणी' अैतियासिक रचणा है. यारी सैली पर यां री मौलिक छाप है या रा ध्वनी गीता रै अनुकरण माथै केई कवी कवितावा लिखी, पण वै गजानन जी नै नी पौंच पाया.

या रै अलावा रघुराज सिंघ हाडा, कल्याण सिंघ राजावत अर लक्ष्मण सिंघ रसवत रा नाव भी मच माथै ठावा अर जाणीजता है हास्य-व्यग रै छेत्र मे विमलेस जी अर जैपुर रा बुद्धिप्रकास जी चावा है.

आ सगळा कवियां री पांत पछै अठी नै नुवी पीढी रा कवी भी सामी आया है, पण हाल वा चमकीला तारा री उडीक है जका राजस्थानी मच री मारफत आगली पीढी री तरै अखिल भारती मच माथै जाय'र चानणौ करै.

अठै आ बात भी ध्यान राखण जोग है के मच री कविता प्रेस री कविता सू न्यारा गुणा वाळी हुवै अर उणरो उदेस भी न्यारो हुवै मच री कविता जनजागरण ताईं लिखी जावै अर सुणता ई समझ मे आय जावै, इत्ती सरलता उण रो मुख्य गुण है दूजो उण मे हरेक आठ दस लैणा रै बाद सुंदर कलपना या करारो व्यग या और कोई इसा गुण वाळी उक्ति आवती रैवणी चाईजै जिको श्रोतावा रै हिरदै नै रमा सकै या पूरी कविता हास्य या व्यग सू श्रोतावा नै गुदगुदावण वाळी हुवै या गुणा रै साथै आप जो भी गभीर बात कैवणी चावो, वा कैय सको हो पण अस्पस्ट प्रतीका री उळझियोडी अभिव्यक्ति वाळी कवितावां प्रेस में भलाई खपो, मच रै लाइक नी हुवै. कोरै गळै रै मिठास सू अणूता हाथ पटक र कोई मच माथै घणा दिन टिकियो रैय सकै, आ बात म्है नी मानू गळै रै मिठास सू अर वाणी रै उतार चढाव सू मच माथै कविता जमावण मे सहारो जरूर मिळै पण कविता रा प्रांण ई निकाळियोडा व्है तो या ऊपरी बाता सू समझदार श्रोतावा नै लुभावणो सोरो काम कोनी है पण आ बात भी है के चोखी कविता नै भी अगर पढणियो मरियोडी वाणी मे भिन-भिनावतो पढै तो उण कविता री भी मच माथै मौत व्हेणी सामी ई दीसै. आजकालै केई लोग मच रो स्तर ऊचो उठावण री चिंता मे धुळीज रह्या है वा नै आ बात ध्यांन मे राखणी चाईजै के मच रा गुणा सू हीण अभिव्यक्ति वाळी कविता चायै जैडी ऊची हुवो, मच माथै नी जमैला. इण वास्तै मच रो स्तर उठावण रो काम वै इज समरथ कवी कर सकै है जिका बात तो ऊचै दरजै री कैवै, पण कैवै सिरफ इत्ती ई पचीदगी सू के सुणताई उणरो पेच खुल जावै अर अरथ चमक जावै भवानी प्रसाद मिश्र रो ओ कथण मच रै कविया रो आदर्स व्हेणो चाईजै—

जिस तरह हम बोलते हैं, उस तरह तू लिख
और उसके बाद भी हमसे बडा तू दिख

आज मच रा स्तर मे गिरावट आयोडी है—कोरा राजस्थानी रा मच मे ई नी, हिन्दी रा मच मे भी या तो लोग अेकदम अस्पस्ट साहितिक गीत ठेलणा सुरू करै जिका श्रोतावा नै 'बोर' कर दै या फूहडपणै री बाता कैय'र हसावण री कोसिस करै या दोनू सीमावा सू बचण री जरूरत है की आ भी बात है के सघर्ष रै जमानै री कविता हमेसा ज्यादा प्राणवान व्है अर उण मे जिको जोस खरोस हुवै वो मच जोगो ज्यादा हुवै, पण सान्ति रै समै री कविता कोई सदेस विसेस नी व्हेण सू मच माथै ठडी लागै इण वास्तै सान्ति रै समै मच माथै या तो व्यग चलै या सिणगार जो इण तरै री कवितावा सफळता सू लिख सकै, वै श्रोतावा नै रस विभोर कर सकै राजस्थानी कविता नै हाल घणो आगो जावणो है लोक गीत घरेलू, परिवारिक या सास्क्रतिक जीवण रा चित्राम मात्र खैचिया सू काम नी चालै जीवण री नुवी सू नुवी विचारधारावा अर भावात्मक सम्बन्धा नै मच रै जरियै जनता रै सामी लावण री जरूरत है. राजस्थान रा गावा री जनता हाल घणी पिछड्योडी है, उणनै जगावण रो जिम्मो मच रा कविया नै आपरै ऊपर लेवणो चाईजै

◇

म्हैं अर म्हारी सोध

• किरण नाहटा

बीकानेर रै राजस्थानी साहित सम्मेलन मे भाई तेजसिंघजी री आ मनस्या ही के म्हैं लारला चार वरसा ताईं आधुनिक राजस्थानी साहित रै सोध सारू जिको काम करतौ रह्यौ उणमे कविता नै लेय'र म्हारा काई अनुभव रह्या अर उणरी मोल-जोख करती वगत म्हारै सामी काई कांई अडचणा आई—वारौ लेखौ-जोखौ म्हारै खरै मन सूं आपरै सामी राखू.

आधुनिक राजस्थानी कविता नै म्है किण रूप मे देखी-परखी अर किण ढग सू उणरै माथै विचार करचौ आ सवाला रै जवाब ताई म्हनै आपरी ओळखाण म्हारै सोध-विसय 'आधुनिक राजस्थानी साहित्य प्रेरणा स्रोत और प्रवृत्तिया' सू करावणी जरूरी लागै. म्हारै सोध-विसय सू वाकिफ व्हेण रै पछै अेक वात तौ आपरै ध्यान मे आयगी व्हैला के मोटै तौर सू म्हारौ ध्यान दो वाता पर रह्यौ. पैली तौ वा कारणा री खोज जिण रै कारण नुवी कविता सूं पैली ताई रौ राजस्थानी कविता रौ इतियास 'हाफळा' रौ इतियास कथीज्यौ दूजौ, लारलै सत्तर वरसा री काव्य जात्रा मे की खास अर ठावी प्रवृत्तिया री खोज अर वां प्रवृत्तिया रै आचै मे सत्तर वरसा री कविता नै 'फिट' करणै री कोसिस

आ वाता रै अलावा भी दो चार वाता भळै है, जिण सू म्हारौ औ अध्यन प्रभावित व्हियौ पैली वात तौ आ के म्हैं औ मान'र चाल्यौ के म्हनै म्हारौ औ सोध प्रवध हिन्दी जगत रै सामी राखणौ है, इण रै वास्तै म्हैं जठै ताई वण्यौ उठै ताईं राजस्थानी साहित नै सजा सवार'र राखण री कोसिस करी अर उणरै निमळै पख नै आख्या ओलै राखण मे ई सार समझ्यौ दूजी आ के म्हैं म्हारी आ जात्रा ई सन् १६०० सू सुरू करी, इणरै वास्तै म्हारी कोसिस हरेक विधा नै १६०० ई० ताई लारै घीसण री रह्यी इण रै अलावा आ वात खास कर गौर करण जोगी है के म्है समूळै साहित नै म्हारी निजरा सू देख परख र म्हारी समझ सारू उणरौ मूल्याकन करचौ है कारण इण काम सू पैला आधुनिक राजस्थानी साहित आलोचका अर समीक्षका री निजरा नी चढचौ हो काई व्हियौ जे किणी लघु सोध प्रवंध रै तहत चालती ई कोई इण माथै दो च्यार ओळचा माडदी के इण वावत मोकळी सूचनावा भेळी कर'र वारौ कोई सकलन काढ दियौ

ठीक औ ई ढाळौ आ पोथ्या रा समीक्षक अर भूमिका लेखक अपडचौ. उठै भी 'वाह ! वाह !' घणौ चोखौ रौ साद ई सुणीजै इण हालत रै माय म्हैं की तौ विवसता रै कारण अर की सभाविक सस्कारा वस हिन्दी साहित कानी मुडचौ अर उठै न्यारी-न्यारी विधावा अर काव्य प्रवृत्तिदा मे जिको काम व्हियोडौ हौ उणनै ई आदर्स मान'र वा फार्मूला नै आधुनिक राजस्थानी साहित माथै 'अॅप्लाई' करणै री कोसिस करी

ऊपरली बाता रै तहत जद म्हैं म्हारै सोध प्रबन्ध माथै विचार करू तौ म्हारी सुविधावा अर विवसतावा रै सागै म्हारै इण काम री सीमावा भी सामै आ जावै. आ खास बाता रौ पैली नतीजौ तौ औ सामी आयौ के केई सबळी अर सातरी रचनावा माथै या तौ समूचौ ई विचार नी व्हे सक्यौ, अर या बौत कम लिखीज्यौ, क्यू के कविता री दीठ सू सबळी व्हेता थका ई 'ओळू री ओळचा' जैडी रचनावा म्हारै प्रवृत्तिगत विवेचन रै साचै मे 'फिट' नी बैठै ही. इण वास्तै लाचारी मे म्हनै उण जैडी रचनावा नै भी अणदेखी करणी पडी. दूजै कानी केई अेक निमळी अर पोची रचनावा नै अणू तौ वढावौ मिल्यौ. म्हारै 'प्रबध काव्य' नामक अध्याय मे अैड़ी केई रचनावा नै औकात सू वेसी फैलण-पसरण रौ औसर लाध्यौ, जिकौ छेकड जाय'र म्हारी कमजोरी ई कैयौ जा सकै

प्रवृत्तिगत विवेचन ई खास मकसद व्हेण सू अेक कानी तौ किणी कवी रै काव्य ससार नै चोखी तरिया निरख-परख'र समग्रता (समूचैपण) मे पेस कोनी करचौ जा सक्यौ तौ बीजै कानी किणी कृति विसेस री सातरी ऊडी अर सागोपाग अध्यन भी नी व्हे सक्यौ.

स्वीकारचोडी प्रवृत्तिया रै इतिग्रास क्रम नै १९०० ई० ताई लेजावण री धुन मे मामूली सी रचनावा रौ उलेख भी कठै कठै घणै उछाव सू कर बैठौ, जिकौ के सायत दूजा नै दाय नी आवै

अठै ताई तौ व्हियौ म्हारै दृष्टिकोण अर म्हारै विसय रै बधण रै कारण इण काम री सीवा रौ जिकर, आगै म्है वा की खास बाता री चरचा करणौ चावूला जिणरौ सीधौ सबध आधुनिक राजस्थानी कविता सू है.

आधुनिक राजस्थानी कविता रै अध्यन री वगत जिकी पैली दिक्कत म्हारै सामी आई, वा ही अेक ई ढाळै री सैईकडू कवितावा मे सू खरी अर प्रतिनिधि रचना नै टाळ'र पेस करण री पद्य कथावा रौ ढाळौ चाल्यौ तौ पचासू पद्य कथावा री झड़ी लागगी प्रकृति काव्या रै माय 'बादळी' नै सराईज्यौ काई, बस प्रकृतिकाव्या अर कुदरत नै विडदावण आळी कवितावा री लैण लागगी औ साग लोकगीतां री तरज माथै घडीजण आळा गीता मे तौ सीवा ई लाघग्यौ. घर-गिरस्ती, वार-त्यूहार, मेळा-मगरिया, सहकारिता अर विकास सू लेय'र कुदरत अर क्राति तांई सै की, जिकौ ई इणरै गेडै चढचौ अेक ई भाव दळीज्यौ आ गीता मे जे लिखारा रौ नाव अेकानी कर देवा तौ औ ओळखणौ घणौ मुस्कल व्हे जावै के कुण सो गीत कुण सै कवी री महरवानी रौ फळ है.

दूजी दिक्कत जिकी आ कवितावा नै लेय'र आयी, वा है सामयिक सामाजिक जीवन अर जनता रै मिजाज सू वानै जोडण री.

लारला पाच सात बरसा मे जद सू नुवी कविता अर नुवा कविया सू राजस्थानी साहित री ओळखाण हुई है, तद सू तौ फेरू भी जनता रै मोड़ मिजाज सू उण री पटडी बैठण लागी है, पण उण सू पैली तौ कणा राजस्थानी काव्य रै अभाव सू पीड़ित लोगां

पैल करण रौ जस लूटण री मनस्या सू कविता करी तौ कणा 'वावा रामदेव रौ पडचौ, वानै माडाणी कवी वणा दिया

हिन्दी रै ढाळै लिख्योडी वै राजस्थानी कवितावा जठै कविया री चिन्तन हिन्दी मे चाल्यौ है—म्हारै वास्तै ग्रेक समस्या वणगी. ग्रैडी मुक्तक कवितावा नै तौ भळै ग्रणदेखी करथा सरै हौ, पण ग्राधुनिक राजस्थानी रा गिण्या चुण्या प्रवध काव्या मे जठै कठै उभरती हिन्दी रौ सुर म्हनै दुविधा मे नाख दियौ म्है ग्रानै राजस्थानी रचना व्हेण सू तौ किया नकार सकै हौ ?

ग्राधुनिक राजस्थानी कविता रै ग्रध्यन री वगत चौथी दिक्कत म्हारै सामै नु वी ग्रर जूनी राजस्थानी कविता ने लेय'र ताळमेळ वैठावण री ग्रायी. 'दुर्गादास' जैडी रचनावा कम ई लाधसी जठै के नु वै-पुराणै रौ सातरौ सगम हुयौ है. ईया ई वा कविया री सख्या भी घणी थोडी है जिका नै ग्रापरै जूनै समृद्ध साहित रौ सागो-पाग ग्यान व्है ग्रर जिका वडेरा री उण थाती रौ जुग सारू उपयोग करचौ व्है हा, लोक गीता रौ छेत्र ग्रलवत्ता इस्यौ जरूर कैयौ जा सकै है, जिणरौ की की समयानुकूल उपयोग करण मे कई कवी थोडा वोत सफळ हुया है

वेली सुजस, सतसई ग्रर इण ढाळै री सत्रहवी-ग्रट्ठारवी सदी री रचनावा सू मेळ खावती के वा सू भी दो चदा वेसी पुरातन कानी दो पग ग्रागू च धरण ग्राळी रचनावा वीसवी सदी रै राजस्थानी साहित मे क्यू घडीज रयी है ? इण सुवाल रौ कोई ठा'वौ जवाव म्है ग्रोज्यू नी खोज पायौ हू

इण ग्रध्यन रै दौरान म्हनै ग्रौ साफ लखायौ के मायली प्रेरणा खतम व्हिया रै वाद भी राजस्थानी रा मोकळा कवी धीगाणै कलम घसीट रह्या है. परिणाम स्वरूप वारी रचनावा री ताजगी लगोलग वढण री जग्या घटी ई है कळायण' रै वाद दसदेव' ग्रर 'छप्पय सतसई' री रचना इण कथन री साखी भरै

लिखण सू ले'र छपण रै विचाळै रौ ग्रातरौ, भणाई रै सागै चिन्तन मनन ग्रर ग्रध्यन री कमी, कवितावा माथै खुल'र चरचा नी व्हेण रै ग्रभाव मे कविया रौ ग्रात्म मोह भग नी व्हेणौ ग्राद की ग्रेक इसी खास वाता है, जिकी ग्राधुनिक राजस्थानी कविता नै दूर ताई प्रभावित करी है

कवियां री खतावणी

• कोमल कोठारी

आज जिकी लेख लिखू, उणरी जरूत क्यू पडी, मतलब के श्रौ लेख म्हनै क्यूं लिखणौ पड़ै ? जे इण वात नै म्हैं खुद ई समझण री कोसिस करू तौ स्यात वै सगळी वाता कैय सकू ला जिकी के राजस्थांनी कविता रा आठ टाळवा कविया सू जुडियोडी है.

पैलौ सवाल तौ औ के श्रै आठ कवी ई क्यूं टाळीजिया अठै अस्सी के आठ सौ कविया नै क्यू नी लिया. आठ सौ तौ स्यात व्हैला ई कोनी, पण अस्सी री गिणती तौ करी जा सकै तद काई म्हैं औ कैवणौ चावू के व्हौ न व्हौ राजस्थानी कविता रै लारलै श्रेक वगत मे श्रै आठ कवी ई सगळै काव्य आदोलन नै बधेज देवै, सिरै जाणीजै, लारला सगळा माडी-पतळी छीयां, छवका व्हेय'र रैय जावै के मोल-जोख री ठावी ठौड ताईं नी पूगै. व्हे सकै दोनू ईं वाता गलत व्है. नी इण बधेज रा आठू कवी आपरै बगत री कविता नै सावत बधेज देवता व्है, नी लारला कविया री कवितावा ईं आ करता न्यारी अर पोची व्है तौ पछै आठ ई क्यू ? स्यात् इण सारू ई के आ रै जरियै कोई श्रेक वात सावळ कथीज सकै. श्रेक ढाळै कथीज सकै. टाळण, नी टाळण री बात ई स्यात आ री कविता रा गुण तक ई बधियोडी कोनी, जित्ती इण सू के कुण क्यू औ सकलन करियौ है. इण सारू म्हैं सै सू पैली तौ औ ई समझ लेवणौ चावू के आठ कविया रौ चुणाव श्रेक सम्पादक रै करियोडौ मन रुचतौ चुणाव है अर वा ई हदा रौ आपरौ प्रतिफळ है. इण पूठ माथै म्हारै लेख नै काई करणौ है ? म्हारै सामी आठ टाळवा कविया री टाळवी कवितावा री सकलन है अर म्हनै म्हारी वात आ कवियां रै जरियै सू करणी है.

कविता, कहाणी के दूजी सिरजण-धरमी रचनावा रै बाबत जिकौ की लिखीजै-पढीजै, उणनै आपा आलोचणा रौ नाव देवा सो स्यात म्हैं इण लेख रै जरियै 'आलोचणा' री कोसिस मे हू. म्हारै मन मे श्रेक दुविधा है, के काई म्है इण आलोचणा मे वै वाता कैवणी चावूं, जिकी खुद कविया आपरी कवितावां रै जरियै, इन्टरव्यू रै जरियै, के खुद नै टोवता-टटोळता करी है श्रैडी हालत मे दो श्रेक तथ साप्रत व्है, के या तौ श्रै ढाळा कवी खुद नै पूरसल नी खोल सकिया, इण सारू आलोचक नै विचै आय'र वकालत करणी है के उणनै की श्रैडी वाता कैवणी है जिकी दीखण-पाखण मे तौ कविया री कवितावा सू न्यारी है, पण साचमाच में न्यारी नी श्रैडी हालत मे आलोचक री गत गुजायस आ ई रैवै के वौ की श्रैडा परसगा री चरचा करणी चावै, जिका उणरै हिसाब सूं कविया नै, के काव्य-जात्रा नै समझण-समझाण सारू लाजमी है. के पछै कैवण नै आ ई कैय सका के आलोचक आपरी मरजी मुजब कविया अर कवितावा नै किणी खास जोड-जुड़ाव सू साप्रत करणौ चावै. तै है के आलोचणा मे इण तराजै आलोचक रै दीठ-दीठाव सूं तर्क-वितर्क री सिल-

सिली सह व्है, जिकौ गेजीना मानीजै ई जरूरी नी समभणौ चाइजै. पण इण साच नै ई सावळ जोख लेवणौं चाइजै के आलोचक आपरी साहितिक मानतावा रै आटै उळाटै मे रचनावा नै उदारण रूप वरतै इण कोसिस मे घणकरीवार रचना अर रचनाकार लारै छूट जावै, वा रौ महत जरियौ व्हेण मे ई रैय जावै

राजस्थान रा कोरामोरा आठ कवियां नै जद अेक साथै समभण री कोसिस करणी है तौ छिणेक प्रदेस रै वस्तु-साच नै लेखै लेवणौ ठीक रैवैला. रियासता मे वटियोडो राजस्थान, सामती अरथ व्यवस्था, मध्य जुग री समाजू मानतावा सू लिफीजियोडो मिनख, भणाई रौ टोटौ, जातपात अर माली हालत रै हिंसाव सू वटियोडौ फटियौडौ समाज, गुलाम अर वीसवी सैकडी मे ई कळकारखाना रै टोटै मे रैवता लोग आ रै जीवण मे अेक हळचळ आजादी रै नाव सू आई रियासता तूटी, जागीरा माथै कानून री मार, मध्य जुग री मानतावा रै निरथ व्हेण री अदाज, भणाई गुणाई मे ववाव आर्थिक अर समाजिक धरातळा मे अेक तूट, आजाद जन-राज रौ नुवौ जमाव अर जुग री जरूत रै मुजब उद्योगा री भूमिका सुरू आ प्रदेमू हालता री जोड काळक्रम रै हिंसाव सू देखा तौ इतियास रौ विसै है—वौ इतियास भला समाज रौ व्हौ, भला प्रदेस रौ अर भला किणी दूजै विसै रौ आजादी रै सागै ई राजस्थान री तसवीर अेकदम वदळी, इण मे सक नी

आ लू ठी वदळती इतियासू अर समाजू हालता मे अै आठ कवी जळमिया, पळिया अर वडा व्हिया करीव करीव सगला कवी इतियास रै इण सधिकाळ रा चस्मदीद है, के रह्या है आप आपरै हलका रा कस्वा के गावा मे कविया रौ टावरपणौ बीतौ परिवारू हालता रै सौभाग सू आ नै भणण-पढण रा औसर हाथ आया अर अै साहित जैंडी कळा रै नैडा पूगता व्हिया

पण जे इण हालत नै सावळ देखण-समभण री कोसिस करा तौ ठा पडैला के रेवतदान अर उस्ताद नै छोड'र सगळा कवी पाठेती पोथिया . री हिन्दी कवितावा सू प्रेरित व्हेय'र कविता कानी ढूकता व्हिया रेवतदान जात सू चारण है जिका अळसेटै ई आपरी जात, परिवार री परम्परा रै कारण परम्परू कविता सू सैध-पिछाण करी. उस्ताद रै जीवण री वै घटणावा हाल चौडै नी व्ही, के ज्या सू वा री सरूआत आकीजण मे आवै, पण वारी रचनावां सू साफ ठा पडै के राजनीतिक आदोलणां री प्रेरणा सू ई वै कविता रै छेत्र मे आया सत्य प्रकास, नारायण सिंघ, चन्द्र सिंघ अर राजावत इसकूलां रै मारफत कविता सू सैंधा व्हिया. आठ कविया मे सू गजानन अर सेठिया रा कविता रै वावत दियोडा वयान नी हाथै आया, पण दोनू ई कविया रै वावत जित्तौ कित्तौ जाणा हा, उण रै मुजव आ कैईज सकै के वै ई इसकूल रै मारफत ई कवितावा रै नैडै आया व्हैला. कन्हैया लाल सेठिया री हिन्दी कवितावा ई इणी सांच नै पोखती लाधैली. गजानन सारू स्यात आ जाणकारी लेवणी वाजिव व्हैला

आ आठू कविया मे सू उस्ताद अर सत्य प्रकास रै सिवा लारला सगळा आपरै टावरपणै राजस्थान रा गावा मे के कस्वा मे रह्या. नारायणसिंघ रौ गाव माळूगा

(जोधपुर), चद्रसिंघ रौ गाव बिरकाळी (बीकानेर), कल्याणसिंघ राजावत चितावा (नागौर) रेवतदान रौ गाव मथाणिया (जोधपुर), गजानन रौ कस्बौ रतनगढ (बीकानेर) अर कन्हैयालाल सेठिया रौ कस्बौ सुजाणगढ (बीकानेर). उस्ताद अर सत्यप्रकास रौ टाबरपणौ अेक सैर मे बीतौ—जोधपुर पण आ गाव आळा कविया री पढाई लिखाई सैर मे हुई अर उठै ई वै कविता रै नैड़ै आया. गजानन अर सेठिया रौ कविता सू सपर्क स्यात आपरा कस्वामे ई रह्यौ अै ल्हौडा कस्वा आर्थिक इकाई रै रूप मे गावा जंडा ई है. पण की खास हालता रै कारण सैरा जैडी सुविधावा उठै ही. आ आठू कविया री इण गावाई पूठ नै समझणौ इण सारू लाजमी है के कवितावा मे किणी न किणी रूप मे गावा रौ सपरक साप्रत व्हेतौ ई रह्यौ है. भला वौ सपरक भासाऊ रूपा रौ व्हौ, भला विसै टाळण रौ के भला रौमेटिक भावधारा रै तँत गावां कानी देखण री आट सू जुडियोडौ व्हौ जिका कवियां री पूठ मे गाव कोनी, वारी कविता मे अेक न्यारौ निरवाळौ तेवर दीखै वारी विसै छांटण री गत ई लारला सू न्यारी है.

जे आपा विगस्योडै साहित री परम्परावा मे गाव अर सैरा नै ओळखा तौ औ तथ हळकै हाथ ई समझ मे आवण लागैलौ के वडा सैरा रौ साहितिक वातावरण काव्य-सिरजण मे लूठी अर निरवाळी मदद दी है. ई या राजस्थान रा वडा कैवाईजण आळा सैर आपरा जीवण-मोलां अर चालतै जीवण रा दीखता ढाळा मे गावा जंडा ई ज्यादा लागै वानै बीसवी सदी रा सैर कैवणौ सभव कोनी. सैरा रौ सगठण के गावा सू सैरा कानी जावण आळा री मनगत के आर्थिक खिचाव रा आपरा कारण व्है राजस्थान मे औ खिचाव घण-करौ सिक्षा री सुविधा बण र आयौ. क्यू के सन् '४७ ताई न्यारी-न्यारी रियासता री राज-धानिया मे नौकरियां ताईं पूगणौ खास बात रह्यी. कळ कारखाना री हालत माडी व्हेण रै कारण मजदूर रूप मे आवण आळा लोगा री तदाद कम ई रह्यी व्हैला. जठै तांई आपारा आठू कविया रौ सवाल है. वा मे सूं च्यार गावा सू सैरा कानी सिक्षा सारू आया. दो आपरा कस्बां मे ई रह्या, पण वांरै कस्बा रौ व्यापारिक सबध भारत रा लूठा लूंठां नगरा सू रह्यौ कन्हैयालाल सेठिया अर गजानन वरमा क्रमवार सुजाणगढ अर रतनगढ रा रैवासी है अै दोनू ईं कस्वा भारत रा जाणीजता व्यापारिया सू जुडियोडा है जिका रौ व्यापार घणौ कलकत्ता वम्बोई जैड़ा सैरा मे ई चालतौ करतौ रैवै उस्ताद अर सत्यप्रकास रौ टाबरपणौ मारवाड री राजधानी जोधपुर मे बीतौ अर सन् ४७ सूं पैली रै सैरी वातावरण री वारी कविता सूं खासौ गाढौ लेवणौ देवणौ हौ.

इण भात आपा देखा के राजस्थान री सामती व्यवस्था रै विचै सैरा अर गावा री आपरी न्यारी न्यारी भूमिकावा ही अर वांरौ असर किणी रूप मे कविया माथै रह्यौ- जठै ताईं समाजू हालता रौ सवाल है—वै सगळा कविया सारू सारीसी ही. वां हालता रौ असर ई कविता माथै पडियौ पण इण रौ मतलब औ क्यू कोनी निकळै के सगळा रा काव्य गत विसै ई अेक जैडा व्हेता ? वारी कवितावा रौ ढाळौ ई अेक जैडौ व्हेतौ. भासा, सवेदन अर कलपनावां सारीसी व्हेती इण ठौड 'मिनख' रौ निज अर उणरौ रुझाण आपरौ रूप

लेवरण लागै. जीवरण री भात भात री अनभूतिया रौ ससार मिनख री इरण निजर सू जलमरणौ सरू व्है.

आ आठ कवियां मे उस्ताद अर चन्द्रसिंघ अैडा कवी है जिका स्यात कविता रै इतियास मे लारला करता पैली दाखिल व्है उस्ताद रौ छेत्र जोधपुर हौ अर वानै आधुनिक कैईजरण आळी किरणी इसकूल मे पढरण रौ औसर नी मिळियौ वारै कनै जे कोई काव्य परम्परा पूगी तौ वै पारम्परिक रूप सूं चालती आई कथ्यात्मक कवितावा ईं रह्यी व्हैला. उस्ताद खुद लावै अरसै ताई उमर काव्य रा रचारा उमरदान जी सू प्रभावित रह्या वारी फक्कड भासा अर समाजू चेतना माथै सीधा सटीड देवरण री आट उस्ताद रै मन-मगज मे ठावौ असर छोड सकै ही उस्ताद मे कठै न कठै वाणी, हरजस, अर भजना री कविता परम्परा रौ असर ई हौ, अैडौ लागै इरण कविता परम्परा री खासियत छदा रै सागै गेय-रूप री ही धुना रै साथै, मतलव के सगीत अर लय री आट रै साथै कविताऊ सवदा री टाळ रौ आपरौ ढाळौ व्है. अनुप्रासी के अनुकरणी सवदाऊ सयोजना रै साथै अमूरत अर प्रतीकी अरथ विम्वारौ फूठरापौ इरण भात रा धारमिक गीता रौ खास सभाव व्है इरण छूट अेक दूजौ तथ चेतै राखरण जोग औ है के अै सगळा गेय-काव्य रूप समूही गीता री तकनीकी खासियत लियोडा व्है मतलव के दस-वारा जणा के वा सूं ई घरणा आ गीता नै साथै गा सकै. उस्ताद री कवितावा री साची तारीफ के साचौ रूप समझरणौ व्है तौ औ मानरणौ पडैला के वारी घरणकरी सातरी कवितावा आप रै माय समूही गीता री खासियता पोखै.

आज उस्ताद नै जिका लोग याद करै वै आपरी याददास्त रै पारण उरण तथ कानी अवस ले जावैला के जद उस्ताद जन-आदोलना सारू लिखियोडा आपरा गीत गावता तौ लोगा री भीड री भीड गावरण मे सागै जुड जावती वारा हिन्दी, उरदू अर राजस्थानी रा अलेखू गीत वरसा ताईं समूही-गीना रै रूप मे चालता रह्या उस्ताद स्यात कदैई मचू कवी रै रूप में सफळ सावित नी व्हिया म्हनै जित्ता कवी सम्मेलना री याद है, वा सगळा मे उस्ताद कदैई जम र आपरी कविता नी सुरणा सक्या स्यात औ सवाल ई कदैई सोचरण नै विवस करैला के गेय-कवितावा लिखता सातर ई उस्ताद कवी सम्मेलन रा मचा माथै क्यू नी सफळ व्हिया स्यात कविता रौ सगीत तत्व मच री सफळता सारू उत्तौ जरूरी कोनी, जित्तौ के उरणनै पेस करणै रौ ढग. अर जिकी कवितावा सुरीलै गळै सूं तरन्नम मे पेस करीजै, स्यात सगीत री निजर सू वै इत्ती गठियोडी अर तुलवा नी व्है. उस्ताद री कवितावा रै मायलौ औ सगीत तत्व अेक सैंजोर वात है, जिकौ वानै समूही गीत व्हेरण रौ सैंठौ आधार देवै.

उस्ताद री औ मानरणौ हौ के कविता समाजू चेतना रौ हथियार है इरण रौ उदेस नी सवदा री रामत है, नी अरथ री नी मनोरजन है अर नी उरण कळा मे ईं भेळौ है जिकी भासा रै पद्याऊ फूटरापै रौ झीरणौ आचळ ओढ र चालै वा रौ निस्चै मानरणौ हौ के कविता नै जन मानस री समूही चेतना चेतावरणी है वै सामती समाज व्यवस्था नै आपरा विस-

बुझया तीरा सू लोई झाण करण मे समरथ हा. आजादी रै पछै वारी कविता उत्तौ ई सैठौ हमलौ नुवी सोसण-व्रती माथै करियौ उस्ताद रै काव्य रौ व्यक्तित्व उण 'दरसण' मे रचियोडौ-पचियोडौ है. जिको मिनख रै विकास री द्वद्वात्मकता अर गयात्मकता मे भरोसौ राखै.

आपा रै सारू समझण री वात आ हैके उस्ताद री कवितावा क्यू जलमती-वांरौ मायलौ पख कांईं है ? अर उस्ताद री सगळी कवितावा मे अेक चेतन दरसण अर उण री अेकता लाधै के नी. जठै ताईं उस्ताद रै व्यक्तित्व रौ सवाल है वै राजनीती अर समाज रा आदोलना रै बिचै जीवण रौ निरणै लियौ हौ अर उणी रूप मे राजस्थानी कविता नै आपरै जीवण-दरसण रा कौतुक कळापा मे झेलण, विगसावण री कोसिस करता रह्या

चन्द्रसिंघ गाव रा रैवणिया हा अर अेक राजपूत परिवार मे जलमिया वा रै जीवण री की घटनावा सूं आ ठा पडै के आजादी सू पैली ई वा री रुची राजस्थान री राजनीती मे ही खुद री इसकूल मे वै बरोबर इण कोसिस मे रह्या के कीकर 'रईसा' रा टाबरा सू थुडं-भिडं राजस्थान री राजनीती मे लगोतार रुची राखता सातर ई के भाग लेवता सातर ई आपरी काव्य-मानतावा मे वारौ विगसाव न्यारौ लागै. वै कविता नै किणी भात रै विचारू प्रचार रौ जरियौ नी मानी. मतलब के कविता नै मन री भासा रै रूप मे मजूरी. जद किणा कवी सू लगोतार आ सुणण नै मिळै के कविता प्रचार रौ साधन नी, ईया लागण लागै के वौ आपरै चौगिडदै वातावरण नै मायली निजर सू देखण रौ हामी है. आ तौ सज मे नी आवै के उणरी कविता वरतमान री हालता सू खुद नै छेडं कर लेवै चन्द्रसिंघ री कविता मे अेक आतरिकता अर सघन सवेदना है जिणरौ सवध राजस्थानी कविता री दूजी भावभोम सू है, साधारण तौर सू सगळा कविया रौ कैवणौ है के वै पारम्परिक कवितावा सू प्रेरणा ली आ बात थोडी थ्यावस सूं समझण री है, सन् ५० ताईं राजस्थान मे सैक्षणिक अर साहितिक प्रकासण री काईं हालत ही ? राजस्थान रौ सैहिरदै रसिक राजस्थानी री कुणसी कवितावा रै नैडं आ सकतौ ? उण वगत री सावा तक ई देखा तौ ठा पडै के परम्पराऊ कवितावा रौ प्रकासण घणौ नी हौ अर अध्येतावा रै हाथ मे प्रकासण सोरै सास नी पूग सकता वा सारू सगळा नै ई कोसिस करणी पडती, ज्यादा गुंजाइस इण वात री है के आपा रा अै कवी इसकूला रै जरियै पैली हिन्दी कविता रै नैडं ढूकता व्हिया अर वै ई काव्य रूप वारी प्रेरणा नै पाखा दी राजस्थान री परम्पराऊ कविता सू जे वारी सैंध पिछाण हुई तौ वा इसकूला रै जरियै नी, राजस्थानी री वा कथाऊ विधावा रै जरियै हुई, जिकी समाज रा ठावा, ठीमर लोगां रै कठा ही लागै के इण परम्परा मे ई दोहा अर सोरठा अैडा छद रह्या व्हैला जिका किणी राजस्थान रै रैवासी नै पैलमपोत हाथै आवै. चन्द्रसिंघ रौ राजस्थानी कविता सू पैलौ अर जोगौ परिचै दोहा रै जरियै सू ई व्हियौ व्हैला. जठै तांईं कविताऊ रूप रौ सवाल है दोहे अर सोरठै जैडा छोटै माप रा छद आपरी भाव-गैराई सूं कविया रौ मन मोवण मे समरथ है इण सांच नै म्हैं वारी सरूपोत री प्रेरणावा सू जोडणौ चावू, जिकी कवी रै मन माथै अचेतन

रूप सू टाबरपणौ मे असर राळती रह्यी व्हैला प्रेरणा रौ औ बीज रूप जद बिगसै तौ निरखै ई उणरी न्यारी-न्यारी भाता अर विस्तार इत्तौ अर अैडौ व्हे जावै के पाछौ उण नै सोधणौ अबखौ लखावै. चन्द्र सिंघ रौ राजस्थानी कविता मे प्रवेस अर पछै रौ काम राजस्थानी साहित रै खास आदोलण री हिस्सौ बणियौ वै देखियौ के वै आपरी अनभूती राजस्थानी रै जरियै सावळ साप्रत सकै अर साथै रा साथै वै राजस्थानी भासा रै आदोलण सू जुडगा जठै आदोलण री जरुत रै मुजब ई थोडी घणी काव्य सिरजण री भूमिका निभावण पडी की साथी सायना मे बैठ'र राजस्थानी भासा अर साहित री चरचा रै माध्यम सू प्रेरित व्हे 'कैमुकरणी' के सस्कृत रै की काव्य ग्रथा रा करियोडा अनुवाद वा री इणी मनगत रौ परिचै देवै

चन्द्र सिंघ रौ कवी स्वर जद थिर व्हेण ढूकौ, उण वगत हिन्दी कविता मे 'थूळ सू झीणै' कानी पूगण रौ रव हौ इतिवृत्ताऊ लेखा जोखा रौ काम पूरौ व्हेगौ हौ. सावचेत कवी रौ मन इण काव्य स्थिति सू अळगौ कीकर रैवतौ अर वौ राजस्थानी कविता मे पैली-वार प्रकृति नै अेक मानवी मनोभोम माथै देखणौ सरू कियौ लू अर बादळी जैड़ी प्राकृतिक ओस्थावा रै जरियै सू राजस्थानी कविता विसँगत मोड लियौ. वस्तुस्थितिया रौ वरणन भू डणौ-बिडदावणौ के मध्यजुगी उपदेसा री वाणी छोड'र राजस्थानी कविता आपरै मन री मनोरम भोम माथै आवण नै खपी. पण चन्द्र सिंघ री अै प्रकृति रै बाबत लिख्योडी कवितावा—काव्य इतियास री निजर सू अेक सधि काळ माथै ठैरयोडी है जिण में अमूरती-करण री कोसिस तौ लाधै पण पारम्परिक वरणाऊ ढब के बिम्बा नै सजावण री वाण ई भेळमभेळ दीखै 'लू' जैडी प्रकृताऊ सत्ता रौ समाज माथै असर, मिनख माथै असर, पेड-पोधा, जीव-जिनावरा अर पखेरूवा माथै असर अर अैडी ई अलेखा स्थितिया माथै कवी रौ मन-लोक सरचण सरचावण री कोसिस करी प्रकृति वरणन री कोसिस प्रकृताऊ रूपा सू पडण वाळा प्रभावा ताई पूगी अर कणाजणा वा मिनख रै मायलै मन नै परसणौ सरू कियौ पण औ काव्य पूरमपूरौ अमूरत भाव-बिम्बा ताई पूगगौ व्हे सो बात नी कवी प्रकृति नै अेक 'कविताऊ निबन्ध' मे पोवण री कोसिस करी. हरेक पद के छद री व्यजना आजाद रैवता सातर ई अेक खास स्थिति रै अेडै छेडै चालती रह्यी. अर औ ई कारण है के समूदै पोथी रूप मे कविता रौ विसै अेक ई बणियोडौ रह्यौ

यू चन्द्रसिंघ री कविता सू साप्रत लखावै के वै तथाकथित समाजू चेतना अर राजनैतिक आदोलन नै अछूता छोड'र आपरी बात कैवण मे सफळता मानै पण वै आपरै नीजू जीवण मे लगोलग राजनीती रै क्षेत्र मे भाग लेवता रह्या कवी रै सारू आ दो सांप्रत साचा रै बिचै चालण रा नतीजा की न की तौ व्हेता ई व्हैला वा कुण सी लाज है जिकी चन्द्र सिंघ रै कवी-मन नै समकालीन वस्तुस्थिति माथै कविता करण सू रोकै ? काई कवी रै मन मे आ दोगाचीती कदेई नी जळमी व्हैला के आपरै राजनीतिक जीवण रा छिण मे जीवता, वा नै कदेई वा तथ्या के अनभवा सू तिक्त कविता संवेदना री हळचळ आपरै माय पसवाडौ फेरती नी लागी व्हैला ? म्हनै औ नी कैवणौ के चन्द्र सिंघ इण भात री कविता

क्यूं लिखै के दूजी भांत री कविता क्यू नी लिखै ? देखणौ इत्तौ ई है के राजनीतिक जीवण रात-दिन जीवता सातर ई साहितिक जीवण उण सू परवारै किया रैय सकै ? उण रै लारै ई मन री के विचार री कोई न कोई अदीठ लैर व्हैला ई. कविता नै अेक साघना मानीजती व्हैला के अेक अंडौ जरियौ समझीजती व्हैला जिकी मिनख रै असाऊ-जीवण के अंसाऊ मन सू ई जुडियोडी व्है, स्यात मिनख नै उण रै समूदै रूप मे नी देखण री कोई अेक कारण व्हैला ? पण इण री उथलौ कठै सू मिल सकै ? किणी सू नी मिळ सकै. स्यात खुद चन्द्र सिंघ ई नी दे सकै

उस्ताद आपरा कारणां सूं अर चन्द्र सिंघ आपरा कारणा सू कवी-सम्मेलना रा कवी नी व्हे सक्या. दोना री कविताऊ दीठ न्यारी ही पण मंच री निजर सू वै सारीसा ई रह्या. उस्ताद मच रै महत नै मजूरता पण चन्द्र सिंघ इण ढाळै नी वै मच री कवितावां नै सुणण वाळा रा गुणा अर ओगणा माथै पजोखी. सुणण वाळां रै राजी व्हेण नै वै कवी री अेक सीव कथी. चन्द्र सिंघ री इण मानता मे घणौ की तथ है के मंच री कविता सोरौ सवळौ जोम के व्यग री उक्ति व्हेय र रैय जावै. कवी-सम्मेलना रै विसै मे दूजा कविया नै लेय'र खासौ थकौ समझणौ जाणणौ पडसी. सो इण बात नै हाल अठै ई छोडणौ ठीक रैवैला

म्हनै संवळौ लागै के चन्द्र सिंघ रै पछै नारायण सिंघ री कविता सबघी चरचा नै उठाय लेवूं. नारायण सिंघ री गाव जोधपुर रै नैडौ. भणाई सारू जोधपुर पूगणौ अध्यापका रै जरियै हिन्दी कविता सूं परिचै अर उण मे अेक ताजगी री लखाण.

इण लखाण अर लाग री वीज खुद नारायणसिंघ नै कविता कनै पूगता करया. बात साप्रत है के हिंदी री उण बगत री (सन् ४५-५०) कवितावा, जिकी इसकूला के कालेजा री पाठेती पोथ्या मे चालती ही, वै ई कविता सू पैंलौ परिचै हौ औ बगत पत, प्रसाद, महादेवी, री काव्य-चरचा री ही प्रसाद आपरी रहसाऊ गाढ रै मुजब न्यारौ निरवाळौ असर छोडता. नारायणसिंघ नै प्रसाद रै 'आंसू' काव्य कठै न कठै असर मे लिया अर वै आपरा सरूपोत रा छंद गुणमुणावणा सरू व्हिया. हिन्दी मे औ जुग 'ग्राम्य वाणी' अर उण रै सैज फूठरापै माथै बिलमीज्योड़ौ सो लागै कविता री औ रग नारायणसिंघ नै आपरी गावाई यादा समेत कठै न कठै हिलाया व्हैला अर वै आपरी पैंली कविता री विसै चुण्यौ—साझ ! गाव री साझ अर खास कर घा यादा सू रगीज्योडी साझ, जिकी वा रै माळूगा गांव री साझ ही. वै ई रूख राख, वै ई मगरा, वै ई जीव-जिनावर, वौ ई चौगिडदै वातावरण अेक अंडौ चितराम जिकौ वारै टावरपणै री यादा अर लखाण मे मत्तौमत्तै पाखीजै हौ राजस्थानी कविता मे प्रकृति नै देखण री औ अमूरत सभाव स्यात पैंलीवार आयौ. 'लू' अर 'वादळी' सू न्यारी आट है 'साझ' री. अठै थूळ साप्रत री वण-णाऊ वरणन नीं व्हेय'र अेक भाव विगसाव री गत मिळै भासा मे कवळाई, उदेग री अपड मे सवळाई अर थोडौ-घणौ झीणौ झिगदळौ सकेताऊ रहस. अेक अंडौ घूघटौ भासा रै सभाव माथै पड़्यौ, जिकौ वरणाऊ थूळ नै झीणौ कर दियौ.

इण ठौड राजस्थानी कविया रै जीवरा री की खासियता माथै चाराचुका इं निजर पूगरा ढूकं. ज्यू इं अेक कवी रौ आपरी पैली कविता सू सजोग सजै के उणरै सांमी कविता रै सागै रा सागै की दूजा सवाल आय जुडै जिका रौ सीधौ सवंध कविता सू नी व्हेयर राजस्थानी भासा सू व्है कवी आपरी पैली जोगी रचरणा रै सागै ई आपरै हलकै रा साहित्यकारा रै सपरक मे आवै. अर आपरा साथी सायना रै सागै वैठ'र कविता रै सागै-सागै राजस्थानी भासा री मौजूदा हालत सू दुखी व्हेय'र दूजी भात रा आदोलना रौ कदैई मून तौ कदैई वोलतौ गवाईदार के हरकारौ वरगरा लागै. इरग गत सू वचरग री गु जायस कवी रै सामी नी रैवै साथी साहितकार चेत-अरगचेत कवी रा विसर्या अर सिर-जरगा माथै आपरी मागा री वोझ वधावरग लागै वा नै चिन्ता व्हेरग लागै के वरतमान राजस्थानी भासा अर साहित री विघावा मे किरग भात सागोपाग वेग सू रचनावा छपै अर कुरगसी विघावा के विसया माथै कवी नै आवसकर कोसिस करणी चाईजै. चन्द्रसिघ ई आपरै पैलै काव्य-वीज रै सागै आया अर अैडै ई आदोलन रा भागीदार व्हिया. नारायरगसिघ ई आपरी स्वानभूत निस्छळता रै सागै राजस्थानी काव्य मे आया अर वा रा साथी सायना वानै 'मेघदूत' रै अनवाद सारू वाधरगा अगेजरगा सरू किया नारायरगसिघ रौ कवी मन इरग नुवी माग रै मजूर'र चोखौ करचौ के ओखौ ? सवाल औ ई कोनी के 'मेघदूत' रौ अनवाद सातरौ व्हियौ के नी ? घादौ तौ औ है के कवी रै सांमी अै हालता क्यू आई ? क्यू नी वौ आपौआप आप रा विसया रौ नियामक रह्यौ ? आपरा साथी सायनां री मांग रौ वजन क्यूं उरग माथै पडचौ ? म्हनै लागै के राजस्थान रा सगळा कवियां रै खुलासै मे इरग सरीसी ठौड नै ओळखरगौ लाजमी है

सो नारायरगसिंघ 'साभ' (अर उरगसू पैली 'ओळू') रै पछै सीघा मेघदूत रै अनवाद ताई पूगा इरगी दौर मे राजस्थांन रौ समाजू अर राजनीतू परिवेस पलटै हौ. नारायरगसिंघ आ पलटती हालता नै वोलावोला देखरग आळा रह्या इरग निरपेखता रौ काररग वा री भरगाई के भरिगया उरग इसकूल री हालत ही खुद नारायरगसिंघ रौ मानरगौ है के चौपा-सरगी (जोधपुर) इसकूल रै वातावररग मे समाजू वदळाव रौ गाढौ अदाज नी व्हेतौ. इरग इसकूल मे जिका जीवरग मोल पोखीजता वै मध्य जुग ग कारग कायदां री कूडी दिखावट सू तिरिया-मिरिया हा नुवै वदळाव नै अथिर मानी जतौ अर सक री निजर सू देखीजतौ कठै न कठै औ पतियारौ छानै मानै घर घाल्या हौ के नुवै वदळाव रौ सिलसिलौ आपरै वोझ सू ई तूट जावैलौ अर जे समाजू सैतोल कठैई रैवैलौ तौ वा इं परम्परावा मे जिका में मध्यजुग वैवतौ रह्यौ औ ई काररग है जिरग सू नारायरगसिंघ री आ वात खासै भलै महत री व्हे सांमी आवै—'आजादी रौ आवरगौ नी भू डो ई लागै हौ नी घरगौ उछाछळा करै जैडो....? कोई अरगू ती हळचळ म्हारै माय इरग वदळाव रै समचै आई व्है अैडो नी हौ' परग वदळाव री मजूरी अर उरगरै असर सू निरवाळौ रैवरग री गु जायस नी ही अर आ मजूरी वां रै इरग वाक्य सू मिळै—'पछै हैसियत रै हिसाव सूं छुटभाया मे हा. सो आजादी आवरग सू आपा रौ कोई राज जाई परौ के जागीर खुस जावैला, अैडौ खतरौ ई

आपा नै कदैई नी लखायौ ' मतलब के नुवै समाजू अर अरथाऊ वदळावा री जरूरत नै अेक परिवार खास री हालत सू जोड र सतोख करीजियौ, पण वदळाव रै बावत उदासी गाढी रह्यी.

पण नारायणसिंघ रौ कवी मन नुवै सू अेकानी के उदास नी हौ वागी कविता राजस्थानी भासा नै जिण ढाळै बरती वौ नुवा कविताऊ मोला सूं रल्लै-तल्लै हौ वै अचेतण रूप सूं सामती जीवण-मोला माथै टिक्योडी कविता रा सिद्धाता नै पोखणौ मजूर नी करयौ. सरू मे वीर पूजा के बिडदावण री अणूताया रौ काव्य वा री कलम माथै नी आयौ. प्रकृति रौ मनमोवणौ रूप अर उणमे सैंज मिनख, अेक बरोवरी रै हक हकूक वाळै 'स्ट्रेटीफाइड' समाज सू अळगै अेक मिनखाऊ बरोबरी नै परसण की कोसिस करीजी के यू कँवणौ चाईजै के आ कोसिस आपीआप व्हेगी. औ काळ री गरिमा अर मरजादा रौ फळ हौ, आपरै समाज री उपलब्धिया रौ सीधौ असर हौ. पण काळ रौ लगोतर चालण आळौ चक्कर तौ घडी निमिस ई ढबै नी कवी नारायण सिंघ जद आ जाणण लाग्या के वै चारण चुका कवी व्हेगा है तौ अणचेत ई वा रै भावी जीवण रौ मारग ई तैसो व्हेगौ. राजस्थान रा सिरजणसीळ कविया नै इण पैली ओळखाण री हालत मे खुद नै अैडी ठौड खपावण नै मजबूर व्हेणौ पडै—जठै सू वै आपरी रोजी-रोटी चला सकै. साचमाच मे साहित रौ के काव्य रौ गभीर अध्यन क्रम ठ्णी सधिकाळ मे सरू व्है. कवी रौ जिकौ की बणै विगडै, वौ ई इणी वगत मे मतलब के या तौ वौ साहित रै छेत्र मे पग रोप र ऊभौ व्हैण मे समरथ व्हे जावै के जीवण रा किणी दूजा कामा में अळूझ र कविता नै बिसराय देवै औ निरणाऊ वगत वां आग्रहा वास्तै जोगी जमी रौ काम करै, जिका कठै न कठै नीजू जीवण रै परिवेस सू गाढा घुळिज्योडा व्है नारायण सिंघ नै कवी रूप मे मिळी मानता रै सागै अेक सोध-सस्थान रौ कांम हाथ आयौ पढण रौ क्रम अेक खास दिसा मे चाल पड्यौ. आ भणाई-गुणाई वारी कवितावा माथै असर राळणौ सरू कियौ स्यात औ ई वौ बगत हौ जद जीवण-मौलां के सावत दीठ री चिन्तनाऊ ईकाई रौ सिरजण व्हेवै हौ नारायण सिंघ प्राचीन के मध्य जुगीन साहित री सोधाऊ आंट मे आया अर वा रौ निस्छळ सुर आपरी आत्मीयता सू छेडै व्हेय'र दूजी भाव-उरमिया नै सजोवण लागौ. 'साझ' रौ कवी जिकौ के भासा अर भावगत परम्परा सू मुक्ति री घोसणा करै हौ, वौ ई कवी आगली रचनावां मे रूढ काव्योक्तिया कानी चाल पड्यौ. विसया रै चुणाव अर जीवण-मोला रै प्रति अेक आग्रै रौ भाव झळकण लागौ मतलव के कवी आपरै परिवेस सू वा मोर्ला नै उखेल'र फेकण मे असमरथ लागण लागौ, जिका खुद उणरी मूळ काव्यगत प्रवृति रै सारू ई घादी हा. उण रौ व्यौहार, उण रौ उदार सयम, भूतकाळ मे देखण री प्रवृति अर अळसाई परम्परावां रौ वधाण धीरै धीरै सिरै व्हेण लागौ. काईं आ ईं असगतिया सूं कदै कदै अैड़ी नी व्है के कवी नै लावै अरसै ताईं मून रैय जावणौ पडै ?

रेवतदान चारण री वात सगळा कविया सूं न्यारै ढाळै सरू व्है. कविता नै सुणण समझण रौ सजोग आपरी जात विसेस रै कारण वा सारू सोरैसास ई सजगौ. राजस्थांन

मे चारणां री ग्रेक रुजगार कविता करणी ई रह्यौ है घर परिवार मे ई डिंगळ कविता रै सागै सागै न्यारा न्यारा छदा रा नाव, वा रै भासाऊ गठण रा नेम, अलकारा री आटा अर नायका भेद री पिंगळ कवितावा चारणा रै घरा मे विखरी लाधै. मतलब के रेवतदान री काव्य सिरजण री प्रेरणा बीज इणी परम्परा मे रह्यौ रेवतदान रै टावरपणै चारण कवी (भला के भूडा) डिंगळ, पिंगळ, व्रज अर हिन्दी मे कवितावा लिखता हा पिंगळ, व्रज अर हिन्दी रौ इस्तेमाल स्यात व्योहारी ढाळै ई घणौ हौ. रेवतदान री सरूआत इणी ठौड सू व्ही. ग्रेक वात भळै, चारण जात आपरी मानेता देवी करणी जी री लूठी भगत है अर वा री दिनचरया मे सेवा-पूजा रै सागै सागै करणी जी रै छद पाठ रौ विधान है. करणी जी सारू कथीज्योडा छदा मे डिंगळ री काव्य-प्रव्रति सागोपाग विगसी है. रेवतदान रौ टावर पणौ वा हालता मे वीत्यौ जद चारण जात आपरी ग्रेकठ कोसिसा सू चारण टावरा नै भणावण मे रुची लेवण लागी ही जोधपुर रै सिक्षाऊ विकास मे जाता रौ आधार ग्रेक विस-व्रछ री गळाई ऊठण लागौ हौ आ सैरा रा घणकरा इसकूल जातां री वोर्डिगा मे वटियोडा हा राजपूत, ओसवाल, माहेस्वरी, माथुर, माळी इत्याद जाता रा न्यारा न्यारा इसकूल वण चुक्या हा वोर्डिगा री योजनावा ई इणी ढाळै वणै ही. ग्रै इसकूल वा मनगता नै पोखता रह्या जिका में भोळा टावर जात रा ल्हौडा अर ओछा कुडाळचा मे फसता, उळूझता रह्या. इण विस रौ असर नुवै समाज री साजगी माथै ई सभाविक रूप सू माडौ पड्यौ, अर खासा थका हालत आज ई वा ई है पण आ जात री इसकूला रै ग्रेडै छेडै समाज सुधार आदोलण (समाज सुधार नी, जात सुधार आदोलण) ई जुडण लागा. रेवतदान इण सुधार आदोलण रै विचै ई आपरी कवितावा लेय'र पूगा. सुधार री आट रै सागै किणी मरती सी रूढिया माथै काटकणौ ई भेळौ हौ सो रेवतदान री कविता मे ओ ग्रैडौ सुधारू विद्रौ रौ भाव की दिना चालतौ रह्यौ. पण ज्यू ज्यू भणाई ववण रै सागै जात सू वारै देखण रौ ग्रौसर आयौ, ओ ई सुधार रौ सुर गाढौ अर आकरौ व्हेय'र विद्रौ मे रूपीजगौ.

रेवतदान री कविता समाज-सापेख क्राति री वात कैवण लागी जात रै घेरै सू निसरता ई राजस्थान रौ सगळौ साधारण जन समाज दीठ मे आयगौ. अर ज्यू ई दीठ इण समाज माथै पडी उणरा आपसी भेद अर सोसण री मार तरोतर ज्यादा आकरी वाणी नै अगेजणौ सरू कर दियौ रेवतदान री कविता मे विधस, नास अर समाज रा खास आरथिक सवधा नै धूळ भेळा करण री हेलौ चेतण लागौ

काई अठै ग्रेक छिण ढव'र उस्ताद री काव्य मानतावा रै सागै रेवतदान नै नी पजोख सका ? उस्ताद री कविता रै सागै ग्रेक 'दार्शनिक सिद्धात' के समाजू वदळाव रै विकास-क्रम रौ अध्यन हौ. रेवतदान री कविता मे वा विग्यानू धारा तौ नी ही पण समाज विसेस री ऊच-नीच माथै ठीक वा ई भावना कांम करै ही. रेवतदान रौ सीधौ हमलौ वरतमान समाजू ढाचै माथै हौ तौ उस्ताद इण हमलै रै सागै ई ग्रेक राजनीतू चेतना सू जुडियोडा हा. ईंया रेवतदान ई हौळै हौळै कविता रै आदोलनाऊ सुर नै लेय'र सक्रिय राजनीती मे पूगा. आजादी रै पछै जनतत्री-समाजू न्याव री धारणा सू जुडगा राजनीतू

चुणावां मे लगोलग भाग लेवता रह्या अर हर टेम या री कविता ग्रामीण-समाज री राजनीती अर मिनख रै सोसण सामी जू झती रह्यी रेवतदान रौ निरभीक व्हेणौ कविता नै मदद दी के कविता री निरभीकता वा रै आडी आई—औ कैवणौ मुसकिल व्हैला पण औ साच है के वा रौ निरभीक मानखौ राजस्थानी कविता नै अेक नुवौ ई बवेज दियौ अर नुवौं ई जोम

इण अबखाई माथै ई कदैई सोचणौ जाजमी व्हैला के रेवतदान डिंगळ कविता री जाताऊ परम्परा सू तौ निसरचा पण वा री कविता मे डिंगळ भासा री दिखावट रौ असर के विसयाऊ मंजूरी रौ अभाव क्यू रह्यौ ? वै क्यू वा छंदा वा भासाऊ उक्तिया के वीर पूजा रा मध्य जुगीन मोला सू आपरी कविता नै जोड नी सक्या वा किण ठौड उण परम्परा नै थोथी लखी ? स्यात इणरौ उथलौ समाजू विकास री कहाणी मे व्है के कवी री उण दीठ मे जिकौ मध्य जुग री दासता, क्लीवता अर मिनख री हीणता सू चिडगौ हौ अर सूरापण री अथाग अणू ताया नै नुवा हवाला मे साधारण मिनख रै हित मे बरतण ढूकौ खैर जिकौ की व्हौ, रेवतदान री कविता मे इक्का दुक्का प्रयोगा नै छोड र नी डिंगळ छंदा नी भासा प्रव्रति अर नी किणी दूजी भांत रौ असर देखण मे आवै. मोला री दींठ सू वां सगळ मध्य-जुगी हालता नै झझोडण मे ई आपरी ताकत लगा दी.

रेवतदांन री कविता करसा रै आथडणै सू जुडियोडी है. वा रा ई क्रिया-कळाप, वा रै ई आरथिक सोसण, वा रा ई वीखा अर उछावा रै बिचै कविता आपरी ठौड ली करसा री इण सस्कति रै नैडै रैवण सू रेवतदान सैंज ई लोकगीता कानी देख सक्या अर कदै कदै मरमाऊ विसया नै लेय र वै लोक गीता री गू ज रा गीत ई गाया, इणभात अेकानी चेतावण अर बकारण रौ सुर हौ तौ दूजै पसवाडै लोक कविता रै अनुराग अर फूटरापै री भावना सू रचिया-पचिया गीत ई वारी रचनावा मे आया. रेवतदान आपरी आ दोनू ई भात री कवितावा रै कारण मच माथै ई अेक लाबै अरसै ताई सफळ कवी मानीजता रह्या. रेवतदान रौ मच पाठ ई सुरीळै गळै रौ नी हौ, कैंवा के अेक सादवूदौ काव्य पाठ ई हौ जोम री वांणी के छंदा रै वजन सागै पाठ करण री लकब मे ई वां री सामरथ ही 'अेक जमानै मे जद मुकुल, सत्यप्रकास, गजानन वरमा इत्याद आपरा कठा सू वाहवाही लूटै हा, वा ई कवी सम्मेलना मे रेवतदान आपरा सीधा कविता पाठा सू श्रोतावा नै वाध लेवता रेवतदान रौ गळौ कदैई सातरौ सुघड नी रह्यौ. काव्य पाठ री आ आट डिंगळ रै कविता पाठ सू सान्यारी ही.

रेवतदान स्यात बीस-बाईस बरसा ताई कवी-सम्मेलना मे आपरी कवितावा रै जरियै सू धाक जमाई राखण मे कामयाब रह्या. पण वा री कवितावा रौ पैलौ सग्रै इण वगत रै निसरचा पछै ई छप सक्यौ कविता लिखणै अर उणरै मु डागै आवणै रौ जरियौ कवी सम्मेलन ई रह्यौ. नतीजन रेवतदान री कवितावा मे वाचण श्रवण रा गुणा री प्रमुखता आज ई देखण मे आवै. म्हैं इण नै मजूरण नै त्यार कोनी के कोई कवी के कविता इण सारू गाढी अर सांतरी नी है क्यू के वा मच माथै सफळ है. मंच री कवितावा नै इण

भात तिचकावरण री मतलब व्हैला के आपा राजस्थानी रै उण काटै रै दौर नै के सांच नै तिचकावणौ चावा जद कविया नै आपरा पाठक हाथै आवणौ मुसकिल हौ छपण छपावण रा साधन गुडै नी व्हैण सू वारै कनै दूजौ रस्तौ ई काई हौ ? मच सू श्रोतावा नै अर पोथ्यां सू पाठकां नै काव्य सवेदन पूगावण री रुची किण कवी मे नी व्हेई ? जद छपावण रा साधन नी रै बरोबर हा तौ उण वगत कवी-सम्मेलना री कवितावा री आपरी मदद ही. अर आ मदद पठन-पाठन सू गुणाऊ रूप रै कारण घणी न्यारी व्है, अैडौ मानणौ दोरौ व्हैला. कविता नै छपावण री सुविधा अर सुख तौ घणा कविया नै सैज ई मिळ सकै हो पण हजारा श्रोतावा रै सामी आपरी कवितावा रै बूतै ऊभौ रैवणौ अेक न्यारी अर वत्ती दमदारी मागै हौ. सो कारोमोरौ इण सारू के कोई कविता किणी वगत मच माथै पढीजी, हळकी है अर वै सगळी कवितावा ई माथै बावीज सकै जिकी छापै रै जरियै पाठका ताई पूगती करती रह्यी.

कवी सम्मेलना रै मच री दुहाई रै सागै म्हैं सत्यप्रकाश जोसी नै समझण री कोसिस सरू कर सकू. सत्यप्रकास राजस्थानी मे कवितावा लिखण सू पैली राजस्थान रा आगली पात रा हिन्दी कविया में आपरी ठौड वणाय ली ही दूजा कविया री भांत हिन्दी कविता सत्यप्रकास सारू काव्याभ्यास तक ई सीमित नी ही. वानै हिन्दी कवी रै रूप में ख्यात हासिल ही इण भासा विसेस में जमिया पछै ई वै राजस्थानी कविता मे आया यू सत्यप्रकास रौ जलम, लालन-पालन अर भणाई जोधपुर सैर मे व्ही राजस्थानी रै जिण भासाऊ रूप सू वा रौ परिचै हौ, वा ही अेक सैर मे बोलीजण आळी राजस्थानी भासा जिण माथै सिक्षा रै वातावरण सू हिन्दी रौ खासौ थकौ असर पड चुक्यौ हौ उण सू टकसाळी आटा निसरगी ही जिकी गाव रा कविया नै सोरैसास ई हासिल व्है जाती पछै क्यू के वै हिन्दी मे आपरी ठौड वणाली ही सो पाछा राजस्थानी रै सभाव मे आवण सारू सत्यप्रकास नै की सैज कोसिस करणौ लाजमी व्हैगौ. अैडी कोसिसा के भासाऊ रूप नै अपडण री सिलसिलौ सत्य प्रकास री सरुपोत री राजस्थानी कवितावा मे मिळै. पण हौळै हौळै वा री कवितावा राजस्थानी भासा रा संस्कार अगेज लिया अर वै राजस्थानी रै सारू ई सैज व्हैगा.

सत्य प्रकास री राजस्थानी कविनावा विसया नै केई स्तरा माथै परसती चालै. वा री अेक खास प्रव्रति सैज भासाऊ रुझाण री है वै राजस्थानी मे फुटकर गीता सूं लेय'र गीताऊ कथावा. करसा-मजूरा नै विडदावण सू लेय'र मनगता री झीणी आटां ताई पूगण री कोसिस करी. मच रै सारू ई जम'र लिखता रह्या अर पाठका सारू ई. सत्यप्रकास रै सारू मच अर श्रोतावा सारू कविता रौ रूप अेक रह्यौ अर पोथ्या अर पाठका सारू दूजौ. 'राधा' जैडौ काव्य प्रयोग साच मे कवी सम्मेलणा री कलपना सू आगै री वात ही छदा री न्यारी न्यारी भांता मे जावण री कोसिस ई वै लगोतार करता रह्या, ईया तौ सगळा कविया ई कैयौ है के वै ससार रा की कविया नै जाणिया, समझिया, पढिया के वा रै बावत किणी सू सुणियौ है पण सत्यप्रकास रै पठन-पाठन री ढाळौ न्यारौ है. वै खूब पढता रह्या अर उण नै आत्मासात करण री कोसिसां लगोतार करता

रह्या. जे की विम्बा वा नै असर मे लिया तौ वै राजस्थांनी कविता मे वानै सजा'रउण कवी रै छाया-असर नै मजूर करचौ अेडी कवितावा अनवाद सारू काम मे नी लिरीजी, वा नै सत्यप्रकास आपरै ढाळै ढाळ र सामी लाया.

सत्यप्रकास री भासाऊ प्रव्रति मे लोकगीता अर लोक कविता री पदावळी खासी थकी काम मे आयोडी है घणासारा लोकगीतां रा 'मोटिप-स' ई न्यारी न्यारी कवितावा मे आपरा सदरभा सागै आया है घणा सारा गीत अेडौ अदाज देवै के जांणै वै लोकगीता रौ ई कोई दूजौ रूप है पण अठै कवी री उण कोसिस नै देखणौ लाजमी व्हैला जठै वौ राजस्थानी री लोक गीताऊ पदावळी नै खास सयोजन रै सागै अर अेकदम दूजै हवालै मे वरती है. सत्यप्रकास आपरी कविता मे वा रूढोक्तिया सूं प्रेरणा नी ली जिकी राजस्थानी डिंगळ काव्य, सत काव्य के दोहा रै निबधन मे काम आवै ही. वा राजस्थान री अेक सैं जोडै चालण आळी काव्य-प्रक्रिया (लोक गीत-लोक कविता) नै आपरी कविता रै सारू चुणी. इण भासाऊ सयोजन मे हौळै हौळै वा नै अेक सभाविकता हासिल व्हेगी अर वा री कविता री रग ई न्यारी भांत सूं निखरण लागी 'राधा' मे काम मे आयोडी लोकगीता सूं लियोडी सबदावली अर मोटिफ्स' जठै 'राधा' नै राजस्थांनीपण सूं तिरिया मिरिया करगी—उठै न्यारी न्यारी कवितावा रौ निखार अेक जोगौ प्रयोग व्हेय'र आपा रै सामी आयौ.

राजस्थानी भासा री कविता रै सारू के दूजी किणी साहितिक विधा सारू साहितकार नै आपरी भासा सोधणी पडै सोधण सू म्हारौ मतलब औ है के मातभासा व्हेण सू ई कोई भासा साहित के कविता री भासा नी व्हे जावै मातभासा नै साहित री भासा बणण सारू अेक लावी जात्रा तै करणी पडै. सबदा, ध्वनिया अर वा रा सकेताऊ अरथा नै हासिल करण सारू की बरसा री अर सातरा साहितकारा री जरुत पडै. हिन्दी साहित री 'राणी केतकी री कहाणी' सू लेय'र आज ताई री कहाणी जात्रा सू हिन्दी भासा रौ रूप बण सक्यौ आ ई बगाली, गुजराती अर मराठी री हालत है ससार री सगळी मातभासावा नै प्रिंटिंग प्रेस मे आवण रै सागै ई अैंडी जात्रावा सरू करणी पडी राजस्थान नै ई इण जात्रा मे सगळा पडावा सूं निसरणौ पडही सुविधा स्यात इत्ती सी क मिळ सकै आ पड़ावा रै विचै आतरौ कम व्है आपां साव थोडै बगत मे आपा री जात्रा पूरी कर लेवा पण आ हालता सूं छिळ र नीं निसर सकां के आ नै फलाग नी सका औ बदळाव के विकास रौ स्यात अेक नेम है भासा री के यू कंवा साहितिक भासा रै सस्कार ताई पूगण मे आपा नै जित्ती भात रा भासा प्रयोग मिळै—वै अेक नुवौ डाईमेन्सन देवण मे सफळ व्है सत्यप्रकास रा औ काव्य प्रयोगा री आ प्रव्रति आपा नै थोड़ै घणै बगत मे अेक नुवौं अदाज दे सकैली

लोकगीता री सारीसी प्रेरणा लेय र गजानन वरमा री कवितावा मच माथै सफळता हासिल करी. गजानन रौ टावरपणौ रतनगढ मे बीत्यौ. ऊची सिक्षा रा औसर वा नै हाथ नी आया अर आ तौ नी कैय सका के हिन्दी कविता सू वा रौ परिचै नी व्हियौ, पण वा री कवितावा सूं साफ लखावै के वा री कवितावा री सरूआत मे उण बगत री हिन्दी कवितावा रै किणी अदाज रौ अतौ-पतौ नी मिळै गजानन रौ कविताऊ उठाव सीधौ लोक-

गीता री मनोभोम माथै व्हियो पण सत्यप्रकास अर गजानन री कविता मे अेक मूळ भेद नै समझणो लाजमी लागै सत्यप्रकास लोकगीत अर लोक कविता री सबदावळी नै नुवा सदरभा मे काम ली अर लोकगीता रै पद्याऊ सगीत री अवखाई नै न्यारी रैवण दी पण गजानन लोकगीता री सबदावळी अर मोटिफ्स रै सागै ई वारी लय अर सगीत नै ई सागै लेवण री कोसिस करी. गजानन इण सारू ई गावण री अेक प्रक्रिया नै लेय'र कवी मच माथै आया—सत्यप्रकास लोकगीता री धुना सू आगा रह्या. गजानन री कविता रो गठण आपरै संगीताऊ सभाव रै कारण अेकदम न्यारो सरूप लियोडो है. वा रा पदा री व्यवस्था, वा रा गीता मे टेर री प्रवृति, ओळ्या माथै सारीसो वजन अर काव्योक्तिया नै अेक ई ओळी मे कैवता जावण री आट सगीताऊ अनुकरण सारू ज्यादा माफिक है. लोकगीता मे काम आयोडी सबदावळी अर धुना नै इण तराजै देख'र औ निरणै लेवणो खतरनाक व्हैला के गजानन लोकगीता रा रचारा है क्यू के लोकगीत साचमाच मे अेक मिनख री रचणा नी व्है. अेक मिनख री रचणा नी व्हेण सू वारी पद्याऊ अर अरथाऊ मरजादा अर काम आयोडा सबदा री खासियता ई अेकदम न्यारी व्है. उण मे अैडी कोसिस भलाई दीखती व्हौ पण वा लोक गीत री ठेठ आट सू न्यारी सत्ता है औ कदैई सभव नी व्हैलो के गजानन री कविता समाज मे लोकगीता मे पाणी री भात रळ-भिळ जावै.

गजानन री कविता में जद म्हैं सगीत तत्व री चरचा करू तौ म्हनै उस्ताद रै सगीतात्मक प्रयोगा री चरचा ई चेत आवै आ अेक अजीब सी वात लागै के उस्ताद री विता समूही गीता सारू जैडी सधी-वधी अर सयोजित सावित व्है, गजानन रो कविता लोकगीता री ध्वन्याऊ विसेसता लिया सातर ई आपरी विसयाऊ वस्तु स्थिति रै कारण समूही गीता री वजाय अेकल गीत ई सावळ सजती लागै. म्हैं इणनै गजानन री आपरी खासियत मानू उणमे कठै न कठै कवी रौ 'पैलो पुरुस' (व्याकरणाऊ) ठावो व्हेय'र सामी आवै, जिको समूही गीता री मायली सफळता मे घादो घाळै ईंया सैज रूप मे गजानन री कवितावा नै सुणण सू लागै के उणरा गीता री लय धुन अर वजन रो बटवारो जाणै अैडो है के समूही रूप मे गाईज सकै पण जे आपा आ गीता री ओळ्या रै अरथ मे जावण लागा तौ वै अेक सोच्योडी वूझ्योडी वात के 'पैलै पुरुस' री उक्तिया मे उथलीजता लागै

गजानन री हरेक कविता मे अेक के दो पदा मे हरमेस समाजू विसगती माथै रीस भरियोडो हमलो व्है. आ वै सैंज रूप सू परिवारू चित्रण करता करता समाजू वीखा रो उणी रग मे वरणन कर र अेक दूजै अरथ नै हासिल करण री कोसिस करी है औ वारी समाजू चेतना अर राजनीतू विचार क्रम रो अेक तातो है, जिको वारी कविता मे सोध्यां अवस लाध जावै.

इण मजूर-किसांन लाल सूरज, ठगण आळा इत्याद री चरचा रै कारण ई लोक-गीता सू औ गीत न्यारा व्हेण लागै. ईया गजानन लोक कवितावा री प्रेरणा सू वारह-मासा' लिख्यो, जिणमे अेक नायक-नायिका रै रुताऊ क्रिया काळापा नै अेक वरस रै क्रमाऊ असर सू जोडचा. 'वारहमासा' जैडी परम्परा आपा नै राजस्थान रै सास्तर सम्मत काव्य

अर लोक काव्य दोना में लाधै गजानन लोक काव्य मे आयौडा मोटिफ्स' नै आपरै काव्य रूप मे सजावण री |कोसिस करी. गजानन वै कवितावा न्यारी है जिका ब्याव जैड़ा अनुस्ठाना सू लाग राखै गजानन रौ स्यात औ ई विचार रह्यौ है के आधुनिक ब्याव रा ओसरा माथै अब जिण भात पुराणी परम्परावा नै नुवै रूप मे पाछौ थरपीज रह्यौ है—खास कर खावता-पीवता घरा मे—वा रै सागै ई उणरी अै सस्कारू कवितावा ई गाढी प्रचार में आवैला आपा नै आवण आळी बगत ई बतावैला के ग्रामोफोन रेकार्ड्स अर दूजा जरिया सू प्रचार पावण आळा अै गीत काई खुद ई कणाई बिना प्रचार रै गाईजैला गवाईजैला के नी ? लोकगीता री हालत मे स्यात आ जाणकारी आवण आळा वरसा मे अेक तै अनभव दे सकैली.

गजानन री कवितावा रौ सबघ ज्यू ज्यू सगीत रै सागै वधतौ गयौ. वा री सगळी कोसिस ई अैडा विसया रै कानी मुडगी जिका नै सगीत री जरुत व्है सकती ही गजानन री कोसिसा आ दो खास कळावा... सगीत अर कविता रै विचै अधर झूलै इण ठौड गजानन जैडै कवी नै निरणौ लेवणौ ई पडैला के सेवट वौ कठी नै पूगणौ चावै ?

कल्याण सिंघ राजावत री कविता मे ई आपा नै कवी-सम्मेलना री सफळता अर गेय रूप री अेक सैज धारा मिळै पण वा री कविता रौ रुझाण के वा री प्रवृत्ति स्यात हाल ताई रा सगळा कविया सू न्यारी है कल्याणसिंघ नागौर जिलै रै चितावा गाव रा रैवासी है अर वा नै सरू पोत मे भणण रा औसर ल्हौडा कस्वा मे हाथ आया—मौलासर, कुचामण, डीडवाणा. आ रै पछै जोधपुर अर जैपुर जैडा सैर. कालेज ताई पूगण सू पैली ई स्यात वै कवितावा री सरूआत कर ली ही, कल्याणसिंघ रौ खुद रौ मानणौ है के 'सगत' अर 'रामलीला' जैडा प्रकरण वा नै कविता कानी प्रेरित करचा. औ तथ घणकरी हद ताई वा री काव्य प्रेरणा री वस्तुस्थिति मे सई लागै कल्याणसिंघ री कवितावा रौ विकासक्रम कवी सम्मेलना मे मिळण आळी सफळता अर उण रै परिणाम रूप विसया नै लगोतार हासिल करता जावण मे भेळौ है प्रीत रा गीत अर राजनीतू जीवण री विडम्बना माथै व्यगाऊ सटीड आ दो वस्तु स्थितिया रै विचै वा री घणकरी कवितावा चालै.

कल्याणसिंघ री कवितावा मे प्रीत रौ सरूप अेक थिर के टिकाऊ भाव-भगिमा लियोडौ है सपनौ, आसू, नीद, उणीदी, आख, चाद, तारा, रात, बेल, फूल, सौरभ, मोर, कोयल, हस, भवरा, निजरा री जुहार, मनवार, मीठा गीत, मन री उळझी बाता सास री सुगन, घूमर, लाल गुलाल, बादळा, पिणघट अर आई तथ्या रै सागै कठै ई रूढ तौ कठैई नुवा बिम्बा रै सागै प्रीत री कथा चालै. फिर घिर र आ ई तथ्या रै आवण सू म्हैं थिर भगिमा के लाक री बात करू. प्रीत रा अै भाव प्रेरक उपादान आपा री काव्य-मैली रै जमा खजानै सू कविया नै सैज ई हाथै आय जावै. रेवतदान री कवितावा मे जिण भात करसणी कामा रा उपादान अेक रै माथै अेक आया जावै ठीक ठीक वीया ई कल्याणसिंघ री कविता मे प्रीत रा तीर अेक तै तरकस सू निसरै. हा रेवतदान रा उपादान तौ करसणी काम सू सीधा कविता मे पूगै, पण कल्याणसिंघ रा उपादान काव्य परम्परा सू वारै हाथा

ग्रावै तद कल्याणसिंघ री सफळता कुण सी कविताऊ सयोजना मे है ? वा है वारै काम लियोडा सबदा री ग्रनुकरणाऊ ध्वनिया मे. सवदा रा जिका 'लच्छा' वणता जावै वै ग्ररथ सू कठैई ज्यादा, ग्रेक भ्रणकार रौ भाव जळमावै जिकौ पोछडी ग्रेक सागोपाग ताव छोडण मे समरथ व्है. म्हनै लागै सागोपाग कवितावा रै रूप मे कल्याणसिंघ री 'ग्राई तौ हुवैली हिचकी' ग्रर 'फूल फूल रौ मोल' नै चुण सका ग्रा दो कवितावा रौ गठण निस्चै ई ग्रेक भाव-प्रेरक गत मे है, कविता जिण सैज, सोरै ग्रर सभाविक भावोच्छवासा नै पोवती चालै ग्रर जिण ढाळै सवदा री ध्वनिया रौ ऊहाफोह विगसै—वौ ई काव्य गुण है कल्याणसिंघ रौ

कल्याणसिंघ रौ सभाव ग्रन्तरमुखी है—ग्रापरै नीजू जीवण मे ग्रापरै जीवण री जरुता मे ई वौ ई समतळ वहाव के मधरी-हळती रफतार रौ भाव लावै. राजनीतू व्यंग री कवितावा में कल्याणसिंघ रौ सभाव रमतौ सो नी लागै. वौ सवदा रै ग्रन्तर-विरोधा सू व्यग नै सिरजै तौ है—पण उणरौ मोल दैनिक ग्रखबारा रै व्यग सू ऊचौ नी ऊठै. काठौ समकालीनता रौ तथ उणमे सिरै रैवै कल्याणसिंघ री कवितावा नै वारै विकासक्रम मे पसारा तौ वारै जरियै जीवण री भात भातीली गता रौ ग्रदाज तौ ग्रवस मिळै पण के तौ वांरा विसया रौ नैडास के वारौ खुद रै बीचलौ फरक ई दीखण लागै कवी वै ग्रापरै कविताऊ रूप रै सागै लागै के विसै-वस्तु री तलास हर वगत रैवै कल्याणसिंघ ग्रापरी कविता मे जित्ता सवळा ग्रर सभाविक है वा गै कविता पाठ रौ तरीकौ ई उत्तौ ई सभाविक है उणमे पाठ ग्रर संगीत री ग्रैडी बुणगट है जिकी नी तौ कोरी कविताऊ पाठ रै तैत ई कैईज सकै ग्रर नी उणनै गजानन वरमा री गळाई संगीत री गत सू ई जोड सका

ग्रर पोछडी, ग्रापा रा ग्राठ कविया मे सू लारै रह्या कन्हैयालाल सेठिया सेठिया रौ जीवण ग्रेक व्यापारी परिवार मे वीत रह्यौ है. ग्रौ परिवार सुजाणगढ रौ है ग्रर वारै ग्रापरै छेत्र री भासा रौ ग्रसर वा री कविता माथै साफ लखावै सेठिया री राजस्थानी कवितावा जिण जोख री है, ठीक उण ई जोख री वारी हिन्दी कवितावा ई है. वीया राजस्थानी रा साव थोडा कवी इण बात रा साखी है के वा री दोनू भासावा री कवितावा ग्रेक ततब री व्है. सत्यप्रकास मे ग्रवस ग्रौ गुण साप्रत सामी दीखै

कन्हैयालाल सेठिया री कविता रौ महत भावुक स्तर माथै सवदा के कलपनावा रै विचै उपनण ग्राळी विरोवाऊ के विसगताऊ लीका मे सामल दीखै ग्रौ विरोवाभास कणा वस्तु तथ्या रै सकेत माथै रैवै कणा समाजू स्तरा माथै. कणा सवदा रा विलोम ग्ररथा माथै रैवै तौ कणा जीवण मोला री कथणी माथै सेठिया री सगळी टाळवी कवितावा मे विरोव उपनावण ग्राळा चमतकारा रौ फूठरापौ लावै.

जे सेठिया नै कैवणौ है के जमीन रौ ग्रसली घणी कुण है तौ वै वा सगळा कामा री विगसतिया नै कविता री बुणगट मे लावैला जिण सू ग्रा ठा पडै के हाड-मास-चाम नै गळा र करमण करण ग्राळौ जमीन रौ घणी है के मद पीवणियौ, जुलमी घणी जमीन रौ घणी है. पडूतर इण विसगती मे ई मौजूद है. इणी भांत 'वटाऊ चाल्यां मजला मिळसी'—जैड़ी कवितावां मे ई ग्रेक विरोघाभास है—चालण मे रफतार रौ भाव है तौ मजल में ग्रेक थिर

ठौड रौ कठपुतळया ई कठपुतळया रौ खेल देखै अेक चित्राऊ विसगती अरथ सकेत इणी विसंगती रै जरियै कठैई अन्योक्त रूप मे दूजी ठौड इणी भांत जद ससार रूपी पीजरै मे चिडिया री वात आवै तौ पीजरौ अैडौ जिणरौ बधाव अकास अर धरती. उणमे दरवाजौ नी सै की मिळा र औ पीजरौ नी, पीजरै रै रूप मे दूजौ की. पूरी कविता मे अरथ सारू आ ई विसगतिया रै विचै कायम व्हेतौ संतोल. इणी कविता मे 'जीव पखेरू' तौ 'मौत-मिनकडी' 'जीवण अर मिरतु' 'पखेरू अर मिनकी' भख अर भाखी सगळी भात सू विलोम हालता रौ चित्राम

सेठिया री आ ई मूल प्रकृति 'पातळ अर पीथळ' जैडी कथाऊ कवितावा मे ई लाघ लावै, अेकानी उण र ाजसी ठाठ रौ संकेत जिकौ राणा नै अेक राजा रै रूप मे सैज है, तौ दूजै कानी घास री रोटी अर घास रा बिछावणा झुकूं किया ? जद के गरब गुमेज सू म्हारै मांथै नै हमेस ऊचौ रैवणौ है, बुझू किया ? जद के म्है आजादी री ज्वाळा हू. हिमाळै रै बरफ रौ घरम जमणौ है तौ वौ पिघळै क्यू ? सूरज नै तपणौ है तौ उणनै सीतळ क्यू व्हैणौ पडैला—इत्याद मगळा ई कविताऊ आटा-बाटा मे विसगती के विरोधा-भास री अेक गत वै उपनावै. सेठिया री कविता मे औ सुर अेक मूळ प्रव्रत्ति रै रूप मे चालै के यू कैवा के वारौ कविताऊ चमतकार आ खासयिसा नै न्यारा-न्यारा रूपा में अगेज'र चालै.

जद कदै इण प्रव्रत्ति नै आपरै विस्तार अर रूप वैविध री तलास व्है तौ वा सवालू सकेता रौ रूप धारै. मतलब के सवाल रै सिरजण में कठै न कठै इणी भात रौ अरथाभास देवण री कोसिस करीजै. 'कुण गमग्या, कुण गमग्या ।' जैडी कविताऊ ओळया रै पडूतर मे आपा नै आ ई हालत मिळैला.

औ साच है के सेठिया री कवितावा आपरी इण खासियत रै कारण दूजा सगळा कविया सूं अेक न्यारौ भावावेग देवै कदै-कदै वारी कवितावा 'दरसण' री वाता रौ हळकौ भाळौ पटकती दीखै पण अै दरसण रा साच उपदेसा री थूळ आंटां सूं किता पर-बारै निकळ सकै—सोचण नै औ धादौ फेरू ई लारै रैय जावै. जीवण द्रस्टि रै रूप मे सेठिया री कवितावा मे अेक तारतम अवस है पण उण दीठ रै सक्रिय पख में यथा-तथ री मजूरी रौ भाव ई लाधै समाज री विसगत अर अन्याव हालतां रौ हल मिनखाऊ उदार दीठ-दीठाव मे सोधण री कोसिस ई साप्रत व्हेती लागै कवी सेठिया जद ओज अर सूरता री बात माथै जोर देवै तद ई कठै न कठै अेक समतळ के समदीठ रौ भाव वा मे झलकण लागै. वै थुडाव नै चितरावै जरूर है पण उण सू हाथै आवण आळा नतीजां रै बाबत अेक मून सामी आय जावै.

अेक अेक कर र आठू कवियां रै बावत अेक अेक के दो दो खास वाता नै म्हारी दीठ सू समझ र म्है लिखी. म्हैं इण सग्रै री कवितावा अर कविया रा इन्टरव्यू (के आप कथी) ई सामी राख्या जठै म्हनै आसू छेडै व्हेणौ पड्यौ उठै परिपूंठ सारू म्हनै म्हारी ई मांनतावा रौ स्यारौ लेवणौ पड्यौ. म्हारै सामी खास सवाल औ कोनी हौ अर नी व्हेणौ

ई चाईजै हौ के कवी मे सिरै काई है के काई व्हेणौ चाईजै ? म्हनै (अेक मिनख नै) काई लाग्यौ अर कीकर लाग्यौ इणी हद ताई पूगण री कोसिस म्है करी म्हैं कविया री गळाई उण आजादी नै भोगणौ चावू जिकी वै कविता रचिया पछै पाठका अर आलोचका सू चावै

म्हारै लेख मे म्है हाल ताईं इण तथ नै इण सारू छोड दियौ है के पोछडी म्है उणनै म्हारै इण विवेचन रौ आधार बणावणौ चावू ला अर औ तथ है—कवी सम्मेलन रौ.

खुद कविया आपरै अनभवा सू तीन भात री वाता कथी है—पैली कवी सम्मेलन री कवितावा मे गैराई नी व्है. दूजी–कवी सम्मेलना राजस्थानी कवितावा नै श्रोतावा के जणै जणै लग पूगती करण में सातरी मदद दी इण सारू वा रौ महत है मचू कविता व्हेण रै पछै ई वा मे गैराई के कविताऊ सवेदना नी व्है—अैडी वात कैवणौ गलत व्हैला, तीजी–सन् '६० ताईं जिकी कवितावा मच माथै आई वा नै साहित रै इतियास मे ठौड मिळैला अर उणरै पछै मच अेक पडपच बणगौ जिकौ हळवै मनोरजन री हालत सू ऊचौ नी आयौ.

चन्द्रसिंघ अर नारायणसिंघ मच नै मजूरण मे असमरथ है उस्ताद मन व्हेता सातर-ई मच रा कवी नी बण सक्या सेठिया री कवितावा मच माथै ठीक वातावरण व्है तो जम सकै, पण वै मच माथै अमूमन नी आवै सत्यप्रकास, गजानन, रेवतदान अर कल्याणसिंघ मच रा चावा अर ठावा कवी है अर रह्या है

नारायणसिंघ रौ कैवणौ है के कविता अेक ऊडी कळा है. कविता नै चार्ज करणौ अवखौ काम है, हरेक रै वस रौ काम नी' मतलब के कविता रै हळकै-पतळै निभाव सू वानै सतोस नी मच री कविता मे ऊडी पूगण री गु जायस नी व्है चन्द्रसिंघ रौ साफ कैवणौ है के असल मे मच नै म्हैं हरमेस अेक हळकौ जरियौ मानतौ रह्यौ हू अमूमन मच माथै कवी लोग श्रोतावा री रुची रै मुजव हळकी-फुळकी रचनावा सुणाय र वाहवाही अर ताळर्या लूटण री चेस्टा करै.

सत्यप्रकास रौ कैवणौ है के वा दिना (सरूपोत मे) 'राजस्थानी कविता रौ छपण-छपावणौ रौ सिलसिलौ साव ई पोचौ....इण वास्तै कविता मच रै हिसाव सू ई लिखी जावती' सत्यप्रकास अेक वस्तुस्थिति कानी इसारौ कर र मच री कविता री वीत्योडी जरुत माथै जोर देवै. वारै मन मे अेक गाढी संका ई है 'कविता खाली सुणण-सुणावण री चीज कोनी—वा पाठक मागै इणरै आगै वै पाठक री परिभासा देवता कैवै के सही पाठक वो जिकौ खाली मन विलमावण या क्रीड़ा भाव सू नी, किणी सुथरी समझ रै पाण कविता पढणी समझणी चावै....' इण गंभीर पाठक री समझ रै सारू कविता रो धरम न्यारौ व्हैला उणमे की दूजा तत्वा रौ भेळ लाजमी व्हैला इणी भात दूजी ठौडा सत्यप्रकास मच री कविता नै लेय र 'लू ठी गळैवाजी री कला' अर 'सुरीलै ढग सू गाय र पेस कर सकै' इत्याद वाता ई कह्यी है पण अेक सातरी वात कानी अणचेत ई इसारौ करगा के मच री कविता दरवारी ठरकौ छोड र जनता रै विचै आई

कल्याणसिंघ रा मच रै बावत कह्योडा विचारा मे की धु धळास आयगी है—वा रौ अेक विचार तौ औ है के आ कित्ती हीरण बात है के अेक आदमी आपरी कविता नै पढ र सुणा क्यू नी सकै ? वै आई कैवै के 'बडी जमात नै आपरी वणा लेवै (वै) मच रा कवी है' वै रीस रै सागै ई कैवै के जिका 'कागजी मच माथै ई है, जिका कविता तौ लिखदी, आखर रा भाखर तौ खड़ा कर नाख्या पण भाखर चढ बोलण रौ पगा मे सत कोनी बपरायौ.' पण काईंठा किण चिंता मे वै औ ई जोड देवै के म्हैं म्हारी आदत मुजब कविता मचू वणावण री कोसिस नी करी. या म्हनै मच सू लगाव जरूर है—पण म्हैं मच रौ नी वण सक्यौ' स्यात कवी रै मन मे आ सका गाढी जडा मे जमाली है के मच री कविता व्हौ न व्हौ की घिरणा जोगी है के छप्योडी कविता सू विणी हदताईं माडी है

कविया रै विचारा री इण उहागोह मे औ सवाल सैज ई ऊठै के काईं हरेक मच री कविता नै हळकौ व्हेणौ ई है अर काईं छप'र पाठका रै गुडै पूगण आळी कविता नै भारी व्हेणौ ई पडैला ? काईं छपण आळी कवितावा सारू स्तर री चिन्ता नी करणी पडैली ? काईं वा हमेसा 'ऊडी' अर गभीर ई व्हैला ? कविता नी मच रै कारण ऊची व्है, नी नीची इणी भात कोरौ छपणौ ईं कविता रौ प्रमाण कोनीं हरेक देस मे कविता रै प्रेसण रा आपरा इतियास है. कठै कवितावां नै कवी खुद आपरी वाणी मे श्रोतावा नै सुणावै अर किणी देसा मे इण नै साव अनोखी रीत मानीजै. कठै कविता रौ पाठ तौ मजूर है पण उण नै गेय रूप देवणौ अेकदम नामंजूर. भारत रा न्यारा न्यारा प्राता मे स्यात अै ई हालता मिळ जावैला.

सो पैलौ सवाल तौ आपा खुद सू औ ई करा के कवी-सम्मेलण रै मच रौ अरथ काई है ? अेक जन-समूह मे कवी रौ कविता पाठ. पाठ री कित्ती ई भांता व्हे सकै पाठ करती वेळा निस्चै ई कवी नै श्रोतावा रै औसत मानसिक स्तर के सामूहिक मन नै बाधणौ पडै सो वा ई कविता मच रै काबिल जाणीजैला जिकी समूही मनोविग्यान रै इण सिद्धांत रै सैनरूप व्हैला. श्रोतावा रौ सगठण ई न्यारा न्यारा स्तरा रौ व्है सकै. गोस्ठी अेक सम्मेलण रौ ई ल्हौडौ रूप है आ बाता रै अलावा अेक खास बात है, वा है कविया रौ आपरी कवितावा रै जरियै सीधौ श्रोतावा रै सामी आवणौ श्रोतावा अर कविया रै विचै भावां रौ व्यापार श्रवण अर कथण रै जरियै व्हेणौ. अठै भासा रौ धरम जिकौ बोलण मे, ध्वनि मे भेळौ है इणरौ सीधौ सपरक व्हेणौ

अैडी हालत मे 'छपण' री प्रक्रिया रौ काईं अरथ है ? पत्रिका मे कविता छपै के कवितावा रौ सग्रै छपै अर छप'र काईं हासिल करै ? पाठक ई तौ. पाठक जिका रौ सीधौ सपरक कवी सू नी. वा रौ सपरक सीधौ कथ्योडा आखरा सू, छप्योडा आखरा रौ अरथ व्हैला के कविता रै सागै उण रौ लगाव वाचण रै जरियै सम्मेलन मे श्रवण (कांन अर मन) अर बाचण मे (दीठ अर मन) रौ सबध वणै. आ दोनू भात रा सबधा रै कारण कविता दो रूप धारै अर आ रूपा रौ आप आप रौ फूठरापौ है आ वात दूजी है के जीवण मोला के साहितिक मोला मे बगत रै सागै किण भांत री मांग सैजोर व्है. आधुनिक कविता

के आधुनिक कवी री सवेदन धीरै धीरै आत्म केन्द्री के साव नीजू व्हेतौ जावै है साव नीजू व्हेण गी उण हद ताई पूगण री कोसिस करीज रह्यी है के कविता मे सवाद री हालत ई व्है के नी, उणरौ समझीजणौ ई जरूरी है के नी कविता रा वा रा प्रयोग ग्रैंडा कित्ता ई मिनखाऊ सौन्दर्य भावना रा रहसा नै हासिल करण नै खपै कविता रौ ओ आधुनिक दौर मान लेवणौ चावै के कविता रौ पाठका रै सागै के जन-समाज रै सागै सवाद कोरौ छपण रै जरियै सू ई व्हे सकै. जद छपण री प्रक्रिया नै मजूर लेवै तौ कविता रा रूपा नै ई छपण री सीमावा मे वधणौ पडै भासा, उणरी लिपी, कविता री ओळी, उण रौ पद, उणरा विरांम, उणरौ उचारण, उणरौ मन मे ई पाठन के उचारित वाणी से पाठन इत्याद कित्ता ई नेमा रौ अचेतन रूप सू ई सचालण व्हेण लागै आधुनिक जुग मे आपा प्रिंटिंग नै 'मास मीडिया' माना, उणरा ई तौ आपरा अभिव्यक्ति-रूप वधियोडा है काई वै आपौ आप मे वधण नी है ?

पण प्रिंटिंग रौ मास मीडियौ काई मिनख रै विकास रौ छेलौ आयाम है ? काई आ कोसिस नी व्है के भासा के वाणी नै, नुवा विग्यानू साधना रै जरियै पाछौ कथाऊ अर श्रवणारू सवध दिरीजै ? काई उण वगत पाछौ कवी रै पाठ अर श्रोता रौ सवध नी चेत जावैला ? सो इण छपण री प्रक्रिया नै ई क्यू कविता रौ चरम मजूरा

भविस री कवितावा रौ काई रूप व्हैला ? ओ कैवणौ सभव कोनी पण ओ तै लागै के कोरौ छपणौ ई उण रै भविस रौ नियामक नी व्हैलौ ?

राजस्थान री कविता रै जिण काळ मे मच पोखीजतौ रह्यौ, वा उणरी ऐतियासिक जरुत ही. उण जिम्मेवारी नै आपा रा की कविया मान सेती निभाई. वै कविता रै सागै राजस्थानी भासा रै आथडणै नै हजारा लाखा लोगा ताई पूगतौ करचौ वै श्रोतावा सू सीख ई ली अर वा नै भुलावै राळण रौ चेतन करम ई करचौ आज जद छपण री वात सू ई कवी आदरीजण लागौ है तौ वै ई छपण-छपावण री चिन्ता मे है. वात कोरीमोरी अठै तक ई है अर रैवैली, के जरुता रै जरियै राजस्थानी खुद विगसै अर कविता रै जरियै आपरै वगत रौ साहितिक परिवेस अर जिम्मौ सभाळ सकै.

भरोसौ है तौ मिनख रै सारू कविता री जरुत माथै. कवी माथै किणी भात रै विसवास नै थोपण री जरुत ई कठै है ? जे विकास रौ ओ वस्तु साच प्रवळ नी व्है तौ काई इण मिनख के उण मिनख री प्रतिभा माथै साहित रौ धाकौ धिक सकैला ?

—उल्थौ : ते. सि. जोधा

परसंगां रै आंटै-उलांटै

• तेजसिंघ जोधा

अठी, इण अक, मंच खासी भली चरचा रौ विसै रह्यौ. उणरी हृदा-मदां, गत-विगत, इतियासू जरुत अर जरुत रै चौगिडदै केई कामू पख अर धाराऊ बाता उघडती व्ही, कथीजी. वै निरणाऊ नी जे निरणाऊ नै वीया ई अजोगी माना, तौ कैवा के पूरसल नी नी व्है सकै खुद कथणियां रै चाया सातर ई नी क्यू के मच लारै छूट्या हाल घणा दिन नी व्हिया. पछै इण बावत आपा रै दीठाव मे सावचेती सरू व्हिया तौ औरू ई कम, सो मच सीगै हाल आपा नै आपा री बात अर पख रा सुर-दीठ समचै साधण सारू वगत री जिकी छेती चाइजै, वा सज री नी. हाल तौ बधी मुट्ठी इत्तौ ई कथीज सकै, के म्है इण अबखाई रै पळेटौ देवण मे हा.

मच रै बाबत कविया रा न्यारा-न्यारा रुख अर खयाल तौ 'हेमाणी' रै धाराऊ दिना ई रह्या—जैडौ के अक सू लाग्यौ व्हैला—पण वै रुख अर खयाल, वा रौ आप आपरौ पख ई सामी राखै, अर राख सकै—ज्यादा सू ज्यादा वा री आपरी कविताऊ दीठ अर कवितावा समझण नै मदद दे सकै—क्यू के बगत रै जिण आटै-उळाटै वै झिल्योडा हा, उठै इत्ती ई सज आवतौ, के क्या रै ई अरथाऊ के निरथाऊ व्हेण रौ अदाज खुद उण कवी नै ई नुवी ठौड देवै, के अेडै छेडै रै इक्कै-दुक्कै दूजै नै—संमूदै कविताऊ दीठाव नै नी. अेडै मे मच नी तौ किणी रै सरू सू ई हळकौ समझ्या साहित सू बारै व्हे सकतौ, अर नी किणी रै विचै टाळ करचा टाळीज सकतौ. आपा नै मानणी पडैला के मच रौ महूत अर जरुत–पोछड़ी सरदातूट व्हेता व्हेता ई सई—नुवी कविता री आमद सू पैली सावठी सका समचै नी आयी. जे भूला नी, तौ सन् ६० रै अेडै-छेडै सू मंच रै जरियै फेरू कविया री अेक पात सामी आई—इण अक रौ अेक कवी कल्याण सिंघ राजावत उणी पांत सू है

'राजस्थानी-अेक' रै सम्पादकी मे मच माथै जिकौ रुख लिरीज्यौ, उण सू पैलीवार मच रै महत अर जरुत सीगै असरवार सका जलम लियौ. जिण दबाव मे आज आपा मच माथै विचारण नै हा, जे ढव'र अदाजा, तौ इण कथी बात रौ हूकारौ भरीजैला. उण सम्पादकी रौ गाढौ नकारू सुर–वडा वूढा रै मुजब नुगरौ सुर–जिण ढाळै मच री समूदी जात्रा माथै बाहर चढचौ—अठी, उणरौ नतीजौ साप्रत है.

मच इतियासू जरुत हौ, के नी हौ ? हौ, तौ क्यू अर किण हद ताई ? मच अर छापै री आपसी लागवाग अर रिस्तौ कैड़ौ काई है ?—निरवै अै सवाल तद 'राजस्थानी अेक' रै सम्पादक सारू महताऊ नी हा, जिण प्रव्रति रै वळू वौ ऊभौ हौ, इत्तौ भरोसौ उण 'नै जरूर हौ के मच उण प्रव्रति सारू महताऊ नी है. आगै, जिकौ रुख वौ मच बावत लियौ,

अब जे पाछौ उण माथै ई उण नै टीप देवण री कैंवा तौ वौ स्यात इत्तौ ई कैंवणौ चावैलौ— के वौ, वैंडौ रूख ई आपा रै दीठाव री इतियासू जरुत हौ

म्हारौ मकसद अठै मच री जरुत जीतण माथै नुवी कविता रौ झडौ गाडणौ नी, अर नी इण जीत नै नुवी कविता री उपलब्धी कैंवणौ है, है तौ सिरफ इत्तौ ई के वस्तु साच वरोवर सामी रैंवै, जिण सू अधपाधरा नतीजा नी भिळा मच री जरुत जीतणौ जे किणी ढाळै उपलब्धी है, तौ पछै समूदै कविताऊ दीठाव री—नुवी कविता रै सीगै तौ उण नै विवसता ई कथीज सकै—के देखौ लखणावायरी, आगै तौ पाठक घणा अर ऊपर सू औ मिजाज ।

'हेमाणी' रै धाराऊ दिना—वावजूद इण रै के मच री महत वरोवर वण्योड़ी रह्यौ—अेक महताऊ तथ आंपा री ध्यान अटकावैला के छापै रा व्हे जाणीजण आळा कविया री काम तौ मच माथै पूग्या विनां ई सजगौ, पण मच आळां रौ छापै मे आया विना नी वै मौडा-वैगा 'हेमाणी' रै दौर मे ईं छापै ढूकता व्हिया—भला मच नी छोड्यौ व्है. आज तौ जद आपा वां माथै वात करा तौ वा री करीव करीव सगळी कवितावा छापै मे है. क्यू ? छापै रा कवी अर कवितावा तौ इण हालत मे नी हा, के वा नै छापै लोळता ?

म्हारौ खयाल है अठी आपा नै जिण ढाळै मच री इतियासू जरुत प्रस्तावणी पडी है, उण सू मच अर छापौ अेक दूजै रा खासा भला विरोधू दीखण ढूका है, जद के जिण मच री चरचा आपा करां के जिण री इतियासू जरुत आपा कवितावा सीगै समझणी चावा वौ आपरै मूळ मे छापै रै जुग री उपज ई है अर फिर घिर र छापै सू अळगौ नी. औ साच मच री व्हे जाणीजण आळी कवितावा रा छद वध अर फॉर्म इत्याद देख्या संमचै जाणीज सकै

छापै री पूग सू पैली कविता वाचण श्रवण री आट माथै ही—सो वा छापै री पूग व्हेता ईं आपरौ नुवौ घरम झट अंगेज लेवती—सभव नी हौ अेक उथलधडौ सरू व्हियौ कविता रै जर्वान सू पानै ताईं पूगण रै बीचलौ इण उथलधड़ै, अर उथलधड़ै सू उपनी अवखाया रै हल रूप सगळी भारती भासावा मे न्यारै न्यारै वगत मच चेतन व्हियौ, अर आप आपरै अठै री गत-गुंजायस मुजब साहित सीगै ई—कठै कम तौ कठै थोड़ी ज्यादा—ढवतौ व्हियौ, जाणीज्यौ. कविया अैडी कवितावा लिखी, जिकी छापै री पूग सू ढळीजती ढाळा मे व्हेतां सातर ई समूही वाचण-श्रवण रा गुणा सू जुड्योडी ही. वां रौ भौ छापै मे ईं धिक जावतौ, अर मच माथै ई असल मे मच रै महताऊ रैंवण रौ औ दौर अैडी गत-गुंजायस रौ दौर हौ, के जोगा कविया नै नी आपरी कविताऊ दीठ गमावणी पडती, अर नी श्रोता समाज कविया सू कविता रै वारली माग करतौ जिण किणी भासा मे जदै कदै इण संतोल मच रह्यौ व्हैला, म्हारौ खयाल है जिका कविया रौ कविताऊ सभाव मच रै माफिक नी हौ, वा नै ईं वार-त्यूं हार मच माथै वैठता लाज नी आई व्हैला.

आपा रै अठै री समाजू, राजनीतू अर भासाऊ हालता ईं की अैडी रह्यी, के वै मच नै वरोवर साहित सीगै पोखीजती रैंवण री गुंजायसा दी विचै विचै सास तूट्यौ व्है तौ

भलाई कवियां री ई तूटी—मच आपरै कानी सू सैठी हो, झोला खाय खाय र ई सैठौ, अर चीढौ. वौ हरेक पीढी रण उडीक मे रैय सकतौ, रेवतौ के देखा किण पीढी रा कित्ता कवी उणरै जरियै साहित समचै पूगता, जाणीजता व्है अब आ वात कविया रै आप आपरै चूतै री ही के वै मच री इण सवळी गत नै साहित सीगै महताऊ व्हेण नै—रैवण नै—कित्ती आट गाठ सक्या

अठी वाचण-श्रवण रा गुणा री वात ई करीजी है. कविता रै सीगै, चालतै हाथ थोडा वा नै ई आट बांट लेवा.

वीया तौ क्यू के भासा रोजीना रै व्यौहार मे वोल-चाल री विसै ई बरोबर रैवै, सो उण मे वाचण श्रवण रा गुण तौ व्है ई. पण सागै री सागै आपा जाणा के औ, अैडौ रोजीनां रौ व्यौहार भासा नै माजनै बायरी करै. लिखारै नै जिण सैतोल भासा वरतणी पडै, उठै तौ औ व्यौहार अवखाई ढाळै ई जाणीजै. फेर जिकी भासावा मे छापै अर पाठका री सजोग पूरसल नी सज्योडी व्है, अर भासा रै नेमू व्यौहार मे ई औ वोलचाल रौ व्यौहार ई सै क्यू व्हियोडा व्है—मतलब के लिखारै सारू भासाऊ रूप हासिल करण री ई सैं सूं लू ठी जरियौ—उठै, उण पोचीवाडै मे लिखारै नै आज रै वगत कलम साभ्या राखण नै कित्तौ आफळणौ पडै—भुगत्या ई जाणीजै दूजै पासै, अैडी भासा गत मे जिकी भासा छापै मे आवणी सरू व्है, उण रै रव-ढव (स्ट्रेक्चर) अर समूदै चरित मे वाचण-श्रवण रा गुणा रौ इधकीचारौ मतौमतै ई व्हेणौ व्है इण ध्वन्याऊ आट नै की मानेता विदवान छेत्री भासा, के मात भासा रै गुण रूप ई कथै. जिकौ की व्हौ, आपा री भासाऊ गत ई इण सू न्यारी नी सो अेक हद माथै तौ छापै री व्हे जाणीजण आळी कवितावा मे ई वाचण-श्रवण रा गुण तौ रैवैला ई सवूतण सारू सीधी छापै री की जोगी काव्य क्रतिया सामी राख सका—जीया बादळी, राधा अर दुर्गादास.

'वादळी' री लोक काव्या जैडी निवेदू ढाळ अर छद, 'राधा' मे काम करती लोक-गीता री आटा, अर 'दुर्गादास' री ध्वन्याऊ भासा—आ तीनूं क्रतिया नै कठै न कठै सुर सेती वाच वाच र पढया ई ज्यादा असरदार सावित करै. आ सू आगै नुवी कवितावा लिरीज सकै, वाचण-श्रवण रा गुण वा मे ई लाध जावैला.

पण मच री कवितावा रा वाचण-श्रवण गुण, अर छापै री कवितावा मे लाध्योडा वाचण-श्रवण गुण न्यारा न्यारा है. छापै मे जिका लाधै, वै अळसेटै, भासा री सैज सभाव व्हेय'र—कवी रौ मकसद उठै वाचण-श्रवण रौ धरम अगेजणौ नी व्है, जद के मच माथै कविया रौ काम सादवूदौ, औ धरम अगेजण सू ई नी, इण नै उण हद ताईं अगेजण सू चालै, जिण हद के सैकड़ी लोग वां रै सुर समचै अपडीज्योडा रैवै. सो मच माथै कविता रै सरलाऊ व्हेण रौ खतरौ सासतौ व्है—मच री साहित सीगै जाणीजण आळी सातरी सू सातरी कविता नै उठा'र ई औ साच परखीज सकै—जीया के हिन्दी री पाठेती पोथ्यां मे छपी आपा री पद्य कथावा नै देख'र दसवी ताईं रा भणेती टावरा नै कदैई औ नी लागतौ व्हैला—केवै, वा सारू ई नी लिखीजी है

मच री माग अर जरुत जिकां री कविता साहित सीगै समचै ली, अर बरोबर निभाई के निभावती लागै, वां मे खासतौर सू दोय नाव म्हारी दीठ चढै —अेक तौ रेवतदान चारण अर दूजौ कन्हैयालाल सेठिया. आ री कवितावा अैडी कम ई लाधैली जिकी 'विलौ-द वेल्ट' व्है, जद के दूजा कविया—जीया सत्यप्रकास जोसी, गजनन वरमा अर कल्याण सिंघ राजावत इत्याद—मचाऊ माग री छडी बिछडी खासी कवितावा भला साहित सीगै ई महताऊ लिख दी व्हौ अर वै वै कवितावा भलां साहित नै आगै री जमी ईं क्यू नी देवती व्हौ—विचै विचै रागोळयां अर लूरा ईं सैंज नी काढी है—फेर वै मच माथै ई भला रेवतदान चारण अर कन्हैयालाल सेठिया विचै वेसी चावा रह्या व्हौ—अर वेसी देस दिसावर क्यू नी देख्या व्हौ. 'हेमांणी' रै दौर मे समूही वाचण-श्रवण आळी कवितावा रौ महत तौ नी खिड्यौ, पण साहित सीगै आं नै साध्या गखणौ तरोतर मुस्किल व्हिया गियौ—पितळण रा खतरा वधता गिया. कवियां रौ मान सनमान ई पैली करता पोचौ पडगौ. पैली तौ मच रौ सफळ कवी व्हेणौ ईं मांन दिरावण नै पूरसल हौ, पण पछैता दिना जोगी महताऊ कवितावा लिख्या ईं वैंडौ आदरीजणौ सभव नी रह्यौ. आ कविया रै विचै विचै फाल चूकण रौ अेक कारण इण ढाळै ई देखीज सकै.

मच रै सागै आपा रै अठै मेघराज मुकुल री चरचा हमेसा सू है, अर लागै के आगै ई हवालै रूप बरोबर चालती रैवैला पकायत मुकुल मच रा मानेता अर चावा कवी रह्या है—इण मे सक नी. वा री 'सेनाणी' कविता राजस्थानी मे पद्य कथावा नै ढोळै वैठाई—अेक महताऊ कांम करचौ—हवालै रूप आज ई पाटवी जांणीजै. पण म्हनै लागै वारी कवितावां मे वौ सैंतोल नी जिकौ समूही वाचण श्रवण गे समाजू माग नै कविता रै पख सू साहित मे रूपावै. खुद 'सेनांणी' करता उणरै ढाळै लिखीजी की दूजा कविया री पद्य कथावा आपरै कविताऊ वधेज मे ज्यादा समरथ अर सैंठी है कविता री दीठ सू देखा तौ मच री सरदातूट व्हेती हालत रै दिनां पूग्यै पछेतै कवी कल्याण सिंघ राजावत रौ महत मुकुल करता कठै ई ज्यादा है, जद के मुकुल जेड़ै मान सनमान रौ राजावत नै कदै सपनौ ईं नी आयौ व्हैला

छापै रै पख मे, अठै सीधौ विसै नी व्हेण सू ज्यादा ऊडौ जावणौ वाजिव नी व्हैला, क्यू के अैडौ करचा वात थोड़ी न्यारी निरवाळी दीखण ढूकैला. छापौ मिनख रै विकास रौ छेलौ आयाम है के नी, म्हारौ खयाल है सवाल औ महताऊ नी—हाल इत्तौ ई—के वौ है साप्रत फूल रै फूटरापै सू इण सारू तौ नी बचीज सकै, के वौ सेवट तौ कुमळावैला ई हाल तौ छापै रै साच नै घणै सू घणै ओळखण-अगेजण मे ईं आपारी जीवारी है. आपा नै देखणौ पडैला के वीया तौ उण री पूग सगळा ई कलाऊ जरिया माथै खासौ असर न्हाख्यौ व्हैला, पण आपा रै जरियै माथै—जिकौ के भासा सू जुडियोडी है—उण रौ असर कित्तौ गाढौ, ऊडौ अर अणमाप है जठै तांई आपां रै कलाऊ जरियै री जरुत छापै नै छेली हद तांई जीत र डख्यारतौ नी कर देवैला, के इण रौ पूरमपूरौ अेवजू आपां रै जुग गुडै नी

पूगैला—छापी परोख्या ई सरैला अर इण रै पूरमपूरै अेवजू री कलपना हाल तौ म्हारै खयाल मे की अैडी ई है जैडी के चौथौ महाजुद्ध लाख्या भाटा सू व्हैला.

पाछो दोवडावू —जैडी के फिलाल आपारी अवखाई है—मंच री इतियासू जरुत तद ताईं प्रस्ताईजौ प्रस्ताईजौ भला ई, समचै नी आटीजैला—जद ताईं के आपां उणरी पूठ मे ऊभै छापै रै साच सू लुकता, छिळता रैवांला.

२

'ह्वेमाणी' रा कवियां में सूं कविता कांनी पैलमपोत आवण आळा कवी है—उस्ताद. चन्द्र सिंघ वारै दस-पनरा बरसा पछै आया. उस्ताद री कविता उण ठौड़ अर मोड सू सरू व्ही, जठै राजस्थानी कविता मे समाज सुधार रौ सुर मौळौ पडगौ हौ, अर मौळी पड़ राजनीतू चेतना मे रूपीजै ही. वा री सरूपोत री कवितावा मे जिकी चीमटौ वजावती सी अकल बतावण आळी आट अर 'वीटा गोळ' करती टोळ भासा है, वा इण रूपीजती पूठ नै परतख करैला.

वीया तौ तद समाज मे आई समाज सुधार री प्रव्रति रै पूठ मे राजनीती री ई हाथ हौ —की इण ढाळै के आपां रौ भणीजतौ गुणीजतौ मानखौ राजनीती रै वावत माडौ-मौळौ वां दिना ई सावचेत व्हेणौ सरू व्हियौ—पण क्यू के सत्ता अर राजनीती रै समचै गुलामी रै कारण हाथ पग पटकण री ऊठ अर औसर नी हा—सो मन मे हीण व्हेतौ, पाईजतौ अठी उलाळू व्हियौ. इण हीणता अर पाईजणै री औद समाज सुधार रै नावै मावौमाव जात अर धरमा रा सीगा नुवाद्दू गाढा करचा अर आ रै पांण अेक रास्ट्री-भावना देवण री कोसिस करी. पछै राजनीती मे आगीवाणा रै असरदार व्हेण रा औसर आयां ईं औ ओछीवाड़ौ नी गयौ—अठी आजादी पछै तौ भूडौ-गाढौ विडरूप व्हेय'र सांमी आयौ. इणी रै कारण उस्ताद री कविता नै 'दादोसा सायब रा चाकर' सूं लगाय'र 'चरै गधेड़ा केसर क्यारी' ताईं री जात्रा करणी पड़ी

आपा रै समाज मे ऊपर ऊपर सू की सळचौ समचै व्हेतौ भाळै पड़तौ—पण मायला साच दूजा ई हा वां साचा रा गुपत असर आपा नै ठौड ठौड़ जरू करचा—सई अरथा मे आजादी नी अगेजण दी जन-राज रै नांवै जिकौ रुळियारौ सामी आवणौ सरू व्हियौ, उण सारू उस्ताद री कविता रा सवद लेवां तौ 'पौपांपुर रै राज' अर 'भाडराज' तांईं पूगा. उस्ताद री कविता रा ई सबदां मे 'नवा राव' अर 'नवा रावळा' वणगा 'ठग-ठाकर' अर 'ठगराज' पनपगा 'विना हिलायां कान पूठ पर हुकमत' आवण री ई ठा पड़गी.

मतलब के जित्ती कित्ती उथल पुथल आपा रै अठै—राजनीतू समाजू अर अरथाऊ—लारला चाळीस बरसा मे व्ही—उस्ताद री कविता उणरौ सबळौ सँजोर डौकूमेंट है, जिकौ भासावा रा दिन पावरा व्है, उठै स्यात कविता नै अैडौ डौकूमेंट नी व्हेणौ पड़ै. अर फेर जे समाजू राजनीतू अर अरथाऊ हालता री गाढी गुंजायसू छव साहित समचै किणी विधा मे सोधीज सकै तौ वा तौ कथाऊ विधा ई व्है सकै—कविता मे तौ अैडी गुंजायस ई कित्तीक व्है ?... पण नी उस्ताद री कवितावा नै तरतीब सू देख्या अर अेकठ देख्या ठा पडैला—कै वै अेक विसेस आपदकाळ मे आपा री कित्ती विधावा री गरज पालै—वारा पिंड अर सामरथ पोखै-निरमै

अेक साबत कथा है वा में अेक सासतौ ड्रामौ है वा मे. आलोचणा अर टीपा री पुरजोर दीठ साप्रत वै....कित्ती पुरवा, पाघरी अर चेतना रै कित्तै लूठै सघन संवेदू रगत बिलोयै फलक री सपनौ लेवती सूपती....साच पूछौ तौ उस्ताद कविता री धूल झाड दी. उणरौ वट काढ दियौ. मरठ गळा दिया जतर सू त लिया उण नै इण काबिल बणा दी कै वा आगै करीज सकै. नुवी, सचेत अर जीवती भासा आटण मे उस्ताद रौ हाथ सिरै है. जिण अकल मन अर कमतर सू वै भासा कमाई, अर जिण ढाळै उण नै हेत हिलाया अर रेत रळाया बरती, किणी दूजै कवी नी

'हेमाणी' रा कविया मे सिवा चन्द्र सिंघ अर नारायण सिंघ भाटी रै सगळा कवियां राजनीतू चेतना री प्रोग्रेसिव कथीजण आळी कवितावा थोडी घणी लिखी है—पण उस्ताद अर रेवतदान छूट सरू सू आखिर ताई औ किणी रौ मूळ सुर नी रह्यौ रेवतदान अर उस्ताद री कवितावा नै सँजोडै देख्या ठा पडैलौ कै वां री सुर-सरचना अर चरित्त मे गाढौ बुनियादू फरक है उस्ताद री कविता रौ समाज रेवतदान करता लू ठौ है उणरी अवखाया ज्यादा वडी अर पेचीदा है. वौ कवी सूं ज्यादा थ्यावस दायित अर जडा मागै. वौ समचै साच समझणौ चावै. वौ कवी नै बरोबर आपरै बिचै देखणौ मागै. उण नै स्टेज ताई री छेती पसद नी, उण रै सारू कवी उणरौ इखबार, रेडियौ, इसकूल, पचायत, घर-गुवाड, खेत-कांकड, मेळौ-खेळौ, ख्याल-तमासौ, बार त्यूहार, हसी-खुसी, रीस-रूस सै क्यूं है. वौ सिरफ कवी नै बरतै अर बरतै आपरी गैलाई साटै बरतै, आपरी सावचेती साटै बरतै, आपरी लाचारी साटै, आपरी हारी बीमारी साटै बरतै आपरी कविता रै समाज मे इत्तौ अर इण ढाळै बरतीजणौ कवी राजस्थानी मे ई नी, समकालीन दूजी भारती भासावा मे ई सोध्या नीं लाधै. उस्ताद आपरी कूख रै पांण मोटौ है. जमीन अर अजं रै पाण मोटौ है

सई है के उस्ताद री केई कवितावा न्यारी न्यारी देख्या ताई प्रचार व्है ज्यू लागैला. कविता नै प्रचार करणौ चाईजै के नी ? कविता रौ 'यूज' किण हद ताई व्है सकै—जायज गिणीजै ?—अै सवाल खासा वहसाऊ है न्यारी न्यारी भासावा मे लारला खासा वरसा सूं अै किणी न किणी ढाळै विचार रौ विसै रह्या है. अर केई साहिताऊ आंदोलना रै मूळ मे आ रौ गाढौ हाथ है. आज जिकी सकल आ री सामी आवै वा अेक लांबी जात्रा रौ नतीजौ है बीसवी सैकड़ी मे ग्यान-विग्यान रै समचै व्हिया कळू बदळाव, राजनीतू, समाजू अर

अरथाऊ उथल पुथल, महाजुद्ध, विचारू क्रात्या, नुवी नुवी घडावंध्या अर कलाऊ जरिया माथै पड्योडौ आ री गाढौ असर—रचनाकार री दुनिया उथल दी. उरा नै साच ल्हौडौ कर दियौ अर उणरी रचना दुनिया नै अनंत विस्तार दी 'हेमाणी' री कविता रै पूठ मे इण दुनियावी उथघडै री ऊडौ हाथ है—पण है रचना प्रमांण ई, मतलब के कविता सू वारै अवखाया अर सवाला री सकला सवादू नी लावै, सै की रचना स्तर माथै ई थुड़तौ-घुडतौ अर मर्ज व्हेतौ सो है—मावौमाव.

पण स्यात अब आरै मायली सकावां, सवाल, रुख, पख अर अवखायां सवादू व्हैला. कविता रौ 'यूज' किण हद ताईं व्हे सकै, अर वा किण हद ताई प्रचार रौ धरम निभा सकै—इण सारू कोई सो ई रुख साभती बेळा आपांनै 'हेमांणी' री बगत अर उणरै साहितिक दीठाव री गत बरोबर चेतै राखणी पड़ैला. म्हारौ ख्याल है उस्ताद री कवितावा जिण अपणायत सूं आटीज्योड़ी है वा अपणायत वांनै सासती पावसायोडी राखै, के जिण रै पाण जठै तठै उघडतौ अणूंतौ प्रचार पख ई पोछडी वारी खासियत ई साबित व्है अर वांनै न्यारौ निरवाळौ चरित देवै.

उस्ताद री करीब करीब सगळी कवितावां रौ सग्रै 'जनकवी उस्ताद' रै नांव सू अवार लारला दिनाई छपर सांमी आयौ है उण सूं पैली वारी छड़ी विछडी कवितावा अठी-उठी छप्योड़ी जरूर लाधती, पण वै इत्ती नी ही के वा रै पांण कोई दीठ लिरीज सकती. अब क्यू के औ काम निवडतौ व्हियौ सो वा री कविता अेकठ देखीज समभीज सकै. ....कित्ता भात भांत रा छ्द उस्ताद कांम मे लिया है—दोहे, सोरठै अर कु डळियां सूं लगाय र नुवां बोदा पचीसू किसम रा. भांत भांत री धुनां, लयां, जुगल गीत, गीत निरत, निरत नाटिकावां अर ध्वनी रूपक—कित्तौ लूंठौ प्रौजेक्सन है उस्ताद री कविता रौ !

रेवतदांन री कवितावां रौ धरातळ उस्ताद करता निरौ छोटौ है, अर हैई फरक किसम रौ. वारौ कवितावा सिरफ सोसण रै सिकार करसै रै च्यारू मेर सू ऊठै—अेक चाणचूकै चेतन व्हियै वर्तुळियै री गळाई, पण राजनीतू दीठ री आधाचूधी मे उत्ती ई वेगी निसरती व्है उस्ताद जिण ढाळै करसै अर कमतरी नै जनता मे रूपाय रूपाय र आपरै लूंठै धरातळ रौ भाळौ पटकै—वैड़ौ रेवतदान मे नी. नी वा रै कनै इत्तौ धीजौ ई हौ. अर इण ई सारू रेवतदान रै करसै री अवखाई अणूतौ तत्कालू लखावण ढूकै. भभक उणरी कविता रौ मूळ चरित व्हे जावै अर उणरै लारै विसै-वस्तु माडी व्है लचकाण पड जावै. आ बात रेवतदान री सरूपोत री कवितावा नै चेतै राख र कथीज रह्यी है सिरफ वै ई कवितावां जिकी आजादी आवण अर जागीरा तूटण ताईं लिखीजी—अर म्हारै विचार मे वां री सातरी-पातरी कवितावा वैई गिणीजै अर वांरै पांण ई रेवतदान री ख्यात है.

आं कवितावा री भभकरौ चरित मूळ मे डिंगळ कविता री भभक सूं न्यारौ नी—जैडौ के कवी खुद हामळै. दीखत मे अै कवितावां उस्ताद री कवितावा करता आपरै छंद बंध सू ज्यादा फूठरी अर सावत भाळै पड़ैला पण क्यूं के आ री भभक रौ चरित डिंगळ

रैं वीर काव्य री उछाळ् चरित है सो औ विसै-वस्तु रैं सागै पूरसल न्याव नी करै अर किणी हद कविता नै चरित चूक कर देवै. राजनीतू चूघ तौ साप्रतै ई—कवी री उण वरग सू जेडो लगाव है उण री पोल ई पितवाण्या छोड़ै. म्हे कलपू के जे रेवतदांन री 'उछाळौ' कविता सिचवेसन माथै पढीजी व्हेती जठै के अेकानी जागीरदार अर उणरै भाइपै रा लोग ऊभा व्हेता अर दूजै पासै करसा—तौ हसी मसखरी री बात व्हैला—आ कविता जरूर करसा रा हाडका फुडवाय न्हाखती अर इण री घर-भेदू चरित चौडे व्हे जावतौ.

जैड़ी के आपा पैली बात कर चुक्या हा – समाजू अर राजनीतू उथलघडै मे ऊपर ऊपर सैं की सळचौ व्हेतौ लागै ही – पण मांयला साच दूजा ई हा. सो वां दिना जिका कवी राजनीतू चूघ राख र सिचवेसन नै सीधा असरावणौ चावै हा के तौ वै जाताऊ ईसका री उपज हा, के लावौ लूटणिया, अर जे दोनू ई नी तौ पछै आपरै कानी सू तौ वै भौळा सैण दुसमण री गरज ई सारै हा

समाज सुधारू प्रव्रति री पूठ असल मे आगै दो ढाळां मे ढळी – रूपीजी. अेक पासै वा आइडियलिस्टिक रास्ट्री भावना चेताई अर दूजै पासै प्रोग्रेसिव कथीजण आळी राजनीतू चेतना आपा रैं अठै विसेस हालता रैं परिणाम सरूप आ मे लावै अरसै ताई फरक करणौ सभव कोनी व्हियौ. दोवडी गुलामी रैं कारण आदोलना रैं दिनां आइडियलिस्टिक टोन आळा केई कविया ई अैडी कवितावां लिखी ज्या मे करसै मंजूर अर क्राति री वाता ही. प्रजामडळा रा आदोलन—ज्यां री के घणकरी कवितावा (उस्ताद धुराधुर री) हिस्सौ रह्यी—पोछडी काग्रेस रा आदोलन ई हा काग्रेस तद किणी राजनीतू दळ रौ नाव नी—आजादी रैं सारू अेक काम चलाऊ टोटल मूवमेट रौ नाव हौ

इण अक रा कविया मे सीधा सीधा आइडियलिस्टिक रास्ट्री विचारा आळा कवी अेक ई लाधैला, अर वै है कन्हैयालाल सेठिया—जिका के सरू सू आखिर ताई इण हवालै देखीज सकै. सत्यप्रकास जोसी उण वगत विसेस दोनू ई भात री कवितावा लिखी—करसै मजूर नै चेतावण विडदावण आळी अर दूजै कानी मरुधर महिमा रैं ओळू दोळू ऊठण वैठण आळी. आपा रैं अठै पद्यकथावा, प्रस्ठ प्रेसी इतिव्रत काव्या अर देस—महिमा, मरुधर महिमा रैं अेडै छेडै री जिकी सपाट कविताऊ लिखावट है, वा चेतै अणचेतै इणाई आदर्सवादी रास्ट्री विचारा आळी पूठ री परिणाम है.

प्रगतिसील राजनीतू चेतना री कवितावा लिखण आळा मे अेक नाव गजानन वरमा री ई लिरीजै. गजानन री कवितावां मे म्हनै सगळा सू मोटी अवखाई आ लागै के वै संगीत रैं पख में इत्ती उलाळू व्हे जावै के आपरी कविताऊ माजनौ गंवाय वैठै. कविता अर सगीत रौ छेत्र न्यारौ न्यारौ है कविता मे सगीत री भूमिका उत्ती अर वैडाई जायज जाणीजै, जित्ती अर जैडी के उणनै आपवूतै सालरण मे मदद देवै, उणनै उणरी ठौड सूं विटळावै नी. गजानन कविता नै संगीत सारू वरतै, सगीत नै कविता सारू नी. अर आई वारी कविता री सगळा सू मोटी खामी है इण ई सारू वारी कविता, कविता रैं मंच री नीं, सास्क्रताऊ कार्यक्रमां रैं मच री भाळै पडै. म्हारै विचार मे मंच नै कविता रैं

सीगै डिसटेस्ट' करण मे, अर झोल देवण मे गजानन री कविता रौ गाढौ हाथ है गजानन रा सरूपोत रा गीता मे क्यू के सगीत कविता-पख री दावाचीती इत्ती नी करै हौ, सो वै की गत-गुवें रा जरूर है, पण सगीत रै स्यारै सू मिलण आळी 'पौपूलरटी' अर सफळता गजानन नै बरोबर लोळती गई, अर वै पोछडी कविता सू आपरी छेती अणू ती वधाय बैठा

आपा रै अठै खास तौर सू मच रै महताऊ रैवण रै कारण, अर जिकै लोक नै कविता प्रेसणी पडै ही---उणरी अहताऊ माग रै कारण---सगीत पख नै केई कवी तरजा अर धुना रै समचै विचै विचै वपरायो, पण गजानन री गळाई किणी काठा पगनी छोड्या सगीत रै पख सू ऊठती केई कवितावा---इण अक रै कविया नै निजर राख र देखो तो---उस्ताद, रेवतदान, सत्यप्रकास अर कल्याणसिंघ राजावत इत्याद गी भाळै पडैला. पण उठै मकसद अहताऊ समाज नै सगीत पख सू कविता रै नावै रजावणौ नी, उण नै घेर-पळेट र पोछडी कविता सारू समरथ करणौ हौ अर कविता सगीत नी व्है---आ समझ ई वारै साथै ही.

गजानन री कविता रौ फूठरापौ सगीत पख सू मच माथै 'प्रजन्टेसन' मे ई है. उणसू परवारै वै साव पोची अर अेक हद साव इस्यारती है जठै ताई प्रगतिसील राजनीतू चेतना री बात है---गजानन री कविता मे उणरौ डैकोरेसन ज्यादा लागै---अपड अर गाढ कम घणीवार म्हैं जित्तौ जित्तौ वारी कविता रै सीगै ऊडौ जावणरी करू, म्हनै लागै के सगीत री धुना लया बरोबर वारै कन्टेन्ट नै निगळती जावै अर अठै ताई भाळी पडण ढूकै के जाणै वै ई वारौ कन्टेन्ट व्है.

गजानन री पछेती कवितावा---'सोनौ निपजै-रेतमे' रै पछै री---वारी चेतना समझण रै समचै खासी मददगार व्हैला. 'बारहमासा' अर वारी छडी विछड़ी दूजी कवितावा अर गीत देख्या ठा पडैला के सास्क्रताऊ कार्यक्रमा रौ मच वारी चेतना रै मूळ मे सरू सू रह्यौ है अर उणरै सारू वै तिथ-त्यूहार, रीती रिवाज, वेस-भूसावां, लोकगीतां री तरजा-धुना अर गीता रा विसै तकात अवेरण हेरण मे लाग्योडा रह्या है---जिण सू अेक सोवणौ-मोवणौ रग-रूडै राजस्थान री छव खासकर प्रवासी राजस्थानिया सारू वारै कनै व्है अर वै उणरा व्यवसाऊ फायदा बगतौ वगत उठा सकै.

कल्याणसिंघ राजावत ताई पूगता पूगता तौ करसौ अर मजूर वीयाई विसै रूढी व्हेगा हा---सो मंच रै जरियै सामी आवण रै कारण जे सरूपोत मे वै ई दोय च्यार कवितावां आनै लेय'र लिखी व्है, तौ इचरज नी.

राजनीतू चेतना री बात म्हैं म्हारै कानी सू किणी वादी-सुर मे नी उठावू. म्हारौ मतलब किणी वाद-विसेस रै बळू ऊभण रौ नी है म्है सिरफ इत्तौ ई सकेतणौ चावू, के

अेक तौ नुवैं राज अर समाज री थरपना सारू जिका री कविता सीधी आथडैं ही—राजनीतू चेतना री चूंघ के टोटौ खुद वानैं ई वारी विसै-वस्तु रैं सागैं गाढी तपत अर जुडाव नी देवतौ. दूजौ, जिण नैं प्रगतिसील राजनीतू चेतना कथीजैं—कैवणौ नी व्हैला—वा मार्क्सवाद री पूग रौ नतीजौ ई है, भला वैंडी कवितावा लिखण आळा पूरमपूरा मार्क्सवादी नी रह्या व्हौ—के पछै 'वादी' रैं अरथ मे तौ ता ई नी रह्या व्हौ. 'हेमाणी' रा कविया मे स्यात उस्ताद ई अैडा कवी है, जिका मार्क्सवादी कथीजता रह्या है वा रैं मार्क्सवादी व्हेण रौ सबूत वारी कवितावा मे लाध जावैला. पण म्हनै लागैं के वारी सगळी कवितावा मे सूं समचैं निमरघा आपा इण सीगैं इत्ता पुख्ता नी रंय सकाला वारा आजादी पछै रा विकासगीत, विटळता जननेतग्वा नैं वगत बगत माथैं दियोडा ओळमा, अर पोछडी जन राज रैं 'फैल्योर' व्हेणरौ दुख इत्याद—उस्ताद री कविता रा केई पख है जिका आपा नैं बीजैं सू सोचण नैं विवस करैला. उस्तादरी आस्था भलाई मार्क्सवाद मे रह्यी व्हौ—विचारू स्तर माथैं, पण कविता मे उण रौ प्रतिफळन डेमोक्रेसी रैं पख मे ई भाळैं पडैला.

उस्ताद री कवितावा रैं महत सीगैं—जैडौ के म्हैं पैंली कथ्यौ—सगळा सूं मोटी वात सचेत सवेदू भामा री है नारायणसिंघ भाटी उस्ताद रैं बावत आपरै इन्टरव्यू मे 'कीन' अर 'सार्प आवजरवेसन' अर पाधरी भामा री वात कथी है. पाधरी सूं अरथ 'डाइरेक्ट' सू है, सोंरी अर सवळी सू नी. वीया 'कीन' अर 'सार्प आवजरवेसन' अर पाधरी भासा, हूवहू देखा तौ समाज सुधारू प्रव्रति आळी कवितावा रौ गुण है—उणनैं है जीयां री जीया उस्ताद री कविताऊ भासा माथैं लागू नी करीज सकै.

आ तौ सई हैं के उस्ताद री भासाऊ ऊठ उणई प्रव्रति रैं मोड-जोड री हैं, वैं ई आपरी भासा अर मुहावरौ घणकरौ वोलचाल सू ई आटैं फेर जीया के कोमल कोठारी आप रैं आलेख मे साप्रत करचौ—वा री कविताऊ भासा अर मुहावरैं री पूठ मे वाणी, हरजस, अर भजना री परम्परा रौ ई गाढौ हाथ हैं आ तौ आपा जाणां ईं हां के आ परम्परा हमेसा बोलचाल री भासा रैं नैंडैं रह्यी है अर समैं-सार जुगा समाज सुधार रौ पख उण सू अभेद रह्यौ है उस्ताद री कविता सू पैंली जिकी समाज सुधारू प्रव्रति री कविता धाराऊ ही, उण ई इण रौ असर किणी न किणी रूप खुद रौ सरूप साधण सारू लियौ ई व्हैला उस्ताद री कविताऊ भासा अर मुहावरैं मे इण सगळी पूठ री ओळ, लांक, लकव अर रगत ऊडी राच्योडी लाधैं साप्रतणौ नी व्हैला के आ जुगातपी-जुगां जाई पूठ अकल अर मन री जोडणी सूं समाज सीगैं कमायोडा अनभवा री पूठ ही, जिण नैं उस्ताद नुवौ जुग परवाण कमतर सू प र ता ई उथल दी. भेद मिटावण सारू नुवौं भवसागर उण रैं सामी कर दियौ. अर वा पूठ उस्ताद री भासा अर मुहावरैं री जडां मे रिदमिक पावर व्हेय'र रुळ-घुळगी राजनीतू चेतना सू उस्ताद री भासा अर मुहावरौ गाढौ सवेदू व्हेगौ, कोरौ सट्टौ अर टोरौ ई नी रह्यौ उण रैं मांय वाथां वाथां हेज-गुमेज, जूझारू जोम, ऊडी दाझ अर हाय वोलण लागी.

अबार इणई साल नारायण सिंघ भाटी रा की नुवा छडचा बिछड्या गीत पत्र पत्रिकात्रा मे छप्योडा देखण रौ अर खुद वारै मूंडै सूं सुणण रौ ओसर हाथै आयौ. वा मे सू गीत इण अक में ई छप्या है. वा गीता री भासा अर बधेज आपरी अर्ज परवाण ऊठ अरअसरारू गत दोया मे ई उस्ताद करता गाढी न्यारी है, पण सागै रौ सागै ओ तथ कम महताऊ नी—के जिण खरी पाधरी भासा अर मुहावरै नै भाटी आं गीता मे अगेज्यौ है, उणरी पूठ मे ई अकल अर मन री जोडणी सू समाज सीगै कमायोडा अनुभवा री वाणी, हरजस अर भजना आळी परम्परा अर बोलचाल रै बिचलौ अटवा बैत ई है जदपी आ गीता रै अेकठ प्रकासण पैली पूरसल की नी कथीज सकै, पण जैडी के लागै—भाटी री कविता सीगै ओ मोड खासौ निरणाऊ व्हैला वारै कवी री जीवण दीठ अर कविताऊ गत-विगत नतीजै साधण रा साबत सरोदा देवैला भाटी री कविता अबै नुवा व्यवहारू अरथा मे दरसण अर आध्यात्म रा जैडा रळिया-घुळिया हवाला अर परसगा—जिका के आपरा पूरबला गत मे ई गाढा सैठा है—री रीभ मे भिल र फळण नै है, सोचू काई 'हेमाणी' रै किणी दूजै कवी री कवितावा आ रै सैजोडै देखीज सकै ? निस्चै अेक नाव म्हारै चेतै आवै कन्हैयालाल सेठिया रौ सेठिया घणी कवितावा तौ अैडी नी लिखी, पण वारी पछेती कवितावा मे सृ की कवितावा जरूर अैडी है, ज्या मे दरसण अर आध्यात्म री रळी-घुळी रीभ साप्रत व्है इण रीभ ताई दोनू कवी आप आप रै सीगै पूग्या है, सो वा मे फरक तौ है ई, मोटै रूप सू ओ फरक पैली तौ भासा रै हवालै सू ई देखीज सकै सेठिया हमेसा री गळाई खुद नै बोलचाल री सवळी, सोरी चलताऊ भासा तक ई ढाव्या रह्या है, जदके नारायण सिंघ रा गीता री भासा बोलचाल सू परवाणीजता सातर ई, अैडा ई विसया रै समचै आगूच खासी भली बरतीज्योडी अर इण ई कारण आपरा पूरबला सस्कारा मे गूढ, गाढी अर जटिल है दूजौ, विसै चितावां अर वारा 'कान्क्रीट' पख ई भाटी कनै ज्यादा अर विविध है पण वावजूद अैडा निरासारा फरका रै दोया कविया रौ इण पासै आवणौ चेतै राखण री बात है. व्है सकै किणी हद वा मे समरूपता ई लाध जावै, गुंजायस इण सारू है के—थोडौ न्यारौ भात रौ ई सई—अेक आईडियलिज्म भाटी री कविताऊ जात्रा रै पूठ मे ई बरोबर रह्यौ है

भाटी रै कवी माथै पलायन रौ वजौ ओलै-चौडे की जणा बरोबर लगावता रह्या, खुद म्है तकात इण वजै री चरिताऊ पडताळ लाजमी है. म्हारै खयाल मे भाटी रै कवी रौ अतीत-मोह वारी कविता नै अेक सम देवतौ अर ठौड भिलावतौ तौ अवस वैवै, पण उणनै पलायन नी कथीज सकै 'ओळू' साभ', 'दुर्गादास', 'जीवण धन' अर अठी आ गीता ताई भाटी जित्ता भात भात रा विसै, छद अर भासा-रूप केवटता-सेवता चाल्या है—वा सूं ई साप्रत व्है जावैला के भाग छूटण री कोसिस वारी कविता मे कोनी वारी कविता चन्द्रसिंघ री गळांई नी कोरी स्वात सुखाय है, अर नी वै अेक ई कृति री सफळता रै च्यारूमेर वैडी ई कृतियां रौ बारामासो रचै, फेर नी वारी कविता नै ऊठ सुवार घटणा री जरूत ई पडै, अर नी वै कविता रै नावै पाळचा-आडचा पूरी करणौ ई आपरौ धरम मानै. कविता वारै सारू भोट मे भेल्योडी घत नी, ऊडी सिरजणाऊ विवसता है—इणमे म्हनै सक नी नारायणसिंघ

री कविता रै अतीत नै मध्यजुग रै खुणै मे घाल'र फोकस करणौ ज्यास्ती व्हैला नी नारायण सिंघ री अतीत वोध इत्तौ ल्हौडौ अर कूंडाळू है, अर नी उण री असराऊ रेंज. खुद 'दुर्गादास' इणरौ परियाण है—जिणसू छिळता आपा कनै आगै न लारै काव्य नायक रै मध्यजुंग सू व्हेण रौ अर कविता मे डिंगल वरतण रौ ई तरक रैवतौ व्हैला. '. आ जोवण-जोखण री कोसिस स्यात आपा सूं सज नी आवती व्हैला के इण कविता मे काव्य-नायक अर डिंगल नै कुण सी नुवी मोलाऊ दीठ अर मरजाद मिळी है ? काई अैडी अैस्थेटिक खिमता इण सूं पैली कदैई राजस्थानी कविता मे ही ? थोडै क ध्यावस सू देख्या ठा पड़ैला के 'दुर्गादास' मे वीर पूजा के विडदावणौ नी, अेक खास मोलाऊ रीझ है, जिणरा अन्विताऊ पख किणी 'मांणसा पथ' अर 'करमखेत' री वात कैवै नी 'आवता हरखण आळै, अर नी जावता झिझकण आळै चरित नै सिकारै. इण चरित री परिकल्पना मध्यजुग मे सावित करती वगत आपा नै वैदिक पौराणिक संस्कृति अर आधुनिक रौमैंटिक अभिव्यजना पद्धति दोया नै मध्यजुग री ऊठ सवूतणी पडैला भासा स्तर माथै नारायण सिंघ री वरत्योडी डिंगल री आट मे जिकी तत्सम-प्रभा आयोडी है—उण नै ई इण सीगै वरोवर चेतै राखण री जरुत है

रचना स्तर माथै दुर्गादास री भासा अर मुहावरै री वुणगट मे साच्याई परम्परा, सस्कृति, सस्कार, अर अतीत रौ जैडौ ध्वन्याऊ झीणौ अर गाढौ रचाव अर नुवा अरथा मे फाल आवती उरधगामी उठाव है—वौ अवेती पठेती रै मन मे असर रौ लूठौ आकास सिरज जावै इतियास अर भूगोल री गुमेजू रग रूआ चढ, जाणै ऊडै गाढै थिराऊ भणकारै मे उथलीजतौ लागै मिनख भीजै अर भीजै.. सस्लेसू अर छवकाऊ (इम्प्रेसनिस्ट) आट सू लिखीजी 'दुर्गादास' इण्डियन पोईटिक्स री दीठ सू कैवा तौ भावत्री अर कारत्री प्रतिभा रौ सातरौ मेळ अर नुवै मुहावरै मे फॉर्म अर कण्टेण्ट रौ पूरसल सज्योडौ संजोग है इणी भासाऊ गत अर आगै-नैडै री आट मे नारायण सिंघ भाटी की फुटकर कवितावा भळै ई लिखी है, जिकी 'जीवण-धन' मे छपी है, अर आप री ठौड वारी ओप अर आव ई देख्यां जाणीजै.

डिंगल री कविताऊ परम्परा नै है जीया री जीया धीस्या वैवण री गुंजायस तौ 'हेमाणी' रै दौर मे नी रैयगी ही, पण उणरौ सिरजणाऊ इस्तेमाल व्हे सकतौ इण अक रा सगळा ई कवी—भाव, भासा के छद—किणी न किणी आटै सू इण परम्परा रै आगै-नैडै सू निसरचा ई है. सो आपोआप मे तौ औ किणी ढाळै वजौ नी व्हे सकै, वात सिरजणाऊ इस्तेमाल री है, अर म्हनै लागै 'हेमाणी' रै वगत मे इण परम्परा री सगळा सू वेसी सचेत सिरजणाऊ इस्तेमाल नारायणसिंघ भाटी ई करचौ. पछै वारी सगळी कविता जात्रा रै सीगै सू देखा, तौ औ ई वा री कविता रौ पैलौ, छेलौ के सासतौ आयाम नी रह्यौ है.

भाटी रै समचै आपा नै औ तथ जाण लेवणौ पडैला के वै कदैई पूरमपूरा अरथा मे स्वच्छन्दतावादी नी रह्या. वां काव्या मे ई नी, ज्या में वै रौमैटिक अभिव्यजना पद्धति रै साकडा हा वा रा सरूपोत रा काव्य 'ओळू' अर 'साझ' ई उठाय लेवौ—अेक खास भात

सू समाजू हवालौ उठैई महताऊ रह्यौ लावैला वै परम्परा अर सस्कृति सू किणी परतख मोलाऊ माठ माथै सैंधा तौ 'दुर्गादास' ताईं पूग्या के पूगता—व्हिया व्हैला, पण इण पासै वारी रीझ रा पूरवला अैनाण आ पैलडा काव्या मे ई भाळै पड जावैला—ऊडा जावाला तौ इमेजेज तक मे. वादी रै अरथ मे तौ आपा रै अठै स्वच्छन्द स्यात कोई नी रह्यौ, जठै ताईं मनलैरी व्हेण री बात है, अैडी कविताऊ सभाव अेक हद ताईं चन्द्रसिंघ री लाधै.

चन्द्रसिंघ री 'बादळी रै इतियासू महत रा केई पख है, ज्यारौ अंदाज अक री चरचावा सू लाग्यौ ई व्हैला. म्हैं अठै आ चितारू के 'बादळी' रै कवी—उथलतै बगत अर उथलीजती कविताऊ हालता मे—कविता नै साहित समचै लिरीजणी जोईजै—औ तथ अर चिंता परथम साम्रती. साहित सारू खुद रा विचार भला वै रचना सू वारै अठी-उठी नी विगताया व्है, पण औ चेतौ वानै अवस हौ के साहित री कोई मरजाद व्हिया करै, अर वा मरजाद पाळीजणी चाईजै. कविता नै सीधी साहित रै हवालै लेवण रै कारण ई चन्द्रसिंघ फुटकर कवितावा सू पूरी-पूरी काव्य-कृति कथीज सकै—अैडी रचना कानी आय सक्या. छापै रै पग लेवण अर पौपूलर व्हेण मे ईं बादळी रै प्रकासण अर सफळता सू गाढी मदद मिळी. देखणौ व्हैला के पछै ई जिका कवी पूरमपूरी काव्य कृतिया कानी आया, वै ई आप री काव्य चिंता मे साहित अर छापै नै पैल देय सक्या, मू दी आट कैंवा तौ साहित अर छापै नै पैल देवण आळा ई पूरमपूरी काव्य कृतिया कानी आय सक्या—आया. वीया आ अपवादू गत ई लाघ सकै के छापै अर साहित नै पैल देवता सातर ई कोई फुटकर कवितावा तक ई रह्यौ व्है. कविता नै सीधी साहित रै समचै लेवणिया कविया अर कवितावा बावत वात करता आपां नै ध्यान राखणौ पड़ैला के उथलीजती समाजू, राजनीतू, अरथाऊ अर भणाऊ हालता रौ असर, वा माथै थोडौ दूजी भात पडतौ रह्यौ है. सो ऊभी लीकां वा माथै वात नी करीज सकै. प्रगतिसील राजनीतू चेतना अर आइडियलिस्टक रास्ट्री विचारा आळी जिकी दोय फाटां आपा करी ही, वारै हवालै नै ईं पाछौ बरता तौ ठा पडैला के अेक हद अै फाटा अधूरी सी लागण लागैला. जदपी छापै अर साहित रै समचै कविता लेवणिया कवी आदर्सवादी रास्ट्री विचारा आळी पूठ रै ई ज्यादा साकडै लाधैला, जे आपा वानै राजनीतू अरथा अर दीठ सू ईं देखण री कोसिस करता रैंवाला के उथलीजती समाजू राजनीतू हालता मे सीधौ 'फक्सन' देवण आळी 'सिचवेसन' ई आपारी दीठ दीठाळै व्हैला.

जठै ताईं 'आईडियलिज्म' री बात है, जे उणरी व्रहत पडताळ मे जावा, के फाटा करण सूं थोडा वारै आय'र उणनै जोवण रौ जोखौ झेला, तौ ठा पडैला के उणरौ 'फक्सन'तौ 'हेमाणी' रा सगळा ई कवियां मे रह्यौ है, भला वां में सूं हरेक री काव्य चिंता अेक दूजै सू गाढी न्यारी व्हौ. इणई ठौड तौ आरौ अेक लूठौ अेकठ फरक आज री नुवी कविता सू है, जिकौ सोधीज सकै.

लोकगीतां, लोक काव्या अर 'ओवर ऑल' कैंवा तौ लोक साहित री भूमिका 'हेमाणी' रै बगत मे कैंडी-कांईं रह्यी—आपां री रुची रौ विसै व्हे सकै. उथलतै बगत रौ साहित, मतलब के आधुनिक साहित, सगळी ई भारती भासावा मे 'लोक' री मानता रौ साहित

गिणीजै अर इण ई रूप हवालीजै, सिकारीजै इण ठौड निस्चै सगळा ग्रेकमत है नतीजन, किणी न किणी रूप लोक साहित रै खमीरै री असर, के इण पासै रीझ-रुझाण, सगळा मे ई लाधैला. प्राती, छेत्री भासावा रै साहित मे की ज्यादा ई आपा रै अठै तौ औ डिंगळ री खिडती, नाकांम व्हेण रै नाकै नाकै आयोडी पूठ रै सामी लूठौ ग्रेवजू व्हेय'र आयौ समाज सुधारू प्रव्रति रै दिना इण नै पैलमपोत स्यात लोक गीता री लया-धुना रै समचै लिरीज्यौ हौ पछै आगै चाल'र औ धुना लया रै समचै तौ रह्यौ सो रह्यौ ई, विसै, भासा, भाव, छद रूप सगळा नै ई अरसतौ-परसतौ वह्यौ. फुटकर कवितावा ई इण री पूठ अर प्रेरणा सू नी लिखीजी, 'ओळू,' 'वादळी' अर 'राधा' जैडा काव्य ई लिखीज्या

इण री पूठ अर प्रेरणा सू व्हियोडी सगळी रचनावा साहित री मरजादा मे आवै ई—ग्रैडौतौ नी है, वलिक साच पूछौ तौ म्हनै हमेसा उल्टौ ई लागतौ रह्यौ है, के जाणै औ, अरथाऊ रै ओळू-दोळू निरथाऊ इत्तौ ज्यादा दे दियौ है, के अरथाऊ री पिछाण दोरी कर दी आजादी रै पछेता दिना लोक साहित री पूठ अर प्रेरणा रै च्यारूमेर व्यवसाऊ लालच अर खतरा, की सावठा ई लाग्योडा रह्या, खासकर लोकगीता रै ग्रेडै गेडै री प्रेरणावा मे. लोकगीता री प्रेरणावा रौ, इण अक रै हिसावदारै स्यात सगळा सू वेमी इस्तेमाल दो ई कवियां मे भाळै पडै—ग्रेक गजानन वरमा में, अर दूजौ सत्य प्रकास जोसी मे. ग्रै लोक गीता सू धुना लया ई नी, विसै, भाव, अर भासा रूप तकात हेरण-ग्रवेरण मे लाग्योड़ा रह्या है गजानन रै वावत आगै वात व्हे चुकी हैं कैवणौ नी व्हैला के वा करता सत्य प्रकास जोसी इण पूठ अर प्रेरणा रौ कविता री अर्ज सू सिरजणाऊ इस्तेमाल कठै ई घणौ वत्तौ अर सारथक करचौ है. इण सीगै जोसी री सफळता-असफळता, दोनू ई महत राखै, ध्यावस अर धीजै सू विचार मागै म्हारी दीठ मे वै सुविधावा अर विवसतावा जिकी के लोक गीता री पूठ अर प्रेरणा रै सिरजणाऊ इस्तेमाल सागै है, जोसी री कवितावा सू खासी थकी खुलासै व्हे जावै. कविता रै समचै लोकगीता रौ सिरजणाऊ इस्तेमाल सगळी ई भासावा मे खासौ अवखौ काम जाणीजतौ रह्यौ है. फेर आ रा 'फ्रेजेज' लय अर भाव-सचरण इत्याद नै निव्वै फीसदी पोख'र कोई उण लोक मांनस रै औसत मे खुद रौ व्यक्तित्व कीकर पगा राख सकै, जिकौ के कविता री पैली लाजमी सर्त व्है.

परिशिस्ट

संभाल्

कांई म्हैं......?

तोफानी बायरै जीया
श्रौ म्हनै ऊचौ उठा लियौ है
काई म्है सोमरस पीयौ है ?

श्रां तोफानी बायरा म्हनै ऊचौ उठायौ
जाणै बेजा चचळ अर आकरा घोडा
रथ नै ले भाज्या व्है। काई म्हैं सोमरस पीयौ है ?

जीया खाती बधेजै रथ रौ आसण
वीयाई म्है
मदगैळ
म्हारै हिरदै रै ओळू-दोळू बाधू । काई म्है सोमरस पीयौ है ?

म्हारी आख्या मे समाज रा पाचू धडा
तुस जित्ताई लारै नी है। काई म्है सोमरस पीयौ है ?

श्रै ऊंचोडा सरग
म्हारै आधै रै बरोबर ई नी है। काई म्है सोमरस पीयौ है ?

खुद री ख्यात मे म्है
इण अकास अर लूंठी धरती
दोया सूं उपराखर हू। कांई म्है सोमरस पीयौ है ?

म्है उठावूंला धरती
अर मेलू ला अठै कै उणनै उठै। काई म्है सोमरस पीयौ है ?

[सोमरस रौ प्यालौ लियां इन्दर—रिगवेद सूं]

अमरीकी : नीग्रो

गया कठै सै फूल

• पीटी सीजर

गया तौ सेवट गया कठै सै फूल
बगत धरकू चा
गया तौ सेवट गया कठै सै फूल
बगत धरमजला
गया तौ सेवट गया कठै सै फूल ?
कामण्या अेकूअेक चुण लिया
कद समझौला थे
ओ रे ! कद जाणौला थे

गई तौ सेवट गई कठै कामणिया
बगत धरकूंचा
गई तौ सेवट गई कठै कामणिया
बगत धरमजला
गई तौ सेवट गई कठै कामणिया ?
अेकूअेक नै धणी घरा मे लीयां
कद समझौला थे
ओ रे ! कद जांणौला थे

गया तौ सेवट गया कठै घर-धणी
बगत धरकू चा
गया तौ सेवट गया कठै घर-धणी
बगत धरमजलां

गया तौ सेवट गया कठै घर-धणी ?
अेकूअेक रै पैरण उरदी बणी
कद समझौला थे
ओ रे ! कद जाणौला थे

गया तौ सेवट गया कठै सै फौजी
बगत धरकूचां
गया तौ सेवट गया कठै सै फौजी
बगत धरमजलां
गया तौ सेवट गया कठै सै फौजी ?
अेकूअेक कबरां मे पूगता रिया
कद समझौला थे
ओ रे ! कद जांणौला थे

गई तौ सेवट गई कठै सै कबरां
बगत धरकूंचां
गई तौ सेवट गई कठै सै कब्रां
बगत धरमजलां
गई तौ सेवट गई कठै सै कबरां
अेकूअेक नै फूल उग्या ढकलिया
कद समझौला थे
ओ रे ! कद जांणौला थे

गया तौ सेवट गया कठै सै फूल
बगत धरकू चां
गया तौ सेवट गया कठै सै फूल
बगत धरमजला
गया तौ सेवट गया कठै सै फूल ?
कांमण्यां अेकूअेक चुण लिया
कद समझौला थे
ओरे ! कद जाणौला थे

◇

थाकैलौ

• फैन्टन जान्सन

म्हैं काम करतां करतां थाकगौ हू, म्हैं दूजै री
सभ्यता रौ निरमाण करता करता थाकगौ हू

अब म्हैं विसू'णी लेवू ला म्हारी वाली जैन !
म्हैं अब सैलून जावू ला, अेकाधी बोतल पीवू ला
दो च्यार वाज्या खेलू ला अर किणी दारू रै
पीपै माथै सूय जावू ला।

अर थू' म्हारी राणी ! कोई परवा नी, थारै बूढै मालक
नै सिड़ण दै, गोरै मालक रा गाभा नै लीरा लीरा व्हेण दै
अर डूबण दै नरक री अथाक खाया मे गोरा रा
बोदा गिरजाघर

अर थू' ठाठ सू' थारा दिन काढ। बिसरजा कै थारौ
ब्याव म्हारै सू' व्हियौ हौ। ठाठ सू थारी राता काढ,
दारू सू' चू च व्हेय'र

खुद रा टाबरा नै नदी मे फेक दै आ सभ्यता आपानै
जरुत सू' ज्यादा टाबर दे दिया है। सेवट
मोटा व्हेय'र खुद नै सूगला काळा हवसी देखण सू'तौ
टाबरपणै मे ई मर जावणौ चोखौ है।

नखता नै अकास सू झरूट'र नीचा फैक दै। अै निक्करकूटाई
आपारी किसमत वणाई है।

इण गोरी सभ्यता नै देख'र म्हनै गुचळकी आवै।

थू' कांई कैवैलौ ?

• जोसेफ एस. काटर जूनियर

आ भायला !
आपां भगवान खनै चाला।
उणरै सामी ऊभौ व्हेय'र
कैवू ला म्हैं—

परभू म्हैं घिरणा नी करूं
लोग म्हारै सूं घिरणा करै
म्हैं किणी नै नी सतावूं
लोग म्हनै सतावै
म्है किणी री जमी माथै नी राखूं लोभी निजर
लोग म्हारी जमी माथै राखै
म्है किणीं भी जात सूं मसखरी नी करू
लोग म्हारी जात सूं रिगला करै

अर, भायला, थूं काई कैवैलौ ?

◇

हित्यारा कांईठा कुण ?

• लेस्को पिकने हिल

तौ वै बोलाबोला उण माथै काटक पड्या
अर उणनै खीच'र लेयगा,
वारी साजस इत्ती सागोपांग ही कै
सरकार धोळै दोफारा जिण नेमा अर व्यवस्था रा पौरेदारा
रै हाथां उणनै सूंप्यौ हौ
वानै ठा तक नी पडी
अर वै लोग भै सूं भागीजता
उण खिल्लर बिल्लर व्हियोडी ल्हास नै देखो
तौ बस इत्तौई कैय सक्या—"हत्यारा काईठा कुण हा ?"

तौ इण भात औ म्हारौ मुलक
बोलोबोलो खिचीज्या.जावै है
मिनखाऊ मोला री मौत खानी
हित्या खानी
आ हित्या ढोल बजा'र तुरी बजा'र नी
की अंधेरै में की चानणै में
ओलै छांनै करीजै
पण जद ल्हास सामी आवैली
तद इतियास आ नी कैय सकैलौ कै
"हित्यारा काईठा कुण हा ?"

— अनु० ते. सिं. जोधा

सिपाई रा होठ

• विलफ्रेड ओवन

लाल होठ उत्ता लाल कोनी
जित्ता मरियोडा सिपाई सू चूमियोडा लोही सिचिया भाटा
इण पवीत प्रेम साम्ही पांणी भरै
ससार रै प्रेमिया री हेत,
म्हारी मरवण ! थारै वदळै फूटियोडी आख्या साम्ही देखू
तौ मगसी पड जावै थारै मिरगानैणा री जोत ।

थारौ नाजुक वदन इत्ता आवेग सूं कोनी लैरावै
जित्ता आवेग सूं किरच पोयोड़ी सिपाई री देह,
उण जगा लुटती अर अेठीजती
जठै स्यात भगवान नै ई चिंता कोनी,
जठा लग वैंरी आतमा रौ पूरण प्रेम
वैंनै कोनी कर दे मौत री छेली निबळता मे अेकाकार ।

थारा कठ उत्ता सुरीला कोनी
बाठका रै बधियोडा अडाणा माथै गू जती
नितरियोडी सिंभा जैडी निरमळ
थारी मीठी राग रौ सगीत उत्तौ मीठौ कोनी
जित्तौ उण कठा रौ, जिका नै अबै कोई कोनी सुणै
अर माटी बूर दियौ है जिण रा खासता भौळा मूडा नै ।

हिवड़ा ! थूं कदैई इत्तौ तपियोडौ, भरपूर कै चवडौ कोनी हौ,
जित्तौ गोळी लागण सूं चवडौ हुयोडौ सिपाई रौ काळजौ
अर भलाई थारा हाथ केसर जैड़ा पीळा व्है

इदका पीळा व्है वै हाथ
जिका थांरा सलीब नै ऊंचायां भाळा अर आधिया रै पार जावै
रोवौ, थे फगत रोय सकौ,
क्यूंकै थै वैंनै परस कोनी सकौ ।

◇

दूजौ जलम

• डब्लू. बी. इट्स

विस्तार चढिया बथूळिया मे गोळ भंवतौ सिखरौ
कोनी सुण सकै आपरा धणी नै
चीजा छिटकै आगी, थाम कोनी सकै धुरी
घिरगी है कोरी अराजकता संसार माथै
चढियौ है लोही धूंधळौ ज्वार
अर ठौड ठौड डूबग्या है निरदोसी सस्कार
उत्तम लोगा मे कोनी रयी आस्था
अर कामुक प्रचंडता भरिया है अधम लोग ।

निस्चै नैडौ है कोई दैविक सदेस,
निस्चै हुवणवाळौ है दूजौ अवतार
दूजौ अवतार ! उघडता ई अै सबद
सतावै म्हारी दीठ, आतमा रै सुन्न अकास रौ महांन आकार,
मरुथळ रै धोरा कठैई धीमी जाघा हालै कोई रूप
मिनख उणियारौ, नाहर तन-
लिया सूरज जैडी सूनी अर आकरी दीठ
अर लडथडै उण रै च्यारूंमेर
रोस मे खमखरिया खावता मरु पछियां री छीया
पाछौ घिरग्यौ अधारौ, पण अबै म्है जाणग्यौ
कै पथरीली नीद सोई वीस सदियां
कीकर भिचकगी खोटै सपनै अेक झूलता पालणा सूं
अर कैडौ खूखार जिनावर, जिण रौ डाव आयग्यौ सेवट
कमर झुकाया चालै बैथलाम मे जलम लेवण ।

—अनु० स. प्र. जोसी

◇

रुमानिया री कविता

आखरी कविता

• जी. बकोविया

जिणनै कोई नी जाणै, उणनै भूलण सारू म्हनै दारू पीवणी चाईजै
ऊ गोदाम मे लुक्योड़ौ, की नी बोलतौ म्हैं उठै बैठू ला
तमाखू पीवू ला अर खुदोखुद सूं ई अळगौ व्हे जावू ला
स्यात इण दुनिया सूं बचण रौ और कोई रस्तौ कोनी
जिनगानी नै करण दौ सडकां माथै रौळा अर मौत नै
पटरचा पटरचा चालण दौ, सीयाळै मे वीखै नै अेकलौ रैवण दौ
खनै सू निसरता धाया-सोरा कविया सारू मरसिया लिखण नै
जाणू ... ...
कोरी सपनै री भूख सूं ई पूरी कोनी पड़ै
सपनै री रचणा
म्हारै माथली विरखा तूफान अर ओळा
म्हारै वगत रै इतियास रौ खातमौ व्हैला
लोग कैवै कै दुनिया म्हनै उडीक रयी है
हेत करण नै..... ..... पण म्हनै सक है
हेत दोया खानी सूं व्है, आ म्हैं जाण सक्यौ
वारी जीयाई कैय'र 'आ म्हारा रूडा लूंठा आगोतर
म्हारै खनै आ !'

पण म्है, जिणनै कोई नी जाणै, उणनै भूलण री छुट्टी चावू ला
खुद रा गुना री माफी मागतौ अर वारी भी
जिका म्हनै सड़क रै दूजै पासै सू देखै है . वारा होठा सू
भू डण रौ कोई सवद नी निसरै। वै मौळाई सूं मुळकै
'स्यात दुनिया सूं बचण रौ और कोई रस्तौ कोनी ?

◇

फ्रैंच कविता

राताऊ संगीत

• होर्स्ट लैंग

अब सावळ सोवौ, नीद सूं अेकरूप व्हेय'र
बिसरौ दिन नै, तारिख सूं उतर जावौ

चांद अर तारा नै इंद्रया में आवण दौ
भार बिहूण, सीतळ अर सूना व्हे जावौ
लगर पतवार बिहूण आ नाव--
रगत भरया सपना सू तिसळ तिसळ जावौ
कावळा अर आंधी रा आधळ घोटा सू आजाद
अकास रै लखांण सारू बिरछा रै आगै
गुपचुप पसर जावौ
भै नै भगावौ, लोगा नै भूल जावौ
रड़कां रा नैना नागा टीगर बण जावौ
चेत करौ वा सगत हाथां नै ज्या सूं अेक दिन
थे धरती रै गरभ सूं निकाळीज्या हा
अंधेरै री पुडता मे खतरा भरयोडा है
लुक्या रैवौ, दीठ री जरुत नी
सत्ताहीण कर न्हाखौ खुदनै बोलाबोला—
हाल थे जीवण रै नास अर मौत सूं अणसैधा हौ ।

कनाडा री कवितावां

सांच

• **बॉब डाउनिंग**

चारूंमेर ठाडै थिर बरफ रौ पसराव
जोर जोर सूं थरपै औ साच
—औ नागौ सांच
कै अब कैवण नै
की भी लारै नी है ।

मरघोड़ी मा रौ सपनौ

• के. वी. हर्ज

म्है सपनौ देख्यौ
म्हारी मा म्हारै मांय आयगी है अर
आधै चाद ज्यू म्हारै माथै मे वाता करै है
म्हारा वद होठां रै लारै उणरा वोलता होठ
म्हारी वावा रै लारै उणरी घूमती फिरती वावा
म्हारा धूजता पगा रै लारै उणरा पग
म्हारै डील मे अेक आतमा उतरगी

म्हारा सपना जमगा है अर
म्हारै अकासां मे झडां री गळाई उडै है
नु वा नु वा सपना म्हनै आवै, ठा नी
आनै पूरौ कठै व्हेणौ है ....

पीळ्यां म्हारै माय खदवदाय रयी है
जलम रह्या है नुवा नुवा टावर
आतमावा म्हारै सूखेडै मे काप्या जावै है
म्है जिकौ कै मून अर अधेरै रौ वाप हूं
अैड़ौ अधेरौ जिकौ जम'र गाढौ नी व्है,
गुपचुप वैठौ हिरदै मे व्हेता आ
अद्‌भुत उथलधडां माथै विचार ई करतौ रैय सकू

स्पेनिस कविता

दुरसंका

• रफाएस आलवेर्ती

थारै लारै, खू आ रैखनै
कोई खुदरा सवदां मूं
थारी दीठ वाघ रह्यौ है

थारै लारै डीलविहूण
आतमा विहूण ।

सपनै में धुएं सू भरयोडी अवाज
जिकी टूट जावै
धुंएं सू भरयोडी आवाज
जिकी टूट जावै ।

खुदरा सबदा सू, झूठा झरोखां सू ।

आधौ बण'र मौत रै सागै चालतौ
सोनै री सुरग सूं
जिण मे काळा काच जडयोडा है
थू अेक गळी मे पूगै ।

गळी मे थूं खुद ही
थारी मौत सू मिळै ।
अर कोई थारै लारै खू आ रै खनै
जठै कठै थूं जावै ।

मेक्सिकन कविता

घणा दिन पैली रौ बसंत

• लुई करनुदा

अब इण सिझ्या री बैगणी रंगत में
जद कै फूला मे झरयोडी ओस सूं मैग्नोलिया भीज्या है
वां सडकां सूं निसरणौ अर अकास मे चांद नै
चालता देखणौ अेक जागतै सपनै ज्यूं लागैला.. ....

पखेरूवां री पाता खुद री कुरळाट सूं
बधा न्हाखैला अकास, फुंआरा रौ पांणी
आपरी खराई सूं ऊंची बिखेरैला पिरथी री ऊंडी अवाज
अर तद अकास अर धरती साव बोलाबोला रैय जावैला........

सून्याड रैं किणी खुणै में, अेकलौ
खुद रौ माथौ हाथा लियां बदळै बळतै भूत ज्यूं
आ बिचार बिचार'र रोवतौ रैवैला थूं
कै जिनगानी कित्ती फूटरी ही अर कित्ती फिजूल............

◇

बरफ में कब्रिस्तान

• जेवियर विलौरूसिया

वरफ मे कब्रिस्तान जैंडी चीज दुनिया मे दूजी कोनी
धौळास पर मेल्योडै धौळास सारू काई नाव है ?
अकास कब्रा फाथै वरफ रा जीव विहूणा भाटा फेक्या
अर अव बरफ माथै वरफ छूट की नी रह्यौ लारै
हाथ माथै सदा सारू मेल्योडै हाथ जीयां

पखेरू अकास छेकणौ चावै
हवा रा अदीठ गळियारा जखमण सारू
कै वरफ रै अेकांत मे घादौ नी रैवै
वौ समूदौ व्है सकै
वरफ जीयाई जी सकै
क्यू कै औ कैवणौ पूरसल कोनी
कै वरफ रौ कब्रिस्तान सपन विहूणी नीद ज्यूं
खुली खाली आख्या ज्यू व्हिया करै—
जद कै आमे कोई अचेतण अर नीदोज्योडौ डील व्है
अेक सून्याड माथै दूजै सून्याड रै पडण सौ
विसरण मायलै कोरापै रै हाथ अपडण नै खपण सौ
पण वरफ रै कब्रिस्तान जैडी दूजी कोई चीज कोनी—
वरफ वीया तौ सगळी चीजा माथै बेअवाज व्हिया करै
पण रगत विहूण समाधी माथै. वा होठा माथै
जिका कै अव कदेई नी वोलैला उण री सून्याड और बध जावै।

ब्राजील री कवितावा

साबत मौत

• मानुएल बान्देरा

इण भांत मरजै
कै कोई निसांण
कोई छीया लारै नी रैवै
छीयां रौ चेतौ भी लारै नी रैवै—

किणीं भी मानखै रै मन, मगज अर चामड़ी मे
अैडौ समूदौ मरजै
कै किणी दिन जे कोई
थारौ नाव किणी पांनै माथै देखै
तौ पूछै 'औ कुण हौ ?'........

इण सूं भी ज्यादा सावताई सू मरजै
कै औ नाव भी नी रंवै।

—अनु० ते. सि. जोधा

ओळख

• सेसीलिया मीरले

आ म्हारी जिंदगानी है :
ऊजळी रेत
बंवती बणगटां सूं आंक्योड़ी
पून नै समरपित........

आ म्हारी वांणी है :
खाली संख
ध्वनी री प्रतिध्वनी
आपरै ई रुदन सूं पूरण ....

आ म्हारी पीड़ है :
टूटोड़ी सीप
आपरै दुख रौ बगत काटती...........

आ म्हारी परम्परा है :
अेकलौ समदर
जिणरै अेक पासै हेत
दूजै पास है भुलाव।

हंगेरियन कविता

पिक्चर पोस्टरकार्ड

• मिकलोस रादनोती

बुल्गारिया सूं जबरदस्त जगळी
बदूका री गोळ्या आवै—
सिखरा सूं भचीड़ खाय, भटक'र, पितळ'र
गायब व्है जावै—
घिर जावै मिनख, डांगरा, वैंगन अर विचार
मारग हिणहिणाय'र
लारै सिरक जावै
आपरा अयाळ उठावतौ
न्हाट जावै अकास।

सगळौ तितर-वितर व्हेय रह्यौ है।
अैडै वगत मे थूं ! उठै ई रैय जा म्हारै मांय
जठै है, हिल मत
म्हारी मायली गैराया मे
मून धार अर सदा पळक
ज्यू सरवनास माथै (अचरीज्योडौ) कोई
फरिस्तौ कै कोई सड्योडै रूंख मे
कंदरा बणावतौ कीडौ।

नौ कौस आगा वळ रह्या है
झूंपडा अर घर
अर अठै खेता री सीव माथै अचरज करता
करसा धुंओं उडावता बैठा है चुपचाप।
वाजै तळाव रै जळ माथै
गुवाळण छोरी रै पगां री चाप
सरणाटौ तोड़ती लरड्या जळ भुक्योडी
पीवै है मेघ।

वैवै वळदां रै मूंडै सूं रगत-मिळी लाळा
काळोकट व्हेगौ लोई सूं
मिनख रौ पेसाव,
पीव भरचै असभ्य टोळै सूं घिरचोड़ौ

ऊभौ है
गुलाब !

म्है उणरै पछै हौ । घांटी माथै गोळी
अर उणरौ सरीर गुडग्यौ
अेक नुचियोडी माळा रै दांणां सरीसौ
'थू ई मारचौ जासी यू' म्हैं
खुद नै कैयौ, 'सूयजा बोलो बोलो'
अबै फगत धीरज बदळ सकै
मौत नै
धूड में 'दियर स्प्रिंग नोख
ऑफ' अवाजां आता आता आतां
आयी नैडी
रगत धुळयोड़ी कादौ सूखगौ
म्हारै कानां माय ।

डेनिस कविता

भुलाव

• पॉल बॉरम

खास की ई नी व्है
फगत पानड़ा झड़ै
अर बिरथा व्हे जावै
मतलब औ कै
भेळा व्हे जावै उणई पोथी में
वा पोथी कै जिणनै
कोई नी पढै

दरूजा रै बारै
आपरी ल्हौड़ी मौत मरचां जावै है रूंख ।

◇

ग्रीक कविता

कवी

• रैम्को कैम्फर्ट

पूरौ तोपखानौ
ग्रेक हाथ मे लियां
प्राथनावा सूं गूंजतै
काळै ग्रकास रै नीचै
म्है ऊभौ हूं

ग्रेक कोरी भीत माथै
लोग लिख दियौ :
'बीखौ'
कोई ग्राखर ग्रधूरौ नी हौ ।

वानै म्हारी ग्राख्या माथै नी रह्यौ विसवास
म्हारी दीठ माथै भरोसौ छोड'र
वै म्हनै भेज दियौ ग्रेक घर मे ।

ग्रेक घर मे जठै दात सिड़ रह्या हा,
जिकौ चारू मेर पाणी सू घिरचोडौ हौ ।
पण जिणरौ धु ग्राकस चिडिया सूं भरचोडौ हौ
ग्रेक जूनौ टूटतौ धुंग्राकस
जिकौ चिड़ियां सूं जीवतौ हौ ।

उणरी ग्रेक भीत सफेद ही
पछै उठै ग्रेक नाव भी ग्रायगी
घर घर जावण सारू ।

वैं म्हनै घरै भेज दियौ
ग्रेक हाथ मे
ग्रवाजां भरचोड़ौ थेलौ
ग्रर दूजै में
पूरौ तोपखानौ देय'र ।

◇

इतालवी कविता

सै कीं गमाय'र

• जियूसेप अन्गारेटी

ओफ ! म्है बाळपणै री सगळी चीजां गमाय चुकौ हू
म्है म्हारौ बाळपणौ
रातां री गैरायां मे दफणाय चुकौ हू
अर अबै अेक अदीठ तरवार
म्हनै हरेक चीज सूं अळगी करै
जद कदैई म्हनै वा दिना री ओळूं आवै
जद म्है थारै सूं प्रेम करतौ हौ
तौ म्हैं अेक गरब गुमेजूं
बीतोडै बगत रौ गरब !
अर पाछौ जद इण ढाळै रौ भान आवै,
रातां री अणंत गैराया मे रम जावूं
अबै पीड बधती जावै है
गळौ टूंपती पीड
लखावै कै जिदगानी अेक सबद है
जिकौ जबांन ताई आवता-आवता टूटगौ है ।

रूसी कवितावां

ईसकौ

• येवजेनी येवतुसेंको

म्हनै ईसकौ है
अर औ भेद
म्है छिपायौ कोनी ।
म्है जाणूं—
कठैई रैवै अेक टाबर
जिण सूं म्हनै ईसकौ है—
क्यूं कै वौ लड़ाईखोर है
म्हैं कदैई नी हौ

इत्तौ सैज, इत्तौ हीमती ।
म्हनै ईसकौ है
उणरी हंसी सूं—
म्हे टावरपणां मे नी हस्यौ यू
वौ चीथरा मे राजी व्हियोडौ फिरै ।
म्हैं रईसी मे पळ्यौ
जिकौ म्है नी वांच सक्यौ
पोथ्या मे
वौ उणनै जरूर वाचैला
इण मे ई वौ म्हारै सूं वधगौ ।
वौ व्हैला सांचौ अर साफ दिल
चोखापै सारू भूंडापै नै
कदैई माफ नी करैला
अर जठै म्हारी कलम
'फालतू है........" मान'र अटकै—
वौ कैवैला
"फालतू कठै........।"
अर कलम उठावैला
सुळझावैला
नी व्हियौ तौ काट देवैला
अर म्हैं
नी तौ सुळझावूं ला, नी काटूंला ।
वौ चावैला तौ अेक वार
म्है उणरौ लाड (?) करू ला
अर वारूंवार
ईसकै नै छिपाऊंला
मुळकूंला अर वणूंला
जांणै की नी जाणू
सीधौ हू
'कुण गलती नी करै
किणसूं चूक नी व्है........।"
खुदनै समझाऊ
वारूंवार दोवड़ाऊं—
"हरेक रौ आपरौ भाग है ।"

पण भूल नीं सकूं
कठैई है अेक टावर
जरूर प्राप्ती करैला बत्ती
म्हारै सूं बत्ती ।

◇

इतियास

• अलेक्सेई सुर्कोव

छितिज ताई बिसाळ समतळ भोम
आथम्योड़ै सूरज री लाली मे उजास अगनीरौ
नींद लेवतौ ऊभौ है चित्तौड़ हरियळ ढळांस रै काठै
रुखाळौ मेवाड रै वीत्योडै गौरव रौ
पासाणा, भीता सू फूटतौ विलाप
विजै थभ चित्तोड़ रौ, कदळी सूं घिरयोड़ौ—
ऊचै मस्तक नै थिर कियां
अणत सूं बतळ में लीण ।
मिळण वेळा मे इतियास दोवडावै
कथा दुस्मी रै कपट री, नकल री-
गजारी चिंघाड
हिणहिणाट तुरंगां री
गूंजण लागै कानां में
जीवै है टूटा पड्या मकानां मे मिरतु अर नास—
जिका घटीज्या राजपूतांणा मांय ।
पून री हिलोर सू बाजण लागै
घट्यां जैन मिंदरा री ।
पड्योड़ा मकाना नै ढकती धूड
जिका अलाप्योडा है घाटी री हरियाळी में ।
बूढौ राजपूत सिव रा चरणां मे
नासकाहीण ईस री वंदणा मे लीण
मीट जमाय'र देखै कै तकदीर काईं कैवै........
सुणौ बाबा ! अठै ई है थांरा जवांन बेटा
अर साथै है जवांन भारत !

—अनु० पारस अरोड़ा

['आ' किण रै तांई]

• व्लदीमीर मायकोवस्की

इण नीजू अर चिनेक
मामलै नैं,
जिण नैं पैली भी
लोका बारू बार गायौ है
गीता मे—
म्है कविता री गिलैरी ज्यू
गोळ गोळ बुण्यौ हैं—
अर अजै फेर
बुणनौ चाय रह्यौ हू ।
वौधा री प्राथणा ज्यू
गूंज रह्यी है इण री धुन !
आ
चाकू री धार तेज करतै
अफसर सू घ्रणा करणिये
नीग्रौ री
चेस्टा मे दीसै स्याफ ।

मंगळ गिरै मे
मिनखजूण लिया
जे कोई वसै
वौ भी आखी जिन्दगी
कागजा माथै
पैन री लिकोटिया माडतौ
इणीज खातर बैठ्यौ व्हैला

आ पांगळै मिनख री
वा अमूभणी है
जिकौ दांता मे पैंसिल दबाया
आपरी नाक
नोटबुक बिचाळै धंसाय'र
चीख रह्यौ है—
'लिख !'
अर उण वगत

आपरै अधीन संसार ऊपर
चील री जीया पाखड़ा खोल'र बैठण में
अेक : सुख मैसूसै—
आ
घर रै पिछोकड़ै माथै
ठक-ठक करती
उण आवाज री दांई है
जिकी किंवाड 'खोलता पांण ई'
भूत ज्यूं अलोप जावै
अर जिणरै आगै
लूंठा ल्हौड़ा
म्हारा सगळा विचारां री
नानी मर जावै
अर इण बगत हरेक बात
टीपणां रै
खळभळिये समंदर में
डूब जावै—
आ वा जिनस है
जिकी आपरै पगछेड़ै साथै ई
'सांच' री भख मागसी
'फूठरै' री ऑडर देसी
अर ईसा दाई
क्रोस जिसी सूळी माथै
कील दियां जाता थकां भी
दया हया रा भाव
थांरै हिवड़ै सूं सोख लेसी
आ करम रै नाच री
आपो गाळ दै अैडी लय है
कै आ
किणी बावळै साजिंदै री
बजायोड़ी कोई
टूटी-भागी धुन है
ज्यूं ज्यूं मन रै ऊंडै आंगणै
आ रमै

आखरा री मौरां माथै
हळकी थापी लगावै
आ अैड़ी चीज है
जिकी मोटै सूं मोटै भेजै मे भी
पूरसल ढूक जावै—
अर तद
वरणमाला रौ पैलड़ौ आखर
'अ' भी
मोकळौ अळगौ व्है जावै
उतरादै अर दिखणादै ध्रुव दाई।

अर थे
ऊंघता रैवौ
भूल जावौ थे
सोवणौ अर खावणौ

आ अैडी जिनस है
जिकी कदैई बोदी कोनी पड़ै
अर नी आख्या सू अोभळ व्है

इण वास्तै
इण रै लागता ई थे
अेक सबद लिख्या विनां
ससार माथै
रेसम जिसी लाल जोत
हाथ मे थामणिया
'स्टैण्डर्ड-मिनख' व्है जावौ

औ अैड़ौ
चतर अर पुराणपंथी कथ भी हैं
जिकौ हरेक घटणा रै गरभ में
हवोळा मारै
अर आपां री मूळ-विरत्या में
लुकियोड़ौ
औ कदै भी छळांग भरण नै
त्यार ऊभौ दीसै

इणनै भूलण री हीमत कोई
कियां कर सकै ??
अेकर औ
म्हारै बरांवडै
हरेक चीज नै खिडावतौ आयौ
अर म्हारी थोथी बुद्धी माथै
टीप देवणी सरू करदी
औ म्हारा सगळा भेद अर
लोगां सू जांण पिछांण रा
वखिया उधेड़णा सरू कर दिया

औ आतां पांण ई
वां सगळा नै
अळगौ न्हाख'र
आपरी सत्ता नै
पूरी उजास दीनी
औ ठग री तरियां
म्हनै गळै सूं
पकड़ लियौ
अर लोहार दांई
म्हारै हिवड़ै अर कनपटयां माथै
सागोपाग चोटा देवणी सरू कर दी

औ म्हनै
म्हारी कविता री
अरथआयरी गत सूं भी
घणीवार साप्रत करायौ
इण जिनस रौ
काई नांव है ?
चायै जिकौ व्हौ—
पण वौ जरूर
सोवणौ अर चोखौ
व्हेणौ चाईजै—

—अनु० प्रकाश परिमल

◇

चिलो री कवितावां

बुण रह्यो हूं अेक सरीर

• गैब्रेला मिस्ट्राल

अवैं म्है सडकां माथै नी जाय सकूं
म्हारी कमर मोटी व्हेयगी है,
आंख्या नीचै गैरा काळा खाडा वणग्या है
यां सगळा नै देखतां म्हनै लाज आवै
पण फूलां सूं भरचोड़ी अेक डोलची लावौ
अर म्हारै खनै, साव म्हारै खनै उणनै धरौ।
बाजा माथै धीमी धीमी कोई मीठी धुन सुणाऔ।
उणरै सारू, फकत उणरै सारू
म्हैं समदर मे डूवणी चावूं,
म्है म्हारी देही नै गुलाव सूं सजावूं
अर सोवतां उणनै सुणावू अमर-गीत
हरयाळी मे वैठ'र घटां म्हूं सचती रैवूं सूरज रौ ताप
कै म्हारै माय फळ-रस सरीसौ
इमरत घुळ जावैं।
चीड रा जगळां सूं आवतौ वायरौ
म्हारै मुख नै हेमळ वणाय जावै,
उजास अर वायरौ म्हारै रगत नै
जाडौ अर सुद्ध कर देवै
उणनै निरमळ वणावण सारू
म्है अबै नो तौ घिन करूंला अर नी गपसप।
करूंला फकत प्रेम,
क्यूं कै इण सांयत मे, इण अेकात मे म्हूं
बुण रह्यी हू अेक सरीर
तूंतड़ा सूं वणी अेक अदभुत देही
अेक उणियारौ आख्यां
अर हिडदै निस्पाप।

—अनु० पारस अरोड़ा

टाबर रौ पग

• पाब्लो नेरूदा

टाबर रै पग नै
हाल औ बेरौ कोनी
के वौ पग है
वौ उणनै फूंदी
बणा लेवणी चावै
के सेव
पण आगै चाल'र
भाटा अर घास
सडका अर चढाया
जमी रा
ऊबड खाबड़ गेला
उणनै आ सीख देवै
के पग उड नी सकै
नी डाळ माथै फळीज सकै
तद
टाबर रौ पग हार जावै
जुद्ध मे पड जावै
जूती में जीवण खातर
सराप लाग जावै

—अनु० नन्द भारद्वाज

कैरेबियन कविता

बिद्रोही

• फ्रंक अे. कौलीमोर

विद्रोही सदाई व्हिया है परम्परा रा
बिरोधी; की सईद व्हे जावै
की बच निसरै, चचळ मिनख ई
वदळाव लावण मे समरथ व्है

नेमा री दोरास देख अमीवौ
वंधरणा तोड न्हाखै, वीज धरती
सू वारै फूटै। पित्तर, पुजारी अर राजा
रोजीना हदा खीचता रह्या अर वै टूटती रह्यो
विद्रोही सदा आपरै राज री योजना करै
कदै अकास मे तौ कदै धरती पर
सैसू सागेडौ राज, मणियां ज्यू ऊजळ
फेरू जद विद्रोही री बणायोड़ी सडका पक्की
व्हे जावै अर विद्रोह हक मे वदळै
लाल झडा लाल फीतासाही वण जावै
तद फेरू नुवा विद्रोही जलमै
वा सारू इसवर नै धिनवाद। वै सदा
व्हेता ई रैवैला।

◇

भायलै नै कागद

• एल्फ्रेंड प्रंग्नेल

थूं अर जोवन वावड आया हा
अर अेक अणसैधै मुलक मे
आपां अेक डूंगर रै
ऊचै घासदार ढळाण माथै
चढै हा।

चाणचुका अेक खुणाऊ ठायचै माथै
दो चौमासू छपरा दो स्याफ दिरसाव
ढाळ पडचं नीजू जीवण मे
आपा ठडी हवा पीवता रह्या
(अेक मुनैरै दीठाव मे ऊभा ऊभा)
अर तळै अळगै ताई पसरचोडी घाट्या
ज्यूं ई थू की कंवण नै वावडचौ
सपनौ दीठ सू अळगौ व्हेगौ
म्हारा भायला
थूं काईं कैवणौ चावै हौ ?

—अनु. ते. सिं. जोधा

◇

जरमन कविता

बीच आळां लोगां रौ बिलखणौ

• हांस माग्नुस एंजेसबर्गर

म्हे सिकायत नी कर सकां
म्हे ठालाभूला भी नी हां
म्हानै नी लागै भूख
म्हे फगत घास खावा हा
उगै है घास
अर देस री खेती
उगै है नख
अर अतीत।

गळ्या मे सू नेड
सगळा काम तै व्हेयगा
नी बौलै भूंकलौ
सोक्यू बीत जासी।

मरघोडा लोग आपरै नाव माथै
पट्टौ लिखग्या
बिरखा री झड़ी लागगी
अजेस नी व्हियौ जुद्ध रौ ऐलान
नी इण सारू की भागादौडी

म्हे खावा घास
अर देस री खेती
म्हे खावां नख
अर खावां अतीत।

म्हारै कनै दबकावण वास्तै की ई नी
अर नी गमावण सारू कोई चीज
नी कैवण जोग की बात
घड़ी रै मांय चावी भरदी
बिला रौ कर दियौ भुगताण
पूरी व्हेगी साफ सफाई
जाय रयी है छेली बस।

परण वा खाली है ।
म्हे नी कर सका सिकायत
म्हे किण री उडीक मे हा ?

—अनु० . गो. सिं. सेखावत

◇

पेरू री कवितावा

अणंत चौपड़

• सेजार वलेजौ

हे भगवान म्हैं जिकौ हूँ उण सारू रोय रह्यौ हूँ
थासूं रोजीना रौ पेटियौ लेवण नै दुखी हूं
आ लाण विचारवान माटी थारै पसवाडै
सूख सूख'र उपडती पापडी कोनी—
हे भगवान जे थूं मिनख व्हेतौ
तौ जाणतौ के भगवान कैडौ व्है
पण थू जिकौ हमेस भगवांन ई रह्यौ
खुद री सिस्टी नै की नी समझ सक्यौ
मिनख धीजै सू थनै सैवै—भगवान वौ है
आज जद म्हारी मत्राबधी आख्या मे मैणवत्या
ईया बळै है, जाणै म्है दण्डीज्योडौ व्हू
हे भगवान थूं भी थारी आख्या चानणौ कर आ,
आपा चौपड रौ बोदौ खेल खेलां.... ...पण स्यात, अे
जुआरी, जद सगळी दुनियां थारै सामी आय पड़ैली
तद मौत री आख्यां माटी रा दोय पासा व्हे
उणनै आखरी तौर सूं जीत लेवैली ।

हे भगवान इण आधी अर बौळी रात में
थूं खेल नी सकैला, क्यूंके पिरथी अेक
घसीज्योडी चौपड है जिकी लोट पोट व्हेण रै कारण
गोळ व्हेगी है, अर इण सारू कबर री
थोथ छूट आ कठेई थमै कोनी ।

—अनु० ते. सिं. जोधा

मिनख

● सेजार वलेजौ

अेक मिनख है
बैंठ'र खाज खिणै
अर आपरी काख सू
अेक जू काढ'र मार दै
काई इण वगत 'मनोविस्लेसण' माथै
वात करणं रौ कोई अरथ व्हे सकै ?

दूजौ मिनख म्हारी छाती माथै
मुक्कौ मार दियौ,
कांई म्है किणी डाक्टर कनै जाय'र
सुकरात माथै तर्क करूं ?

अेक लंगड़ौ मिनख
अेक नैना टावर नै स्यारौ दियौ
काईं अबै ई
आद्रे ब्रेटन नै पढणौ जरूरी है।

अेक मजूर डागळै सूं पड जावै
अर लोगा रै सिरावण री वगत सूं पैली
मर जावै
औ वगत काईं किणी नुवै छंद के राग रै
सोध-सधाण रौ है ?

अेक लूलौ पागळौ मिनख
खुंअै माथै पग धरनै सोवै
काई अबै ई म्हैं किणी सूं
पिकासौ बाबत वात करू ला ?

—अनु० पारस अरोड़ा

◇

स्वीडी कवितावां

वम्बोई में

• आक्सेल लिफनेर

जाज रै उडण सूं की पैली
अैयरवस म्हानै वम्बोई दिखावण नै लेयगी
सूरज हाल निसरयौ ई हौ
म्हैं देख्यौ के
वम्बोई रा १५०००० (?)
फुटपाथ्या मे सूं
अेक आदमी आळस भाग'र नीद सूं जाग्यौ
अर तकियं रै तळै सूं धोयोडी कमीज
काढ'र पैरण लाग्यौ
स्यात वगत व्हेगौ हौ दफ्तर पूगण रौ
अर अेक आखरभाखी कीडै ज्यूं
फायला मे गमण रौ
पण सगळी रात वौ
किण वेफिकरी सूं सोयोडौ रह्यौ व्हैला ।
वौ खुद भी अेक जरूरी
फायल हौ
स्यात !

◇

बेरै सूं रसोवड़ै तांई

• जैकोव बरांटिग

इण दुनियां री कोई तस्वीर तक भी तौ
आपारै कनै कोनी ।
ग्यान विंदुवां नै आपा उण लोटै मे
संच्यां जावा हा
जिण रै मोटै पीदै मे अेक अदीठ ठीडौ
मौजूद है

हाल काल ताई आपां
भौतिक विग्यान तक सूं अणसैधा हा
'दास कैपिटल' तक आपा रै सारू इचरज हौ
अर 'काट' अैड़ौ अकासी पसराव हौ
जिण रा अेडा छेडा अणजाण्या हा
अस्तित्व रै बुद्धिकरण में
आपा जिका बिंदु भेळा करचा हा
वेरै सूं रसोवडै ताई आवता आवतां
सगळा रा सगळा चूयगा मारग मे

अब की फायदौ कोनी
ग्यान रै इण केई पुडता आळै
आंगणै हेटै दब'र रैवण मे
अब औ खाली मगज
भरीजणौ चाईजै
असमानी साभां रै गाढै दूध सूं
जिण सू कै इण पीदै मे की टिक'र रैय सकै
बेरै सू रसोवडै ताई आवतां आवता

अमरीकी कवितावा

घास

• **कार्ल सैण्डबर्ग**

आस्टरलिज व्हौ अर भलांई वाटरलू
ल्हासां रौ ऊंचै सू ऊंचौ ढिग व्हौ—
गाडं देवौ, अर म्हनै करण दौ म्हारौ कोम
म्है घास हूं म्हैं सगळा नै ढक ल्यूं ली
अर जुद्ध रौ मैदान भलां छोटौ व्हौ अर भलां मोटौ
जुद्ध भलां नुवौ व्हौ भलां बोदौ
ढिग ऊंचै सूं ऊंचौ व्हौ ज्रस म्हनै थोडौ मोकौ मिळै

दो वरस, दस वरस—अर पछै उठीनै सू
निसरण आळी वस रा गांवतरी
पूछैला आ कुणसी ठौड है ?
आपां कठीनै सू व्हेय'र निसरां हा
औ घास रौ मैदान कैडौ है ?

म्हैं घास हूं
सगळा नै ढक ल्यू ली ।

◇

बिद्रोही

• मेरी ई. इवान्स

जद म्है
मरूंला
म्हनै भरोसौ है
के अेक लू ठौ जसन
मनाईजैला
लावौ लूटणिया आवैला
आ जाणण रौ मत्तौ दवायां
के काईं म्है
साच्यांईं मरगौ हूं
के औ कोई
तग करण रौ
नुवौ चाळौ है ।

◇

आखरी बोल

• अेजरा पाउंड

ओ म्हारा गीतड़लां
इत्तै गाढ अर उमाव सूं
क्यूं टोवौ
लोगा रा उणियारा
काईं वा मे थानै थांरा गयोड़ा गम्योड़ा मिळ जावैला ? ◇

वौ 'कठैई'

• ई. ई. कमिंग्ज

वौ 'कठैई' जठै म्है कदैई नी पूग्यौ, किणी भी लखांण रै
उण मुधरै छेड़ै
थारी आख्या रौ मून है
थारी सै सूं कवळी काची लांकां में की अैडौ है जिकौ
म्हनै चारूमेर सूं मीच लेवै
के उणनै म्है परस ई नी सकूं बौ इत्तौ मावौमाव है
थारी हळकी सीक निजर म्हनै सोरौ सोरौ खोल न्हाखै
जदके म्हैं खुद नै मुठ्या ज्यूं भीच मेल्यौ हूं
थूं म्हनै अेक अेक पाखडी कर'र खोलै जीया के चैत
उघाड न्हाखै (अेक सावचेत रहस-परस सू)
आपरौ पैलौ गुलाव
के जे थूं म्हनै मीचणौ चावै म्हैं
अर म्हारौ जीवण सावळ सांतरा मीचीज जावांला चाण चूका
जीयां औ फूल जद इणनै चेत आवै
चारूंमेर सू हौळै हौळै पडती ओस रौ
की अैडौ नी है म्हारी निजर मे के सगळी दुनिया मे
जिकौ बरोबरी कर सकै थारी छेली कवळाई री
अकूंती ताकत रौ
जिण रौ परस म्हनै खाली हाथां कर न्हाखै आपरा विवध
ठाया ठाणा रा ऊठता पडता रगां सूं
जिण री हरेक सास मे मिरतू अर अणन्त काळ मुंडागै आवै
(म्है नी जाणू कै वौ काई है थारै मे जिकौ मीचै
खोलै, कोरौ औ के म्हारै मे की है जिकौ
समझै, थारी आख्यां री अवाज सगळा गुलावां सू
अथाक है)
कोई नी, अठै ताई के बिरखा रौ छांटां री हथेळ्यां
भी इत्ती नैनी नी व्है ।

अल्जीरिया

वै म्हारा दोस्त हैं

• मलिक हद्दाद

वै इतियास मे गमगा
इतियास री पसरचोड़ी वावा री काळी गुफावां मे—
म्है वानै जाणतौ हौ
वै आपसरी वाता बिचारा जिदता करता
हाथ मिळाता, मुळक विछाता
खुदरी मुळकां रा फूल खुदरा टावरा नै पैराता
दुख-सुख झेल्या जाता

म्है वा सूं फेरू मिळू, खुदरौ अखवार लेता
हाल भी वै म्हारा दोस्त है
पण सिरफ सवद सिरफ संख्यावा
जिका रै सागै हजार दिन अर दस साल
म्हैं अेकई टेवल माथै खायौ पीयौ
सिगरेटा फूकी
खुदरै टावरा रा नाव तै करिया
जिका नै म्है म्हारी कवितावा सुणाई
जिका रा म्हारी मा लाडकोड करिया
—वै म्हारा दोस्त हा
म्हे मिळता, भांत भात री वाता करता
इतियास री पसरचोडी वावा मे वै गुम व्हेगा
अर बणगा वात
म्हारै देस री वात म्हारै देस री जात

—अनु० ते. सिं. जोधा

वगाली

कांईंठा कद

• विस्णु दे

काईं ठा कद, म्हैं गाया, थारी कीरत
किरतारथ दूहा
अणगिण सावण धुपगा त्रै पद
वांरी याद बाकी

तावडै-पाणी सूं नी मरै वा याद, ऊमर सेवट
निवडी करडै लोवै री
कोरी मन रै माय दरदाऊ रगा मे
सालरी मोरचै री मैकार

गुप्तचर

• सक्ति चट्टोपाध्याय

जीयां के तूट जावैली वारचा,
इत्ती आगती उतावळ सूं
म्हनै गळबंधण बाध
ताती सळाखां डांम र म्हारी छाती
निसरगौ वारूंवार वगत । अर अवै हर खण

वंध्योडै गैलै घोड़ैं री गळाइं पगचाप
वाजै हरेक वारी हेटैं भाटैं माथै

गुप्तचर, थारौ परिचै दैं
मूंन तोड, किणी अेक फूल रौ नाव वतावतौ जा .
वतावतौ जा, नी तौ, देखै है आ छुरी
थारी कीरत रै गुवारै ठीडौ कर म्हाखू ला ।

म्हैं उण नैं चूम र भाळचौ, नी जस
नी सपत, सनमांन ई नी, कोरौ
ताती सळाखा रौ चिरथाई गळवधण—
अर थाक्योडी उदास वैस्यावां सारू
निरायत लाग—म्हारै मांय ।

सोच्या करतौ, वीमार तौ सिरफ डील व्हैं, मन थोड़ौ ई
सोच्या करतौ, मनस्यावा रौ मिंदर
अर जगल औई है, मन थोडौ ई
जिकौ की व्हौ, इणी वारी पसवाड़ै ऊभौ रैवूंला
सगळौ दिन अर सगळी रात इणी ढाळै काढूंला ।

—अनु० ते. सि. जोधा

अब जांणौ नीं देखणौ पड़ै

• शम्सुर्रहमान

अव नी देखणौ पडै काती रौ चांद के
धरती री कोई पळापळ करती सुवह
अवे जाणै किणी दिन म्हारी आख री कोर माथै
आभै री प्रतिभा, सिझ्या-नद रा लच्छण अर
रात-रहस री गाढी भासा कपीज नी ऊठै,
कपीज नी ऊठै धरा रै दिगंत री प्रजळतौ तारौ ।
रा तैचोळ वळवळतै चीपियै सू थे म्हारी दोन्यू आख्यां काढलौ-

वै दोय आंख्या, जिकां री वुद्धी रै उजासआळी मिरतु हीण
विद्रोही ज्वाळा मे म्है
देखी है निरमम आकास रै नीचै मानवी मिरतु री हेमाळी सूनता.

देख्यौ हूं म्हैं, बेघरबार कवरी री आंख्या मे
तिरतै नैण जळ सरीसौ कुहासै सूं ढक्योडौ दिन,
देख्यौ हूं म्है मोहम्मद, ईसा अर बुद्ध रौ घायल हिडदै वांरौ रगत
टपक रह्यौ है, अलेखूं धोळा दातां री कुटिल हिंस्रता रै माय

अब जाणौ नी देखूं मरवण रा सपनाळू कंवळा सुनैरी वाळ
किणी सावणी रात मे वारी माथै धरयोडै उणरै मुखड़ै री गभीरता,
अब जाणौ म्हारी आख री कोर माथै
कपीज नी जावै पूनम री चादणी री लैरां
म्हारै देस री रगतहीण देही

इण पछै ई म्हारी आतमा रा स्वर दीठ री प्रतिभा पसारैला
अमावस में डूबियोडा प्राणा री नस-नस में
प्रमेथ्यूज रै गीत री गळाई म्हारै गळै रौ रुद्रोज्वळ चीत्कार
कपाय देवैला इण धरती रा दिगदिगत
फाटर टुकडा-टुकड़ा व्हे जावैला मिश्र रै स्फिक्स री प्राचीनता
लोपीजैला थांरी रात रौ प्रजळतौ तारौ, दिन रौ सूरज ।
म्हारै सूरज रूपी काळजै रा टुकडा-टुकडा कर दौ
ज्यूं कोई धंधौ करतौ फळ बेचणियौ आपरी धारदार छुरी री
हिंस्रता सूं

टुकड़ा-टुकडा करनै काटतौ लाल सुरख सेव ।
पण सुणौ, रगत रौ अेक टपकौ ई नी पड़ै जमी माथै,
क्यू के म्हारै रगत री बूंद-बूंद रै मांय ऊजळी धार सरीसौ
दौड रह्यौ है मसूर रै विद्रोही रगत रौ लखाव ।
थे टुकड़ा-टुकडा कर दौ म्हारौ काळजौ-
जिण काळजै में वारम्वार फड़क रह्यौ है म्हारी माटी रौ हेत
वौ हिड़दै—

मां री पविताऊ आसीस ज्यूं
बैन री हेताळू, निरमळ निजर सरीसौ
मरवण रै हिवड़ै रा सबदहीण गीत रै उनमांन

मायत री चांदणी इंछी ही इण धरती रा आकास नीचै
चेत री तेजी मे सावण री पूनम मे ।

दुहाई चगेज री नागी तरवार री हिंसता री
दुहाई, फराम्रो री ममी-दग्ध वीभत्सता री,
दुहाई, तैमूर रै पिसाची रगत-नसै री,
थे लोग मिटाय दौ म्हारौ अस्तित्व
धरती माथै सूं सदा सारू मिटाय दौ
ध्रू तारै सरीसौ म्हारौ तेजस्वी अस्तित्व
मिटाय दौ, मिटाय दौ ।

तेलगू कविता

मसखरै रौ आतमघात

• श्री श्री

मेणवत्तिया बुझी,
अधारै री गैराई
'क्लोरौफार्म' री गळाईं पसरगी ।
ससार आपरी मौत रौ घोसणा-पत्र खुद रच लियौ ।
अर मसखरै कर लियौ आतमघात ।

मसीनां रा मत्र-गान
जैरीलै धुम्रै रौ तूफान
जहाज माथै वादरौ
नांदी मे ई भरत-वाक्य
मिरतू मे ईं सिरजण
मसखरै रौ आतमघात ।

मसखरै री विकट हंसी रै साथै
हसी अेकाम्रेक खोपडी कंकाळ री

भूख आपरौ पेटियौ सेक लियौ
अर हुस आकासा चढगा है।

मसखरै रौ दुख
समदर रै मायली अगनी
भूचाळ में 'फ्रूट सलाद'
पण
मेरा बत्तिया पाछी सिळगगी है
अर मिरतु रौ घोसणा-पत्र बळ'र
राख व्हेगौ है।

असमिया

उजास सूं अंधारौ भलौ

• हेम बरुआ

वगत री रेत माय पगल्या धरण री
उणमादी वासना म्हां मे नी। म्हे
इतियास रै सिलाखड रा जीवता जागता फाजिल हां।

ओ री सकुंतळा, थारी आंख री पापड माथै
दुसयत रै चुवन रौ निसाण। कोरिया मे जरासध रौ ककाळ।
ऐसिया रै आकास में गिरजडा रा टोळा-रा-टोळा।
म्हे जीवा हा जुग री सीवाड़ माथै,
जूना नाविकां रा हाड पिंजर। काळीदास, थे किसी
अलका रा पलायनवादी कवी हौ? बादळ गैला?
थांरी काव्य-वेदिका मांय म्हारै जीवण री अरचणा—
खिरियोडौ कुमळायौ फूल है।

राजावां-राजावा में लड़ाई, लोह रौ टकराव! म्हे
खाडव-दाह री अगन-ज्वाळा में वळ'र राख व्हियोड़ा
फूल हां: म्हांरौ

ओ री सकुतळा, थारी आंगळी रा अगन-कणा सूं बुझाय दै
राजमैल रै दिवळै री जोत। टूटण दै सपनौ दुसयत रौ।
उजास सूं अंधारौ भलौ।
जिदगानी री अगर गती मे रामेस्वर रौ सेतूवध
संका क्यांरी ?
नुवै प्रभात रै कोमल तड़कै माय आसा री जोत
म्हारी आख में लोह री चमक है।

—अनु० पारस अरोड़ा

गुजराती

अपरोखायां सूं भरचोड़ी दुनियां

• प्रद्युम्न त्रिवेदी

म्हारै अर थारै है जूनी ओळखांण
इण नै आंख्या सूं पूछणौ इत्तौ सोरौ है ?
थारी सोगन जे म्हनैं उटकाई चैत आयौ
आ दुनिया अपरोखायां सू भरचोडी है
जिणमे कैड़ी कैडी अवळी वंवळी
पतियारै विहूण वाता भी व्हे जाया करैं
डूगरा सूं भाजी जद नदी
तौ नाकै नाकै व्हेय'र पसरीज्या डूंगर
उगाया झाड झंझाड
करी गाढी सभाळ ' पण तौई
नदी तौ जाय'र पडी खारा समदा मे
वीखै मे राखी द्रौपद री लाज
अर जिताया काटै रा जुद्ध
तौई किरसण रौ वंस व्हियौ
व्हियौ निरमूळ
आधा सुर रैयगा बसी मे ईं पीडा रा मूळ
भूली थूं म्हनै
पण म्हारी कविता नै भुलावण
कित्ता दुख देख्या हा ?

थारी सोगन जे म्हनै उटकाई चेत आयौ
है दुनिया में भरचोड़ी कित्ती अपरोखाई
के खण में ई दुसयत
सकुन्तला नै बिसराई ।

—अनु० रमेस कुमार

अेक कविता

• ज्योतिस जानि

मजाक ई मजाक मे
थोडौ पूछ लूं
के काई आप म्हनै जाणौ हौ ?
देखौ नी
म्हारै ओळू-दोळू ऊपर-नीचै
गोळ घूमता चौकूंटा लाबा
काच है
देखौ हौ नी थे ?
म्हारै सबदा री आभा
अर म्हारै डील रा गाभा
हरेक काच में
न्यारा न्यारा रूप धारै
म्हारी आख्या री जोत
अर म्हारी पलकां री पोत
इण हरेक काच मे
न्यारी न्यारी छाप उघाड़ै
म्हारै अगां सूं निसरता
पांखिया रा पखहीण झुंड
आं काचां तांईं भी नी उड सकै
पण फेरूं भी म्हारै आणंद किलोळ री
ध्वनियां नै
अर म्हारी वीखां-पगी चीसां री उथळीजती गूंजां नै
अै काच गळा गळ गिट जावै

इण सारू ई
थोड़ौ मजाक ई मजाक में
पूछ लेवू
के काईं आप म्हनै जाणौ हौ ?

स्यात

• सुरेस जोसी

स्यात म्है कालै नी रैवूं
काल जे सूरज उगै तौ कैईजौ
हाल म्हारी मीचीज्योडी आंख्या मे
अेक आंसूं सूखणौ वाकी है

काल जे वायरौ वैवै तौ कैईजौ :
वाली ऊमर में अेक कामण सूं चोरचोड़ी मुळक रौ
पाक्योडौ फळ
हाल म्हारी साख सू झडणौ वाकी है

काल जे समदै मे उठै ज्वार री घमरोळ तौ कैईजौ
हाल म्हारै अंतस मे जम्योडै
पासाणी ईसर रौ खिडणौ वाकी है

कालजे चाद उगै तौ कैईजौ :
हाल म्हारी अपड़ सूं अळगी व्हेण नै
अेक माछळी म्हारै में तळफळावै है

काल जे चेतै अगन तौ कैईजौ :
हाल म्हारी विरहण पड़छाया रौ
मसाण चेतणौ वाकी है

स्यात
म्है कालै नी रैवू ....!

पंजाबी कविता

खिरगोस री बात-
जिणनै सेर खावतौ कोनी

• अमितोज

मां थूं म्हनै उण दिन क्यूं कोनी जिण्यौ
जिण दिन सेर री मा उणनै जण्यौ
थूं तौ जाणै है मां
बडोडौ भाई सगळै दिन लाइब्रेरी मे इखबार पढतौ रैवै
बिचलौ जावै परौ टाइप सीखण नै
चौथोडौ अब आवण मे है
अर लारै रह्यौ म्है
म्हनै रोजीना सेर कनै जावणौ पड़ै
मा ! वौ सेर म्हनै खावै कोनी
म्हारै सामी दोस्ती रौ पंजौ करै
देखै है न मा—
म्हारै मौरा माथै पड्या घाव
अर घावा सूं बैवतौ लोई
औ सै उण सेर री मितराई रौ फळ है
थूं नी समझैली मा—
सेर बस कोरौ सेर व्है—
भलाई वौ धोती अचकन पैर'र मंच सूं भासण करै
भला मूंडै में पाइप चास'र
किणी दफतर में कोई लैटर लिखवातौ व्है
भलां किणी क्लासरूम में
जिनगानी रौ कोई इजम समझातौ व्है
सेर बस कोरौ सेर व्है
जिकौ हर बगत अेक जंगळ सोधण में लाग्योडौ रैवै
जिण मे वौ नैना नैना खिरगोस पाळै
अर पछै वारौ भख लेवण री ठौड़
वांरै सामी दोसती रौ पजौ करै
अर वांरा मौर झरूंट लेवै

मां, म्हैं चावूं
के सेर म्हनै खा जावै
वडोड़ौ भाई सोरौ सोरौ इखवार पढता पढता
बुद्धिजीवी वण जाय
वीचलौ टाइप सीख'र नौकरी सोधण नै निसर जाय,
अर चौथौ जद आवै
तौ उणनै सेर कनै नी जावणौ पड़ै
पण मा म्है काईं करूं
सेर म्हनै खावै ई कोनी
म्हारै सामी दोसती रौ पजौ करै
थू म्हनै उण दिन क्यू कोनी जिण्यौ मा
जिण दिन सेर री मां उणनै जिण्यौ

◇

नैड़ास

• प्यारासिंघ सहराई

थूं म्हारै कनै ही
अेक भीत ही आपा रै विच्चै
थू चलीगी
वा भीत भी धुडगी
अर थू म्हारै इत्ती नैड़ै आयगी
के आपा रै विच्चै
सपना सारू भी ठौड़ नी है

मराठी

आं सबदां नै

• विंदा करंदीकर

मिळै आ सवदा नै
थारै रूडै जूडै रै हर चम्पै री सौरम
आ ओळ्या नै मिळै
थारै कंवळै काचै लोई री लाय

आं मदछकिया छंदा नै मिळै
थारी उभरती छाती रौ उठाव
सूखा कण्ठा मे उतरै
थारै भुजबंधरा रौ मद-भाव
आं अरथा नै मिळै
थारै जोबन रौ कुच-घाट
थारी वासणा री लळक ज्यूं
चचळ व्है म्हारी अनभूती
पछै इण रचणा री ग्रीवा माथै
चढण दै
चढण दै आतमा रौ भूत

अेक समिक्सक : कलपना रौ

• मंगेस पाडगांवकर

होळै कुणमुणावण आळै खुद रै मन नै
वौ हैकड़ी रै
हिलतै पालणै मे थेथड़ दियौ

पण खुद उणनै नीद कठै ?
आं दिनां उणनै रातीजोगै री
सिकायत व्हेगी ही

सिलगाई च्यारमिनार : खारै धुंअै री
गोळमदाजी करतां
कुणमुणावतै मन नै झोला देवण लागौ

कोई क्रांतिकारी आंटौ देय'र
वौ लोगां री निजरां रौ ठीयौ व्हेणौ चावै हौ
मानेता लिखारा बेजां गोदम घालै है
सगळा कुरस्यां अड़ा र अक्कडधज व्हे मेल्या है
वौ उठावैला खिलाफत रौ खांडौ
मानेता नाव मिटावैलौ रबड़ लेय'र

लिखैलो नुवा लिखारा रा नांव
अर सगळां रै विच्चै
चिमकैलो नाव   उरा खुद रौ
                उरा खुद रौ

कुरामुरावतै मन नै वौ फेरू
हळवै क झोटायौ
वारा रै मुजव

इलमारी कनली
मौळी पडचोडी भीत माथै
वेमतलव भटकै ह्वा च्यार खटमल
वौ ऊभौ व्हियौ अर 'वुक सैल्फ' सू निकाळ'र
वाचरा लाग्यौ अेक पोथी
'अस्तित्ववाद'
'लाजिकल पाजिटिज्म'
खुद री चिमठी सू पकड लिया वौ
अेई दो सवद
आरै अरथ री चिंता
करू ला पछै
हाल तौ अै कांम रा है....... सवद ही ।
मानेता लिखारा साळा
वेजा चरचीज रह्या है
वौ खुरा मे देख्यौ
अेक मकडौ मस्ती सूं फिरतोड़ौ
आगै चाल्यौ
पछै पेन मे स्याई भर'र
वौ लिखरा नै वैठौ
अर बस लिखतौ रह्यौ
काल री डाक सूं आ समीक्सा टीप
जावरगी ई चाईजै
साहित जगत री अंधेरगिरदी मिटावरगी ई पडैली
रात आधी सूं बेसी ढळगी
परा वौ लिखतौ ई रह्यौ
तडकै री वगत कुरसी पर वैंठा वैठा ई
उरारी आंख लागगी

कुणमुणावण आळै मन रौ पालणौ
थमगौ
इलमारी रै कनली
भीत माथै
च्यारूं खटमल
हाल तांई फिरै हा बेमतलब !

—अनु० ते. सिं. जोधा

उडिया

जात्रा

• प्रसन्न कुमार मिश्र

तौ म्हां जावाला । कठै ?
जावण सूं फायदौ कांई ?
किणसूं पूछांला मारग ?
अेकाअेक सगळा सही मारग गमगा है
रिसी-मुनी आप-आपरै मारग माथै चाल'र
असफळ हुयगा
इण कारण म्हा किस्यौ मारग चुणाला ?
जे नीं जावण सूं चल जावतौ
तौ म्हैं अठै बैठौ-बैठौ
छाणा री अगनी सूं सरीर नी तापतौ
छटूं घर सूं मसाण कित्तौ आघौ है ?
क्यूं के
म्हैं नी हूं नदी
नी चावूं
चाद सूरज रै जठै ताई रौ
घूमणौ-भटकणौ ।
सुण्यौ
सरग आघौ है

दांन-पुन करयां मानखौ अेक दिन उठै पूगै
बूढी मा कंवै
वा ई सरगा जावैला
क्यूं के भइजी गया
धिन है उणारी हिम्मत
इत्तौ मारग चालणौ वै किण विध दाय कियौ?
म्हैं सरग नी चावूं
(उरवसी-इमरत सारू जे म्हारौ लोभ कम नी है)
वौ घणौ अटपटौ मारग है
कटीला विचारा रौ बोझ
इणी कारण
म्हैं दान देय'र लेवणौ सीख्यौ हूं
म्हनै सीधौ नरक मिळैला
वौ ई ठीक है। वौ ई चावूं हूं
म्है तौ उल्टौ नरक रौ कीडौ वणूंला।
म्हारी जिंदगानी बीत जावै
सरदी मे चिलम फूंकता।

◇

प्रतिग्या

• सुमेन्दु मोहनदास

म्हनै अेक हिडदै देवौ
म्है थारै मांय भरदूंला कीं इमरत अटूट धारसूं
म्हनै अेक चुम्बन देवौ
म्है उणनै फळती मिती समेत कर दूंला पाछौ
म्हनै अठै सुजोग देवौ
खुद रै पाण वचण सारू
देवौ म्हारी न्यारी जमी
म्है देवूंला केई अकास अर अेक न्यारौ सरग।

—अनु० पारस अरोड़ा